जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पन्द्रह चयनित, प्रसिद्ध कथाक संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पन्द्रह चयनित, प्रसिद्ध कथाक संग्रह)

चयन एवम् सम्पादन

प्रो. (डॉ.) राम सेवक सिंह

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

JAGDISH PRASAD MANDALJIK BEECHAL KATHA

A Collection of Fifteen Selected and Popular Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal. Compiled and Introduced by: Prof. (Dr.) Ram Sebak Singh

Jagdish Prasad Mandaljik Beechal Katha is a carefully curated collection of fifteen significant Maithili short stories by Shri Jagdish Prasad Mandal, one of the defining figures of contemporary Maithili literature. His writing draws its strength from the lived world of rural Mithila, where moral tensions, emotional depth and the quiet endurance of ordinary people shape everyday life. Mandal's stories combine clarity of observation with an empathetic understanding of human struggle, allowing small moments to open into wider reflections on dignity, labour, inequality and resilience.

The stories included here cover the period from 2009 to 2025 and offer a clear sense of how Mandal's creative perspective matured over time. Through varied characters such as farmers, labourers, women carrying unspoken burdens and families living through cultural transitions, he examines shifting social values and the delicate balance between hardship and hope. Each narrative remains firmly rooted in the rhythm of local speech and the texture of rural experience.
Compiled and introduced by Prof. (Dr.) Ram Sebak Singh, this anthology serves both as a representative portrait of Mandal's narrative art and as an important document of changing rural consciousness.

Published by: Pallavi Prakashan
Tulsi Bhawan, Nehru Marg, Ward no. 06, Nirmali, District- Supaul, Bihar: 847452

First Edition: 2025
ISBN: 978-93-48865-52-6
Price: 399/-
Copyright: © Publisher

Printed by: Manav Art (Pallavi Prakashan)
Typography: Dr. Umesh Mandal, umeshberma@gmail.com
Cover Design: Mrs. Poonam Mandal, Nirmali, Supaul, Bihar- 847452

Website: http://pallavipublication.blogspot.com
E-mail: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile: +91 99316 54742, +91 62006 35563
Font source: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the prior written permission of both the author and the publisher.

अनुक्रम

भूमिका	—	**07-48**
दूटा पाइ	—	49
अर्द्धांगिनी	—	62
इमानदार घुसखोर	—	74
अकाल	—	82
पसेनाक धरम	—	87
लाही	—	92
पुरान साड़ी	—	101
संकट	—	111
खिलतोड़ भूमि	—	121
मुराम जगह	—	131
सागवानक बागवानी	—	145
थाहल संगी	—	155
एकलव्यपन	—	160
कनगुरिया ओंगरी	—	168
केकरा-ले केलौं	—	175

समर्पण

मिथिलाक धरती, लोकजीवनक करुणा आ श्रमक तेजसँ
भरल जनसमुदायक प्रति ई कृति विनम्र नमन अर्पित करैत अछि।
समाजकेँ उपजाऊ बनौनिहारि नारी, किसान, मजदूर, शिक्षक आ कर्मयोगी
सभक पसेना, धैर्य आ नैतिकतासँ प्रेरित ई पुस्तक मातृ-स्नेह, पितृ-परिश्रम
आ नवपीढ़ीक सम्भावनाक प्रति विश्वासक प्रतीक रूपेँ उभरि कऽ अबैत
अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा मूलतः ओहि लोक-
आत्माक सम्मान छी, जे कठिन समयमे सहारा बनै छथि, पसेनामे
धर्मक अनुभूति करै छथि, आ यथार्थक अन्हारमे अपन
आन्तरिक चेतनासँ मार्ग खोजि लेबाक
सामर्थ्य रखै छथि।

भूमिका

☰

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल मैथिली साहित्यक एक विशिष्ट नाम छथि, जिनकर लेखनी मिथिलाक माटिक गंध, लोकजीवनक करुणा आ यथार्थक ओजसँ स्फुरित रहैत अछि। हुनक कथा-संसार गामक आँगनसँ आरंभ होइत अछि, मुदा ओ समाजक व्यापक अन्तःकरण धरि पहुँचैत अछि।

2000 इस्वीसँ निरंतर लेखनक यात्रा प्रारंभ कए मण्डलजी अद्यतन लगभग नब्बे कथा-संग्रहक रचनाकार भऽ चुकल छथि। यद्यपि ई आँकड़ा केवल कथा-विधा धरि सीमित अछि; समग्र सृजन-परिधिपर दृष्टिपात करब तँ उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, यात्रा-वृत्तांत आ कविता सहित हुनक 130 सँ बेसी कृति प्रकाशित भऽ चुकल अछि। ई संख्या केवल परिश्रमक प्रतीक नहि, बल्कि ओ निरंतर सृजनशीलता आ समाजक प्रति गहींर उत्तरदायित्वक प्रमाण सेहो अछि।

हुनक पहिल कथा 'भैंटक लावा' सँ आरंभ भेल लेखकीय साधना 'समयक माँग' धरि पहुँचैत-पहुँचैत मैथिली कथा-साहित्यक एकटा सशक्त, दीर्घ आ जन-संवेदनात्मक परंपरा स्थापित केलक। मण्डलजीक कथा-सृजन 'गामक जिनगी' सँ 'बदलैत जीवन' धरि लोकजीवनक रूपांतरणक सजीव दस्तावेज बनि गेल अछि, जतए साधारण जीवनक संघर्ष समाजक सामूहिक स्मृतिमे दर्ज भऽ जाइत अछि।

मण्डलजीक यथार्थवाद केवल बाह्य चित्रण नहि, बल्कि जीवनक आन्तरिक सच्चाइ आ नैतिक संघर्षक सूक्ष्म दार्शनिक विश्लेषण सेहो अछि। ओ मिथिलाक माटि, श्रम, नारी आ मानवीय संघर्षक कथा-चित्रणक माध्यमसँ समाजक आत्माकेँ स्वर दैत छथि। हुनक कथा संसारमे आडंबरक कोनो स्थान

नहि—ओ जीवनक नव दृष्टिकोण, नीति आ धर्मक प्रश्नक माध्यमसँ नैतिकताकेँ पुनर्परिभाषित करैत छथि। संग्रहक शीर्षक 'जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा' एही दार्शनिक धरातलपर ठाढ़ अछि—छाँह, अर्थात् यथार्थक अन्हार, आ जीवन, अर्थात् ओजस्वी मानवीय प्रयास जे ओहि अन्हारक बीच प्रकाशक खोज करैत अछि।

एहि संग्रहक एकटा विशेष साहित्यिक-शोधपरक पक्ष ध्यान देबाक योग्य अछि—एहिमे 2009 सँ 2025 इस्वी धरि प्रत्येक वर्षक एक-एक कथा क्रमशः समाविष्ट कएल गेल अछि। एहि कालक्रमिक संयोजनसँ लेखकक कथा-दृष्टि, विषय-विकास आ अभिव्यक्तिक क्रमिक रूपांतरण सहजतासँ देखल जा सकैत अछि। आरंभिक वर्षक कथासभमे ग्रामीण यथार्थक कठोरता, श्रमक पवित्रता आ मानवीय संघर्षक स्वर प्रधान अछि, जखनकि उत्तरकालीन कथासभमे सामाजिक दार्शनिकता, मानसिक जटिलता आ नैतिक द्वंद्वक गहराइ प्रतिबिंबित होइत अछि। एही दृष्टिसँ 'जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा' केवल कथा-संग्रह नहि, बल्कि लेखकक सृजन-यात्राक एकटा ऐतिहासिक दस्तावेज सेहो अछि।

एहि कालानुक्रमिक स्वरूपसँ एक प्रकारक सृजनात्मक विकास-दर्शन उभरि कऽ अबैत अछि, संगहि भाषा, विषय आ संरचनामे परिपक्वता सेहो स्पष्ट रूपेण दृष्टिगोचर होइत अछि। आरंभिक कथासभमे यथार्थक धरातल ठोस अछि, मुदा कालक्रमे ओ यथार्थ चेतनाक रूप ग्रहण करैत गेल अछि। समाजक संघर्षक संगहि व्यक्तिगत आत्मालोकनक परत जुड़ैत जाइत अछि। एहि अर्थमे ई संग्रह शोधार्थी, विशेषतः गवेशक-गवेशिकासभक लेल एकटा मूल्यवान स्रोत बनि सकैत अछि, जे मैथिली कथा-साहित्यक विकास-क्रम, विषयगत प्रवृत्ति आ मण्डलजीक लेखन-प्रक्रियाक गहींर अध्ययनक दिशामे प्रेरित करत।

एहि संग्रहक दोसर महत्त्वपूर्ण पक्ष ई अछि जे एहिमे मिथिला समाजक सामाजिक मानसक रूपांतरणक दस्तावेजी स्वरूप सेहो समाहित अछि। 2009 सँ 2025 इस्वी धरि मिथिला जे आर्थिक, सांस्कृतिक आ तकनीकी स्तरपर जतेक रूपांतरण देखलक, ओकर प्रभाव मण्डलजीक कथा-संवेदनामे स्वाभाविक रूपेँ प्रकट होइत अछि। कथासभसँ स्पष्ट होइत अछि जे लोकजीवनक अंतर्विरोध बदलैत समाजक दिशा-संकेत निर्मित केने अछि।

लेखकक कलम एहि युग-संधिकालक साक्ष्य बनिकऽ ने केवल घटनाक वर्णन करैत अछि, बल्कि ओहि परिवर्तनक भीतर जे मानवीय पीड़ा, द्वंद्व आ आशा अछि, ओकर संवेदनशील शब्दांकन सेहो करैत अछि।

एहि कारणेँ 'जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा' केवल कथा-संग्रह नहि, बल्कि एक जीवंत शोध-ग्रंथक आरंभिक आधार जकाँ देखल जा सकैत अछि- एहिमे यथार्थक छाँह तँ अछि, मुदा ओ छाँहक भीतर जे सतत उगैत प्रकाश अछि, से जीवनक सत्यक खोज थिक।

कथासंग्रहक केंद्रीय उद्देश्य: 'जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा' जगदीश प्रसाद मण्डलक समग्र रचनात्मक दृष्टिकोणक एक प्रतिनिधि दस्तावेज थिक। एहि संग्रहमे लेखकक समाजबोध, नैतिक चेतना आ मानवीय सरोकारक तीव्र अभिव्यक्ति स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित होइत अछि। मण्डलजीक कथा-संवेदना मुख्यतः ग्रामीण जीवनक परिवर्तित मूल्य, श्रमक संस्कृति, नारी-सम्मान आ सामाजिक न्यायक सतत संघर्षसँ जुड़ल अछि।

कथासभ व्यक्तिगत पीड़ासँ आगाँ बढ़िकऽ सामूहिक जीवनक नैतिक द्वंद्व आ संक्रमणक गहींर पड़ताल करैत अछि। 'अकाल' दारिद्र्यक बीच मानवीय करुणाक स्वर बनि उठैत अछि, 'पसेनाक धरम' श्रमक धर्मक सशक्त उद्घाटन करैत अछि, 'इमानदार घुसखोर' नैतिक पतनक विडंबनाक प्रति करुणा मिश्रित व्यंग्य प्रस्तुत करैत अछि, जखनकि 'संकट' आ 'लाही' मानव-मनक जटिल द्वंद्वक चित्रण करैत अछि।

बौकी दीदी, सुगापटीवाली, शिवपूजन काका आ सुगिया काकी जकाँ पात्र लोकजीवनक ओ आत्मा बनि जाइत छथि, जे संघर्षशील, सजग आ आत्मसम्मानसँ भरल रहैत छथि। ई कथा-पात्र समाजक भीतर मानवताक चेतना जगबैत छथि।

संग्रहक उद्देश्य केवल मनोरंजन नहि, बल्कि जागृति थिक जे पाठककेँ अपन परिवेशक यथार्थ बुझबैत, आ भीतरसँ नैतिक पुनर्संवेदना जागृत करैत अछि। 'जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा' मूलतः ओ सृजनात्मक प्रयास थिक, जे अन्हारक बीच मानवता आ सत्यक उजासक खोज करैत अछि।

कथाक यथार्थपरक प्रतिमान: मण्डलजीक कथा-लेखनक मूल आधार यथार्थ अछि। हुनक रचनात्मक ऊर्जा कल्पनाक उड़ानसँ नहि, बल्कि जीवनक ठोस धरातल पर उपजल अनुभवसँ प्रस्फुटित होइत अछि। ओ ने आदर्शवादक चमकमे ओझराइ छथि, ने निराशाजनक अन्हारमे डूबैत छथि। हुनक पात्र साधारण लोक—खेतिहर, मजदूर, गृहिणी, शिक्षक—होइत छथि, जे गामक कर्मशील आत्मा छथि। हिनका सभक जीवनमे तेज, दृढ़ता आ आत्मसम्मान झलकैत अछि।

'पसेनाक धरम'मे श्रमक नैतिक मूल्यक दर्शन होइत अछि। पसेना केवल उपार्जनक साधन नहि, बल्कि धर्मक रूप धारण कए लैत अछि। 'इमानदार घुसखोर' प्रशासनिक नैतिकतापर करुणा मिश्रित व्यंग्य करैत अछि, जतए हास्यक भीतर समाजक पीड़ाक गंध व्याप्त अछि। 'संकट' मानवीय दुविधा आ निर्णयक तनावक कथा थिक, जे जीवनक नैतिक मापदंडक परीक्षा बनिकऽ प्रस्तुत होइत अछि।

एहि संग्रहक सभ कथाक संरचना मिथिलाक लोकस्वरसँ गुँथल अछि- बिना कृत्रिमता, बिना सजावटिक। भाषामे माटिक गंध अछि, संवादमे आत्मीयता, आ दृष्टिमे गहींर सहानुभूति। मण्डलजीक लेखनमे करुणा आ व्यंग्य विरोधी तत्त्व नहि, बल्कि परस्पर पूरक शक्तिक रूपमे उपस्थित अछि। ओ दीनता उत्पन्न नहि करैत छथि, बल्कि संवेदनशीलता जागृत करैत छथि।

एहि यथार्थपरक दृष्टिकोणसँ मण्डलजी मिथिलाक कथा-परंपराकेँ नव अर्थ दैत छथि। ओ जीवनक सत्यक केवल चित्रकार नहि, बल्कि गहींर व्याख्याकार बनिकऽ उभरैत छथि।

संकलनक महत्व: 'जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा' एहन संग्रह अछि, जे पाठककेँ मिथिलाक ग्रामीण जीवनक नैतिक सौन्दर्य, श्रम-संस्कृति, नारी-संवेदना आ सामाजिक चेतनाक गहींर अनुभूति दैत अछि। एहि पन्द्रह कथामे समाजक बदलैत मूल्य-बोध, मनुष्यक संघर्षशील आत्मा आ जीवनक नैतिक आधारक विविध रूप एकत्रित भेल अछि।

इम्हर हम 'सगर राति दीप जरय' मंचसँ सक्रिय रूपेँ जुड़लहुँ। ओना पहिनेसँ संबंध रहल, मुदा आब प्रत्यक्ष भागीदारीक अवसर भेटल। एहि मंचक

विशेषता ई अछि जे निरंतर जगदीश प्रसाद मण्डलक पोथीसभक लोकार्पण आ विमोचन एही मंचपर सम्पन्न होइत रहैत अछि। संयोगवश 'सगर राति दीप जरय' कथा-गोष्ठीक आयोजनक अवसर हमरा भेटल, आ दिसम्बर मासक अन्तिम शनिकेँ अपन गाम शिवनगरमे एहि आयोजनक योजना बनल। ओहि समय मनमे विचार उपजल जे मण्डलजीक प्रतिनिधि कथासभक एकटा चयनात्मक संकलन तैयार कएल जाए, जे हुनक दीर्घ रचनात्मक यात्रा आ समाजदृष्टिक विकासक प्रतीक बनि सकए।

एहि भावनासँ प्रेरित भऽ 'जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा' पोथीक योजना बनल। उद्देश्य केवल कथा प्रस्तुत करबाक नहि, बल्कि लेखकक सृजन-यात्राक अनुक्रम देखाएब मूल छल। आरंभ 'दूटा पाइ' आ 'अकाल'सँ होइत अछि, जतए जीवनक कठोर यथार्थ उजागर भेल अछि, आ समापन 'कनगुरिया ओंगरी आ 'केकरा-ले केलौं' लग होइत अछि, जतए आत्मावलोकनक संवेदना अत्यन्त गहींर बनि उठल अछि।

एहि क्रममे कथा-सूत्र केवल शीर्षकक अनुक्रम नहि, बल्कि विचारक यात्रा बनि गेल अछि। एहि संग्रहक माध्यमसँ पाठक मिथिलाक जीवनक छाँह आ प्रकाश दुनूकेँ अनुभव करैत अछि। संगहि ई पोथी लेखकक मानवीय दृष्टि आ जीवन-संवेदनाक प्रति एक सृजनात्मक नमन अछि।

साहित्यिक मूल्यांकन: जगदीश प्रसाद मण्डल आधुनिक मैथिली कथा-साहित्यक एक सशक्त हस्ताक्षर छथि, जे समाजक यथार्थक गहींर धरातलपर अडिग रूपेँ प्रतिष्ठित छथि। हुनकर लेखनी जीवनक निचला स्तर स्पर्श कऽ मानवीय संवेदनाक नव स्वर उत्पन्न करैत अछि, जे यथार्थक साँच गूँज बनि उठैत अछि। हुनकर कथा-सृजन समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक आ दार्शनिक- तीनू स्तरपर समान रूपेँ प्रभावशाली अछि।

मण्डलजी दैनंदिन जीवनक घटनासभक अंतरसँ ओहन प्रश्न उठबैत छथि, जे मानवीय अस्तित्वक मूल आधार बनैत अछि- न्याय, ईमानदारी, नारी-स्वातंत्र्य आ सामाजिक समानता।

हुनक कथा-संसारमे समाजक प्रत्येक वर्गक सजीव उपस्थिति अछि।

खेतिहर, मजदूर, गृहिणी, शिक्षक, अधिकारी आ बेरोजगार युवक- सभक जीवनक सच्चाइकेँ ओ सहजतासँ शब्द दैत छथि। मण्डलजी यथार्थक केवल चित्रकार नहि, बल्कि जीवनक व्याख्याकार छथि। ओ पात्रक माध्यमसँ समाजक भीतर चलि रहल मूल्य-संघर्ष, नीति-पतन आ पुनर्निर्माणक प्रक्रियाकेँ उद्घाटित करैत छथि।

भाषा हुनक लेखनक आत्मा अछि। मिथिलाक लोकजीवनसँ उपजल शब्दावली, कहावत, मुहावरा आ व्यंजनात्मक बिम्ब कथा-संरचनाकेँ सजीवता दैत अछि। संवादक सहज प्रवाह, वाक्यक सादगी आ माटिक गंध हुनक कथा-शैलीक प्रमुख पहचान बनि चुकल अछि।

एहि दृष्टिसँ मण्डलजी मैथिली कथा-परंपराक सशक्त वाहक छथि। विद्यापतिक 'देसिल वयना सभजन मिट्ठा' सँ शुरू भेल लोकधर्मी साहित्यिक चेतनाक निरंतर प्रवाह- भुवनेश्वर सिंह 'भूवन'क ग्राम्य अनुभूति, यात्रीक मानवीय करुणा आ राजकमलक सामाजिक दृष्टि धरि पसरल अछि। मण्डलजी एहि परंपराकेँ आगाँ बढ़बैत यथार्थवादक लोकनिष्ठ रूप प्रस्तुत करैत छथि, जतए जीवनक माटि, श्रम आ नैतिकता एक संग ध्वनित होइत अछि।

हुनक कथा-सृजनक सार ई अछि जे यथार्थ हुनका लेल मात्र दृश्य नहि, बल्कि चेतना अछि। ओ लोकजीवनक भीतर मानवीय मूल्यक खोज करैत छथि। किसानक पसेना, मजदूरक थकान आ नारीक समस्या- एहि सभक संग हुनक कथा समाजक नैतिक आधार बनि जाइत अछि।

एहि कारणेँ मण्डलजीक साहित्य मैथिली कथा-संस्कृतिक विकासक अनिवार्य कड़ी अछि। ओ ने तँ यथार्थवादक अतिरेकमे फँसैत छथि, ने तँ कल्पनाशून्य निराशामेँ। हुनक कथा-संसार करुणा, आशा आ मानवतासँ आलोकित अछि।

अंततः, मण्डलजीक लेखनी जीवनक गहींर अनुभूतिसँ उपजल अछि। ओ शब्दक माध्यमसँ समाजक आत्माकेँ स्वर दैत छथि। एहि दृष्टिसँ 'जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा' केवल कथा-संग्रह नहि, बल्कि एक जीवंत साहित्यिक दस्तावेज थिक, जे मिथिलाक सांस्कृतिक, नैतिक आ मानवीय विकासक क्रमकेँ साक्ष्य रूपेँ सुरक्षित रखैत अछि।

मैथिली कथा साहित्यक विकास

खिस्सा कहबाक परम्परा आदि कालहिसँ आबि रहल अछि। मुदा खिस्सा लिखबाक परम्पराक विकास वादमे भेल। खिस्साक वर्तमानमे जे स्वरूप अछि से कथा कहबैत अछि। खिस्साजे कहल जाइत अछि, लिखल जाइत अछि से काव्य कहबैत अछि। जखन कहबाक शैलीमे लिखल गेलतँ उपरब्यान भए गेल। सुनल खिस्साकेँ शब्दमे पिरौलनि वा लिखलनि तँ ओ मौलिक रचना भेल। साहित्यक नाना विधामे कथा सभसँ लोकप्रिय अछि। मैथिली कथाक आरम्भ बीसम शताब्दीक प्रारम्भिक चरणसँ मानल जाइत अछि। मैथिलीक पहिल कथा कोन अछि ताहिमे मेतेक्य नहि अछि किएकतँ प्राचीन कालक सभ मुद्रित सामग्री आइयो अनुपलब्ध अछि। जाबत सभटा मुद्रित सामग्री उपलब्ध नहि होयत अछि, ताबत निष्कर्षपर आयब वा कहब कठिन अछि। किछु मैथिली साहित्यक विद्वान लौकेन्ह रासबिहारी लाल दासक 'सुमति' 1918 ईकेँ पहिल कथा मानैत छथि तँ किछु विद्वान साहित्यकार काली कुमार दास 'भीषण अन्याय" 1923 ईकेँ पहिल कथा मानैत छथि तँ किछु मैथिली साहित्यकार पुलकित मिश्रक 'मोहनी मोहन' (1907–08) ईकेँ दीर्घ कथा वा उपन्यास मानैत छथि। एहि संबंधमे मैथिली साहित्य प्रमुख विद्वान प्रो0 रामदेव झाक मतानुसार– "जाबत धरि एहिसँ पूर्व प्रकाशित कोनो कथा नहि भेटैत अछि, ताबत धरि उपलब्ध तथ्य ओ सामग्रीक आलोकमे जनार्दन झा 'जनसीदनक' रचित "ताराक वैधव्य– 1917 ई0 मैथिलीक पहिल कथा सिद्ध होइत अछि।"

मैथिलीमे कथा लिखबाक आरम्भिक आधार सामाजक समस्यापर आधारित छल, जाहिमे प्रमुख समस्या वैवाहिक आ प्रेमपरक समस्यापर प्रमुख रूपेँ कथा लिखब आरम्भ भेल। मैथिलीक आरम्भिक कथाक मुख्य स्वर सामाजिक कुरीतिपर छल। फलतः तात्कालीन कथामे लेखकक सुधारवादी प्रवृतिक झलक भेटैत अछि। एकरो कारण छल सामन्तवादी प्रथा आओर कुरीतिक सुत्रधार छलाह उच्च वर्गक प्रबुद्ध वर्ग। एहि कुरीतिक प्रमुख कारण वैवाहिक समस्या अनेकानेक प्रकारक होइत छल, यथा– बाल–विवाह, बहुविवाह, बेमेल विवाह अनेक दृष्टिएँ वयस्क विधा गुण, पंजी प्रथा, रूप आओर धन छल। अतएव उपन्यास आ कथा एहि धुरिपर नचैत–रचैत छल। समाजक आचार–विचार ओ व्यवहार निरन्तर गिरैत जा रहल छल। समाजमे विकट विकृति आवि गेल छल। वैवाहिक समस्या तँ तात्कालिन कथाक

सर्वप्रधान विषय यैह छल। कहि सकैत छी जे कथामे वैवाहिक कुरीति लोकदहन कयल गेल छल। बड़ थोड़ कथा एहि परिधिसँ बाहर भेटैत अछि। कथाकार लोकनि सामाजिक कुरीतिक दुष्परिणामकँ कथाक प्रथम आधार मानि पाठकक संवेदनाकँ जगबैत छलाह। तँ कथा वस्तुकँ करूण कारण बनाओल जाइत छल। लेखकक भावना आदर्शोन्मुख छल। सन् 1935 ई0 पश्चात् कथाकारक ध्यान वातावरण निर्माण, एवं चरित्र–चित्रण दिस सेहो गेलनि। फलतः जाहि कथामे तात्कालीन अन्यो समस्याकँ उपर अनबाक चेष्टा कएल गेल। एहि सामाजिक समस्याक वा कुरीतिक सुधारक रामेश्वर सिंह सामाजिक सामाजिक कुरीतिक सुधारवाक लेल 1910 ई0मे मैथिली महासभाक स्थापना कएलनि। फलतः कालान्तरमे एकर प्रमुख कथाकार भेलाह जयनारायण मल्लिक, हरिनन्दन ठाकुर, सरोज, कांचीनाथ झा 'किरण'क प्रारम्भिक कथा, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क कथा देखल जा सकैछ।

प्रो0 मयानन्द मिश्र आधुनिक कथाक जन्म बीसम शताब्दीक प्रथम चरणमे मुख्यतः संस्कृत, ओ बंगला तथा अंग्रेजीक विभिन्न कथा कृतिक छाया ओ भावुनवादसँ मनैत अछि।"

मैथिली साहित्यक वरेण्य इतिहासकार ओ अंग्रेजी साहित्यक विद्वान प्रो0 जयकान्त मिश्र एवं मैथिली साहित्य इतिहासकार डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश' एवम् प्रो0 रामदेव झा मैथिलीक पहिल कथाक संबंध एकमत अछि जे– "मैथिलीक पहिल मौलिक कथा जनार्दन झा, जनसीदनक 1917 ई0 लिखल "ताराक वैभव्य" के मानैत छथि।"

अन्धविश्वासपर सभसँ जर्बदस्त ठोकर प्रो0 हरिमोहन झा अपन कथामे देलनि। ओ करूणाक कथा एकाधिकारकँ तोड़ैत अछि। ओहि विरोधी रसकँ हास्यमे स्थापित कएलनि। हरिमोहन झा विकृतक व्यंग्य चित्र बना–बना ओकर विरूपताक हँसी उड़बैत ठहक्का मारैत छलाह। जाहि हरिमोहन बाबूक कथासँ हस्सीक फब्बार छूटैत छल। 1954 ईमे "प्रणम्य देवता"क प्रकाशन होइते कथा दिस पाठक रूचि एकाएक बहुत बढ़ि गेल। वैवाहिक विकृतिपर आधारित हिनक उपन्यास छनि। किन्तु बेसी कथा आने सामाजिक समस्यापर आधारित अछि। प्रणम्य देवता, रंगशाला एवं चर्चरीक कथा सभमे ओ छोट–पैघ अनेक समस्या दिस पाठकक ध्यान आकर्षित करैत छथि। जाहिमे समाजपर व्यंग्यक पोछल–पाछल निर्बल रूप भेटैत अछि। अपन वर्ण समाजपर व्यंग्य कएलाक कारणे एकर शक्ति कैक गुण बढ़ि गेल। जाहि कारण हुनक कथा खास परिस्थिति बनौलक चर्चरीक कथामे तँ हास्यक अभाव जकाँ अछि। मुदा ई सभ कथा श्रेष्ठतामे शीर्षस्य स्थान रखैछ। मनमोहन झा करूणाक धार कथाकँ

आधार बनोलनि। अपन कथामे मानवीकरणक वेदनामे धार वहोलनि। उपेन्द्रनाथ झा व्यासक कथामे सामाजिक समस्या, बदला, व्यक्तिक अपन जीवन, ओकर द्वन्द्व तथा संघर्षकेँ उभारलनि। प्रो0 उमानाथ झाक कथामे मानव मौनक सुक्ष्म तन्तुकेँ सोझरेयबामे "अतीत" कथामे सफल भेटैत अछि।

सुधांशु शेखर चौधरीक कथा सभमे सेहो करूणाक बिन्दू भेटैछ। योगानन्द झाक कथो रोमांटिक चलैत प्रसिद्ध अछि। एवं भावुकताक लेल गोविन्द झा कथा विशेष उल्लेखनीय अछि। हिनका कथामे करूणा संवेदना रहैछ। मानवीय सम्बन्ध सुत्र रहैछ। नैसर्गिक प्रेमक दर्शन होइछ। **नागेन्द्रनाथ गुप्त**क कथामे सामाजिक कुरीतिपर चोट करैत कथा भेटैछ। **चन्द्रनाथ मिश्र** अमर'क कथामे हास्य प्रधान ओ सस्मारणक कथा भेटैछ। **मणिपद्मक** कथामे शिल्प सहजताक कारणेँ एवं भाषाक उद्याम प्रवाह भेटैछ। **रामकृष्ण 'वहेड़'** कथामे मध्यवर्गीय विवशता प्रभावकेँ उजागर करैत अछि। आ **शैलेन्द्र मोहन** कथामे मानव ह्रदयक कोमल पक्षकेँ उद्घाटन मे सफल कथा भेटैछ।

बीसम शताब्दीक चारिम पाचम दशक मे मैथिली कथामे प्रोढ़ भए गेल। एकर विकास आरम्भ तँ भैलेक बादमे अवश्य मुदा, गति तीव्र छलैक। समकालीन जटिलता सामाजिक उहापोह, द्वन्द्व एवं अस्तित्वक लेल वर्ग सहर्ष, पारिवारिक विघटन, मैथिली कथामे पूरजोर भेटैछ। समाजक यर्थाथ आ आदर्शक मणिकांचन संयोग भेटैछ। जे आधुनिक मैथिली कथाक प्रतिनिधि संग्रह थीक। **राजकमल चौधरी** मानव मूल्यक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक एवं यर्थाथवादी सेक्स एवं आदर्श वासना आ प्रेम चरित्रपर प्रधान कथा लिखने छथि। **प्रो0 मायानन्द मिश्र**क कथामे पीढ़ीक अन्तर, पिता–पुत्र संबंध कुंठा आक्रोश सामाजिकताक अभावक मार्मिक चित्रण भेटैछ। एवं **मयानन्द मिश्र**क उत्तरकालिन कथामे समाजक नव सामन्तवादक वनावटी चरित्र, भ्रष्ट अधिकारी, राजनीति सामाजिक पतनक, कथा भेटैछ हिनके समकालिन कथाकारमे किसुनजी, सोमदेव, धीरेन्द्र, रमानन्द रेणु, हंसराज, लिलीरे, राजमोहन झा एवं धुमकेत सन नाना कथाकार नाम अग्रणीय भेटैछ।

धुमकेतुक कथा मनकेँ झकझोड़िके राखि दैत अछि। हिनकर कथामे पात्रक निश्छलता, मोहित करैत अछि। **राजमोहन** झाक कथामे नगरीय जीवनमे आपा–धापी मनुष्यक मौनक ओझराहटिमे रमल कथा भेटैछ। **साकेतानन्दक** कथामे नगरक मध्यवर्गीय समाजक दर्पण थीक। **लिलीरेक** कथामे मिथिलासँ दूर रहितो मिथिलाक माटि–पानिक सुगंध मिथिला भाषाक सुबास ओत–प्रोत भेटैछ। वर्तमानमे हिनक कथामे मनोरम, आकर्षक एवं सहज रूपेँ खिस्सा कहनिहार दोसर कथाकार नहि अछि। **लिलीरेक** कथा हुनक

मानस निझरसँ स्वाभाविक रूपेँ वेगमे झहरैत बुझि पड़ैत अछि। कथासँ मिथिलासँ दूर रहितो हुनक कतोक पात्र मैथिली नहियो रहैत सर्वग मैथिली भाषाक सुवाससँ ओत–प्रोत रहैत अछि। वर्तमान कालमे ऐहन मनोरम आकर्षक ओ सहज रूपेँ खिस्सा कहनिहार दोसर नहि अछि। **प्रभास कुमार चौधरीक** कथामे जीवन युग–युग धरि प्रसारित रहत। हिनक शताधिक कथा मैथिली भण्डारक मूल्यवान मणि थिक। हिनकर कथा ढहैत सामन्ती व्यवस्थाक देवलासँ कुदि लोकारण्यमे धुलिमिलि जाइछ। **गंगेश गुंजनक** कथा अज्ञान, कुसंस्कार, आ जकड़नक अन्हारसँ निकलल इजोत, दिस वाट देखबैत अछि। **जीवकान्त** कथामे निम्नवर्गीय मोहमंगक स्वर देखाइत अछि। समान जनकक पीड़ाकेँ मुखरित करैत अछि, उद्योगीकरणक कारणें मानव भावसँ निर्वासित अनुभव करैत अछि। **उपेन्द्र दोशीक** कथामे स्वाभाविकताक पुट भेटैछतँ **छात्रानन्दक** कथामे व्यंग्यात्मक कथाक, प्रसिद्ध कथाकार छथि।

"उपरोक्त कथा सभसँ मैथिली कथा–साहित्यक आधार राखल गेल छल आ एहि क्रममे मैथिली कथाक उत्पत्ति सेहो भए गेल जे विषय–वस्तु आन कथा–छल विषय–वस्तु आन कथा–साहित्यक अवश्य छल मुदा, कहबाक रीति मौलिक छल आ इएह मौलिकता आगू आबि मौलिक रचनाक श्रोत बनल। एकर बादे मैथिली मौलिक कथाक रचना होमय लागल छल। ई स्थिति मैथिली कथा–साहित्यमे 1930 ई0क बाद बनल छल। 1930 ई0क बाद जे कथा लिखल जाय लागल से अंग्रेजीक लघु कथाक अनुरुप 'नव कथा वा आधुनिक गल्पक निकटक वस्तु छल हास्यव्यंग्यमूलक लोककथा, मुख्यतः गोनूझाक हास्य–कथा, जकरा नगेन्द्र कुमरक पिता कुशेश्वर कुमर संकलित कएल 'गोनू विनोद'क नामसँ।"

डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मैथिली साहित्यक इतिहासमे आधुनिक मैथिली कथा साहित्यक पृष्ठभूमिक पहिल उत्थानक काल 1930 ई0 धरि मानने छथि। एहि पोथीमे तीन गोटेक नाम गनओने छथि जे पहिल उत्थान कालक कथाकार छथि। ओ सभ छथि पं0 श्यामानन्द झा, पं0 बल्लभ झा आ कांचीनाथ झा किरणजी किरण जीक रचना वीरप्रसून आ वीर बालक अछि जे नेना सभक लेल उपयोगी अछि। हिनक एक टा रचना आओर अछि जे दीर्घ कथा अछि। ओ रचना अछि–चन्द्रग्रहण। एहि समयक रचना सभक विशेषता छल जे ओ कथा सभ उपदेशात्मक होइत छल। एक टा विशेष उद्देश्यकें ध्यानमे राखि'क रचना कयल जाइत छल।

आधुनिक मैथिली कथा साहित्यक पृष्ठभूमिक दोसर उत्थान काल 1930 ई0सँ 1935 ई0 धरि मानल गेल अछि। मैथिली कथाक दिशा एहि

समयमे स्पष्ट होमय लागल छल। एहि समय रचना सभ 'मिथिला' 'मिहिर'मे प्रकाशित होइत छल। एहि समयक रचनाकारमे प्रमुख छलाह–हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज', जय नारायण मल्लिक, वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु, काली चरण झा, महानन्द मिश्र, जगदीष मिश्र। "वस्तुतः आधुनिक रीतिक गल्पक विकास 'विभूति'क प्रकाशनक पश्चात भेल आओर तें आधुनिक गल्पक इतिहास 1935क पश्चात आरम्भ होइत अछि। डॉ0 जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु' कँ पाश्चात्य–रीतिक सर्वप्रथम गल्पकार मानैत छथि। परन्तु कथाक कलात्मक सौष्टवक दृष्टिएँ 'विभूति' मे प्रकाशित गल्प सभ जाहिमे अधिकांश उपनामहिसँ अछि, आधुनिक कथा–शिल्पक निकटक वस्तु थिक। एहिमे अधिकांश रचना भुवनजीक अनुज लोकनिक बाबू जलेश्वर सिंह ओ श्री भीमेश्वर सिंहक थिकैन्हि, किछु भुवनजीक सेहो होएतैन्हि। अतः सिंहबन्धुकं समन्वित रूप आधुनिक लघु–कथाक आदि–कथाकार कहि सकैत छी। सिंहबन्धुमे अपन वास्तविक नामसँ श्री भीमेश्वर सिंह सभसँ अधिक गल्प प्रकाशित कएल। हिनक साओनक राति 'विभूतिमे प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ रचनाक रुपमे विद्वान लोकनिक द्वारा सम्मान्य भेल छल। इएह श्री भीमेश्वर सिंह तीन गोट मार्मिक लघुकथा 'आश्चर्य', आशीर्वाद ओ 'बीआहल' 1980क 'मिथिलामिहिर'मे छपल।"

रौद–छाया आ शून्य कथाक कथाकार भुवन जी छथि। ई दूनू कथा हिनक प्रसिद्ध कथा अछि। भगवतीक पाश्चात्य रुपक कथाकार जलेश्वर सिंह छथि। ई कथा मौलिक रूप लिखल गेल छल। भीमेश्वर सिंहक कथा विसर्जन आ साओनक राति अछि जे उत्कृष्ट कोटिक रचना अछि। आमक गाछी आ पंचपरमेश्वर ईहो दूनू कथा उत्कृष्ट कोटिक कथा अछि आ एहि कथाक कथाकार छथि कुमार गंगानन्द सिंह। हिनके बिहाड़ि कथा अछि जाहिमे ग्रामीण जीवनक चित्रण कयलाह अछि। प्रणम्य–देवता, रंगशाला, तीर्थयात्रा, चर्चरी, एकादशी आ खट्टर काकाक तरंगक लेखक प्रो0 हरिमोहन झा छलाह जे मैथिली कथाकेँ लोकप्रिय बनाओल। ससरफानी आ फलेना जामुन कथा–संग्रहक कथाकार नगेन्द्र कुमर छथि जे प्रो0 हरिमोहन झाक शैलीमे रचना करैत छलाह। कबुला कथाक कथाकार छथि बाबू लक्ष्मीपति सिंह जे व्यंग्यात्मक शैलीमे कथा कहैत छलाह। प्रबोध नारायण चौधरीक बीछल फूल अछि। चोर कथाक कथाकार प्रो0 रंगनाथ झा छथि। अश्रुकण कथा संग्रहक कथाकार मनमोहन झा छथि जे बड़ लोकप्रिय भेल छलाह। ई भावुक कथाकार छलाह। योगानन्द झाक आमक जलखरी आ उड़ैत वंशी कथा संग्रह प्रकाशित अछि। ई रोमांच आ श्रृंगारिकताक कथाकार छलाह। रुसल जमाय

आ बिहाड़ि व्यास जीक उत्कृष्ट रचना अछि। विडम्बना कथा–संग्रह सेहो हिनक प्रकाशित कृति अछि। रेखाचित्र कथा संग्रह उमानाथ झाक प्रकाशित अछि जाहि मध्य ओहि समय धरिक नवीनतम पाश्चात्य टेकनिक प्रयोग कयलाह अछि। साहित्य अकादमीसँ पुरस्कृत पोथी अतीत कथा–संग्रह 1984 ई0 मे प्रकाशित हिनक दोसर कथा संग्रह अछि। दामोदर ठाकुर आ अमरनाथ ठाकुर नाम सेहो उल्लेख होइत अछि पाश्चात्य गल्प– शैलीकै मैथिलीमे प्रयोग करबाक दृष्टिसँ। पांचजन्य आ रूपगर्विता गोविन्द चौधरीक, जल समाधि कथा–संग्रह चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क, लाटरी आ पियास डॉ0 बी0 झाक, भाङक लोटा कथा–संग्रह, आगि मोम आ पाथर, चन्द्रबिन्दु प्रो0 मायानन्द मिश्रक, प्रतिनिधि कथा–संग्रह ललितक, ललका पाग, निरमोही हमर बालम राजकमलक, सतंजा कथा–संग्रह आ जे किने से हंसराजक, खड़िकाक हिस्सक प्रो0 इन्द्रानन्द सिंहक, एक खीरा तीन फाँक कथा–संग्रह, मनुक सन्तान, धरती माता कथा संग्रह डॉ0 रामदेव झाक, कचोट कथा–संग्रह, त्रिकोण कथा–संग्रह, अन्तहीन आकाश कथा संग्रह रमानन्द रेणुक प्रकाशित कथा संग्रह सभ अछि जे मैथिली कथा–साहित्यक उत्थान आ विकासमे अपन अपन बहुमूल्य सहयोग देने अछि। हिनका लोकनिक अतिरिक्त जे पहिले कथा लिखि मैथिली कथाक नींव रखलाह, हुनको सभक कथा एहि समयमे प्रकाशित भेल छल। एहिमे कोन महल नाम रखबै किरण जीक, फोटो आ नकटा शिकार व्यास जीक, चारि आना ऊँचा नन्दन जीक, सरला विकल विशारद जीक, चारि अहो रात्रि ओ एक दिन यात्री जीक, ठेस आ समय जे ने देखाबए बाबू लक्ष्मीपति सिंहक फूल दीदी आ एक सिंहारा एक चाय शेखर जीक, ब्रह्माक शाप प्रो0 हरिमोहन झाक, बारह वर्ष बाद मनमोहन झाक कृतिक नाम लेल जाइत अछि। एहि क्रममे व्रज किशोर वर्मा, पं0 श्री गोविन्द झा, डॉ0 शैलेन्द्र मोहन झा, रामकृष्ण झा 'किसुन', प्रो0 प्रबोध नारायण सिंह, प्रो0 रमाकान्त झा, भवनाथ झा, प्रो0 धनेश्वर झा, राधाकृष्ण झा 'बहेर', सोमदेव, कृष्ण गोविन्द झा, गोविन्द माधव झा, कल्पना शरण, जयानन्द, आदिक नाम सेहो अबैत अछि, जिनक रचना मैथिली कथा–साहित्यकें विकासमे गति प्रदान कयलक अछि।

नोकरीक खोज आ भुतही पाकडि गोविन्द जीक, संयोग आ पट्टीदार वर्मा जीक, चुड़ैल आ रक्तदान रमाकान्त जीक, सिंदूर आ प्रारब्ध शैलेन्द्र मोहन जीक, खड़िकाक हिस्सक आ प्रेरणा इन्द्रानन्द सिंह जीक, विन्दोबाबू प्रबोध बाबूक एहन कथा अछि जाहि मध्य युगीन समस्याक चित्रण कयल गेल अछि। एहि कथा सभक मध्य प्रगतिशीलता संवेदनात्मक रहल अछि। सामाजिक आ

वैयक्तिक दुनू पक्षक चित्रण कयल गेल अछि।

युग–छाया डॉ0 बी0 झाक पहिल कथा अछि जे संचयिता कथा–संग्रहमे प्रकाशित भेल छल। लाटरी आ पियास दू गोट कथा–संग्रह 1970ई0मे प्रकाशित करबओने छलाह। एहि कथा सभमे कथा वस्तुकें स्वभाविक रीतिएँ विकसित करैत चरम सीमाक स्वाभाविक बिन्दु धरि पहुँचयलाह अछि। हिनक दसटक्की नोट कथा मैथिली कथाक इतिहासमे पराप्राकृतिक रीतिक नवप्रयोग दृष्टिसँ उल्लेखनीय अछि। लीली गोविन्द माधव झाक, भजुआ कृष्ण गोविन्द झाक, प्राकृतिक खेलओना भवनाथ झाक, शिवगंगा आ एक आना उग्रानन्द सिंहक कथा सेहो मैथिली कथा–साहित्यक विकासमे महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि।"

कृति राजकमलक आ एकटा चम्पाकली एकटा विषधर कथा–संग्रह राजकमलक मृत्युपरांत मैथिली कथा–साहित्यमे आयल छल। रमजानी, जंगल आ रास्ता ललीत जीक, द्रौपदी बीसम शताब्दी आ अंगा सोमदेवक, फूलक दाम, भालसरिक माला आ छिद्र हंसराजक, गाड़ीक पहिया आ मनुक्खक जीवन मायानन्दक. गंगा संतुष्ट छलीह जयानन्दक, रंग आ एक टधार नोर रेणु जीक कथा सेहो मैथिली कथा–साहित्यक विकासमे महत्वपूर्ण योगदान देने अछि। झोटिया पाकड़ि, अगिलग्गी आ ढकर–ढ़कर बहेड जीक, धर्मात्मा आ मामी धीरेश्वर जीक, संकल्पक आधार आ प्रेम नित्य थिक किशुन जीक कथाक योगदान कथाक विकासमे सेहो भेल अछि। 1960क बाद अनेको कथाकारक उदय भेल छल। ओ कथाकार सभ अपन–अपन रचनासँ कथा–साहित्यक विकासमे योगदान दैत रहलाह अछि आ पूर्ववर्ती कथाकार लोकनि सेहो नव–नव कथाक सृजन करैत रहलाह अछि। प्रो0 हरिमोहन झाक शैली हास्य व्यंग्यपर आधारित कतेको कथाकार लोकनि कथाक सृजन करैत छलाह। एहन कथा लिखनिहारमे सरहोजिक विवाह, सारक संस्कार कथाक कथाकार केदार मणि झा, जीवन–बीमा आ धूकल केराक कथाकार रुपकान्त ठाकुर, पुनर्मूषिको भवः आ श्रीमति जीक रेडियो कथाक कथाकार राम कृपाल चौधरी 'राकेश', तोतालालक पुरहिताइ कथाक कथाकार मिहिर जी, निरसू झाक सवारी कथाक कथाकार विषपायी जी, जँतपिस्सी प्रेम आ शल्यचिकित्सा कथाक कथाकार झामलाल जीक नाम लेल जाइत अछि।

मलिक : एक संस्मरण आ गप्पक कथाक कथाकार रमेश, स्वप्न आ प्रेमक प्रतिमा कथाक कथाकार रवीन्द्र नाथ ठाकुर, धोखा आ दूरक ढोल कथाक कथाकार प्रो0 चन्द्रकान्त झा, प्रेमवासना आ दिन–चक्र कथाक

कथाकार गंगानाथ झा, करजान आ अंकुरा कथाक कथाकार शिवशंकर मिश्र 'नृसिंहन' भोरसँ पहिने आ बुढबा पीपर ओ कठ–खोदही कथाक कथाकार मधुकर गंगाधर, मोहरी आ हरियर इजोत कथाक कथाकार बलराम, एक अपराध : एक दण्ड आ आयल पानि : गेल पानि कथाक कथाकार प्रभास कुमार चौधरी, ठेहिआयल मोन : शीतल छाहरि आ सिहरैत ठोर : ढरकैत गुलाब डारिपर कथाक कथाकार गंगेश गुंजन, जिनगीक काँट आ नव खाँता नव डारिपर कथाक कथाकार साकेतानन्द, बिरड़ो आ कुलटा कथाक कथाकार धूमकेतु, भीड़ महक एकसर यात्री आ अन्तराल कथाक कथाकार राजमोहन झा, अपराधी कथाक कथाकार सुभद्रा कुमारी पाथ्या, आगिक छाउर, हाहि कथाक कथाकार जीवकान्त आदि कथाकारक नाम मैथिली कथाकेँ कलात्मक सुक्ष्मता प्रदान करबाक कारण महत्व देल जाइत अछि।

1970 ई0 बादमे सेहो नव–नव कथाकार लोकनि मैथिली कथा–साहित्य मध्य अपन–अपन कथा लए उपस्थित भेल छलाह। एहिमे डर आ गुण्डा कथाक कथाकार सुभाषचन्द्र यादव, मनटिक्का आ हस्ताक्षर कथाक कथाकार रमानन्द 'रमण', हमर अभाग सन्दर्भ कथा आ अपन धरती कथाक कथाकार कमल आनन्द, हस्ताक्षर आ दण्ड कथाक कथाकार श्यामानन्द ठाकुर, जरद्गव आ एकटा प्रेयसी चाही कथाक कथाकार छत्रानन्द सिंह, पछबरिया सूर्य आ उद्वेग कथाक कथाकार बुद्धिनाथ मिश्र, लिखलाहा आ आत्मवाणी कथाक कथाकार उपेन्द्र दोषी, असक आ दंश कथाक कथाकार सुकान्त 'सोम', खोखैत हमर नेना कथाक कथाकार शौकत खलील, भव आ यात्रा कथाक कथाकार ललितेश मिश्र, संबंध आ कॉट कथाक कथाकार उदयचन्द्र झा 'विनोद', पिता नव परिवेशमे आ मेघक पार एकटा सूर्य कथाक कथाकार महाप्रकाश, मनुष्यक उदेश आ भेंट कथाक कथाकार मार्कण्डेय प्रवासी, गाममे दू दिन कथाक कथाकार उपेन्द्र झा आदिक नाम लेल जाइत अछि। हिनका लोकनिक मैथिली कथा–साहित्यमे अपूर्व योगदान छन्हि। हिनका लोकनिक योगदानसँ मैथिली कथाक विकास तीव्र गतिसँ भेल छल।"

मैथिली कथा–साहित्यमे महिला लोकनिक उदय होइत रहल अछि आ अपन कथा कृतिसँ मैथिली–कथा–साहित्यक भंडारकेँ भरैत रहलनि अछि। मैथिली कथा–साहित्यमे महिला लोकनिक योगदान सेहो कम नहि अछि। महिला कथाकार लोकनिक सेहो अपन कथा कृतिसँ मैथिली कथाक विकासमे योगदान देलिह अछि। महिला कथाकार लोकनिमे दुविधा, चन्द्रमुखी आ बिहड़ि अयबासँ पहिने कथाक कथाकार लिली रे, सीमन्तिनी, सिनेह, एकपेरिया कथाक कथाकार श्रीमती उषा किरण खान, छुटैत लोक कथाक कथाकार

श्रीमती निरजा रेणु, पवितरी आ माधव हम परिणाम निराशा कथाक कथाकार विभारानी आदि नाम अग्रगण्य अछि।

1975 ई0क बाद पुरान कथाकार आ नव कथाकार लोकनि सेहो अपन–अपन कृतिसँ मैथिली कथाकेँ विकासमे योगदान दैत रहलाह अछि। ओ कथाकार सभ छथि जे इतिहास नहि बनत आ खोहक अन्हार कथाक कथाकार विनोद बिहारी लाल, काठ आ एक टा बात कहू मोना दाइ कथाक कथाकार श्री विभूति आनन्द, एडभांस बुकिंग आ अंतरंग कथाक कथाकार फजलुर रहमान हाशमी, अपराध ककर? कथाक कथाकार धीरेन्द्र नाथ मिश्र, सात टा लहास कथाक कथाकार तारानन्द 'वियोगी', उपरौंछ कथाक कथाकार श्री प्रदीप बिहारी, झरकल जिनगी कथाक कथाकार नरेश कुमार 'विकल', बबूर कथाक कथाकार देवशंकर नवीन आदि। एहि कथाकार लोकनिमे किछु गोटेक कथा–संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छलनि। स्मृति कथा संग्रह रमानाथ मिश्र 'मिहिर' क, नव घर उठय पुरान घर खस्य कथा संग्रह प्रभास कुमार चौधरीक अन्हार–इजोत कथा संग्रह गंगेश गुंजनक, धूकल केरा कथा संग्रह रुपकान्त ठाकुरक, ठेहिआयल मोन शीतल छाहरि कथा संग्रह गौरी मिश्रक, एक आदि एक अंत कथा संग्रह राजमोहन झाक जखन तखन कथा संग्रह उदयभानू सिंहक प्रकाशित भेल छल।

1970 ई0क बाद कथा–संग्रह प्रकाशनमें गति आयल छल जाहिमे लघुकथा (मिथिलाक्षरमे) आ योगक संगी कथा संग्रह प्रो0 तंत्रनाथ झाक जल–समाधि कथा संग्रह चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क एक युग बाद कथा संग्रह रमानाथ मिश्र 'मिहिर'क, झूठ–साँच कथा संग्रह राजमोहन झाक, कचोट आ त्रिकोण कथा संग्रह रमानन्द रेणुक, सतंजा आ जे किने से कथा संग्रह हंसराजक, लाटरी आ पिआस कथा–संग्रह डॉ0 बी0 झाक, एकसरि ठाढ़ कदम तर रे आ सूर्य गलि रहल अछि कथा संग्रह जीवकांतक, मोमक नाक कथा–संग्रह रुपकांत ठाकुरक प्रमुख रूपें उल्लेख कयल जाइत अछि। एहि समयमे कतेको नव कथाकार लोकनि सेहो अपन कथा संग्रह प्रकाशित करबओने छलाह, जाहिसँ मैथिली कथाक विकासमे आओर विशेष गति आयल छल। एहिमे ओ इजोरिया कथा संग्रह कमलानन्द झा श्व्यथितश्क, काजर कथा संग्रह सुधाकर चौधरीक, पाथरक नाव कथा संग्रह रमेष नारायणक, डोकहरक आँखि कथा संग्रह छत्रानन्द सिंहक, सम्पूर्ण स्वीकार आ आकाशदीप कथा संग्रह शशिकांतक, लतमारा कथा संग्रह धीरेन्द्र 'धीर' क, अभिन्न कथा संग्रह डॉ0 इन्द्रकान्त झाक नाम सर्वोपरि अछि। क्षणिक (अत्यंत छोट कथा संग्रह) चाहि एकटा द्रौपदी आ कबकब कथा संग्रह अमरकांत झाकेँ

हास्य–व्यंगक कथा अछि। एहि कथा सभसँ ई मैथिली साहित्यमे प्रतिष्ठित भेल छलाह। एक बटे दू कथा संग्रहसँ मंत्रेश्वर झा आ काँट–कूस कथा संग्रहसँ छत्रानन्द सिंह हास्यव्यंग्य कथाकारमे परिभाषित होइत छथि। उपरोक्त कथाकारक अतिरिक्त अगुरवान कथा संग्रह धूमकेतुक, हथकरी बाजि उठल कथा संग्रह डॉ0 इन्द्रकान्त झाक, हिलकोर कथा संग्रह देवक, प्रवेष कथा संग्रह श्री विभूति आनन्दक, पानक पात कथा संग्रह गौरीकान्त झा 'कान्त'क, दरबार–कथा कथा संग्रह डॉ0 दिनेश कुमार झाक उबिआइत आखर कथा संग्रह चित्रलेखा देवीक, पश्चाताप कथा संग्रह श्यामा झाक नवांकुर आ मृगतृष्णा कथा संग्रह धीरेन्द्रनाथ मिश्रक सेहो प्रकाशित भेल छल।"

'1980–81 ई0क पश्चात व्यक्तिगत कथा–संग्रहक प्रकाशनमे विशेष गति आएल। प्रो0 उमानाथ झाक 'अतीत' (साहित्य अकादेमी द्वारा 1987 ई0मे पुरस्कृत). योगानन्द झाक 'उड़ैत वंशी', किषुनक 'स्वयंवर', राजकमलक 'एकटा चम्पाकली एकटा विशधर' श्री मायानन्द मिश्रक 'चन्द्रविन्दु', श्री रमानन्द रेणुक 'अन्तहीन आकाशक अतिरिक्त श्री धीरेश्वर झा धीरेन्द्र क कुहेश आ किरण', शतरुपा ओ मनु' एवं पझाइत घूरक आगि, जीवकान्तक 'वस्तु', श्री राजमोहन झाक 'एकटा तेसर', डॉ0 शिवशंकर झा 'कान्त'क चंचल कावेरी, डॉ0 रामदेव झाक 'धरती माता', श्री सुभाषचन्द्र यादवक 'घरदेखिया, डॉ0 कमलकान्त झाक 'नियुक्ति पत्र', श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद'क जाँत', डॉ0 नीता झाक 'फड़िच्छ' श्री रमानाथ मिश्र, 'विनोद'क 'जाँत', श्री चन्द्रेशक 'जिंनगीक भूगोल', 'नचैत पृथ्वी' ओ ललकी किरिन', श्री प्रभास कुमार चौधरीक 'कथा–प्रभास', श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क 'तोरा संगे जयबौ रे कुजबा', प्रो0 मनमोहन झाक 'घर घुरैत काल', डॉ0 मदनेश्वर मिश्रक 'प्रत्यक्ष', श्रीमती सुशीला झाक एकटा कथा संग्रह 'अन्तर्द्वन्द्व' डॉ0 शेफालिका वर्माक 'एकटा अकाश' प्रभृति प्रकाशित भेल। सुप्रसिद्ध साहित्यकार किरणजीक 'कथा किरण' सेहो 1988 ई0क उल्लेखनीय प्रकाशन थिक।"

मैथिली कथा–साहित्यक विकासक गति दिनपर दिन बढ़ैते रहल अछि। पुरान प्रतिष्ठित कथाकार सभ नव–नव कथाक कथा–संग्रह प्रकाशित करबैते रहैत छलाह संगहि नव–नव कथाकार सेहो द्रुत गतिएँ कथा लेखनक कार्य करैत रहैत छलाह। एहि होरमे महिला कथा–लेखिका सेहो किनकोसँ पाछु कहाँ छलीह। ओहो सभ अपन नव–नव कथा प्रस्तुत कऽ रहल छलीह। 1990 सँ 2025 ई0 धरि चौदह गोट कथा संगह साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भ' चुकल अछि। ई कथा–साहित्य आ कथाकारक लेल गौरवक बात अछि। साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत पोथी आ कथाकारक नाम निम्न प्रकारेँ

अछि–

पोथीक नाम	कथाकारक नाम
अतीत	उमानाथ झा
प्रभासक कथा	प्रभासकुमार चौधरी
सामाक पौती	पं0 श्री गोविन्द झा
उचित वक्ता	गंगेश गुंजन
आइ–काल्हि–परसू	राजमोहन झा
गणनायक	साकेतानन्द
ऋतम्भरा	डॉ0 नीरजा रेणु
काठ	श्री विभुति आनन्द
सरोकार	श्री प्रदीप बिहारी
गंगापुत्र	मनमोहन झा
खिस्सा	डॉ मनमोहन झा
बड़का काकी हॉटमेल डॉट कॉम	श्याम दरिहर
परिणीता	वीणा ठाकुर
गाछ खगल अछि	कमल कान्त झा

उपरोक्त सूची तँ मात्र साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत पोथीक कथा संग्रह अछि। ओना कथाक रचना दिनपर दिन बेसीए भऽ रहल अछि। कथा–साहित्यक विकासमे मैथिली पत्र–पत्रिकाक योगदानकेँ बिसरल नहि जा सकैछ अछि। मैथिलीक अल्प जीवी पत्र–पत्रिकामे कथा छपिते रहल अछि आ अखनो जे पत्र–पत्रिका मैथिलीमे छपैत अछि ओहिमे पुरना कथाकार लोकनिक कथा तँ छपिए रहल अछि संगहि नव कथाकार लोकनिक कथा सेहो छपैत रहैत अछि। अखनो मैथिलीक साहसी कथाकार लोकनि छथि जे अपन कथा–संग्रह प्रकाशित करबा रहल अछि। मैथिली कथाक विकास निरन्तर भऽ रहल अछि आ आगू सेहो होइत रहल। ई हमरा पूर्ण विश्वास अछि।

बीसम शताब्दीक अपेक्षा एकैसम शताब्दीक कथाक विशेष महत्व अछि। कारण एकर रचनाक पृष्ठभूमिए व्यापक अछि तँ एकर प्रभाव बहुत गंहीर अछि। समाजमे दिनानुदिन बढ़ैत संकुलता, ऋजुता, संघर्ष, संवेदना शून्यता, स्वार्थपरकता आदि यथार्थक कथ्य ओ शिल्पक समुचित सामंजस्यक आधारपर ग्रहणशील बनेबामे आजुक कथाकार लोकनि पूर्ण सक्षम भेलथिन। दोसर दिस

महिला कथाकार सभक रचनाशीलता कथाकेँ एकटा नव आयाम देने अछि। तेसर भाषाक स्तरपर सेहो बहुत उदारता आयल अछि जत' मानक मैथिलीक संग–संग अंगिका, बज्जिका, ठेठी भाषामे कथोपकथन कथासभकेँ आर जीवंत करि रहल अछि। पूर्वसँ मैथिली साहित्यपर जातिनिष्ठ होयबाक आरोप लागैत छल आ संगहि समाजक विशाल वर्गक उपेक्षाक आरोप सेहो। ताहि आरोपसँ मुक्त करयबामे एकैसम शताब्दीक कथा विशेष सक्षम भेल अछि।

ई तथ्य उल्लेखनीय जे बीसम शताब्दीक अनेक कथाकार जेना गंगेश गुंजन, प्रदीप बिहारी, रामानन्द रेणु, विभूति आनन्द, पं0 गोविन्द झा आदि एखनो धरि सक्रिय छथि। एकैसम शताब्दीक लेखिकासभमे उषा किरण खानक 'अजनाम', नीरजा रेणुक 'अनचिन्हार' विभारानीक 'कौआ हंकनी', ज्योत्सना चन्द्रमक, स्वप्न गर्भा' आशा मिश्रक थाहैत स्वप्न, कमला चौधरीक 'समय संकेत', नीता झाक 'पृथा', 'देशकाल', 'एकटा शीतल देश' आदि कथासभ स्त्री–विमर्श, संस्कृति विमर्शक संगहि लेखिका लोकनि मानवीय जीवनक विविध पक्षक चर्चा अपन कथा आ कथा संग्रहसभमे कयने छथिन।

एम्हर पंडित श्यामानन्द ठाकुरक सत्ताइस गोट कथाक संग्रह 'हमहुँ जेबै पंजाब' आ बाइस गोट कथा संग्रह 'हथौड़ी वाली भौजी' बेस ख्याति पऔलक।

जगदीश प्रसाद मण्डलक नवम्बर– 2025 तक लगभग 1053 कथा नब्बे गोट कथा संग्रहमे प्रकाशित भेल अछि एवं 'गामक जिनगीक कथा संग्रहपर' 2011 ई.मे टैगोर पुरस्कार भेटलनि।

श्याम दहिड़हरे सेहो एकैसम शताब्दीमे 'बड़की काकी डॉट कॉम' उपन्याससँ युवा पीढ़ीक बीच लोकप्रिय छथि। हिनक कथा 'सरिसो मे भूत' विशेष आशा जगऔने अछि। मिथिलेश कुमार झाक टीस, ऋषि बशिष्ठक 'माटिपरक लोक' आ 'सुफारि जतरा', डॉ. सुधाकर चौधरीक ''तीन रंग तेरह चित्र', डॉ. यशोदानन्दक 'जुआन चित्कार', रमेशक 'हखल', सुभाष चन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत', धीरेन्द्र नाथ मिश्रक 'समाचार कथा' आदि एहन कथा आ कथा संग्रह सभ अछि जे मैथिली कथाक उज्ज्वल भविष्यक संकेत करैत अछि।

समसामयिक कथाक सभसँ नम्हर चुनौती अछि पठ्यताक अभाव। अहि तरहें दूरदर्शन, इलेक्ट्रॉनिक मीडियाक प्रसार भेल अछि ओहिमे प्रिंट मीडिया हाशियापर आबि गेल अछि। नीक–नीक कथाकेँ प्रकाशनक अभावक दंश झेलऽ 'पड़ि रहल अछि। कहल जाइत अछि जे मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे तँ

शामिल कऽ लेल गेल, राष्ट्रीय स्तरपर नव–नव प्रयास सेहो भऽ रहल अछि, मुदा मैथिली साहित्य आ भाषा अपने घर–आंगनमे उपेक्षित अछि। साहित्य पढ़निहारे नहि तँ रचनिहार की करथिन। 'कापर करू सिंगार पिआ मोर आन्हर रे....।' तैयो पाठक जामातेक आइ जोहल जा रहल अछि आ विश्वास अछि जे मैथिली भाषाक पाठक एहि दिस उन्मुख होयथिन।

निष्कर्ष रूपें कहल जा सकैछ जे मैथिली कथाकार हारल नहि छथि, हुनकर कथाक प्रवृत्ति व्यष्टिसँ समाष्टि दिस बढ़ि रहल अछि। सामाजिक समस्यासँ व्यापक राष्ट्रीय समस्यापर कथामे विचार करब, व्यक्तिगत सुख–दुःखक आधारपर ओहि स्थानपर संपूर्ण मानव समाजक पीड़ाकँ अभिव्यक्त करब वा तकर निदानक संकेत करबामे आजुक कथा आ कथाकार लागल छथि। मैथिलीक साहित्यिक रूप–रेखमे मैथिली साहित्यक समालोचक डॉ0 जयधारी सिंह, अद्यतन मैथिली कथा साहित्यक क्रमबद्ध विकास ओ समृद्धिपर अपन मंतव्य एहि रूपेँ प्रकट करैत रहैत छथि– "मैथिली कथा साहित्य आब पैंच उधारपर नहि जीवित अछि, एकर अपन छैक विशय–वस्तु, एकर अपन छैक कथा वस्तु वा प्लॉट, एकर अपन छैक कथाक–कथानक आ कथोप–कथन आ ई विषय–वस्तु नहि छैक चरित्र–चित्रण आव पाछुआएल जाइत अछि। आजूक कथामे पात्रक अन्वेषण नहि यर्थाथक अन्वषण अछि।"

अन्तमे मैथिली कथाकार लोकनिसँ अनुरोध जे अपन लेखनिमे समाजक यर्थाथक चित्रण संग मंगलमय उद्देश्यक पोथीमे लागि जाथि जाहिसँ कथा साहित्यक सम्पूर्ण विकास निरन्तर बनल रहत।

प्रस्तुत संग्रहक क्रमशः सभ कथाक अवलोकनः

'दूटा पाइ'

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा 'दूटा पाइ' आधुनिक मैथिली समाजक आर्थिक यथार्थ, श्रमिक जीवनक संघर्ष आ मातृत्वक मर्मस्पर्शी संवेदनाक गद्यात्मक दर्पण अछि। कथामे फेकुआ नामक युवकक माध्यमसँ लेखक ओहि वर्गक कथा कहैत छथि जे गरीबी, श्रम आ परदेशी जीवनक बीच अपन अस्तित्व खोजि रहल अछि।

हलहोरि गामक फेकुआ दिल्लीमे होमयवला रैलीमे भाग लेबाक बहानासँ अपन भाग्य अजमाबए लेल निकलैत अछि। संगमे केवल माइक देल

रोटी आ दू सेर चूड़ा- ई प्रतीकात्मक वस्तु ओकर जीवनक सादगी, अभाव आ मातृत्वक अटूट बंधनक प्रतीक बनि जाइत अछि।

दिल्ली पहुँचिकऽ ओकर भेँट ममियौत भाय रतनासँ होइत अछि, जे ओकरा शहरक जीवनक कटु यथार्थसँ अवगत करबैत अछि। फेकुआ कपड़ा सिलाइ कारखानामे नोकरी पबैत अछि, मुदा दू हजार टाका दरमाहा पाबैत-पाबैत आत्म-संघर्षक जालमे फँसि जाइत अछि।

माएकेँ लिखल पत्रमे ओ अपन सफलता आ स्वप्नक समाचार दैत अछि, जकरा पढ़िकेँ माए रामसुन्नैर गर्व आ चिंता दुनू अनुभव करैत छथि। एहि पत्राचारक माध्यमे गाम आ शहर, स्नेह आ दूरी, भावना आ यथार्थक द्वंद्व सजीव रूपमे उभरि अबैत अछि।

कथाकार देखबैत छथि जे गरीबक जीवनमे मानवीय मूल्य बहुते बेर 'दूटा पाइ' धरि सीमित भऽ जाइत अछि। फेकुआक संघर्ष केवल आर्थिक नहि, आत्म-सम्मानक खोज सेहो अछि। रतनाक चेतावनी- "दिल्लीमे सभसँ पैघ कारबार मनुक्खक खरीद-बिक्रीक अछि" –कथा-कथ्यक सामाजिक सारकेँ उद्घाटित करैत अछि।

अन्ततः नोकरी छुटलापर फेकुआक आत्मबोध ओकरा फेर गाम दिस मोड़ैत अछि, जतए माइक स्नेह आ अपन माटिक गंध ओकर थकानमेटा दैत अछि।

'दूटा पाइ'क भाषा लोकजीवनक सहज लयमे रचल अछि। संवाद-प्रधान शैली पात्रक अंतरमन खोलि दैत अछि। कथा अंततः ई संदेश दैत अछि जे मनुष्यक असल मूल्य पाइमे नहि, ओकर श्रम आ स्नेहमे निहित अछि।

'अर्द्धांगिनी'

जगदीश प्रसाद मण्डल द्वारा रचित कथा- 'अर्द्धांगिनी' एक महत्वपूर्ण कथा थिक। एहि कथामे गृहस्थ जीवनक भीतरी यथार्थ, स्त्री-पुरुष सम्बन्धक समभाव आ उत्तरार्ध जीवनक आत्मबोधपर आधारित एक संवेदनशील चित्र प्रस्तुत भेल अछि। ई कथा बाह्य घटनासँ बेसी, भीतरक संवाद आ आत्मचिन्तनपर केन्द्रित अछि, जतए लालकाकी आ पढ़ुआकाकाक मनोभूमि क्रमशः उद्घाटित होइत अछि।

कथाक मूल भाव सहजीवनक परिपक्वता अछि। लालकाकी नित्यक काज-धंधा, पूजा-पाठ आ घरक व्यवस्थापनसँ घरक धुरी सम्हारैत छथि। हुनकर अन्तर्मनमे पतिक जिद्दपन आ असंवेदनशीलताक प्रति कने शिकायत अवश्य अछि, मुदा हुनकर लेल घर आ परिवार सर्वोपरि अछि। दोसर दिस पढ़ुआ काका- सेवानिवृत्तिक कगारपर पहुँचने सरकारी शिक्षक- अपन भूमिका, आत्ममूल्य आ समाजक बदलैत व्यवहारपर विमर्श करैत छथि। विद्यालयसँ सेवा-मुक्तिक सूचना हुनका भीतर गहींर रिक्तता दैत अछि, जे हुनका अर्द्धांगिनी दिस आकर्षित करैत अछि। ओ स्वीकार करैत छथि- “सभ अंगक दूरी समान अछि। विधाताक बनौल जिनगीक अदहा भाग अहाँ छी।”

कथा धीरे–धीरे लालकाकीक दैनन्दिन दिनचर्यासँ आरम्भ होइत अछि, जकर समांतर पढ़ुआकाकाक कार्यालयी अनुभव आ सेवानिवृत्तिक उपरान्त आत्म-अन्वेषण चलैत रहैत अछि। यद्यपि कथा पत्र–शैलीमे नहि अछि, तथापि आत्म–संवादक प्रवाह एक विशेष विन्यास दैत अछि। रस्तामे पढ़ुआकाका ‘नौकरी बनाम जीवन’पर सोचैत घर घुमैत छथि, जतए लालकाकीक सहज उपस्थिति ओहू सोचमे सन्तुलन आ स्थायित्व दैत अछि। ओ गृहिणी मात्र नहि, घरक नैतिक केन्द्र छथि- जे पतिक ‘तनदेही’ बनिकऽ ‘जीवनदेही’ धरि हुनका प्रेरित करैत छथि। लालकाकीक श्रमशीलता, मितव्ययिता, खेती–बारी, गाछी–बँसवारीसँ निर्मित आत्मनिर्भर गृह–व्यवस्था कथाक समाजशास्त्रीय धरातलकेँ समृद्ध करैत अछि।

विषय–वस्तु स्पष्ट अछि- गृहस्थ जीवनमे स्त्री–पुरुषक समान गरिमा, उत्तरदायित्वक साझेदारी आ अहंकारक शमन। कथाक मूल उद्देश्य ई अछि जे विवाह सामाजिक बन्धन मात्र नहि, एक–दोसरेक पूरक बनि जीबैक संवेदनशील प्रयास थिक- जे दुर्बल क्षणमे सहारा बने, आ सफलता–विफलता दुनूमे सहभागी बनै। कथाकार सामान्य पात्रद्वारा जीवनक असाधारण सत्य उद्घाटित करैत छथि- पेंशन, वेतन आ प्रशासनिक उलझनसभक बीच मानवीय स्नेह आ कृतज्ञता सबसँ पैघ मूल्य रूपेँ प्रस्तुत होइत अछि।

शिल्प संवाद–प्रधान आ आत्म–संवादमूलक अछि। भाषा सहज, लोकबोलीक लयमे- अनावश्यक अलंकारसँ मुक्त। ‘तनदेही’, ‘हृदयक बेथा’, ‘अहाँ छी’ जकाँ पद–बंध कथाक भावनात्मक उत्कर्षकेँ उजागर करैत अछि।

निष्कर्षत: 'अर्द्धांगिनी' जीवनक उत्तरार्धमे सहचर्य, अपनापन आ कृतज्ञतासँ भरल गूढ़ दार्शनिक अभिव्यक्ति थिक। कथा ई सन्देश दैत अछि जे बिना भावात्मक समता आ सहजीवनक आत्मीयता, मानवीय जीवन अधखड़ुआ रहैत अछि।

'इमानदार घुसखोर'

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा 'इमानदार घुसखोर' आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था, मध्यवर्गीय जीवनक असमंजस, आ नैतिक द्वंद्वक गहन चित्रण प्रस्तुत करैत अछि। कथा सतही रूपेँ भ्रष्टाचारपर केंद्रित प्रतीत होइत अछि, मुदा मूल रूपेँ ई मनुष्यक अन्तर्मनक संघर्षक कथा छी- एक एहन संघर्ष, जतए 'इमानदारी' आ 'परिवारिक जिम्मेदारी' बीच निरन्तर टकराव चलैत अछि।

मुख्य पात्र चुनमुन बाबू (सुरेन्द्र प्रसाद) न्यायालयक प्रथम श्रेणीक जज छथि- स्वभावे इमानदार, कर्मठ, आ आत्म-संयमी। समाज हुनका 'घूसखोर' कहैत अछि, मुदा विरोधाभास एहि ठाम अछि जे ओ अपन घूसखोरीक भीतरो एक प्रकारक 'नैतिक इमानदारी' बनौने रखने छथि। ओ 'इमानदार घुसखोर' छथि, कारण ओ निर्णयक न्यायिक संतुलन नहि तोड़ैत छथि- दुनू पक्षसँ पाइ लैत छथि, मुदा निर्णय सदैव ओहि पक्षमे करैत छथि, जाहि पक्षमे न्याय होमाक चाही। ई चरित्रात्मक व्यंग्यक माध्यमसँ लेखक 'व्यवस्था'क नैतिक विडम्बना उजागर करैत छथि।

कथाक सामाजिक धरातल मध्यवर्गीय परिवारक आर्थिक दबाबपर आधारित अछि। चुनमुन बाबूक पत्नी सुनयना एक संवेदनशील, मुदा विवश गृहिणी छथि। ओ देखैत छथि जे पतिक इमानदारीसँ परिवारक आवश्यकतासभ पूर्ण नहि भऽ रहल अछि- बेटीसभक बिआह, शिक्षाक खर्च, आ सामाजिक प्रतिष्ठा सभ महत्वपूर्ण अछि। एहि दबाबक कारण चुनमुन बाबूक भीतर नैतिक द्वंद्व उत्पन्न होइत अछि- एक दिस माता-पिताक देल संस्कार, आ दोसर दिस परिवारक व्यावहारिक माँग। एहि द्वंद्वक बिन्दुपर कथा 'इमान'क पारंपरिक परिभाषाकेँ तोड़ि दैत अछि।

कथाक विषय-वस्तु तीन स्तरपर विकसित अछि- व्यक्ति आ समाजक संघर्ष, नैतिकता आ यथार्थक द्वंद्व आ आधुनिक जीवनक आर्थिक विडम्बना।

चुनमुन बाबू जखन कहैत छथि- "जे काजमे तेजी आनब तखने ने काज मुहथैर लग पहुँचत।" –तखन ई कथन केवल एक जजक नहि, बल्कि सम्पूर्ण समाजक आत्मस्वीकृति बनि जाइत अछि।

कथाक भाषा आ शिल्प दार्शनिक व्यंग्यसँ भरल अछि। लेखक सुसंस्कृत गद्यक संग-संग लोकभाषिक सहजता सेहो बनौने रहैत छथि। संवाद जीवन्त, मनोवैज्ञानिक गहिराइसँ युक्त, आ कथा क्रमशः आत्मवृत्तात्मक स्वरूप ग्रहण करैत अछि।

निष्कर्षस्वरूप, 'इमानदार घुसखोर' केवल न्यायालयक व्यवस्थापर व्यंग्य नहि, बल्कि समाजक नैतिक पतनक दर्पण अछि। जगदीश प्रसाद मण्डल एहि कथा द्वारा एक गूढ़ सन्देश दैत छथि जे ईमानदारी ओझराइत नहि अछि, केवल जिनगीक दबाबसँ ओकर परिभाषा बदलि जाइत छैक।

'अकाल'

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा 'अकाल' मिथिलाक ग्रामीण जीवनक गहींर यथार्थ, स्त्री-श्रमक पीड़ा आ समाजक पारस्परिक करुणा-सहानुभूतिक सजीव दस्तावेज अछि। सुगापटीवाली आ बौकी दीदीक संवादक माध्यमसँ लेखक अभावक बीच मानवीय गरिमा आ संवेदनशील सहजीवनक रूप उघारैत छथि।

कथा भिनसुरक दृश्यसँ शुरू होइत अछि। सुगापटीवाली माथपर छिट्टा-पथियाक गैंठ लऽ बौकी दीदीक अँगनामे अबैत छथि। प्रश्न-उत्तरक सहज प्रवाहमे धीरे-धीरे ओ अपन जीवनक यथार्थ खोलैत छथि। आम नै फड़ल, टोकरी बनबाक काज ठप भऽ गेल, आ पेटक जोगार संकटमे अछि। ई अवस्था केवल आर्थिक कठिनाइ नहि, बल्कि सामाजिक असुरक्षाक प्रतीक सेहो बनि जाइत अछि। 'बड़का अकाल' शब्द एतए मौसमक अभाव नहि, जीवनक सूखलपन आ मनुष्यक संघर्षक प्रतीक अछि। बौकी दीदी ओकर पीड़ा बुझैत छथि, अपन स्नेहसँ सांत्वना दैत छथि आ अन्तमे ओहि विश्वासपर पहुँचैत छथि जे समय फेर मुड़ि आबत।

कथाक मूल भाव ई अछि जे अभावक बीच मनुष्यक धैर्य, करुणा आ श्रमक प्रति श्रद्धा बनल रहए तँ जीवनक धरती सदिखन उपजाउ रहैत अछि। 'अकाल' केवल खेतक समस्या नहि, बल्कि रोज़गारक अभाव, अवसरक कमी आ समाजक असमानतासँ जुड़ल स्थायी पीड़ा छी। सुगापटीवाली श्रमक प्रतीक छथि- ओ जीवनक संघर्षमे हारि नै मानैत छथि। बौकी दीदी करुणा आ सहानुभूतिपूर्ण समाजक प्रतीक छथि, जे आघातक समयमे अपन स्नेहक अँचल पसारैत छथि।

कथा आर्थिक, सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक तीनू स्तरपर 'अकाल'क अर्थ व्याख्यायित करैत अछि। आर्थिक दृष्टिसँ अकाल तखन उत्पन्न होइत अछि जखन श्रमक मूल्य मौसमी बनि जाइत अछि। सामाजिक रूपसँ तखन, जखन समाजक भीतर सहानुभूति घटैत अछि। आ मनोवैज्ञानिक स्तरपर अकाल तखन उभरैत अछि जखन आशा आ आत्मबल कमजोर पड़ैत अछि। मण्डल एहि तीनू स्तरकेँ एक सूत्रमे बान्हि कथाकेँ गूढ़ संवेदनात्मक धरातलपर पहुँचबैत छथि।

कथा संवादप्रधान अछि। लोकबोलीक शब्द- जकाँ 'छिट्टा-पथिया', 'सगतोड़ा' आ 'भतझँक्का' –ग्रामीण परिवेशक सहज सजीवता दैत अछि। भाषा सरल, सरस आ भावपूर्ण अछि। कथा प्रश्न-उत्तरक स्वाभाविक लयमे विकसित होइत अछि, जतए शब्दक सादगी आ भावना काव्यात्मक गहिराइ प्राप्त करैत अछि।

'अकाल'क उद्देश्य स्पष्ट अछि- अभावक मारि खाली खेतक माटिपर नहि पड़ैत अछि, बल्कि समाजक भीतर बसल संवेदनशीलतापर सेहो। मिथिलाक नारी—चाहे ओ सुगापटीवाली होथि वा बौकी दीदी—अपन श्रम, स्नेह आ धैर्यसँ कठिन समयमे मानवीय गरिमाकेँ जीवित राखैत छथि।

अन्ततः 'अकाल' दुःखक कथा नहि, बल्कि जीवनक जिजीविषाक कथा अछि। ई देखबैत अछि जे जखन सभ दिस सूखाड़ पड़ि जाइत अछि, तखनो मनुष्यक भीतर स्नेहक बूँद बचल रहैत अछि। मण्डलजीक दृष्टिमे अकाल केवल मौसमक संकट नहि, विश्वासक परीक्षा छी, आ मिथिलाक लोक एहि परीक्षामे सदिखन सफल रहल अछि।

‘पसेनाक धरम’

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा ‘पसेनाक धरम’ मिथिलाक ग्रामीण जीवनक श्रम-संस्कृति, नैतिक अनुशासन आ पीढ़ीगत मूल्य-संघर्षक सजीव दर्पण अछि। ई कथा केवल खेतक काजक बखान नहि करैत अछि, बल्कि श्रमक दर्शन प्रस्तुत करैत अछि, जतए ‘पसेना’ मेहनतक प्रतीकसँ आगू बढ़िकऽ मनुष्यक धर्म बनि जाइत अछि।

कथा जून मासक तप्त बिहानसँ शुरू होइत अछि। बर्खा नहि भेल अछि, खेत सूखल अछि, मुदा शिवपूजन काका आ सुगिया काकी अपन मेहनतिपर भरोसा कऽ बीघाभरि खेतमे चास लगाबैकेँ तैयार छथि। दोसर दिस हुनकर बेटा सोनेलाल, जे राति भरि ऑरकेस्ट्रा देखैत रहल, अखनो तक सुतले अछि। ई विरोधाभास आधुनिक समाजक बदलल मूल्य-दृष्टिकोणपर गहींर व्यंग्य करैत अछि- एक दिस माता-पिताक अटूट श्रम आ कर्तव्यबोध, दोसर दिस नव पीढ़ीक लापरवाही, आलस्य आ भोगवादी प्रवृत्ति। एहि टकरावक माध्यमसँ कथा समाजक नैतिक संकटक सटीक चित्रण करैत अछि।

शिवपूजनक व्यक्तित्व मिथिला किसानक अनुशासनक प्रतीक अछि। ओ मानैत छथि जे खेती बिना श्रम, श्रम बिना पसेना, आ पसेना बिना जीवन असम्भव अछि। हुनकर दृष्टिकोणमे पसेना केवल शरीरसँ टपैत बून नहि, बल्कि आत्माक श्रद्धा छी। ‘पसेनाक धरम जे नहि बुझत, ओ मनुक्ख जीवनक मर्म नहि बुझत।’ एहि माध्यमसँ लेखक श्रमक नैतिक आ आध्यात्मिक मूल्य स्थापित करैत छथि।

कथामे पीढ़ीगत संघर्ष सेहो उभरि अबैत अछि। शिवपूजनक पीढ़ी खेत आ धरतीसँ अपन अस्मिता जोड़ने अछि- धरती हुनका लेल पूज्य थिक। ओकरा विपरीत, सोनेलालक पीढ़ी मनोरंजन, सुविधा आ दिखावटी जीवनक मोहमे फँसि गेल अछि। एहि द्वंद्वक माध्यमसँ लेखक बदलैत सामाजिक चेतनाक प्रश्न ठाढ़ करैत छथि।

सुगिया काकी कथामे मौन साक्षी छथि। ओ गृहकार्य, खेतक जलखै आ भावनात्मक संतुलन दुनू सम्हारैत छथि। हुनकर मौन मिथिला नारीक धैर्य, जिम्मेदारी आ त्यागक प्रतीक बनल अछि। कथाक पृष्ठभूमि- रौदी मौसम,

बर्खाक अभाव आ सूखल धरती- किसानक संघर्षक यथार्थ धरातल प्रस्तुत करैत अछि। मुदा, निराशा मध्यो शिवपूजनक आस्था अडिग रहैत अछि, जे जीवनमे कर्मक अविचल विश्वासक प्रतिमूर्ति बनि जाइत छथि।

कथाक भाषा विशुद्ध मिथिलांचली अछि। कथा संवादप्रधान, यथार्थपरक आ प्रतीकात्मक अछि। 'पसेना', 'खेत', 'रौदी', 'दमकल' आ 'ऑरकेस्ट्रा' जकाँ प्रतीक शब्द समाजक संक्रमणक गहींर संकेत दैत अछि। विशेष रूपेँ पंक्ति- "पसेना तँ ओ शीतल बून छी जे कुवृत्तिकेँ धोइ जेते बढ़ैत जाइए से तेते धोइत-धुआइत अपन धरम धारण करैए।" –कथा आ दर्शनक सार प्रस्तुत करैत अछि।

'पसेनाक धरम' अन्ततःमेहनतक महिमा, नैतिक जिम्मेदारी आ जीवनक अनुशासनक कथा छी। शिवपूजनक चरित्र किसानक दृढ़ता आ ईमानदारीक जीवंत प्रतीक बनि जाइत अछि। लेखक स्पष्ट संदेश दैत छथि- धरती आ मनुष्य दुनू एक समान नियमपर चलैत अछि। जखन धरती पसेना पबैत अछि, तखन जीवन उपजैत अछि। मेहनत मनुष्यक असल धर्म छी, आ पसेना ओकर प्रार्थना। जे एहि धर्मसँ विमुख होइत अछि, से जीवनक मर्म बुझबाक योग्यतासँ वंचित रहि जाइत अछि।

'लाही'

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा 'लाही' एक साधारण किसानक यथार्थ जीवनक कथा भले प्रतीत हो, मुदा एहिमे ग्रामीण समाजक आर्थिक-सांस्कृतिक चेतना, श्रमक मूल्य, आ नैतिक विवेकक गहींर पड़ताल दृष्टव्य अछि।

कथाक मूल पात्र 'जागे भाय' एक किसान छथि, जे जगन्नाथ यात्रासँ घूमिकऽ अपन खेत देखैत छथि। ओ पबैत छथि जे खेतमे 'लाही' नामक कीटक लागि गेल अछि, जे फूल चाटि लेने अछि। फलस्वरूप सम्पूर्ण फसल नष्ट भऽ गेल अछि। एतय 'लाही' केवल कीटक नहि, बल्कि उपेक्षा, असावधानी, आ आत्मभ्रमक प्रतीक बनिकऽ उभरैत अछि। किसानक एक टा भूल- 'शुद्ध वस्तुकेँ दूषित नहि करबाकऽ अंधविश्वास-सम्पूर्ण परिश्रमकेँ नष्ट कऽ दैत अछि।

कथा संवादक रूपमे आगाँ बढ़ैत अछि। रघू प्रश्न पूछैत छथि, आ जागे

भाय उत्तरक माध्यमसँ किसान जीवनक गूढ़ दर्शन प्रस्तुत करैत छथि। जागे कहैत छथि- 'लछमी-पात्र' जहिना मनुष्यमे अछि, तहिना खेतोमे अछि। खेतक समुचित देखरेख, समयपर उपचार, आ श्रम ओकर पूजा थिक। जँ समयपर देखरेख नहि होए, तँ 'लछमी' रूसि जाइत छथि। एहि दृष्टिकोणसँ कथा केवल खेती धरि सीमित नहि रहि जाइत अछि, बल्कि सम्पूर्ण जीवनक नैतिक शुचिता आ व्यक्तिगत जिम्मेदारीपर केन्द्रित भऽ जाइत अछि।

'लाही' ई सन्देश दैत अछि जे पवित्रता आ नैतिकता केवल भावना नहि, बल्कि व्यवहारक अनुशासन होबाक चाही। सही समयपर उचित उपाय करब अधर्म नहि, बल्कि कर्तव्य थिक। किसान जँ समयक संग नहि चलत, तँ प्रकृतिक संग संवाद टूटि जाइत अछि। कथा एहि टूटबाक गूढ़ दार्शनिक रूपक प्रस्तुति करैत अछि।

कथाक भाषा विशुद्ध मिथिलांचली अछि। संवाद सहज, स्वाभाविक आ जीवन्त अछि। कथाकार प्रतीकक माध्यमसँ दर्शन प्रस्तुत करैत छथि- 'लाही' कीटक नहि, बल्कि चेतना-संपन्न जीवनक त्रुटिक रूप थिक।

अन्ततः कथा एहि निष्कर्षपर पहुँचैत अछि जे श्रम आ समय जीवनक लछमी-पात्र अछि। जे ओकरा पूजा नहि करैत अछि, से अपन भाग्यक 'लाही' स्वयं पैदा करैत अछि। एहि अर्थमे 'लाही' एक सशक्त प्रतीक कथा थिक- जे सामाजिक चेतना, कृषि-संस्कृति आ नैतिक जीवन-दृष्टिक गूढ़ समन्वय प्रस्तुत करैत अछि।

'पुरान साड़ी'

जगदीश प्रसाद मण्डलजी केर कथा 'पुरान साड़ी' घरेलू जीवनक सूक्ष्म अनुभव, पड़ोसियापन आ सामुदायिक सहजीवनक गहिराईक सजीव दस्तावेज छी। कथा आरंभ सुधनी काकीक निधनसँ होइत अछि, मुदा केन्द्रबिंदु मृत्यु नहि, बल्कि परिवार, टोला-समाज, रीति-नीति आ स्त्री-जीवनक अदृश्य श्रम पर पड़ल रोशनी छी। लेखक मृत्युकेँ अंतक प्रतीक नहि, बल्कि जीवनक निरंतरता, परंपरा आ संस्कारक पुनर्स्मरणक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि।

भोरक खबर, पान खएबाक झिझक, शोकक सामुदायिक व्यवस्था आ भीड़क बीच उठैत आत्म-प्रश्न कथा मे गहिर मानवीय संवेदना जोड़ैत अछि।

कथा गौरीक दृष्टिसँ विस्तार पबैत अछि, जतए जेठ महिनाक तपिश, ध्वनि-प्रदूषण आ संस्कारक सामूहिक 'मशीनरी' समाजक जटिल यथार्थकेँ उजागर करैत अछि। गौरी सोचैत अछि जे मर्यादा आ संस्कारक नाम पर जे सामूहिक आडंबर चलैत अछि, ओ सचमुच श्रद्धासँ कतबा जुड़ल अछि? एहि आत्ममंथनक बीच कथा अपन नैतिक केन्द्र धरि पहुँचैत अछि, जतए लोकरीति आ मानवीय संवेदनाक बीचक द्वंद्व स्पष्ट होइत अछि।

पात्र-चित्रण अत्यंत यथार्थपरक आ संवेदनशील अछि। सुभद्र भाय, गौरी, सुधनी काकी आ जेठकी पुतोहु—ई सभ पात्र समाजक भिन्न-भिन्न परतक प्रतिनिधित्व करैत छथि। विशेष रूपसँ सुधनी काकीक पसेना तँ ओ शीतल बूँद छी, जे कुवृत्तिकेँ धोइत- धुआइत अपन धरम धारण करैत अछि। 'पुरान साड़ी' नव पुतोहुकेँ देनाइ मात्र उपहार नहि, बल्कि लोक-नैतिकता, त्याग आ स्त्रीक आत्मसमर्पणक प्रतीक बनि जाइत अछि। एहि परंपरामे ओ पीढ़ीक मानसिकता झलकैत अछि, जतए स्त्री अपन इच्छाकेँ दबा परिवारक मर्यादा बनिकऽ रहि जाइत अछि। ई व्यवहार एक दिस प्रेमक प्रतीक छी, दोसर दिस स्त्रीक मौन पीड़ाक द्योतक सेहो।

कथाक भाषा सरल, आत्मीय आ विशुद्ध मिथिला बोलीसँ संपृक्त अछि। लेखक 'पान', 'बाँस', 'खड़ौआ', 'मचान' जेकाँ छोट-छोट लोक-प्रतीकक माध्यमसँ समाजक श्रम-संस्कृति आ परस्पर सहयोगक भावना कैँ प्रभावशाली ढंगसँ प्रस्तुत करैत छथि। 'पुरान साड़ी' एतए मात्र वस्त्र नहि, बल्कि किफायत, साझेदारी आ आत्मीय देखभालक प्रतीक बनिकेँ अबैत अछि।

कथानक मूल भाव समाजक नैतिक अनुशासन, स्त्री-जीवनक त्याग आ सामुदायिक सहकारक पुनर्मूल्यांकन पर आधारित अछि। लेखक देखबैत छथि जे संस्कार तखनहि सार्थक होइत अछि, जखन ओ सहानुभूति आ वास्तविक सहभागितासँ जुड़ल होए। स्त्रीक निरंतर श्रम आ त्याग, जकरा समाज 'स्वतःसिद्ध नियति' मानैत अछि, ओकर नव मूल्यांकन आवश्यक अछि।

'पुरान साड़ी' शोकक पृष्ठभूमिपर रचित एक गहिर सामाजिक व्याख्या छी। ई कथा घर-परिवारक अर्थ-नैतिकता, स्त्री-संवेदना आ सामुदायिक व्यवहारक दर्पण बनि जाइत अछि। सादगी, सूक्ष्म दृष्टि आ आत्मीय

अभिव्यक्तिक कारण ई कथा मैथिली गद्यक एक उत्कृष्ट उदाहरण बनि जाइत अछि- मृत्युक आवरणमे जीवनक वास्तविक सार उजागर करैत।

'संकट'

जगदीश प्रसाद मण्डलक लिखल कथा 'संकट' ग्रामीण जीवनक बहुआयामी यथार्थक सजीव अभिव्यक्ति प्रस्तुत करैत अछि। कथा राधाकान्त आ कृष्णकान्त नामक दू पुरान मित्रक चालीस वर्षक बाद भेंटसँ शुरू होइत अछि। यद्यपि आरंभिक संवाद मित्रता-आधारित अछि, मुदा कथा धीरे-धीरे व्यक्तिगत सीमासँ निकलि समाज, कृषि आ नैतिक मूल्यक संकट दिस घूमि जाइत अछि।

राधाकान्तक वाक्य 'संकटमे जिनगी पड़ि गेल अछि' सम्पूर्ण कथा-भावक केंद्रबिंदु बनि जाइत अछि। ई संकट केवल व्यक्तिगत नहि, ओ किसान जीवन, श्रम आ असहायतासँ जुड़ल सामूहिक पीड़ाकेँ चित्रित करैत अछि। खेती-बारीमे नीलगायक उपद्रव, भूमि-उपजाक विनाश आ शासनक उदासीनता ओहि सामाजिक विडम्बनाकेँ उघारैत अछि, जतए मनुष्य 'हाथ रहैत निहत्था' भऽ जाइत अछि।

कृष्णकान्त, एक संवेदनशील मित्र, सुनबाक गुण रखैत छथि, मुदा समाधानक सामर्थ्यसँ वंचित छथि। ओ आधुनिक मनुष्यक प्रतीक छथि, जे आत्मीयता तँ रखैत अछि, मुदा सामाजिक असमानता दूर करबाक सामर्थ्य नहि। श्यामा, एक गृहिणीक रूपमे, स्त्री-संवेदना आ गृह-नैतिकताकेँ प्रतिनिधित्व करैत अछि। राधाकान्तक टिप्पणी "मित्र! मित्रणीक चाह पवित्र छैन मुदा अपने चाह अपवित्र भऽ गेल अछि।" स्त्री-पुरुष संबंधक भीतरक असहजता आ सामाजिक मर्यादाक टकरावक प्रतीक बनि जाइत अछि।

कथाक भाषा सहज, प्रवाही आ लोकजीवनसँ जुड़ल अछि। 'चाह', 'लोटा-जल', 'डेरा', 'नीलगाय' जकाँ प्रतीक वस्तु भरि-संवेदनात्मक सांस्कृतिक अर्थ वहन करैत अछि। विशेषतः 'नीलगाय' पर्यावरणीय आ सामाजिक असंतुलनक संकेत अछि, जखनकि 'चाह' आत्मीयता आ नैतिक द्वंद्वक प्रतीक बनैत अछि।

'संकट' एक गहींर सामाजिक संदेश दैत अछि कि मानव सभ्यता जखन

श्रम, प्रकृति आ संबंधक आदर नहि करैत अछि, तखन संकट अपरिहार्य बनि जाइत अछि। राधाकान्तक असहायता, कृष्णकान्तक संवेदना आ श्यामाक मौन समेकित रूपेँ समकालीन ग्रामीण जीवनक दारुण यथार्थ प्रस्तुत करैत अछि।

निष्कर्षतः 'संकट' केवल व्यक्तिगत कथा नहि, अपितु सम्पूर्ण समाजक विवेक, संवेदना आ मूल्य-पतनक सशक्त दस्तावेज अछि। मण्डलजी अपन यथार्थदर्शी दृष्टिकोणसँ किसानक संघर्ष, मानवीय द्वंद्व आ ग्रामीण जीवनक बदलैत रूपकेँ सजीव भाषा आ गहींर करुणा संग चित्रित करैत छथि।

'खिलतोड़ भूमि'

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा 'खिलतोड़ भूमि' आधुनिक ग्रामीण जीवनक यथार्थ, किसानक संघर्ष आ परंपरा-चेतनाक जीवंत प्रतीक अछि। कथा तिलसंक्रांतिक भोरसँ शुरू होइत अछि, जे धार्मिक प्रसंगक संग-संग ग्रामीण जीवनक सांस्कृतिक आ सामाजिक धरातल सेहो तैयार करैत अछि। मुख्य पात्र फुकनक माध्यमसँ मण्डलजी ग्रामीण समाजक श्रम, विश्वास आ नैतिकतापर गहींर दृष्टि दैत छथि।

फुकन एक साधारण, परिश्रमी किसान छथि। हुनकर भोला व्यवहार आ आत्मविश्वासक भीतर किसानक संघर्ष, असुरक्षा आ टूटल सामाजिक विश्वास झाँकैत अछि। तिलसंक्रांतिक दिन कोदारि कीनबाक दृश्य यद्यपि सामान्य लगैत अछि, मुदा लेखक एहि प्रसंगक माध्यमसँ ग्रामीण अर्थनीति, मानवीय संबंध आ भरोसाक स्वभाव उद्घाटित करैत छथि। जीयालाल काका अनुभवक प्रतीक छथि, ओ बजारक छल-प्रपंचक बीच नैतिकता आ ईमानदारीक जीवित प्रतिमा बनिकऽ उपस्थित छथि। कथा फुकनक भोलापनसँ शुरू भऽ शिवसुन्दर भायक व्यावहारिक सोच धरि पहुँचैत अछि। शिवसुन्दर परदेशी भऽ गेल छथि, मुदा अपन पुरुखाक भूमि 'गाछी-कलम'केँ उपजाउ खेतमे बदलबाक योजना बना रहल छथि। ओ कार्यक जिम्मेदारी फुकनकेँ देल जाइत अछि। एहि बिंदुपर कथा अपन मूल भाव तक पहुँचैत अछि, मृत भूमिकेँ पुनः उपजाउ बनेनाइ समाजक पुनर्जीवनक प्रतीक बनि जाइत अछि। 'खिलतोड़ भूमि' केवल परती माटि नहि, बल्कि सुन्न पड़ल समाजक प्रतीक अछि, जे श्रम, विश्वास आ निष्ठासँ पुनः जीवंत बनाओल जा सकैत अछि।

कथा खेती, श्रम, नैतिकता आ सहयोगपर आधारित अछि। 'कोदारि' श्रमक प्रतीक अछि, 'भूमि' अस्तित्वक आधार, आ 'फुकन' श्रमिक आत्मा। शिवसुन्दरक वाक्य 'खिल तोड़ि जमीनकेँ उपजाउ बना उपजा लेब' कथा केंद्रक सार प्रस्तुत करैत अछि। ई केवल खेतक उपजाक बात नहि, बल्कि मृतप्राय सामाजिक चेतनाक पुनर्जागरणक प्रतीक अछि।

मण्डलजीक भाषा मिथिलाक विशुद्ध बोलीसँ रंगाएल अछि। संवाद सहज, बिंब गहींर, आ कथ्य पूर्ण रूपेँ जीवंत। धार्मिक, सामाजिक आ दार्शनिक तत्व एक-दोसरामे गुंथि गेल अछि, जे कथाकेँ गामक अनुभवसँ सार्वभौमिक अर्थ प्रदान करैत अछि।

'खिलतोड़ भूमि' श्रम, विश्वास आ मानवतापर आधारित पुनर्जागरणक कथा अछि। ई खेतक उपजाक संग-संग समाजक उपजाउ चेतनाक कथा सेहो अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलजी स्पष्ट संदेश दैत छथि कि जखन धरि माटिक प्रति प्रेम, श्रमक प्रति निष्ठा आ आपसी विश्वास जीवित रहत, तखन धरि समाजक परती भूमि पुनः उपजाउ बनल रहत। कथा ग्रामीण जीवनक गहींर दार्शनिक बोधक एक कलात्मक आ जीवंत अभिव्यक्ति अछि।

'मुराम जगह'

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा ट्यूटोरियल-कक्षाक एक सामान्य दृश्यसँ शुरू होइत अछि, मुदा शीघ्रे ई शिक्षा, अध्यात्म, समाज आ व्यवहारक एक जीवंत संगममे बदलि जाइत अछि। तेतर आ गुलटेन स्नातक केर विद्यार्थी छथि, जखनकि दीनानाथ बाबू दर्शन पढ़बैत छथि। एतए पढ़ाइ केवल परिभाषा नहि रहि जाइत अछि, बल्कि जीवनक सूत्र बनि जाइत अछि। अध्यात्म-दर्शनक प्रश्न उठैत अछि आ उत्तर भेटैत अछि, मनुष्य अपन कर्मसँ सुखो पबैत अछि आ दुखो; अपन अनुभवक मंथनहि असल दर्शन छी। शिक्षा पहिने आत्मबोध दैत अछि, तखनहि बाह्य संसारक बोध संभव होइत अछि।

एहि आत्मदृष्टिसँ कथा सामाजिक धरातल दिस मुड़ैत अछि। जाति आ सम्प्रदायक संकीर्ण सोच समाजक प्रवाहकेँ अन्हारमे धकलैत अछि। एहि संदर्भमे दीनानाथ बाबू लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ स्मरण करबैत छथि- ओ साधक, जे

उन्नैसमी शताब्दीमे रौदी, अकाल आ पानिक संकटक बीच लोकजागरणक कार्य केलनि। ओ गाम-गाम घूमि टोली बनौलनि, पोखरि खोधबौलनि आ लोककेँ पानिक व्यवस्था हेतु प्रेरित केलनि। ओ धर्मक सीमित परिधिसँ आगू बढ़ि मानवता आ सहयोगक चेतना जगौलनि।

एहि स्मरणक माध्यमसँ लेखक लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ केवल लोककथाक पात्र नहि, बल्कि एक जनसेवक पुरुषक रूपमे प्रतिष्ठित करैत छथि। जनमानसमे गोसाईंकेँ एखनहुँ अवतार, देवता आ अदृश्य शक्ति रूपेँ मानल जाइत छथि, मुदा लेखक एहि सोचमे सुधारक आग्रह केलनि अछि। ओ देखबैत छथि जे गोसाईंक महत्ता चमत्कारिक स्वरूपमे नहि, बल्कि ओहि सामाजिक चेतनामे निहित अछि, जे ओ लोकहितक लेल जगौलनि। मण्डलजी आडंबर आ अंधभक्तिसँ दूर रहि, ओहि लोकहितैषी पुरुषक यथार्थ योगदानकेँ स्मरण करबाक प्रेरणा दैत छथि।

तेतर आ गुलटेन मिथिलाक विद्यार्थी समाजक दू पक्षक प्रतिनिधित्व करैत छथि। एक जातिगत, दोसर सम्प्रदायगत सोच लऽ कक्षा अबैत छथि। दीनानाथ बाबू हुनका कक्षा सँ बाहर, खुलल मैदाने लऽ जाइत छथि, जतए सिद्धान्त अनुभव बनि जाइत अछि। हुनकर शिक्षण-पद्धति बीज आ अंकुरक रूपमे अछि। पहिने सूत्र, तकर पछाइत उदाहरण। पाठ रटन्ता नहि रहि जाइत अछि, बल्कि व्यवहारिक अभ्यास बनि जाइत अछि। विद्यार्थी धीरे-धीरे बुझैत छथि जे अध्यात्म तखने सार्थक अछि, जखन ओ जनजीवनमे उतरैत अछि।

कथाक भाषा विशुद्ध मिथिला-लयमे गूँजल अछि। लोक-बिंब, कृषि-रूपक आ कक्षा-संवादक संतुलन कथाकेँ माटिक गंध दैत अछि। ‘रौदी’, ‘पोखरि’, ‘गाछी’ आ ‘मुराम जगह’ शब्द मात्र दृश्य नहि, बल्कि चेतनाक भूगोल बनि जाइत अछि। भूमि जखन उपजाउ बनैत अछि, तखन समाजो विचारमे उपजाउ बनि जाइत अछि। ई कथा एहेन रूपककेँ साकार करैत अछि।

अंततः कथा कहैत अछि जे शिक्षा जखन आत्मबोध, श्रम आ सामाजिक समरसता सँ जुड़ैत अछि, तखन ओ मुराम जगह बनैत अछि। अर्थात् ओ ठाम जतए विद्यार्थी विचारक खराम राखिकेँ समाजक मार्ग साफ करैत अछि। ‘मुराम जगह’ एहि अर्थमे केवल कथा नहि, बल्कि मिथिला समाजक अंधविश्वास, संकीर्णता आ जड़ परंपराक विरोधमे उठल बौद्धिक स्वर थिक।

'सागवानक बागवानी'

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा 'सागवानक बागवानी' मिथिलाक ग्रामीण चेतना, श्रम-संस्कार, आत्मनिर्भरता आ नैतिक बोधक समेकित रूप प्रस्तुत करैत अछि। ई कथा केवल गाछ लगेबाक प्रक्रिया नहि, बल्कि मनुष्य जीवनक उर्वरता, समयक सदुपयोग आ श्रमक दार्शनिक मूल्यपर एक गम्भीर विमर्श अछि।

कथा साँझुक बैसारसँ शुरू होइत अछि, जतए भविसलाल काका, बसन्तलाल भाय, बतहू आ रीतलालक बीच जीवनक अनुभव, पछताबा आ कर्मक सार्थकतापर गम्भीर वार्ता होइत अछि।

भविसलाल काका कर्मनिष्ठ, अनुशासित आ आत्मनिर्भर व्यक्ति छथि। हुनकर जीवनक प्रत्येक क्षण श्रमक साधनाक रंगमे रंगाएल अछि। ओ जनैत छथि जे श्रमे जीवनक मेरुदण्ड थिक। दोसर दिस, बसन्तलाल भाय पछताबा व्यक्त करैत छथि जे बीस वर्ष पूर्व सागवानक बागवानीक योजना अपन जीवनमे उतारि नहि सकलाह। हुनकर पछताबा केवल आर्थिक नहि, बल्कि चेतनाक स्तरपर आत्मग्लानि बनि जाइत अछि; एहेन ग्लानि, जे आधुनिक समाजक निष्क्रियता आ आरामपरस्तीकेँ अनावृत करैत अछि।

कथा आगाँ बढ़ैत दार्शनिक स्वर ग्रहण करैत अछि। भविसलाल काका नेपालक सागवान जंगलक अनुभव दैत स्पष्ट करैत छथि जे धरती आ मनक संबंध एक समान अछि; जँ माटि उपजाउ अछि तँ विचारो फलदायी बनैत अछि। हुनकर वाक्य 'सागवानक बागवानी केवल गाछक खेती नहि, जीवनक खेती अछि' कथ्यक दार्शनिक केन्द्र बनि जाइत अछि। एहि सूत्रमे मण्डलजी श्रम, धैर्य आ समयक त्रिवेणीकेँ जीवनक आधार मानैत छथि।

भविसलालक कर्मशीलता आ बसन्तलालक पछताबा जीवनक दू ध्रुव बनि जाइत अछि; एकटा सृजनशीलता, दोसर निष्क्रियता। रीतलाल आ बतहू एहि संवादक भीतर सामूहिक विवेकक स्वर बनि उभरैत छथि। ओ पाठककेँ सोचबाक प्रेरणा दैत छथि जे परिवर्तन बाह्य प्रयाससँ नहि, भीतरी कर्म-संस्कारसँ सम्भव अछि।

कथाक भाषा पूर्णत: मिथिला-जीवनक लयमे डूमल जन-कण्ठक अछि। संवाद सहज अछि आ भाषा लोकगंधसँ भरल। रूपक, उपमा आ प्रतीकक

प्रयोग कथाकेँ लोक-यथार्थसँ दर्शनक स्तरपर लऽ जाइत अछि।

अन्ततः 'सागवानक बागवानी' केवल गाछक कथा नहि, बल्कि जीवनक हरियरी बनाबैक उपदेश थिक। ई सिखबैत अछि जे समृद्धि धनसँ नहि, श्रम आ धैर्यसँ प्राप्त होइत अछि। भविसलाल काका ओ चेतना-पुरुष छथि जे इशारा केलनि अछि जे धरती आ मन जँ संग-संग उपजाउ रहए, तँ जीवन अपन अर्थक सागवान बनि जाइत अछि'।

'थाहल संगी'

जगदीश प्रसाद मंडलक कथा, आधुनिक मिथिला समाजक नैतिक द्वंद्व, सामाजिक मुखौटाक बनावट आओर आत्म-संस्कारक गूढ़ अन्वेषण करैत अछि। कथा मूल रूपसँ दू पात्र, मनोहर आ सुजीत काका, केर संवादपर आधारित अछि, मुदा ई संवाद धीरे-धीरे समाजक यथार्थ तथा जीवन-दर्शनक सूत्रमे परिणत भऽ जाइत अछि।

सुजीत काका अनुभवी, मर्मज्ञ आओर आत्मविवेचक व्यक्ति छथि। हुनकर विचारक अनुसार, मित्र आ शत्रु केर भेद बाह्य सम्बन्धपर नहि, बल्कि अन्तर्मनक परिशुद्धतापर आधारित होइत अछि। ओ कहैत छथि- "बिना साबुनक धुआइयेसँ, लगमे विरोधीकेँ रहने मनक धुआइ होइए।"

ई विचार कथाकेँ एक दार्शनिक दिशा दैत अछि।

मनोहरक दृष्टिकोण भिन्न अछि। ओ देखैत अछि जे सुजीत काकाक दरबज्जापर बैसल लोकसभमे कतिपय घोर विरोधी सेहो छैथ, जे बाहरसँ मित्र समान देखाइत अछि, मुदा भीतरसँ ईर्ष्यालु आओर छलपूर्ण होइत अछि। मनोहरक अनुभवक पृष्ठभूमि ओकर जहलमे बितल तीन मास अछि, जे ओकर दृष्टिकेँ आरो गहींर बनबैत अछि।

सुजीत काका अपन शांत दृष्टिकोणसँ कहैत छथि- "मनोहर, अपन जीवनधार ओहन बना प्रवाहित करी जे स्वयं निर्मित हुअए। जखने अपन प्रवाह अपना अनुकूल चलत तखने दुनियाँक आन-बीरानक भेद मेटा जाएत। रहत मात्र अपन कर्म (काज)। से तँ अपन-अपन विभाजित रहबे करत। एक्केटा नमहर काज माने एकसँ अधिक गोटेक बीचक, रहैए जे नीको होइए आ अधलो होइए मुदा केनिहारक सिरे किछु ने कहल जाइए, सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो

कहल जाइते अछि।”

ई विचार कथा केर दार्शनिक केन्द्र बनि जाइत अछि। ओ कर्मक स्वतन्त्रता आओर आत्मनिर्भर नैतिकतापर विशेष बल दैत छथि। एहि बिंदुपर कथा व्यवहारिक जीवनसँ उठिकऽ आत्मबोधक स्तरपर पहुँचैत अछि।

कथाक भाषा विशुद्ध मिथिलांचली अछि, जे सहज, व्यावहारिक आओर गामक गंधसँ भरल अछि। संवाद-शिल्पक कुशल प्रयोग कथाकेँ अत्यंत प्रभावशाली बनबैत अछि। प्रतीकात्मक रूपमे दरबज्जा, चाह, बिस्कुट आओर घंटी, ई सभ सामाजिक व्यवहारक बाहरी सजावटक प्रतीक बनल अछि, जे भीतरक सत्यकेँ ढाँपने रहैए।

कथ्यक मूल संदेश ई अछि जे समाजमे झूठ आओर देखावा अस्थायी अछि, जबकी स्थायी केवल आत्मविवेक आओर कर्मशीलता थिक। मनोहर अनुभवक धरातलपर ई सत्यकेँ बुझैत अछि, आओर सुजीत काका ओहि सत्यकेँ आत्मदर्शनक रूपमे स्थापित करैत छथि।

अन्ततः ‘थाहल संगी’ एहि निष्कर्षपर पहुँचैत अछि जे जीवनक असल संगी ने तँ कोनो मनुष्य अछि आओर ने समाज, बल्कि अपन कर्म, विवेक आओर आत्मनियंत्रण थिक। जँ व्यक्ति अपन प्रवाह स्वयं बनबैत अछि, तँ कोनो बाहरी मुखौटा ओकरा भ्रमित नहि कऽ सकैए।

ई कथा आधुनिक मनुष्यकेँ भीतरसँ सोचबाक प्रेरणा दैत अछि आओर आत्मनिर्भर नैतिक जीवनक महत्ताकेँ रेखांकित करैत अछि।

‘एकलव्यपन’

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा ‘एकलव्यपन’ आत्म-संयम, साधना, आ जीवनक असल अर्थक खोजपर आधारित एक दार्शनिक आख्यान अछि। एहि कथामे ग्रामीण जीवनक सहजता, श्रमक गरिमा, आ आत्मनिर्भर ज्ञानक स्वर एक संग गुंजित अछि। कथा माधवक दृष्टिकोणसँ कहल गेल अछि, जे अपन ममियौत भाय सुशील संग संवादक माध्यमसँ लोक-संस्कृतिक गहींर अनुभूति आ साधनाक सार बुझैत अछि।

सुशील भाय जीवनक ओ पात्र छथि, जे आत्मानुशासन आ कलात्मक लगनक प्रतीक बनि जाइत छथि। ओ पचासी वर्षक उमेरमे सेहो स्वस्थ,

प्रसन्नचित्त, आ कर्मठ छथि। बचपनमे अखड़ाहामे शारीरिक अभ्यास करैत-करैत ओ कीर्तन मण्डलीसँ जुड़ि गेलाह। प्रारंभमे ढोलक बजौनाइ सीखलनि, मुदा बादमे हरमुनियाक स्वरमे मन रमि गेलनि। ई परिवर्तन मात्र कलाकारी नहि, बल्कि भीतरी जागृति केर संकेत थिक- मनक ओ शक्ति जे जीवनक दिशा बदलि दैत अछि।

गौरीनाथ नामक एक गुरु-समान व्यक्ति सुशील भायक प्रतिभाक पहिचान करैत हुनका स्वर-साधनाक मार्ग देखबैत छथि। यएह क्षण कथामे 'एकलव्यपन'क मूल भाव बनि जाइत अछि- गुरुक प्रत्यक्ष प्रशिक्षण बिना, आत्म-प्रेरणासँ साधनाक मार्ग पकड़ि लेब। एहि प्रतीक द्वारा लेखक ई सिखबैत छथि जे असल ज्ञान भीतरसँ उपजैत अछि; बाह्य अनुकरणसँ नहि।

कथाक प्रत्येक प्रसंग प्रतीकात्मक अछि। ढोलक मेहनतिक, हरमुनिया साधनाक, आ कीर्तन सामूहिकताक संकेत दैत अछि। गौरीनाथ गुरु परम्पराक प्रतिनिधि छथि, आ सुशील भाय स्वाध्यायक प्रतीक। जीवनमे जखन श्रम, समर्पण, आ आस्था एकत्रित होइत अछि, तखन आत्मबोध सम्भव बनैत अछि। अकबर-बीरबलक कथा-प्रसंग द्वारा लेखक स्पष्ट करैत छथि जे जिज्ञासा आ निष्ठासँ प्राप्त अनुभव जन्मजात प्रतिभासँ बेसी गूढ़ होइत अछि।

भाषा विशुद्ध जनकण्ठक अछि- सरल, भावगंभीर, आ जीवनसँ जुड़ल। कथाशिल्प संवादप्रधान अछि, जे कथाकेँ स्वाभाविक प्रवाह दैत अछि। माधव आ सुशील भायक संवाद केवल पारिवारिक बातचीत नहि, बल्कि पीढ़ीगत जीवन-दर्शनक सजीव प्रस्तुति बनि जाइत अछि।

कथाक मूल सार ई अछि जे जीवनक असली मूल्य बाह्य वैभवमे नहि, बल्कि कर्म, सादगी, आ आत्म-संतोषमे निहित अछि। सुशील भाय अपन साधना, संयम आ आत्मविश्वाससँ ई सन्देश दैत छथि जे जिनगीक असली शक्ति मनक भीतर बसल अछि। 'एकलव्यपन' शीर्षक स्वयं उद्घोष करैत अछि जे जँ मनुष्यक भीतर सीखबाक असल संकल्प जीवित अछि, तँ गुरु, अवसर, आ परिस्थिति अपने-आप उपस्थित भऽ जाइत अछि।

ई कथा केवल जीवन-बोध नहि, बल्कि आत्मानुशासनक एक प्रेरक दस्तावेज थिक, जे आधुनिक मनुष्यकेँ आत्म-श्रवण, श्रम, आ साधनाक पथ देखबैत अछि।

‘कनगुरिया ओंगरी’

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा ‘कनगुरिया ओंगरी’ लोकजीवनक सहज परिवेशमे निहित शिक्षाशास्त्र, पीढ़ीगत संवाद आ जीवन-दर्शनक गूढ़ प्रतिरूप प्रस्तुत करैत अछि।

मुख्य पात्र ध्रुवलाल बाबा अस्सी वर्षक अनुभवी व्यक्तित्व छथि। ओ एके समयेँ बालकक गुरु, युवाक प्रेरक, मध्यम आयु वर्गक मित्र आ वृद्धक सहचर बनि जाइत छथि। समाज हुनका ‘बहुरंगी’ कहैत अछि, कारण ओ परिस्थिति अनुसार अपन भाषा, स्वर आ दृष्टिकोण बदलि लैत छथि, मुदा मूल भाव सदिखन एके रहैत अछि- जीवनमे कर्म, विवेक आ आत्मबोधक साधना।

कथाक घटनाक्रम सामान्य गामक दैनंदिन जीवनसँ शुरू होइत अछि। साँझक बैसार, बच्चासभक जमघट, चाहक गिलास आ पानक संग गप्पक सहज प्रवाह ई सम्पूर्ण परिवेश कथाकेँ लोकसुलभ आ स्वाभाविक बनबैत अछि।

बेलबा नामक बालकक प्रश्न ‘चन्द्रहासकेँ माए-बाप आड़ी कऽ काटि कऽ अधा-अधी बँटलैन’ कथाक आरम्भिक जिज्ञासा बनैत अछि। ध्रुवलाल बाबा एहि प्रश्नक सीधा उत्तर नहि दैत छथि; ओ एकर उपयोग करैत बाल-मनकेँ गम्भीर चिन्तन दिशि मोड़ि दैत छथि। राम–रावण प्रसंगक उदाहरण दैत ओ कहैत छथि जे समाजक सुधार बाहरसँ नहि, भीतरसँ शुरू होइत अछि।

एहि बिन्दुसँ कथा प्रतीकात्मक रूपमे विकसित होइत अछि। ‘ओंगरी’ अभ्यास बाल-शिक्षा आ आत्मज्ञानक प्रतिमान बनि जाइत अछि। हाथक पाँच ओंगरी–अंगुष्ठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा–केवल देहक अंग नहि, जीवनक पाँच मार्गक प्रतीक बनैत अछि।

बच्चासभक प्रतिक्रियासभ (परोड़ियाक गिनती, तेतराक रंग-रूप, ढुनढुनक हँसमुख टिप्पणी) देखबैत अछि जे जँ सीख खेलक रूपमे देल जाए तँ ओ मनक गहिराइमे पहुँचि जाइत अछि। ध्रुवलाल बाबा उपदेश नहि दैत छथि; ओ जिज्ञासा जगबैत छथि, जे शिक्षा-दर्शनक सर्वोच्च रूप थिक।

भाषा विशुद्ध मिथिलांचली जनकण्ठक अछि- सरल, आत्मीय आ गामक बोलचालक लयसँ भरल। कथा संवादप्रधान अछि; प्रतीक, उपमा आ

रूपकक प्रयोगसँ विचारक गहराई सहजतासँ उभरि अबैत अछि। पोखरिक माछ, समाजक पजियार, समयक चक्र ई सभ बिम्ब कथाकेँ जमीनसँ जोड़ैत अछि।

अन्तिम दृश्यमे ध्रुवलाल बाबा पाँचो ओंगरीक नाम कहि शिक्षाक सूत्र समेटि लैत छथि। ई केवल ज्ञानक समापन नहि, बल्कि आत्म-विकासक आरम्भ बनि जाइत अछि। ओ बच्चासभकेँ सिखबैत छथि जे जखन ओ अपन हाथक ओंगरीक अर्थ बुझि लेत, तखन कर्मक दिशा स्वतः भेटत।

साररूपेँ 'कनगुरिया ओंगरी' समाजक आत्म-शिक्षणक कथा छी। ई देखबैत अछि जे कल्याणकारी शिक्षा घर-आँगनसँ शुरू होइत अछि आ सच्चा शिक्षक ओ होइ छथि जे खेल, प्रेम आ जिज्ञासाक संग ज्ञानक बीज रोपि दैत छथि।

ध्रुवलाल बाबा मिथिला समाजक ओहि पीढ़ीक प्रतीक छथि जे अनुभवक आधारपर लोक-संस्कार आ जीवन-दर्शनक सजीव परम्पराकेँ जीवित राखि रहल छथि। ई कथा लोकसंस्कृति, शिक्षामूल्य आ आधुनिक चिन्तनक अद्भुत संगम प्रस्तुत करैत अछि।

'केकरा ले केलौं'

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा 'केकरा ले केलौं' मनुष्यक कर्म, ओकर नैतिक परिणाम, आ आत्मबोधक गम्भीर यात्रापर केन्द्रित अछि। सतही दृष्टिसँ ई कथा एक साधारण घटनासँ शुरू होइत अछि; एक सम्पन्न महाजनक अंधत्व, मुदा धीरे-धीरे ई मानवीय विवेक, सामाजिक दोहरापन आ जीवनक अंतिम सत्यक करीब पहुँचैत अछि।

मुख्य पात्र शोभित भाय एक प्रतिष्ठित महाजन छथि, जे पिताक महाजनी व्यवसायसँ संपत्ति आ यश अर्जन केलनि। मुदा ओहि संपत्तिपर बेइमानी आ छलक गहींर परत चढ़ल अछि। कथा लड़ूलाल आ मकशूदनक संवादसँ आरम्भ होइत अछि, जतए गामक सामाजिक विघटन, जातीय अविश्वास आ नैतिक पतनक स्पष्ट चित्रण होइत अछि।

मकशूदन जखन कहैत छथि जे शोभित भाय आन्हर भऽ गेला, तखन ई केवल शारीरिक दृष्टिहीनता नहि, बल्कि आत्मिक अंधकारक प्रतीक बनि जाइत

अछि। कथाकार एहि माध्यमसँ प्रश्न उठबैत छथि कि धनक संग्रहमे डूबल मनुष्य अपन नैतिकता, सहानुभूति आ कर्तव्यबोधकेँ केना बिसरि जाइत अछि।

मकशूदनक वाक्य 'केकरो अप्पन केलहा फल भेटैए' कथाक नैतिक केन्द्रबिन्दु बनि जाइत अछि। ई वाक्य आधुनिक संदर्भमे कर्मफल सिद्धान्तक व्याख्या करैत अछि। मण्डलजी पुरान सामाजिक सोचपर प्रहार करैत छथि, जतए लोक अपन दोष भगवानक नाम लऽ ढाँपैत अछि। लेखक ई स्पष्ट करैत छथि जे मनुष्यक दुखक मूल कारण ओकर अपन कर्म होइत अछि, कोनो ईश्वरक लीला नहि।

रूपलालक विचार कथाकेँ दार्शनिक गहराई प्रदान करैत अछि। ओ कहलनि, "भाय साहैब, जखने लोक मनुक्खक कर्तव्य छोड़ि धन जमा करैक पाछू लगि जाइए, तखने ओकरा विचारसँ उचित-अनुचित हटि जाइए। आ ओ मात्र धनक पाछू व्यस्त भऽ जाइए। शोभित भाइक पितोमे ई दुर्गुण छेलैन आ शोभित भायमे सेहो छैन्हे।" ई वाक्य केवल सामाजिक आलोचना नहि, बल्कि कथाकेँ नैतिक चेतनाक शिखर तक पहुँचा दैत अछि।

शोभित भाय आन्हर भेला, मुदा ओहि अंधकारमे हुनका आत्मदृष्टि भेटैत अछि। लड़ूलाल संग हुनक स्वीकारोक्ति "केतेको लोकक गरदैन काटि सम्पैत बनेलौं, मुदा आब बुझि पड़ैए जे केकरा ले एते केलौं.!" कथाकेँ आत्मस्वीकृति आ आत्मजागरणक स्तरपर पहुँचा दैत अछि।

कथाक भाषा विशुद्ध जनकण्ठक अछि, जे संवादपरक शैलीमे कथाकेँ जीवन्तता दैत अछि। अन्हरपन मात्र रोगक प्रतीक नहि, बल्कि लोभ, अहंकार आ अन्यायक परिणामस्वरूप आत्मान्धताक बिम्ब बनि जाइत अछि। गामक सीमा, रास्ता आ दरबज्जा ई सब बिम्ब समाजक नैतिक सीमाक प्रतीक स्वरूप उभरैत अछि।

लड़ूलाल आ मकशूदनक संवाद समाजक अंतर्विरोध, वर्गीय विषमता आ विवेकहीन मूल्य-व्यवस्थाक परत दर परत उद्घाटन करैत अछि।

कथाकारक उद्देश्य स्पष्ट अछि: धन, स्वार्थ आ अहंकार मनुष्यक दृष्टि हरबैत अछि, मुदा आत्मबोध ओकरा नव दृष्टि प्रदान करैत अछि। शोभित भाय आन्हर भेलाक बादे बुझि सकैत छथि जे सम्पत्ति आ प्रतिष्ठा क्षणभंगुर अछि;

असल प्रकाश विवेक, करुणा आ आत्मदृष्टिमे निहित अछि।

‘केकरा ले केलौं’ मात्र एक व्यक्ति-कथा नहि, ई समग्र समाजक सामूहिक आत्मपरीक्षणक दस्तावेज बनि जाइत अछि। मण्डलजीक दृष्टिमे अंधकार कोनो अंत नहि, बल्कि चेतनाक आरम्भ थीक। ई कथा मानवताक ऊँच प्रकाश दिस बढ़ैत कथा अछि, जतए मनुष्य अपन दोषक अँधकार पार करैत अन्ततः आत्मा आ सत्यक ज्योति देखैए।

निष्कर्ष: ‘जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा’ केवल प्रतिनिधि कथासंग्रह नहि, अपितु एक दीर्घ सृजन-यात्राक दस्तावेज छी, जकर केंद्रमे मनुष्य, श्रम आ नैतिक चेतना ठाढ़ अछि। 2009 सँ 2025 धरि पसारल कालरेखामे मण्डलजीक दृष्टि आरम्भक ग्राम-धरातलसँ उठिकए मानवीय आत्मालोकन, सामाजिक दार्शनिकता आ मूल्य-पुनर्व्याख्या धरि क्रमशः विकसित होइत देखाइत अछि। प्रारंभिक पड़ावमे खेत, पसेना, परती भूमि, अकाल आ स्त्री-श्रम जकाँ ठोस बिम्ब प्रधान अछि, जखनकि पछिला पड़ावमे नैतिक द्वंद्व, प्रशासनिक विडम्बना, आत्मस्वीकृति आ भीतरी साधनाक स्वर अधिक प्रखर बनिकए सामने अबैत अछि।

एहि संग्रहक प्रमुख विशेषता ई अछि जे यथार्थ दृश्य भरिकऽ नहि, बल्कि चेतना बनिकए उभरैत अछि। किसानक पसेना, नीलगायक दंश, परदेशिया युवकक असमंजस, गृहिणीक मौन श्रम, सेवा-मुक्ति उपरान्तक रिक्तता, कक्षाक जिज्ञासा आ महाजनक अन्हरपनसँ जागल आत्मदृष्टि—सभ मिलिकए पाठकक समक्ष मूल नैतिक प्रश्न प्रस्तुत करैत अछि। करुणा आ व्यंग्य एतए विरोधी नहि, पूरक तत्व अछि। दोहरावकेँ व्यंग्य भेदैत करुणा विवेकक उदय करैत अछि।

भाषा एहि संग्रहक मेरुदण्ड रूपमे उपस्थित अछि। मिथिलांचली लोक-शब्दावली, कहावत, मुहावरा, कृषक-रूपक आ घरेलू संकेत कथाकेँ ठोस जमीन दैत अछि। संवादक सहज लय, बिम्बक सादगी आ वाक्य-रचना बिना कृत्रिम अलंकार सेहो प्रभावपूर्ण बनैत अछि। पाठक गामक अँगनाक धूप-छाँह, पोखरिक काठ, बैसारक गप्प आ दिन भरिक थकानमे निहित गूढ़ अर्थसँ सिधा जुड़ि जाइत अछि।

सामाजिक अध्ययन आ शोधक दृष्टिसँ ई पुस्तक उपयोगी आधार प्रदान करैत अछि। एक दिस ई मिथिलाक ग्रामीण अर्थनीति, श्रम-संस्कृति, स्त्री-जीवन आ परंपरागत बदलावक सतत संवाद पकड़ैत अछि, दोसर दिस प्रशासनिक व्यवस्था, न्याय-नीति, शिक्षा-दर्शन, सामुदायिक संस्कार आ समकालीन नैतिक द्वंद्वक सम्यक परीक्षण प्रस्तुत करैत अछि। कालानुक्रमिक संयोजनक कारण पाठक स्पष्ट देखैत अछि जे कथ्य कठोर यथार्थसँ शुरू भऽ सामाजिक दर्शन आ आत्म-अनुशासनक साधना धरि पहुँचैत अछि। एहि कारणेँ ई संकलन शोधार्थी, पाठ्यक्रम-निर्माता आ आलोचक लेल विश्वसनीय संदर्भग्रन्थ बनि सकैत अछि।

नीति-स्तरपर संग्रहक संदेश स्पष्ट अछि- समृद्धि धनसँ नहि, श्रम, धैर्य आ साझा जिम्मेदारीसँ बनैत अछि। धरती आ मन जँ संगहि उपजाउ रहत, तँ समाज सेहो उपजाउ बनत। समयपर उपचार कए चुकल तँ लाही खेतोमे लगैत अछि आ विचारोमे। न्याय जँ पाइपर छोड़ल जाए, तँ अन्हार पहिने भीतर बसैत अछि, आँखि तकरा बाद देखैत अछि। शिक्षा जँ आत्मबोध आ सहयोगसँ जुड़त, तँ ट्यूटोरियल-कक्षा सेहो मुराम स्थान बनि सकैत अछि, जतए नव समाजक डगर साफ होइत अछि।

संपादकीय संकल्पकेँ विशेष मान दैत छी। कथा-चयन विषयगत निरन्तरताकेँ बनाए राखिकए विविधता प्रस्तुत करैत अछि, जे मण्डलजीक परिपक्वता आ जोखिम लेबाक क्षमता देखबैत अछि। सामुदायिक साहित्यिक संस्कार, विशेषतः ‘सगर राति दीप जरय’क ऊर्जासँ प्रेरित ई प्रयास पाठकक हाथसँ शोधक कक्ष धरि पहुँचैत अछि। एहि अर्थमे ई पुस्तक लोक-जीवनक दस्तावेज मात्र नहि, सामूहिक स्मृतिक भंडार बनैत अछि, जे आगाँक नीति, शिक्षा आ सामाजिक विमर्श लेल आधार प्रदान करैत अछि।

आगाँक दिशासूचक मार्ग स्पष्ट अछि, ओ अछि- बहुभाषिक अध्ययन, ग्राम-समाजक नव आँकड़ापर आधारित तुलनात्मक आलोचना, डिजिटल आर्काइविंग, आ पाठ्यक्रममे सन्दर्भ-एकीकरण अत्यावश्यक अछि। नारी-श्रम, किसान-नीति, ग्रामीण-पर्यावरण, प्रवासन आ न्याय-प्रक्रियासँ जुड़ल विषयक वाचन-सूची, लोक-शब्दावलीक कोश, कथानक-नक्शा आ कालरेखा तैयार कएल जाए, जे अनुसंधानकेँ सुगम बनाओत।

निष्कर्ष रूपेँ कहि सकैत छी जे 'जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बीछल कथा' अन्हारक वर्णन नहि, प्रकाशक खोजक दस्तावेज छी। ई संग्रह जन-जीवनक पीड़ापर मात्र नहि रुकैत, ताहिसँ उपजल करुण-बुद्धि आ आस्था धरि पहुँचैत अछि। समाजक असल विकास ओतए सम्भव अछि, जतए श्रम सम्मान बनैत अछि, स्त्री-जीवन मौन-स्वीकार नहि, सहभागी निर्णय बनैत अछि, शिक्षा उपदेश नहि, अभ्यास बनैत अछि, आ न्याय पाइ नहि, विवेक बनिकए उभरैत अछि। यएह मण्डलजीक दीर्घ साधनाक सार थिक, आ यएह ई संग्रहक जीवंत मूल्य।

- प्रो. (डॉ.) राम सेवक सिंह
अवकाश प्राप्त अध्यक्ष, मैथिली विभाग
तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर।
मोबाइल- +91 94304 56014

दूटा पाइ

☰

हलहोरिमे फेकुओ दिल्लीक रैलीमे जाइक विचार केलक। परसू सौंझका गाड़ी सभ पकड़त। दिल्लीक लड्डूक बात फेकुआकेँ बुझल तँए खाइक मन रहइ। अवसर बुझलक, किएक तँ ने गाड़ीमे टिकट लगतै आ ने संगबेक कमी। मात्र चारि दिनक खेनाइटा अपन खर्च। ओना, गाड़ीमे लोक बेसी खाइतो नहियेँ अछि किएक तँ पेशाब-पैखानाक समस्या रहै छइ...।

फेकुआ माएकेँ कहलक- "माए, परसू दिल्ली जेबौ, बटखर्चाक ओरियान कऽ दिहेँ?"

माए पुछलकै- "की सभ लेबही?"

"दू सेर चूड़ा लऽ कऽ डॉक्टर साहैब, नागेंद्रजी चलैले कहलखिन हेन। हमरो दू सेर चूड़ा कुटि दिहेँ।"

फेकुआक बातक बिसवास माएकेँ नइ भेलइ। मनमे एलै जे दू सेर चूड़ा तँ एक दिनमे लोक खाइए, चारि दिन केना पुरतै? ..फेर मनमे एलै, दू सेर चूड़ो आ चारि-दुना आठटा रोटियो पका कऽ दऽ देबइ। कहुना भेल तँ रोटी सिद्ध अन्न भेल।

गाड़ी अबैसँ पहिनहि जुलुसक संग फेकुआ स्टेशनपर पहुँचल। जिनगीक पहिल दिन फेकुआ टेन-गाड़ीमे चढ़त। प्लेटफार्मपर भीड़ देखि फेकुआक मन घबरेबो करइ आ उत्साहो जगै जे एते लोक चढ़त से हेतै आ हमरा बुते की नै चढ़ि हएत।

निर्मली-सकरी बीच छोटी लाइन। गाड़ियो छोटकीए। मुदा सकरीसँ दिल्लीक गाड़ियो बड़की आ लाइनो बड़की। ..गाड़ीमे चढ़ि फेकुआ सकरी पहुँचल। दिल्लीक गाड़ी सकरीमे लगले रहइ। हाँइ-हाँइ कऽ निर्मलीक गाड़ीसँ उतैर दिल्लीवाली गाड़ीमे सभ चढ़ल। गाड़ी खुजल।

ओना, सकरीसँ दिल्ली जाइमे चौबीस घन्टा लगैत। मुदा आइ से नइ भेल, चालीस घन्टामे पहुँचल। मुदा चालीस घन्टा केना बीतल से फेकुआ बुझबे ने केलक। हलहोरिए-मे पहुँच गेल। ने एक्को बेर खेलक आ ने पानि पीलक। मुदा तैयो भूख बुझिए ने पड़ैए। गाड़ीसँ उतरै काल फेकुआ खिड़की देने प्लेटफार्म दिस तकलक तँ जेरक-जेर सिपाहीकेँ घुमैत देखलक। मुदा फेकुआक नजैर केतौ नै अँटैक मोटका सिपाहीपर अँटकल। ओकर मनही पेटपर नजैर गेलइ। तैपर सँ छह आँगुर चाकर ललका बेल्टपर सेहो। जे बेर-बेर निच्चाँ ससरैत। चानिपर सँ पसेनाक टघार। दस किलोक बन्दुक कान्हमे लटकल। मुदा तखने डॉक्टर साहैबकेँ अपन छबो संगीक संग हाथसँ सभकेँ उतरैक इशारा दैत देखलक। देखिते धड़फड़ा कऽ फेकुओ उतरल।

प्लेटफार्म टपि जहाँ फेकुआ मोसाफिर खाना प्रवेश करए लगल कि ममियौत भायपर नजैर गेलइ। ममियौत भाय- रतना चरिपहिया गाड़ीक ड्राइवर। अपना मालिककेँ गाड़ी पकड़बैले आएल। भायपर नजैर पड़िते फेकुआ लगमे जा गोड़ लगलक। गोड़ लगि लालकिला मैदान दिसक रस्ता धेलक। पाछूसँ झटैक कऽ आगू बढ़ि रतना फेकुआसँ घरक कुशल पुछलक। कुशलक जवाब नै दऽ फेकुआ कहलक-

“काल्हि साँझ तक लालकिला मैदानमे रहब तँए ओतै अबिहह। अखन नै रूकबह।”

“कनी चाहो पीब ने ले?”

“नै अखन कुछो नै पीबह।”

फेकुआ बढ़ि गेल। मुदा रतनाकेँ पाछू घुमैक डेगे ने उठैत। फेकुए दिस तकैत रहल। मनमे उठलै जे हो-ने-हो काल्हि भेँट नै हुअए। ओते लोकमे के केतए रहत तेकर कोन ठीक। तहूमे साँझका बात कहलक। दिल्ली छिऐ। कोन ठीक जे बिजलीक इजोत रहतै की नहि। एते लोकमे तँ दिनोमे अन्हराएले रहत। एक्को दिन मेजमानियोँ ने करौलिऐ। गाममे दीदी सुनत तँ की कहत। ओ की कोनो दिल्लीकेँ दिल्ली बुझैत हएत, ओ तँ गामे जकाँ बुझैत हएत। जहिना गाममे सभकेँ सभ चिन्है छै तहिना। मुदा ई तँ दिल्ली छी। भाड़ाक एक कोठरीमे सोहर गौल जाइ छै आ दोसरमे कन्नारोहट होइ छै...। विचित्र स्थितिमे रतना पड़ि गेल। आइ धरि रतनाक बुधिपर एहेन भार कहियो नै पड़ल। एकाएक

मनमे एलै, कौल्हुका छुट्टी लऽ कऽ भोरे फेकुआसँ भेँट करब। भेँट भेलापर लालकिला, जामा मस्जिद देखा देबइ।

दोसर दिन भोरे रतना फेकुआसँ भेँट करए विदा भेल। लालकिला मैदान पहुँचते भेँट भऽ गेलइ। भेँट होइते दुनू भाँइ गामेक बसिया रोटी खा पानि पीलक। भरि दिन संगे, रैली समाप्त कऽ दुनू गोरे डेरापर आएल।

पैघ सेठक ड्राइवर रतना तँए डेरो नीक। सभ सुविधा। मुदा रतनाक डेरासँ फेकुआक मनमे खूब खुशी नइ भेलइ। मोन पड़ि गेलै माइक ओ बात जे हरिदम बजैत-

“अनकर पहिर कऽ साज-बाज, छीनि लेलक तँ बड़ लाज। अपना जएह रहए ओइसँ सबुर करी।”

मुदा माइक बात फेकुआक मनमे बेसी काल नै अँटकल। किएक तँ तीन दिनसँ नहाएल नै छल। जइसँ देहमे एकोरती लज्जैत नइ बुझि पड़इ। रतनाकेँ कहलक- “भैया, पहिने हम नहेबह। बिनु नहेने मन खनहन नै हएत। ओना, ओंघियो लगल अछि, तँए नहा कऽ खेबह आ भरि मन सुतबह।”

फेकुआकेँ रतना बाथरूम देखा देलक। बाथरूममे बिजली जरैत, पानि चलैत...। बाथरूम देखा रतना गैस चुल्हि पजारि भानस करए लगल। ..भरि मन फेकुआ नहाएल। मन शान्त भेलइ। जहन दिल्ली आबि गेलौं तँ किछु लइए कऽ जाएब...। रतना लग आबि बैसल। भानसमे देरी देखि रतना कहलकै- “बौआ, ई दिल्ली छिऐ। ऐठाम लोक सोलह-सोलह घन्टा खटैए। दरमाहाक संग ओभरटाइमोक पाइ भेटै छइ। मुदा जिनगी जीबैक लूरि नइ रहने सभ चलि जाइ छइ। ने गामक कर्जसँ मुक्ति होइ छै आ ने अहीठाम चैनसँ रहैए। भुतलग्गु जकाँ हरिदम बुझि पड़तौ। तोरा ऐ दुआरे कहि दइ छियौ जे तूँ अपन छोट भाए छँह।”

रतनाक बात सुनि कनी काल गुम रहि फेकुआ बाजल- “भैया, तूँ सभ तरहेँ पैघ छह। जखन तोरा लग छी तँ तोहीं ने हमर नीक-बेजाए बुझबहक।”

फेकुआक बातसँ रतनाकेँ अपन जिम्माक भार बुझि पड़लै। बाजल- “देखही बौआ, अखन जे कहलियौ से स्टील फैक्ट्रीक स्टाफक बात कहलियौ। मुदा सभ एहने अछि सेहो बात नहि। एहनो लोक अछि जे अपन मेहनत आ लूरिसँ गरीब रहितो अमीर बनि गेल। अपने इलाकाक ढोरबा छी। जेकरा हम तँ

ढोरबे कहै छिऐ मुदा ओ ढोढ़ाइबाबू बनि गेल। जहन गामसँ आएल तँ वौआ-ढहना कऽ चारि दिनक पछाइत ऐठाम आएल, हमरा लग। ओकरा शैलूनमे नोकरी लगा देलिऐ। किछु दिन तँ काज करैमे लाज होइ। किएक तँ ओ धानुक छी। मुदा किछुए दिनक पछाइत तेहेन हाथ बैस गेलै जे लौओकेँ उन्नैस करए लगल। अपनो खूब मन लगए लगलै। दरमहो बढ़ि गेलइ। तीन सालक पछाइत जेना ओकरा ऐठामसँ मन उचैट गेलइ। सोचलक जे जहन लूरि भऽ गेल तहन तँ केतौ कमा कऽ खा सकै छी। से नहि तँ गामेक चौकपर दोकान खोलब। अपना जँ दू पाइ कम्मो हएत तइसँ की, समाजक उपकार तँ हेतइ। सएह केलक।

ले-बलैया! गामक लोक कियो 'ठाकुर' तँ कियो 'नौआ' तँ कियो 'हजमा' कहए लगलै। तेतबे नहि, घरक जनिजातिकेँ 'नौआइन' कहए लगलै! सभसँ दुखद घटना तहन भेलै जहन कथा-कुटुमैती आ जातिक काजसँ अलग कएल गेलइ। मुदा ओहो कर्म-योगी। गामकेँ प्रणाम कऽ अपन परिवारक संग दिल्ली शहर चलि आएल। वाह रे वनक फूल! ऐठाम आबि कऽ अपन शैलूनक कारोबार ठाढ़ कऽ लेलक। अखन छअटा स्टाफ रखने अछि अखन। बहिनक बिआह इंजीनियरसँ केलक। हमहूँ बिआहमे रहिऐ।"

फेकुआ बाजल-

"हमरो कोनो लाज-सरम नै हएत। जे काजमे लगा देबह, हम पाछू नइ हटबह।"

रतना-

"परसू रवि छिऐ। हमरो छुट्टी रहत। ताबे दू दिन अरामे कर।"

फेकुआ-

"हमरा ओते सुतल नीक नै लगतह। चलि जेबह बुलैले।"

रतना- "रौ बुड़िबक! गाममे लोक खिस्सा कहै छै जे फल्लाँ तेहेन काबिल छै जे एक्के पाइमे बेच लेतौ। मुदा ऐठाम सभ काबिले अछि। तँए देखबिही जे ऐठाम सभसँ पैघ कारबार मनुक्खेक खरीद-बिकरीक अछि। देहाती बुझि कोइ ठकिकऽ बेच लेतौ। कहतौ चल हवा-जहाजक नोकरी धरा देबौ आ चलि जेमए आन देश..!"

रतनाक बात सुनि फेकुआ क्षुब्ध भऽ गेल। मुदा मनमे एलै जेना हम

बेदरा रही तहिना भैया कहैए..! किन्तु किछु बाजल नहि। दम साधि कऽ रहि गेल।

तीन दिनक पछाइत फेकुआ कपड़ा सिलाइक टेलरमे काज शुरू केलक। दू हजार रुपैआ दरमाहा। भिनसर छह बजेसँ राति नअ बजे धरिक ड्यूटी। बीचमे एक बेर अदहा घन्टा जलखै-ले आ एक घन्टा खाइ बेर छुट्टी होइ।

फेकुआक मनमे उठल जे ड्यूटी तँ बीसो घन्टा कऽ सकै छी मुदा सुतैक जे आठ घन्टा छै से केना पुरत। मुदा फेर मनमे एलै, जहन दू पाइ कमाए चाहै छी तहन तँ सभ सुख-भोग कमबए पड़त...।

दोकानमे आठटा कारीगर। आठो नोकरे। फेकुआ अनाड़ी, तँए दोकानक झाड़-बहारसँ काज शुरू केलक। कपड़ा काटब आ सिलाइ मशीन चलाएब सेहो कनी-कनी सीखए लगल।

दुइए माय-पुत फेकुआ। दस साल पहिनहि बाप मरि गेल। अपने दिल्ली धेलक आ माए गाममे। मुदा माइयो थेहगर। पुरुखे जकाँ बोनि-बुत्ता करैत। नोकरी होइते फेकुआकेँ माए मोन पड़लै, माइए नहि, गामो मोन पड़लै। मोन पड़ल गामक स्मृति।

..माइक ममता जागि फेकुआक मनकेँ खोरए लगलै। मनमे उठलै, परदेशिया परिवारमे गेँटक-गेँट कपड़ा.., राशि-राशिक चीज-बौस.., रेडियो, घड़ी, टी.भी, मोबाइल इत्यादि। केकरा नै नीक वस्तुक सिहन्ता होइ छइ? मुदा ओहेन सिहन्ते की जेकरा पुरबैक ओकातिये ने रहए..?

दू हजार महिना रुपैआक गरमी फेकुआक मनमे तरे-तर चढ़ि गेल। केना नै चढ़ैत? मुदा आमदनियेँक गरमी चढ़ल, खर्चक पानि परबे ने कएल। सोचलक जे सभसँ पहिने माएकेँ चिट्ठी लिखि जना दिऐ। आठ दिनक पछाइत फेकुआ रतनाकेँ कहलक- “भैया, हमरा तँ लिखल-पढ़ल नै होइए। मुदा जहन नोकरी लगि गेल तँ माएकेँ जनतब देब जरूरी अछि। किएक तँ ओकरा होइत हेतै जे केतए वौआइ-ढहनाइए।”

रतनोक मनमे जँचल। वी.आइ.पी. बैगसँ पोस्ट-कार्ड निकालि रतना चिट्ठी लिखैले तैयार भेल। पुछलक- “बाज की सभ दीदीकेँ लिखबीही?”

फेकुआ लिखबए लगल-

स्थान- दिल्ली

ता.- 05.06.2007

माए,

गोड़ लगै छियौ,

भगवानक दया आ तोरा सबहक असीरवादसँ तेहेन नोकरी भेटल जे कहियो मनमे नै आएल छल। दू हजार रुपैआ महिनाक तलब। अपना केते खर्च हएत। जे उगरत से मासे-मास पठा देबौ। बेंगबा काकाकेँ कहिऐन जे चिमनीपर जा कऽ ईंटाक दाम बुझि अबैले। पहिने घर बना लेब। अपना कलो नै छौ, सेहो गड़ा लेब। घरक आगू जे मलिकाबाक चौमास छै, ओहो कीनि लेब।

तोरे फेकुआ।

सात बजे भिनसर। मेघौन समय। कखनो-कखनो सुरुज देखि पड़ैत आ फेर झँपा जाइत। झिहिर-झिहिर पुर्बा हवा चलैत। पान-छह गोरेक संग फेकुआक माए–रामसुन्नैर–धन-रोपनी करए विदा भेल। किछुए आगू बढ़लापर डाक-प्यूनकेँ देखलक। मुदा आन स्त्रीगण जकाँ रामसुन्नैर नहि जे दिनमे दू बेर मोबाइलसँ तीन पन्नाक चिट्ठी आ तैपर सँ जे समदिया भेटल ओकरा दिया समादो पठौत। मनमे कोनो हलचल नहि। रामसुन्नैरक आगूमे आबि हँसैत डाकप्यून कहलक- “काकी, फेकुआक चिट्ठी एलौ हेन।”

कहि झोरासँ निकालि पोस्ट कार्ड देलक। छबो स्त्रीगण डाकप्यूनकेँ चारू भागसँ घेरि कऽ ठाढ़ भेल।

..हाथमे पोस्ट-कार्ड अबिते रामसुन्नैरक मन बिहाड़िमे उड़ैत ओइ सुखल पात जकाँ जे सरंगोलिया उठि अकासमे उड़ैत तहिना उड़ि गेल। जिनगीक पहिल पत्र। मनमे एलै, पहिने केकरोसँ पत्र पढ़ा ली। ओना, डाकप्यून लगमे सँ चलि गेल। मुदा तेकर अपसोच नइ भेलइ। किएक तँ जाधैर प्यून लगमे छल ताधैर पत्र पढ़बैक विचार मनमे आएलो नै छेलइ। फेर मनमे एलै, काज कामे नै करब। अखन खूटमे बान्हि कऽ रखि लइ छी आ जहन निचेन हएब तहन पढ़ा लेब। सएह केलक।

गोसाँइ डुमैत रामसुन्नैर निचेन भेल। निचेन होइते चिट्ठी पढ़बैले श्याम ऐठाम विदा भेल। श्यामोक घर लगे। पोस्ट-कार्ड हाथमे लऽ श्याम

सत्यनारायण कथा जकाँ पढ़ए लगल। मुदा दोसरे पाँति- दू हजार रुपैआ महिना तलब-मे रामसुन्नैर ओझरा गेल। मने-मन सोचए लगल, छौड़ाकेँ घरक सोह एलइ। बुधियो फुटैक उमेर भेल जाइ छइ। आब कहिया चेतन हएत। ऐगला साल तक बिआहो कैये देबइ। असगरे राकश जकाँ अँगनामे रहै छी...। मुदा रामसुन्नैरक विचार लगले बदैल गेलइ। बुदबुदाए लगल- केना लोक कहै छै जे मसोमातक बेटा दुइर भऽ जाइए। विचारमे डुमल रामसुन्नैर। तैबीच श्याम बाजल- "सभ बात बुझलिऐ ने काकी?"

श्यामक पुछबसँ रामसुन्नैरक भक्क खुजल। बाजल- "बौआ, चिट्ठी पढ़ल भऽ गेलह। की सभ छौड़ा लिखने अछि?"

काकीक मनक बात नै बुझि श्यामकेँ खौंझ उठलै। मुदा किछु बाजल नहि। चिट्ठीकेँ निच्चाँमे रखि मुहजुआनीए बाजए लगल। मुदा पोस्ट-कार्डकेँ निच्चाँमे राखल देखि वेचारी रामसुन्नैरकेँ भेलै जे अपने दिससँ कहैए। बिसवासे ने भेलइ। मुदा झगड़ो करब उचित नै बुझलक। किएक तँ बेटाक पहिल चिट्ठी छी तँए अशुभ बेवहार नीक नहि। दोसर दिन एकटा पोस्टकार्ड कीनि रामसुन्नैर चिट्ठी पढ़बैयो आ लिखबैयोले सोहन ऐठाम गेल। दुनू पोस्टकार्ड रामसुन्नैर सोहनकेँ दैत बाजल- "बौआ, पहिने पढ़ि कऽ सुना दएह। तहन लिखियो दिहह।"

पत्र पढ़ि कऽ सोहन सुना देलकै। समाचार सुनि रामसुन्नैरक मन खुशीसँ उत्साहित भऽ गेल। बाजल- "बौआ आब चिट्ठी लिखि दएह। सोहन चिट्ठी लिखए लगल-

परमानपुर

ता. 03.07.2007

फेकू।

असीरवाद।

अखन हम अपने थेहगर छी, तँए हम्मर चिन्ता जुनि कर। रहैले घरो अछिए। एक घैल पानि स्कूलबला कलपर सँ लऽ अबै छी वएह भरि दिन चलैए। तँए पानियोँक दिक्कत नहियेँ अछि। नहाइले धारो आ पोखैरो अछिए। कहियो काल बर्खोमे नहा लइ छी। तँए ऐ सभ ले तूँ चिन्ता किए करै छेँ! अखन

खाइ-खेलाइक उमेर छौ, तँए कमा कऽ जे मन फुरौ से करिहेँ। ऐगला साल धरि अबिहेँ, बिआहो कऽ देबौ। असगरे अँगनामे नीक नै लगैए।

माए, रामसुन्नैर

साल बित गेल। जहिना गाममे रामसुन्नैर अपन काजमे हेराएल तहिना दिल्लीमे फेकुओ। साले भरिमे फेकुआ कपड़ा सिलाइक कारीगर बनि गेल। अपना देहक कपड़ा-लत्ता किनैत-किनैत फेकुआक सालो भरिक दरमाहा सठि गेलइ। माइक जिनगी तँ जहिनाक तहिना रहल मुदा फेकुआक जिनगीमे बदलाउ आएल। दुब्बर-दानर फेकुआ फुटि कऽ जुआन भऽ गेल। कपड़ा सिआइक लूरि भेने आत्मबलो मजगूत भेलइ। मुदा गामक जिनगी आ दिल्लीक जिनगीक बीचक संघर्ष फेकुआक मनमे चलिते रहल।

रवि दिन। रतनो आ फेकुओकेँ छुट्टी अछि। सुति उठि दुनू ममियौत-पिसियौत विचारलक जे साल भरिसँ बगेरी नै खेलौं, से नहि तँ आइ बगेरीए आनब। तैबीच रोडपर देखलक जे पुलिसक गाड़ी एमहरसँ-एमहर कऽ रहल छइ। दुनू भाँइकेँ कोनो भाँजे ने लगइ। कोठरीसँ निकैल रतना चाहबला लग गेल आ पुछलक तँ भाँज लगलै जे महल्लासँ एकटा जुआन लड़की आ एकटा सेठक बेटाक अपहरण रातिमे भऽ गेलइ। समाचार सुनि दुनू भाँइ डरा गेल। बगेरीक विचार छोड़ि गामक गप-सप्प करए लगल।

रतना बाजल- “बौआ, तोरा साल लगि गेलह। एक बेर गाम जा सबहक भेँट केने आबह।”

गामक नाओं सुनिते फेकुआक मन उड़ि कऽ दोसर दुनियाँमे पहुँच गेल। मोन पड़लै- चिमनीक ईंटा.., चापाकल.., घरक आगूक चौमास...। फेकुआक मन गामक सीमानपर अँटैक गेलै, सीमानपर सँ अँगना पहुँचैक साहसे ने होइ। किएक तँ बाटेपर माएकेँ ठाढ़ भेल देखए। की कहैत हएत माए? साल भरि भऽ गेलै, ने एक्कोटा पाइ पठौलिऐ आ ने एक्को खण्ड साड़ी। कहियो काल जे अस्सक पड़ैत हएत तँ के दबाइयो आनि कऽ दैत हेतइ! पौरुकाँ जे एकटा चिट्ठी देलिऐ, तइ दिनसँ दोसर चिट्ठियो ने देलिऐ..।

चिन्तित फेकुआ। मनमे फेर उठलै- छुच्छे चिट्ठीए लिखने की हेतइ। मने-मन बुढ़िया सरापैत हएत। कहैत हएत जे छौंड़ा ढहलेलक ढहलेले रहि गेल।

मुदा हमहीं की करब। छुच्छे हाथे जेबो केना करब। टिकटो-जोकर पाइ नइए। ..चिन्ता आ सोगसँ फेकुआक मन दबा गेल। कोनो बाटे ने सुझइ। मनक भीतर बिर्ड़ो उठि गेलइ। मुदा थोड़े कालक पछाइत बिर्ड़ोक हवामे फेकुआक मन सोगक तरसँ निकलल। मनमे एलै, गाम तँ गाम छी, जैठाम लोक माघक शीतलहरी आगि तापि कऽ काटि लइए। बिनु कम्मर-सीरकक जाड़ बिता लइए, गाछ तर जेठक रौद काटि लइए। मुदा दिल्लीमे से हएत? साल भरिक कमाइ साल भरिक मौसमक अनुकूल कपड़ेमे चलि गेल! नइ लैतौं तँ सेहो नहि बनैत। लेलौं तँ गाम छुटि गेल। ..जहिना घनघोर वादलक फाँटसँ सुरुजक रोशनी छिटकैत तहिना फेकुओक मनमे भेल। रतनाकेँ कहलक- “भैया, एकटा चिट्ठी लिखि दएह।”

लगेमे रतनाकेँ सभ किछु छेलइ। पोस्ट-कार्ड निकालि लिखैले तैयार भेल। फेकुआ लिखबए लगल-

दिल्ली

ता. 11.08.2008

माए,

गोड़ लगै छियौ।

मनमे बहुत रहल हेतौ जे हमरो बेटा दिल्लीमे नोकरी करैए। मुदा सभ हेरा गेल। खाली एक्केटा चीज बँचल जे ऐठाम- दिल्लीसँ, ओइठाम-गाम धरि जीबैक रस्ता धड़ा देत। तँए खुशी अछि। हाथ खाली अछि। गाम केना आएब?

फेकुआ।

चारिए दिनमे चिट्ठी माइक हाथ पहुँचल। चिट्ठी हाथमे अबिते रामसुन्नैर निंगहारि-निंगहारि देखए लगल। छौड़ा केतौ अछि जीबैत तँ अछि। बेटा धन छी। केतौ रहह। आब तँ फुटि कऽ जुआन भऽ गेल हएत। जहिना चाह-पान खा-पी बड़का लोकक धोधि फुटि जाइ छै, तहिना तँ फेकुओकेँ भेल हएत। किएक तँ ओहो ने चाह-पान खाइत-पिबैत हएत। गोराइयो गेल हएत। मोछो-दाढ़ी भऽ गेल हेतइ। जहिना भगवान घरसँ पुरुख उठा लेलैन, तहिना तँ फेर दैयो देलैन। ..जुआन बेटापर नजैर पहुँचते रामसुन्नैरक मन खुशीसँ नाचि उठल। मने-मन बुदबुदाएल- “दस बर्खसँ घरमे पुरुख नै छल तँए कि कोनो पुरुखक घरसँ हमर

घर अधला चलल। संतोषे गाछमे मेबा फड़ै छइ...।”

परसुका बात मोन पड़लै, चाहक दोकानपर पंडीजी कहैत रहथिन जे ऐ बेर शुरूहे अगहनसँ घन-घनौआ लगन अछि। हमहूँ फेकुआक बिआह कैये लेब। बिआह मनमे अबिते सोचलक, बहुत दिनसँ पाँच गोरेकेँ अँगनामे हाथो नै धुऐलौं, सेहो कैये लेब। समाजक भोजमे तँ नइ सकब मुदा जहाँ धरि सकरता हएत, तइमे पाछुओ नै हटब। लोक ई नै बुझै जे मसोमातक बेटाक बिआह होइ छइ। डफरा-बौसली हवागाड़ी सेहो लइए जाएब। अनका जकाँ एक ढकियाक मुँह नै पसारब। अपना बेटी-जमाए-केँ जे देत से देत। हम किए मंगयौ। जे आदमी पोसि-पालि कऽ एकटा मनुक्ख देबे करत तेकरासँ फेर की मंगयौ? किछु ने मंगबै। लूरि रहत तँ कामधेनु बना कऽ राखब नहि तँ माटिक मुरूत रहत। ..एकाएक रामसुन्नैरक नजैर चिट्ठीपर पहुँचल। पोस्ट-कार्ड निकालि हियासि-हियासि फेर देखए लगल। फुटा-फुटा करिया अक्षर तँ नइ बुझैत मुदा कृष्ण जकाँ कारी मुरूत तँ जरूर बुझि पड़इ...।

चिट्ठी पढ़ाबैले रामसुन्नैर विदा भेल। अँगनासँ निकैलिते मनमे उठलै, आब की कोनो पहिलुका जकाँ लोककेँ बारह बरख कटिया सोन्हबए पड़ै छइ। आब तँ साले भरिमे धिया-पुता भऽ जाइए। कहुना भेल तँ हमरो फेकुआ शहरे-बाजारक भेल किने।

..एते बात मनमे अबिते रामसुन्नैरक मुहसँ हँसी निकलल। मुदा असगर रहनौं रामसुन्नैर जोरसँ बजैत, जेना दोसरकेँ कहैत होइ- ‘एह! फुसियहोक बेटी जुग जितलक। भाग तँ मुँह-कान नीक नइ छइ। नहि तँ जुगमे भूर करैत। बिआहक आठमे मासमे बेटी भऽ गेलइ। ई तँ धैनवाद ऐ समाजकेँ दी जे एक सूरे सभ बाजल जे सतमसुआ बच्चा छिऐ। जँ एना बिआहक बिदागरीमे हएत तँ केहेन होएत? मुदा ओ बच्चा सतमसुआ नहि। समाज झूठो बाजि ओकरा पालन-पोसन कऽ बँचेलक..।’

रबिक दरबज्जा लग अबिते रामसुन्नैरक नजैर चिट्ठीपर पहुँचल। रबि दरबज्जेपर बैस किछु लिखै छल। रामसुन्नैरकेँ लग अबिते रबि उठि कऽ चौकीपर बैसबैत पुछलक- “काकी फेकू भैयाक बिआह कहिया करबीही? हमहूँ बरियाती जेबौ?”

रबिक बात सुनिते रामसुन्नैरक मन वृन्दावनक रास लीलापर पहुँच गेल। मुदा थोड़बे काल धरि कृष्णक रास-लीला देखि घुमि गेल आ चिट्ठी पढ़बो आ लिखबो-ले रबिकेँ कहलक। चिट्ठी पढ़ि कऽ रबि सुना देलक। पत्र लिखैले तैयार होइत रबि बाजल- “की सभ लिखब?”

रामसुन्नैर लिखबए लगल-

परमानपुर

ता. 15.08.2008

बौआ फेकू।

हम तोरा कमाइक कोनो आशा केने छी जे पाइ नै छौ तँ गाम केना एमे। केकरोसँ पैंच-खोंइच लऽ कऽ चलि आ। तीन भुरकुरी धान-गहुम रखने छी, वएह बेच कऽ दऽ देबइ। आब तहूँ चेतन भेलेँ। लोक कलंक जोड़त। हमरो आब ऐ दुनियाँमे नीक नै लगैए। तँए सोचै छी जे अपन काज जल्दी पुरा ली। अगते अगहनमे चलि अबिहेँ। ताबे कनियाँ ठेमा कऽ रखबौ। अखन हमहूँ थेहगर छी मुदा ऐ जिनगीक कोन ठेकान। आब ई परिवारो आ दुनियोँ तोरे सबहक ने हेतौ। समैपर चलि आ जइसँ काज बिथुत ने हौउ।”

माए।

माइक पत्र सुनि फेकुआ मने-मन खूब खुशी भेल। मनमे भेलै, हमरो काज ऐ दुनियाँ, ऐ समाजमे छइ।

..मुदा मनमे खुशी बेसी काल टिकलै नहि। लगले माघक कुहेस जकाँ फेकुआक बुधि अन्हरा गेलइ। कोन मुँह लऽ कऽ गाम जाएब। साल भरिक कमाइ माइक हाथमे की देबइ? ई बात सत्य जे हमरा भरोसे माए नै जीबैए। मुदा हमरा ओकर कोनो दायित्व नै अछि, सेहो तँ नहि। हे भगवान कोनो गर सुझाबह।

पनरहे दिनक पछाइत एकटा घटना घटल। फेकुआक नोकरी छुटि गेल। ओना, नअ गोरेक संग फेकुआ काज करैत मुदा आठो पुरना कारीगर समयानुसार अपनाकेँ बदलैत नव-नव डिजानिक कपड़ा सिबैक लूरि सिखैत रहए। फेकुआ अनाड़ी, तँए शुरूसँ सिलाइक काज सिखए पड़लै। साल भरिमे

कहुना कऽ पुरना दिल्लीक कारीगर बनल। मुदा फैशनमे बिहाड़ि एने फेकुआ उड़ि कऽ कातमे खसल। ओना, मालिकोक मनमे बेइमानी घोंसियाएल रहइ। बेइमानीक कारण छल पाइबलाक चसकल मन। एकटा अठारह बर्खक लड़की कारीगर दू हजार दरमाहामे भेँट गेलइ...।

सबा बर्खसँ शहरमे रहैत-रहैत फेकुओक सुतल बुधि जागि कऽ करोट लिअ लगलै। जइसँ आत्मबलोक जन्म भऽ चुकल छेलइ। मुदा खिच्चा। सक्कत बनियेँ रहल छेलइ। जहिना मालिक नोकरीसँ हटैक बात कहलकै तहिना फेकुओ हिसाब मंगलक। हिसाब लऽ फेकुआ डेरा विदा भेल। पाइ रहबे करइ। रस्तेमे कॉफी पीब डेरा आएल। डेरा आबि पंखा खोलि पलंगपर ओंघरा गेल। ओंघराइते मनमे आबए लगलै- ई शहर छी, गाम नहि। शहरमे जइ तेजीसँ मशीन, फैशन आ जीवन-शैली बदैल रहल अछि, ओइमे हमरा सन-सन मुरूखक कोन बात जे पढ़लो-लिखल लोक ओंघरनियाँ देत। नवका मशीन पुरना इंजीनियरकेँ धक्का देत। पुरना बुधिकेँ नवका बुधि धक्का देत। मुदा नीक-अधला के बुझत? सभ भोग-विलासक जिनगीक पाछू आन्हर बनि गेल अछि। बाप रे! ई तँ भुमकमक लक्षण छी..!

फेकुआकेँ शंका भेलै जे नोकरी छुटने भरिसक हमर माथ तँ ने चढ़ि गेल! मुदा मनकेँ असथिर केलक। ओह! अनका विषयमे अनेरे ओझराइ छी। जेकरा भोगए पड़तै ओकरा सुआस बुझि पड़ै छै, तँ हमरे की। ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ लऽ साहोर-साहोर करैए।

फेर मनमे एलै, हमहूँ तँ जुड़शीतलक नढ़िये जकाँ भेल छी। एक दिस चारूभागसँ कुकुर दाँतसँ पकैड़-पकैड़ तीड़ैए तँ दोसर दिस शिकारी सभ लाठी बरिसबैए। गामक लूरि सीखलौं नहि, सीखि लेलौं शहरक लूरि। तँ लिअ आब। क्विन्टलिया बोरामे भरि-भरि रखने जाउ!

फेकुआक मन औनाए लगल। दुबट्टीए-मे हेरा गेल। तिनबटिया-चारिबट्टिया तँ बाँकीए अछि। माएपर तामस उठलै। बुदबुदाए लगल-

“ई बुढ़िया गछा लेलक जे शुरूहे अगहनमे चलि अबिहेँ। कनियाँ ठेमा कऽ रखबौ। बिआह कैये देबौ।”

एक दिस केचुआएल कनियाँक बदलैत रूप तँ दोसर दिस माइक सिनेह,

समुद्रक पानि जकाँ फेकुआक मनकेँ अस्थिर कऽ देलक। सोचए लगल जे माए नीक छोड़ि कहियो अधला नै केलक आ ने कहियो सोचलक, ओकरापर आँखि उठाएब अनुचित छी। काल्हिए गाम चलि जाएब। बिआहो कैये लेब। दू गोरे ओहेन लोक एकठाम हएब जे किछु कऽ सकब...।

फेकुआ दू-पाइक आशा हृदयमे समेट सौंझका गाड़ी पकैड़, तेसर दिन गाम पहुँच गेल।

❑ गामक जिनगी: प्रकाशन वर्ष- 2009

अर्द्धांगिनी

☰

आने दिन जकाँ लालकाकी घर-आँगन बहाड़ि बाढ़ैनकेँ कलपर धोइ पछबरिया ओसार लगा ठाढ़ केलैन। हाथ-पएर धोअल बुझि नजैर फूल तोड़ैपर गेलैन। ओना, लालकाकी एहेन नियमित छैथ जे जहिना खढ़ लगा पेटीमे कपड़ा लगौने छैथ तहिना दिन भरिक काजोक छैन। मुदा मन पाड़ैक जरूरत अइले रहि जाइ छैन जे पति गाममे छैथ कि नहि। गाममे रहने किछु काज बढ़ि जाइ छैन आ नइ रहने कमि जाइ छैन। गामेमे रहने फूल तोड़ब बुझलैन। ओसारक खुट्टीसँ फुलडाली उतारि कल दिस बढ़ली। कलक बगलेमे रंजनी-गन्धापर हाथ दइते छेली आकि नजैर अपराजितपर पड़लैन। मेल-पाँच करैक विचार मनमे अबिते लालकाकी रजनी-गन्धासँ अपराजित दिस बढ़ली। अपराजित तोड़ि चम्पापर हाथ बढ़ौलैन। आँखि पड़लैन फुलडालीक फूलपर। फुलडालीक फूल देखि विचारली जे पाँचटा बेलीमे सँ निकालि लेब। चम्पासँ आगू बढ़िते छेली कि नजैर पतिपर गेलैन। पतिपर नजैर पड़िते मन दुखाए लगलैन। केकरा नै इच्छा होइ छै जे पतिक संग एयर कण्डीशन गाड़ीमे बैस सराफा बाजार जा हीरा-मोतीसँ सजल सोनाक हार गाड़ामे लटकैबतौं। मुदा तेहेन भेला जे जखन सरकारी दरमाहा भेटए लगलैन आ कहलयैन जे साइकिल कीनि लिअ सुभितगर हएत, तँ कहलैन जे चालीस-पैंतालिसक भऽ गेलौं, हड्डी जुआ गेल, जँ खसि-तसि पड़ब आ टुटत तँ केतबो पलश्तर करब, तैयो ने जुटत। तइसँ नीक पएरे। कहलैन एक मानेमे नीक...।

मुदा तैयो ढोढ़क बीख जकाँ हड़हड़ा कऽ उतरलैन नहि। मन गेलैन दोसर दिस। सभटा पोथी बर्खामे भीज-भीज सड़ि गेलैन, जखन घरे चुबै छेलैन तखन जँ सड़िए गेलैन तँ ऐमे अपन साध की? मुदा जखन घर बनौलैन तखन किए ने फेर किनलैन। जइ घरमे पोथी नइ रहत ओ घर केहेन हएत? लालकाकीक क्रोध कमलैन। क्रोध कमैक कारण भेलैन

अपन काज मोन पड़ब। पाँच बजे भोरसँ ओछाइनपर जाइ बेर धरि केकरा-ले करै छी, परिवारे-ले ने। फेर तामस मुड़ि गेलैन, कहैले आठ घन्टा ड्यूटी करै छैथ, चारि घन्टा बाटेमे लगै छैन। अदहा काज जँ सम्हारि कऽ नइ रखबैन तँ पारो ने लगतैन। एहेन पुरुखे की जे अपन जिनगी अपनो हाथमे रखि नै चलैथ? फुलडाली रखिते लालकाकीक मनमे एलैन, एक विहित काज भऽ गेल। चूल्हि लग बैसैमे अखनो बहुत बाँकी अछि। हड़बड़ा कऽ घर-निप्पा उठा ओसारपर पूजा-ठाँउ कऽ चूल्हि-चिनमार दिस बढ़ली। घर-निप्पा रखि अर्घासरायसँ लऽ कऽ थारी-लोटा लेने कलपर पहुँचली। कलपर सँ आबि घड़ी दिस देखली। अखन तक समय आ काजमे तल-बितल नइ देखि मनमे खुशी भेलैन। फेर नजैर पतिपर गेलैन। किड़ी आँखिमे पड़ने जहिना करुआ जाइ छै तहिना लालकाकीक मन करुआ गेलैन। बुदबुदेली- “एकटा काजपर तवक्कल रहने घर आगू-मुहेँ ससरत?”

बुदबुदाइते लालकाकीक मनमे उठलैन आन दिन जकाँ जारैन सुखाएल नइ अछि। भानसमे देरी लागत, से नइ तँ पानि चढ़ा पहिने चूल्हि पजारि लइ छी। चूल्हि पजरल रहत तँ कनी देरियो लगने समैपर भऽ जाएत।

बाड़ी पहुँच पतरका जारैन सभ बीछ कऽ चूल्हि लग आनि कऽ रखली। चूल्हि पजारि बरतन चढ़ा तरकारीक मुजेला आ कत्ता नेने चूल्हि लग आबि काटि-काटि थारीमे राखए लगली। साढ़े आठ बजे साँस छोड़लैन। आगिमे सेकल देहो हल्लुक बुझि पड़लैन। मनमे एलैन, ऐसँ बेसी सेवा की भऽ सकै छइ। फेर मन पतिपर गेलैन। उमैक कऽ मन कहलकैन, आरो जे हुअए मुदा भगवान जिद्दियाह पुरुखक संग जोड़ा लगौलैन। हृदय बिहुँसि गेलैन। ‘जइ मर्दकेँ आनि नहि आ जइ बरदकेँ पानि नहि, ओ अनेरे गाम घिनबैले किए जीबैए? मोन पड़लैन दुरगमनियाँ पिढ़ी। जहिना बाबू सतपुड़ैन खोधाएल कटहरक पिढ़ी देलैन आइ तहिना धरि ओइपर बैस भोजन करै छैथ...।

थारी साँठि लालकाकी पंखा नेने छोटकी पिढ़ीपर बैस बनौल विन्यासक सुआद बुझैले पढ़ुआकाका दिस देखए लगली। मगन भऽ

पढ़ुआकाका भोजन करए लगला। देहांगक सिरखार देखि लालकाकी सिकुड़ि गेली। मुदा भोजन-काल जे बजबे ने करता हुनका कहले की जाए। तँए लालकाकी चुप्पे रहली।

कपड़ा पहिर पढ़ुआकाका घरसँ निकैलते रहैथ कि आँगनमे पनबट्टी नेने पत्नीकेँ ठाढ़ देखलैन। पत्नीक काज देखि मन मानि गेलैन जे सिपाही जकाँ छैथ। मनमे खुशी उपकलैन। पान खा आगू-आगू पढ़ुआकाका आ पाछू-पाछू लालकाकी आँगनसँ निकैल डेढ़ियासँ आगू सड़क धरि एली। सड़कपर आबि पढ़ुआकाका पुछलकैन- "किछु कहबोक अछि?"

लालकाकी कहली- "अपन तनदेही राखू।"

दुनू गोरे दुनू दिस विदा भेलैथ। मुस्कियाइत पढ़ुआकाका एक डेग आगू बढ़ि पाछू घुमि कऽ देखि डेग तेज करैत आगू बढ़ला। नाकमे सुरसुरी लगलैन। भेलैन जे छिक्का हएत। बामा हाथसँ नाककेँ सहलाबए लगला। मुदा सुरसुरियो अपन चालि छोड़ैले तैयार नहि। हाथ निच्चाँ करिते धियान पत्नीक शब्द 'तनदेही'पर गेलैन। पत्नीक मुहसँ निकलल शब्द, विशारद पास पढ़ुआकाकाकेँ ओझरा देलकैन। पाछू घुमि पत्नी दिस तकलैन तँ देखलैन जे सड़कसँ अँगनाक घुमौनक भौकपर पहुँच गेल छेली। तँए आँखिसँ अढ़ भऽ गेली। कोकिलक कण्ठसँ निकलल शब्दक तरंग पढ़ुआकाकाकेँ ठेलने-ठेलने, तन आ देहीपर लऽ गेलैन। तन-देह। शरीर आ शरीरी। देह आ देही। मुदा एहेन चन्दन जकाँ झलकैत शब्द हुनका एलैन केतए-सँ। हम तँ कहियो अपन सीमाक उल्लंघन नइ केलौं। अपन ज्ञान घरक सीमासँ बाहर बँटलौं। हुनका अखन धरि किछु देलिऐन कहाँ। मुदा शब्द तँ शब्द जकाँ अछि। किए ने बजनिहारिए-सँ पुछि लिऐन। ओहो तँ आन नहि, अर्द्धांगिनीए छैथ। घर-सँ-बाहर धरि बनल रहैले दुनूक सहयोग तँ बरबैरे अछि। एक सीमाक भीतर ओ आ एक सीमाक भीतर अपने छी। अपने तँ कमा कऽ बिनु गनले रुपैआ हाथमे दऽ दइ छिऐन। मुदा ओइ रुपैआकेँ नचबै तँ वएह छैथ। तैसंग पिताक देल दसो बीघा जमीनकेँ तँ सेहो वएह नचबै छैथ...।

पढ़ुआकाका जेते दुनू गोरेक भीतर झाँकै छला तेते हटल-हटल बुझि पड़ैन। मन वौआ गेलैन जे पति-पत्नीक, पुरुख-नारी आ स्त्री-

स्वामीक बीच केहेन सम्बन्ध हेबा चाही। मुदा विचारमे समझौता भऽ गेलैन। किए ने दुनू गोरे विचारि कऽ परिवारकेँ ससारी। मनमे खुशी एलैन। गामक सीमो टपि गेला। विद्यालयक मुरेड़पर नजैर गेलैन, सवुर भेलैन जे पहुँच गेलौं। तीस-पैंतीस सालक अभ्यास तँए थकान नइ बुझि पड़ैन मुदा...।

विद्यालय भवनक सीढ़ी, जैठाम ओसारपर चपरासी बैसैत तइ सीढ़ीसँ एक लग्गी पाछूए पढ़ुआकाका रहैथ कि चपरासी उठि कऽ ऑफिस दिस विदा भेल, जे कक्को देखलैन। सीढ़ी लग पहुँच पढ़ुआकाका आगू तकला जे चपरासी घुमि कऽ अबैए आकि नहि। मुदा नै देखि काकामे पौरुख जगलैन। मनमे उठलैन अखन तँ सेवानिवृत्तो नहियेँ भेलौं हेन, तखन किए अनकर सेवा लइले मुँह ताकब! सीढ़ीसँ ऊपर तँ चढ़ि गेला मुदा सीढ़ीक ओ प्रश्न जे पछुएने अबै छेलैन आगूसँ घेर लेलकैन। जे चपरासी 'बाबा' कहैए, ऑफिसोक सभ 'भैये-काका' कहै छैथ मुदा की से कहने शरीरक शक्तियो घटि-बढ़ि सकैए? जँ से नहि, तँ परिवारमे किए कहल जाइए? नजैर ठनकलैन, अगर बीस बर्खक अधार बना देखै छी तँ उम्र दोबराइत जाइए। उम्रे तँ शरीरक शक्तिकेँ घटबै-बढ़बैए.! पढ़ुआ-कक्काक मन हल्लुक भेलैन। मुदा चपरासीक बेवहारसँ मन खटाएले रहलैन...।

हवा उठि चुकल छल जे आइ चारि बजे पढ़ुआकाकाकेँ सेवा-निवृत्तिक चिट्ठी भेटतैन। विद्यालयक वातावरणमे सोग पसैर गेल छल।

स्टाफ-रूम पहुँचते पढ़ुआकाकाकेँ एक नहि अनेक तरहक खटका खटकए लगलैन। आन दिनसँ बेवहारो बदलल। मुदा चपरासीबला बेवहार मनकेँ बेसी हौंड़ैत रहैन। मुदा कुरसीपर बैसते तह दैत मनसँ हटौलैन। शिक्षक सबहक बीच गप-सप्पक क्रम सेहो बदलल-बदलल बुझि पड़ैन। किछु व्यंग्य-वाणसँ क्रमकेँ बदलौ चाहैथ तँ ओहन बेवहारे नै छेलैन। चालिसँ थाकल रहबे करैथ, आँखि झल-फलाए लगलैन। गमे-गम नीनो आबए लगलैन। अलिसा कऽ आँखि मूनि लेलैन। पढ़ुआकाकाकेँ आँखि मूनल देखि इशारामे उतरीक चर्चा हुअ लगल। मुदा पढ़ुआ-कक्काक आँखि बन्न, तँए किछु बुझबे ने करैथ।

दू बजि गेल। अढ़ाइ बजेमे ट्रेन अछि तँए स्टाफ सबहक बीच चिलमिलक कुचकुची जकाँ पसैर गेल, सबहक देह-हाथ चुलचुलाए लगलैन। कुरसीक पौआ सबहक आवाजसँ पढ़ुआ-कक्काक भक्क टुटलैन। बैग लऽ संगी सभ निकलैक उपक्रम करए लगला, ऑफिसक बड़ाबाबू आबि पढ़ुआकाकाकेँ कहलकैन-

“अपनेक पत्र अछि। जे चारि बजेमे देल जाएत, तँए अपने चिट्ठी लेलाक बादे प्रस्थान करबै?”

कहि बड़ाबाबू ऑफिस दिस बढ़ि गेला। ठाढ़े प्रणाम करि कऽ संगियो सभ निकैल गेलैन। पिजरामे बन्न सुग्गा जकाँ पढ़ुआकाका असकरे कोठरीमे बैसल रहला। बड़ाबाबूक भाषापर नजैर गेलैन। आन दिनक जे बोली रहै छेलैन, तइ हिसावे औझुकामे किछु करुआहट बुझि पड़ि रहल अछि। काल्हि धरि सहयोगी सभ अरियाति कऽ पहिने विदा कऽ दइ छला तेकर बादे कियो जाइ छला.! पढ़ुआ-कक्काकेँ नौकरीक एहसास भेलैन। जहिया विद्यालयमे सेवा करए एलौं तहिया बच्चा सभसँ की सम्बन्ध छल। एकठाम खेनाइ, एकठाम रहनाइ आ एकठाम बैस पढ़ौनाइ। पानि पीबाक इच्छा होइ छेलए आ बजै छेलौं तँ पानि अननिहारक होड़ लगि जाइ छल। जे पहिने लोटा पकैड़ पानि अनै छल ओ अपनाकेँ कुशाग्र बुझै छल। मुदा आइ की देखै छी? शिक्षकक आगूमे छात्र सिगरेटक धुँआ उड़बैए! केना एहेन रोगक प्रवेश शिक्षण-संस्थानमे भेल? जहिये-सँ विद्यालयक सरकारीकरण भेल तहिये-सँ विद्यार्थी पतराए लगल। ओना गाम-गाममे स्कूलो खुजल आ पढ़बैक रूप सेहो बदलल। होइत-हबाइत विद्यालय छात्र-विहिन भऽ गेल। ओना महिनवारी वेतनो नीक बनि गेल। मुदा ओहूमे कमी रहल। मासे-मास नइ भेट सालक चुकती सालमे हुअ लगल। अखन धरि नोकरीकेँ नोकरी नहि, अपन काज बुझै छेलौं। मुदा आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे केतौ बन्हनमे जरूर फँसल छी।

चारि बजिते बड़ाबाबू ऑफिसक स्टाफक संग, पढ़ुआकाका लग आबि हाथमे चिट्ठी दैत हस्ताक्षर करैले बोही आगूमे बढ़ा देलकैन। जहिना रजिष्ट्री ऑफिसमे हस्ताक्षर केने परिवारक सम्पैत टुटैए तहिना पढ़ुआकाकाकेँ नौकरी टुटि रहलैन हेन। हस्ताक्षर करिते पढ़ुआकाका

हतास भऽ गेला। मनमे उठलैन सभ किछु हरा गेल। जेते पढ़ने छेलौं तइमे-सँ पहिने ओते हराएल जेकर उपयोग नइ भेल आ जेहो किछु बँचल ओ विद्यार्थी हरेलासँ हरा गेल। जे किछु जीबैक आशा बँचल छल ओहो हरा गेल! की हम ऐठामसँ उठि सोझे असमसाने जाएब आकि.?

आगूमे प्रश्न ठाढ़ होइते पढ़ुआ-कक्काक मोन पड़लैन, अपना संग किनको हाथो पकड़ने छिऐन किने? दू परानीक जिनगी केना चलत? कहैले पेंशन भेटत मुदा पेंशन पेबामे जे लेन-देन छै, ओ हमरा बुते कएल हएत? अखन धरि, जहियासँ सरकारी दरमाहा भेटए लगल तहियासँ ऑफिसक बड़ाबाबू आनि कऽ हाथमे जे दइ छला ओ चुपचाप जेबीमे रखि पत्नीक हाथमे दऽ दइ छेलिऐन। मुदा जेना सुनै छी तेना हमरा बुते कएल हएत? की जिनगीक एक्कोटा व्रत निमाहै-जोकर हम नइ छी.?

द्वन्द्वमे पड़ल पढ़ुआ-कक्काक छाती दलकए लगलैन। तैबीच चपरासी आबि टोकलकैन- “कोठरी बन्न करब, अपने प्रस्थान करियौ।”

अर्द्धचेत अवस्थामे पढ़ुआकाका कोठरीसँ निकैल पताइत डेगे ओसारपर एला। डेगे ने उठैन। कहुना-कहुना सीढ़ी लग आबि ओंगैठ कऽ बैस गेला। अर्द्धचेत मनमे विद्यालयक चिट्ठी एलैन। जेबीसँ निकालि पढ़ए लगला। सूचना देल जाइत अछि, तेसर मासक अन्तिम तिथिसँ सेवा-मुक्त होएब।..निचला पाँती पढ़ौ ने लगला , मचोड़ि-सचोड़ि चिट्ठीकेँ सीढ़ीक आगूमे फेक लहरैत मने उठि कऽ विदा भेला। मुदा जहिना नदीक किनछैरक पानिमे पैसैसँ माल-जाल पाछू पएर करैत तहिना पढ़ुओ-कक्काक पएर आगू-पाछू हुअ लगलैन। मनक लहैरसँ पएर तनेलैन। आगू बढ़ए लगला। विद्यालयक फाटक लग पहुँच पाछू घुमि तकला तँ बुझि पड़लैन जे जेना खंडहर ठाढ़ अछि। मात्र ईंटा-सिमटीक जोड़ल घर। मुदा क्रोध चढ़ले रहैन। फुरलैन, जखन जीबैक सभ रस्ता बन्न भऽ रहल अछि तखन मरैयोक तँ ढेरी उपए अछिए। मुदा ओ तँ अपराधक श्रेणीमे औत! जीबैले अपराध करि कऽ कियो मृत्यु प्राप्त करैए मुदा मृत्यु-ले अपराध...।

बीच रस्तापर आबि पढ़ुआकाका क्रोधक लहैरमे आरो ओझरा गेला। मुदा मनमे हूबा जगलैन। हूबा जगिते फुरलैन, जखन विद्यालय अकाजक श्रेणीक सर्टिफिकेट दइए देलक तखन एक्केटा उपए अछि जे

जिनकर हाथ पकैड़ भार नेने छिऐन तिनका लग पहुँच कहिऐन जे अखने दुनू परानी हरिद्वारक रस्ता धरू। छोड़ू ऐ घर-दुआरकेँ। ओतै कोनो मन्दिरक पुजेगरी बनि जाएब आ शिवजीक शरणमे रहि हुनको महेशवाणी सूनब आ अपनो नचारी कहबैन। डमरूओ बजाएब आ हुनके जकाँ नचबो करब...। तखने एकटा छुछुनैर दहिना भागसँ बामा भाग छुछुआइत टपैत रहए, कि पढ़ुआ-कक्काक भक्क टुटलैन। ताबे छुछुनैर ससैर कऽ बामा भाग पहुँच गेल। मनमे शंका भेलैन जे छुछुनैर पैरमे काटि लेलक। झूकि कऽ तर्जनीक नहसँ टोबए लगला। छोटकी चुट्टीक बीख जकाँ बिस-बिसेलैन। मन मानि गेलैन जे छुछुनैर काटि लेलक। सोझ भऽ चारू भाग हियौलैन। काजक बेर रहने सभ छिड़ियाएल रहए। रस्ता खाली। विद्यालय दिस तकलैन। सभ चलि गेल छला। मनमे एलैन छुछुनैरक बीख तँ अपनो झाड़ए अबैए। मनमे खुशी एलैन। मुदा लगले मन बदैल गेलैन। अपन बीख अपना बुते कहाँ झड़ै छै, तँ की ऐठाम पएर पटैक कऽ मरि जाएब आकि जेतए मनतरिया भेटत ओतए जाँच करा लेब। मुदा असगरे पढ़ुआकाका, तँए मनमे उठलैन- ताधैर अपने मंत्रसँ काज चलाएब। मंत्र पढ़ैत... सैयाँ-निनाबे... दु... एक...।

मंत्रकेँ चारि चरणमे बाँटि, एक चरण पढ़ि मुहसँ फुकि दैथ। अबैत-अबैत गामक सीमापर आबि गेला।

परिवारक पहिल पीढ़ीक विशारद पढ़ुआकाका। किसान परिवार। दस बीघा खेती। लालकाकी सेहो किसाने परिवारक। खेतीक सभ लूरि माए-बाप सिखा देने रहैन। किसाने परिवार देखि लालकाकीक पिता कुटुमैती केलैन। ओना पढ़ल बर पाबि दुनू परानीक हृदय जुड़ा गेल रहैन जे लक्ष्मीक संग सरस्वतियो छैन।

जहिना एकटा सीमा टपने एशिया-यूरोपक दू तरहक सभ किछु भेटैत, तहिना पढ़ुआकाकाकेँ सीमापर अबिते बुझि पड़लैन। सौनक मेघ जकाँ मनमे टोपर बान्हि देलकैन। पानि जकाँ बुधि पसैर गेलैन। जीवित छी आकि मुइल से होशे ने रहलैन। थुस-दे बैस रहला। मोन पड़लैन अकाजक हएब। दुनियाँ तँ काज करैबलाक छी। की मृत्युक शय्यापर सजि जाइ? जेहो कनी-मनी आशा पेंशनक अछि, सेहो नहियेँ हएत। जिनगीमे कहियो

जइ हाथसँ घूस नै देलौं ओतनो नै निमाहल हएत। मुदा व्रत तँ जिनगीक पाशापर बैसल अछि.! पढ़ुआ-कक्काक मन राँइ-बाँइ भऽ फटि गेलैन। पहाड़क झरनासँ झहरैत पानि जकाँ नोर हृदय दिस बहए लगलैन। हृदय पसीज गेलैन। मोन पड़लैन अर्द्धांगिनी। चालीस बर्खसँ संग रहनिहारि, जे वृत्ति अछि ओइसँ हटल रखैमे केकर दोख भेल? की हम हुनका साँझो-भोर पढ़ा नै सकै छेलिऐन। जँ से केने रहितौं तँ जिनगी बेलाइग किए होइत? जिनगीक सुख-दुख संगे भोगितौं। दू मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। माटिक मुरूत बना घरमे छोड़ि देलिऐन। अपनो एते होश नै केलौं जे साए बर्खक जिनगीमे अधडरेड़ेपर कानून अकाजक घोषित कऽ देत! आब शेष जिनगी केना चलत? अपनो ने छोटोटा स्कूल बनेलौं जइमे जिनगी भरि सेवारत रहितौं! निराश मनमे सासुर मोन पड़लैन। बिआहमे जे जमाए रूसैए से कोन दादाक कमेलहा-ले रूसैए! मुदा सासु मोन पड़िते पढ़ुआकाका मधुआए लगला। जँ लोक सासु लग नै रूसि अपन मनोकामना पूरा करत तँ केतए करत? मन आरो पघिल गेलैन। हुनके देल ने कामधेनु पत्नी छैथ। मुदा फेर मनमे उठलैन जे रूसबो तँ केतेको रंगक होइए। बचकानी आ सियानी रूसब, एक्के रंग केना हएत। तत्-मत् करैत विचारलैन जे सियानी रूसबसँ शुरू करब आ जेते निच्चाँ सुतैर जाएत तेते निच्चाँ धरि आबि अँटैक जाएब। फुरफुरा कऽ उठि पढ़ुआकाका घर दिस विदा भेला। चारूभर चकोना होइ छला जे कियो देखए नहि। मुदा से सुतरलैन। घरपर आबि हाँइ-हाँइ कऽ चौकीपर पड़ि गुम्हरि कऽ बजला- “ई घर मनुक्खक रहैबला छी! एमहर मकड़ाक झोल लटकल अछि तँ ओमहर बिढ़नी छत्ता लगौने अछि.!”

कहि, रूसि कऽ सिरहौनीपर मुड़ी रखि पड़ि रहला। बाड़ीमे काज करैत पत्नी अबैत देखि नेने रहैन। हँसुआ-खुरपी बाड़ीए-मे छोड़ि लालकाकी आँगन दिस बढ़ली तँ किछु आवाज सुनि पड़लैन, मुदा नीक नहाँति नइ बुझि सकली। ओना, लोकक दुआरे पढ़ुओकाका मुँह दाबिए कऽ बाजल छला। दोहरा कऽ फेर तरसँ गुम्हरैत बजला- “एहेन-एहेन घरमे मरितो रहब तँ कियो खोजो-पुछाइर करैबला...।”

पढ़ुआ-कक्काक बात लालकाकी बुझि गेलखिन जे केतौ किछु

भेलैन हेन। दू बीघा हटल आवाजमे लालकाकी बजली-

"एलौं।"

'एलौं' सुनि पढ़ुआकाकाकेँ सवुर भेलैन आ लालकाकी मने-मन सोचै छेली जे पुरुखक लटारम्भ की धमना लटारम्भसँ कम होइए जे लगले सोझराएत। अच्छा कनी वौस कऽ शान्त कऽ देबैन। माल-जाल अबैक बेर अछि। करजानमे उपद्रव करत। सएह केलैन।

पत्नीक आवाज सुनि पढ़ुआ-कक्काक छाती दहैल गेलैन। नाँगैर सुरैर कऽ विद्यालय घर धरौलक! केतौ-के ने रहलौं। मन गरमेलैन। बमैक कऽ बजला- "काल्हिए विद्यालय जा लिखि कऽ दऽ देबै जे आइए-सँ छुट्टीमे जा रहल छी। मन हेतै तँ मनिआर्डर कऽ रुपैआ पठा देत, नइ तँ नै पठबऽ।"

जेना माटि पानिमे मिलि भऽ जाइत तहिना पढ़ुआ-कक्काक लगले मन थलथला गेलैन। एना पाइयक खेल किए भऽ रहल अछि.? विद्यालयक शिक्षक होइक नाते ऐ खेलकेँ किए ने बुझि रहलौं हेन? आकि अर्थशास्त्र पढ़ैक अभाव रहल?

पढ़ुआ-कक्काक लग आबि लालकाकी पुछलकैन- "चूड़ा भूजि, नोन-तेल-मरीच मिला रखने छी, नेने आएब?"

पत्नीक बात सुनि पढ़ुआ-कक्काक मन मचकी जकाँ झूलए लगलैन। मुदा आस लगिते मन दोसर दिस भऽ गेलैन। खिसिया कऽ बजला- "हूँह! चूड़ा-तूड़ा नै खाएब। रक्खू अपन चूड़ा-तूड़ा!"

मुस्की दैत लालकाकी पुछलखिन- "हमरे छी, अहाँक नइ छी?"

पत्नीक बात सुनि मन सिहैर उठलैन। बेरुका सुरूजक रौद जकाँ पढ़ुआ-कक्काक गरमी कमलैन। बजला- "एकटा गप कहए चाहै छी?"

"भरि-भरि राति तँ गप्पे सुनलौं। अखन हाथ धूराएल अछि, पहिने हाथ-पएर धोने अबै छी तखन अन्डी-तेलसँ घुट्ठियो ससाइर देब आ गिरहो फोड़ि देब। मन हल्लुक भऽ जाएत। सदिकाल कहैत रहै छी जे मोटरगाड़ी लऽ लिअ। अरामसँ जाएब-आएब। से हम्मर गप थोड़े सूनब। तैकालमे कहब जे मौगी-मेहैरक गप छी।"

लालकाकीक गप सुनि पढ़ुआ-कक्काक मन आगिमे पकैत भँट्टा जकाँ असुआ गेलैन। असुआइते लजबिजी जकाँ दुनू पिपनी सटि गेलैन। कल पड़ल रोगी जकाँ पतिकेँ देखि लालकाकी सहैट कऽ निकैल, ठोकले बाड़ी पहुँच गेली।

पिताक देल जमीनकेँ पढ़ुआकाका बिसैर गेला। खाली गाछी-बँसबारिटा धियानमे रहलैन। किसानक बेटी लालकाकीकेँ खेतीक सोल्होअना लूरि छैन, ओना, अन्नक खेती तँ बटाइ लगा नेने छैथ, मुदा पाँच कट्ठा चौमास आ गाछी-बिरछीक सेवा टहल अपने करै छैथ। दूटा गाइयो पोसियाँ लगौने छैथ, जइसँ सुभ्यस्त भोजन भेट जाइ छैन। पक्का घर बना सभ बेवस्थो केने छैथ।

लालकाकी हँसुआ, खुरपी आ कोदारिकेँ आँगनमे रखि, झाड़ू लऽ कऽ अँगना बहारि, कलपर पएर-हाथ धोइ पानि पीबते रहैथ आकि मोन पड़लैन पतिक रूसब। फेर मोन पड़लैन अपन जिनगी। जाधैर माए-बाप लग रहलौं बच्चा रहलौं। दुनू गोरेक इच्छा सदिकाल यएह रहैन जे धिया-पुता कखनो कानए नहि। तहिना तँ सासुर एलाक बादो भेल। बुढ़ी–सासु–सदिकाल कहैत रहै छेली जे कनियाँ अँगनाक मालिक स्त्रीगणे होइ छैथ। तँए आँगनमे सदिछन बिआहक मड़बा जकाँ सतरंगा फूल लटकौने रही। यएह मिथिलाक धरोहर छी। एहेन कनियाँक कमी नहि जे बेटा-बेटीसँ लऽ कऽ सासु-ससुर होइत पति धरिक दुखकेँ अपन दुख बुझि सती-धर्मक पालन करैत एली। मोन पड़लैन सावित्री, दमयन्ती...। करुआ कऽ किछु बाजब उचित नहि। तैबीच दरबज्जा परहक आवाज सुनलैन। “हे भगवान, जानह तूँ।”

मने-मन पढ़ुआकाका अपने सम्बन्धमे सोचैत रहैथ। आमोक गाछी तेहेन अछि जे एक तँ दू मासक भोजन, तहूमे सभ साल नहियेँ। गोटे साल मोजरबे ने करैए, तँ गोटे साल बिजलोके-मे जरि जाइए। गोटे साल बिहाड़िए-मे, आमक कोन बात जे गाछो खसि पड़ैए। गोटे साल तेहेन दबाइ रहैए जे मोजरेकेँ जरा दैत अछि। हुन्डा-हुन्डी पाँच बर्खपर दू मास आम भेटत, तइमे केते जीब सकै छी.?

दरबज्जापर लालकाकीकेँ अबिते पढ़ुआ-कक्काक टुटल मन कलैप

उठलैन। गोरथारीमे बैस लालकाकी कहलखिन- “पएर सोझ करू।”

लालकाकीक बात सुनि, जहिना तारक कम्पनसँ वीणाक स्वर बनैत तहिना पढ़ुआ-कक्काक बोल निकललैन-

“पएर नै टटाइए, हृदयक बेथा छी।”

पतिक बात सुनि फरैक कऽ चौकीपर सँ उठि लालकाकी मधुआएल स्वरमे बजली-

“साँचे स्त्रीगण सबहक-मुहेँ सुनै छी जे पुरुख नँगरकट होइ छैथ! कुत्ता जकाँ सदिकाल नाँगैर टेँढ़े रहै छैन।”

“जे बुझी।”

“तँए कि स्त्रीगण अपन पतिकेँ मुइल कुकुर जकाँ टाँगमे डोरी बान्हि घिसिया कऽ बँसबीट्टीमे फेक औत।”

“चौकीपर सँ उठलौं किए? डाँड़ सोझहे बैसू। बामा हाथ तँ दुनू गोरेक एक्के वृत्त करैए, तँए बामा हाथपर हाथ रखि दहिना हाथसँ छाती सहला दिअ।”

पढ़ुआ-कक्काक बेथा सुनि लालकाकीक मन कानि उठलैन। जाधैर ओछाइनोपर पड़ल रहता ताधैर सत्ती साध्वी तँ...।

लालकाकीकेँ चौकीपर बैसते पढ़ुआकाका आँखि-मे-आँखि मिला बजला-

“सभ अंगक दूरी समान अछि। विधाताक बनौल जिनगीक अदहा भाग अहाँ छी।”

‘अहाँ छी’ बजिते पढ़ुआकाकाकेँ मोन पड़लैन छठियारीक बात। आनन्द-मग्न होइत पत्नीकेँ कहलखिन-

“भारी भूल भेल जे अहाँसँ भरि मन कहियो जिनगीक गप नै केलौं। जेकर प्रायश्चित अहाँ-मुहेँ सूनब।”

अवसर पाबि लालकाकी पुछि देलखिन-

“अहीं कहू जे आइ धरि कहियो ई बात बुझा देलौं जे दुनू परानी केते दिन जीब? जेते दिन जीब ओते दिन केहेन जिनगी जीब? राजा-दैवक

कोनो ठेकान छै जे अहीं कहिया मरब आकि हमहीं कहिया मरब। अखन दुनू परानी जीबै छी, मुदा ईहो तँ भऽ सकैए जे एक गोरे जीबी आ एक गोरे मरि जाइ।"

पत्नीक बात सुनि उछैल कऽ चौकीपर ठाढ़ होइत पढ़ुआकाका बजला-

"नोकरी छीन निहत्था केलक मुदा तँए कि मरि जाएब। जखन अन्हरा-नेंगरा सौंसे जिनगी बना गामक आगिसँ अपन रच्छा कऽ सकैए तखन तँ...।"

❑ अर्द्धांगिनी: लेखन वर्ष- 2012

इमानदार घुसखोर

☰

चुनमुन बाबूकेँ सभ कियो—चाहे ओ आम आदमी होथि, कचहरीक वकील, मुंशी, किरानी, इनटेलिजेन्स विभागक अफसर होथि वा प्रशासनिक पदाधिकारी—ई बात जनैत अछि जे हिनका सन घूसखोर पूरा जिला में दोसर कियो नै छैथ। मुदा, ईहो सभ जनैत अछि जे चुनमुन बाबू अपन जिनगीमे कहियो अपन इमान नै डिगौलैन।

जिला सत्र न्यायालयक प्रथम श्रेणीक जज चुनमुन बाबू छैथ। ओना असल नाओं 'सुरेन्द्र प्रसाद' छिऐन मुदा दादीक पहिल पोता रहने उपहार देल नाओं 'चुनमुन' छिऐन जे पछाइत बाबू जोड़ा गेलैन। उर्फ कए कऽ अपनो चुनमुन बाबू लिखिते छैथ जे नेमप्लेटमे सेहो छैन। ओना बहुतो लोक प्रेमचन्द आ दिनकरजी सन भेला जिनकर असली नाओंसँ बेसी लोक उपनामेकेँ जनै छैन।

बच्चेसँ चुनमुन बाबू इमानदारीक निर्वहन करैत आएल छैथ जेकर फलाफल सेहो जीवितेमे भेट रहल छैन। पढ़ै-लिखैमे एते इमानदार रहला जे कहियो मौलिक रचना छोड़ि नोट-फोंटक सहारा नइ लेलैन जइसँ सभ दिन नीक रिजल्ट होइत रहलैन। ओना सुभ्यस्त परिवार रहने कहियो अर्थक अभाव सेहो नहियेँ भेलैन। मुदा अपनो पढ़ैमे एते इमानदारी रखबे केलाह जे शिक्षकगणसँ परिवारजनक नजैरमे रहला। एम.ए; एल.एल.बी. कए प्रथम श्रेणीक जिला सत्र न्यायाधीश बनला।

चारि भाँइक बीच साए बीघासँ ऊपरे जमीन छैन जइमे तीन भाँइ नोकरी करै छैथ आ एक भाँइ देबेन्द्र प्रसाद गिरहस्ती करै छैथ। गिरहस्तीक अर्थ खाली खेतीए करब नहि, बल्कि परिवारकेँ संचालित करब सेहो होइत जे सुरेन्द्र प्रसादमे रहैन। नोकरिहरो भाँइ सभकेँ नै बुझि पड़ैन जे खनदानी परिवारमे कनियोँ केतौ घून-घान आकि दिवार-गराड़ लगल अछि। ओना, परिवारक एहेन

बनाबटमे चुनमुने बाबूक विचार काज केलकैन। वएह कहलखिन जे जखन तीन भाँइ नोकरी करै छी तखन खेत आ परिवार देबेन्द्रेक भेलैन, जइ दिन हमसभ रिटायर भेलापर गाम आएब तइ दिन ऐगला विचार करब। मनमे ईहो रहैन जे जखने हम सभ खेत बाँटि लेब तखने ढेर तरहक बिहंगरा परिवारमे उठत। एक तँ ओहिना जमीन जाल छी तैपर भैयारीक तँ आरो महाजाल। जे सम्पैत आइ धरि मान-प्रतिष्ठा बनल रहल अछि वएह गाड़ा-घेघ बनि सभटाकेँ धोइ-पोछि एकबट्ट कऽ देत। जखन जिनगीमे माने-प्रतिष्ठा नहि तखन जिनगियो तँ एक्सपाइर डेटक दबाइसँ बेसी किछु नहियेँ होइत।

एक तँ ओहुना समय निर्धारित अछि जे केते उमेरमे बेटाक बिआह आ केते उमेरमे बेटीक बिआह करक चाही, तहूमे देहक लक्षण आगूमे ढाढ़ भइये जाइत अछि। से सुरेन्द्रक पिता गौड़ीनाथ सेहो केलैन। जखन सुरेन्द्र प्रसाद बी.ए.मे पढ़ै छला तखने बिआह कऽ देलखिन। कहैले तँ ईहो अछि जे जखन पढ़ि-लिखि अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जाइ तखन बिआह करक चाही, मुदा जैठाम पैरपर ठाढ़ होइक बेवस्थे नइ रहत तैठाम की सभ अविवाहित बनि बबाजीए भऽ जेता। कौलेजक अवस्थामे सुरेन्द्र प्रसाद रहैथ मुदा मिसियो भरि मनमे ई नहि उठलैन जे अखन बिआह अनुचित हएत। साहित्यसँ दिलचस्पी रहबे करैन तहूमे मध्ययुगीन साहित्यसँ बेसी, तँए मनमे चप-चपिये रहैन। पितोक मनमे कहियो दहेजक लोभ नइ उठलैन जे नीक शिक्षा पाबि नीक नोकरी भेटलापर नीक दहेजो भेटै छइ। समान्य गिरहस्त परिवार जकाँ गौड़ीनाथ अपन दायित्व बुझि समैपर काज समेट लेलैन। किएक मनमे उठितैन जे बेटाकेँ पढ़ैमे बाधा उपस्थित हएत, तँए मन खुशीसँ खुशियाइते रहलैन।

एम.ए.क पहिल सत्रमे जखन सुरेन्द्र पढ़ै छला तखन जौंआँ बेटी भेलैन। नैहरेमे पत्नी रहथिन। ओना साले भरिपर दुरागमन भऽ गेल रहैन। जौंआँ बेटी देखि माइक मनमे तँ कनी सोगो पैसलैन मुदा नानीक मनमे तेतेक खुशी रहैन जे सोल्होअना नातिने पाछू बेहाल रहए लगली। खुशीक कारण रहैन जे तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल अछि जे अनेरे लोक बेटाक आशा करैए, तइसँ नीक बेटीए। जँ बेटीकेँ नाति नहियेँ देखत तैयो जँ दुनू बेटीक जिनगी-जान रहलै तँ कहियो माएकेँ थोड़े दवाइ-दारू आकि कपड़ा-लत्ताक दुख हुअ देत। अपनो पहिरन जँ दैत रहतै तैयो सभ दिन हराएले रहत। तहूमे तेहेन कपड़ा सभ बनि रहल अछि

जे तीन साल तक नबे रहैए, आ चलत केते दिन तेकर कोनो ठीक छइ। सुइटर बीनैक लूरि सिखा देबै, भरि बाँहिसँ लऽ कऽ अदहा बाँहिंक तेते दैत रहतै जे दस-दसटा साटि कऽ पहिरत। की करतै माघक जाड़।

ओना, सुरेन्द्रक माइक मनमे सेहो खुशीए रहैन जे भगवान अपना कोखिमे बेटी नै देलैन तँ की हेतै पोतीक कन्याँदानक बाट तँ खुजिए गेल। जे नारी एकोटा कन्याँदान नै केलक ओ चाहे जे हुअए मुदा माइक एक सूत्रमे कम जरूर रहत।

जिला सत्र न्यायालयक न्यायाधीश बनि ज्वाइन करए सुरेन्द्र प्रसाद आइ जेता। असीरवाद दैत माइयो आ पितो कहलखिन- “बौआ, नमहर काजक भार उठबए जा रहल छह, तँए नमहर बनि काज करिहह।”

माता पिताक असीरवाद सुनि सुरेन्द्र किछु नै बजला मुदा मनमे एकटा प्रश्न घुरियाए लगलैन, जे माए बुझि गेलखिन। तोसैत कहलखिन- “बौआ, सभ दिन एकार बनि पढ़लह-लिखलह मुदा अपन परिवार अपने आगू नीक होइ छै तँए पत्नियोँ आ चारू कनटिरबियोकेँ संगे नेने जाह।”

सोझहेमे पिता सेहो रहथिन तँए सुरेन्द्र किछु बाजए नै चाहैथ मुदा मन गुनगुनाइत रहैन जे माए बुझि गेलखिन। बजली- “बौआ, अपन बच्चाकेँ अपने देख-रेखमे पढ़ाएब बेसी नीक होइ छै, सेहो हेतह आ आइ-काल्हि देखै छिऐ दूधे लगसँ बच्चाकेँ अपन लगसँ माए-बाप हटा दइ छइ। दोसर हमरा सबहक आशा केते दिन करै छह, तँए जँ अपना सीखल नै रहतह तँ ऐगलाकेँ कथी सिखेबहक। मनमे होइत हेतह जे पिता की कहता मुदा नोकरीक अर्थ तँ ई नइ होइ छै जे गामे छोड़ि देब, परिवारे छोड़ि देब। मौका-मुनासिब अबैत-जाइत रहिहह। बेटा धन छह, तोरा माल-जाल जकाँ थोड़े डोरी बान्हि रखल जाएत। मनमे ई होइत हेतह जे परिवार टुटि जाएत मुदा से भ्रम हेतह।

भदवारि मासमे हिमालयक पानिक मिलान समुद्रसँ भऽ जाइत अछि जे अनदिना माने आन मौसममे कमजोर होइत-होइत सुखि कऽ छुटि जाइत अछि मुदा फेर भदवारिमे की देखै छहक। परिवार एक धार छी जेकर प्रवाह स्वच्छ पवित्र बनि अनवरत सामाजिक दिशामे बहैत रहए यएह ने भेल। छाती सक्कत कए कऽ घरसँ जाह।”

अखन धरि सुरेन्द्र प्रसाद ‘छाती सक्कत’ करबक अर्थ खाली कहाबते

धरि बुझै छला मुदा माइक असीरवादक शब्द मनमे औंढ़ मारलकैन। औंढ़ मारिते मनमे उठलैन- छाती सक्कत करब बाता-बातीमे आकि काजमे? विचार सक्कत करब आकि पवित्र विचार सक्कत करब? पवित्र विचारक संग पवित्र जिनगी सक्कत बना चलब आकि सक्कत मनुक्ख बनब? ..समुद्रक पानि जकाँ सुरेन्द्र प्रसाद जेते डुबकुनियाँ मारैथ तेते अथाह दिस डुमल जाइथ। अनासुरती मनमे उठलैन- आएल शुभक लगनमा शुभे हे शुभे...।

माइक शुभ बात सुनि शुभेक्क्षु नजैरसँ दलदलाइत सुरेन्द्र बजला-

"माए, तोहर असीरवाद शिरोधार्य अछि मुदा समस्यो तँ जिनगीक बाधक बनि दानव जकाँ अबैत रहै छै किने।"

ओना सुरेन्द्र खुशीमे दहैल गेल छला जइसँ ऐ विचारपर नजैर गेबे ने केलैन जे जहिना बड़का जंगलक कातमे पहिने झाड़े-झूड़ रहै छै जइमे छोट-छोट जानवर बास करैए तहिना ने मनुक्खोक बोन छै जइमे पहिने छोटका जीव-जन्तु रहै छइ। चुपचाप भेल पिताक मनमे नचैत रहैन जे जुड़शीतलक अछींजल जकाँ घरसँ निकैल दोसराक सेवामे सुरेन्द्र जा रहल अछि की ओकरा बसौत आकि उजाड़त। मुदा बिनु गहन लगने अनुमाने ने होएत।

जहिना कौलेजक पहिल दिन, सासुरक पहिल भैंट, दोस्तीक पहिल मिलन भेने स्वत: हृदय डगमगाए लगैत तहिना सुरेन्द्रो प्रसादकेँ कार्यालय पहुँचते डगमगाए लगलैन। तैबीच नव-नव संगी सभ भैंट करए आबए लगलैन। संगियो बेसी ओहन नहि जे समतूल हुअए। मुदा सुरेन्द्र अवाक। सोझहे नमस्कारक उत्तर नमस्कारमे दैत रहला। आइ मात्र हाजरी बनाएब छेलैन तँए काजक भारो बेसी नहियेँ रहैन। संगी सभ कमिते असकरे रहि गेला। मनमे परिवार आ दरमाहा, सोझहा-सोझही संगे उठलैन- दरमाहा तँ सीमित परिवारक स्तरक हिसाबसँ बनै छै, तहूमे जे देश जेहेन रहल ओकर ओइ तरहक बनै छइ। पाँच गोरेक परिवारमे छह गोरे अखने छी। तहूमे चारिटा बेटीए अछि। समाजो तेहेन अछि जे दहेजक सवारी कसबे करत। घरक भाड़ा, बिजली-पानि, इन्कम टेक्स इत्यादि कटिये जाएत तखन हाथमे केते औत? महगी अपना चालिये चलबे करत। तहूमे तेहेन लफड़ल डेग पकैड़ नेने अछि जे मध्यवर्गीय जीवन धारक मोनि जकाँ चकभौंर लऽ रहल अछि.!

सुरेन्द्र प्रसादक मन विषसँ बिसाइन हुअ लगलैन। ओना, काज नै रहने

कार्यालय समयसँ पहिने छोड़ब पहिल दिन उचित नै हएत। कुरसीक मुरेड़ापर मुड़ी अँटकौने अकास दिस देखैक कोशिश करैथ मुदा कार्यालयक छत बाधित करैत रहैन।

चारि बजिते कार्यालयसँ निकैल सुरेन्द्र प्रसाद सोझहे डेरा दिस विदा भेला। रंग-बिरंगक टीका-टिप्पणी रस्तामे होइत जे किछु नीको किछु अधलो छल। परदेशमे पति कमाए एला, से खुशी सुनयनाकेँ रहबे करैन। चारू बेटीक बीच सुनयना यक्षिणी जकाँ पतिक आगमनक प्रतिक्षा बेर-बेर नजैर उठा-उठा करैत रहैथ। ओसारपर पतिकेँ पहुँचते सुनयना मुस्की भरल नजैरक तीर छोड़ली। ..वौड़ाएल मन सुरेन्द्र प्रसादक, जिनगीक समस्यासँ वौड़ाएल। ओना, कियो खुशियोसँ वौड़ाइत अछि तँ कियो दुखोसँ मुदा सुरेन्द्र वौड़ाएल छला-अपन आगूक जिनगीक समस्यासँ। अपनाकेँ संयमित करैत बेटीक हाथ पकड़ने कोठरी पहुँचला। पत्नी चाह अनलकैन। दुनू गोरे चाह पीबैत गप-सप्प शुरू केलैन। अपन आमदनी देखबैत सुरेन्द्र बजला- "अपन परिवार भेल, आमदनी सत्तैर हजार महिना भेल, तइमे घर भाड़ा आ इन्कम टैक्सक संग अनेको खर्चक सूत्र लगले अछि। घर केना चलत से तँ अपने दुनू गोरे ने विचारब?"

जहिना सुरेन्द्र प्रसाद अपन मोटा पत्नीपर पटकए चाहलैन तहिना पत्नी भोलीबौलक गेन जकाँ उनटबैत बजली- "देखू, हमर कुल-खनदान ओहन नै रहल जे केकरो अधिकार छीनत। जे काज अहाँक छी ओ अहाँक भेल आ जे हमर छी ओ हमर भेल। छह मासक पछाइत पेटक बच्चाक दुख माइए बुझैत अछि, बाप थोड़े बुझत? आकि कहियो किछु कहबो केलौं?"

दू-हत्थी बौल फेकैत सुरेन्द्र प्रसाद बजला- "कहलौं तँ बेस बात मुदा पढ़लौं-लिखलौं दुनू गोरे फुट-फुट स्कूलमे, सभ दिन रहलौं फुट-फुट मुदा धिया-पुता तँ सझिया भेल किने, तखन देह छिपौने काज चलत?"

सुनयना अपनाकेँ कमजोर महसूस करैत बजली- "अहाँक जे विचार अछि से बाजू, जे अनुकूल हएत मानि लेब आ जे नै हएत ओकरा तत्काल रखि लेब।"

गम्भीर चिन्तक जकाँ सुरेन्द्र बजला- "जेते हमरा दरमाहा भेटत ओ अहाँक हाथमे दऽ देब आ अहाँ अपना विचारे परिवार चलाएब।"

नोकरीकेँ जिनगीक धार आ परिवारकेँ सवारी बुझि सुरेन्द्र प्रसाद नावपर

सवार होइत भविस दिस बढ़ला। मनमे उठलैन जे एकबेर पत्नीकेँ पुछि लिऐन जे केना घर चलाएब। ..मुदा एक मनकेँ दोसर मन रोकैत कहलकैन- जखन कुल-खनदानक रक्षक छैथ तखन किछु बाजब उचित नहि, तँए अपना-ले सोचब नीक हएत। चलैत धारमे नावकेँ हवा-बिहाड़ि, पानि-पाथरसँ सामना करैये पड़ै छइ। जखने वेतनक भीतर परिवार चलत तखने एक बान्हल परिवार जकाँ आगू बढ़ब। जखन समाजे अपन रोग अपने अराधि-अराधि कऽ रोगाएल अछि तखन अपन रोग के देखत? मुदा एहनो रोग तँ होइते अछि जेकरा जाधैर दोसर नै बुझैत ताधैर दोसरकेँ कहलो नहियेँ जाइत। कमा कऽ जे परिवारमे आनब ओ पत्नी देखबे करती, आमदपर आमद देखि चसकबे करती, जेते चसकती तेते लोको देखबे करत। देखबो किए ने करत कोनो कि केकरो आँखि सीयल छै जे नै देखत। मुदा बेटा-बेटीक बिआह-दान–माने पढ़ा-लिखा सक्षम बना जिनगीमे उतरैक अवस्था धरिक काज–जँ नै कऽ लेब तँ कोन मुहेँ समाजमे जीब? नीक हएत जे जहिना होशियार रोगी दबाइए दोकानपर दबाइ खा लइए आ घरपर अनबे ने करैए, तेहने जँ उपाय होइ तँ नीक हएत...।

सुरेन्द्र प्रसादक नजैर काज दिस बढ़लैन। कोन एहेन कोर्ट अछि–माने न्यायालय–जइमे काजक बोझ नै पड़ल अछि? से तँ बोझक-बोझ काज अछिए। आ आनसँ भिन्न अपन पहचानो बनबैक अछिए...।

जेना किछु भेँट गेने उत्साह जगैत तहिना सुरेन्द्र प्रसादक मनक उत्साह जगलैन। कार्यालयक संग डेरोमे काज करब। काज बढ़ौने जँ किछु हथियाइयो लेब तँ ओते अनुचित नहियेँ हएत। जँ से नहि करब तँ परिवार साधारण नहि असाधारण रूपमे ठाढ़ अछि। खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ धरि तँ बेटे जकाँ बेटियोक हएत मुदा पढ़ाइ समाप्त होइते वा होइपर रहिते बिआहक भूत कपारपर चढ़ि जाएत। तँए जाधैर प्रतिकूलकेँ अनुकूल बना नै चलल जाएत ताधैर सड़क परहक गाड़ी जकाँ दुर्घटनाकेँ के रोकत। जहिना ओकाइतसँ भारी ढेंगकेँ बाँसक जोगार लगा उनटा-पुनटा घुसकौल जाइत अछि तहिना उनटबै-पुनटबैक जोगार करैये पड़त, मुदा अनुचित रूपमे कदापि नहि.! हँ, तखन एकटा उपाय अछि जे अपन काज तँ यएह ने जे लोकक झगड़ाकेँ–माने मुकदमाकेँ–निर्णय करब। जेकर नोकरी करै छिऐ ओकर काज अनकासँ बेसी करबै। यएह जिनगीक पहचानो हएत। अनेरे किए एते मुकदमा कोर्टमे पड़ल

अछि। महिनामे बीसटा मुकदमाक फैसला करब। जहिना सभकेँ सभ ओझरबै पाछू लगल रहैत अछि तहिना ने कोटो-कचहरी भऽ गेल अछि। ओना काज करैक दिशा सबहक निर्धारित अछि तखन किए ने अपनो अपन बाट पकैड़ तेज गतिये चलब.?

संकल्पित होइत सुरेन्द्र प्रसादक मन ठमकलैन। केकर फैसला करैक अछि, ओकरे ने जे अपन बात अपने नइ बुझि अनेरे ओझराइत आबि गेल अछि आ एकक ओझरीसँ दोसर ओझराएल अछि? जहिना रग्गड़ करैत आबि गेल अछि तहिना हमहूँ दू-चारि रन्दा चला आरो चिक्कन कऽ देबइ! बीसटा केसक फैसला मासक काजक संग डेढ़ लाखक ऊपरी आमदनी सेहो करब अछि। दुनू पार्टीसँ पाइ लेब आ जेकरा पक्षमे फैसला हेतै ओ अपन हएत आ जेकरा विपक्षमे हेतै ओकर पाइ घुमा देबइ। केकरो संग अनुचित नै करब। मुदा लोको तँ शेतानक चरखीए अछि, जे विचारलौं से चलए देत? किए ने चलए देत? चरखीकेँ चरखा बना घुमाएब तखन अनेरे ने सभ सुधैर जाएत। मुदा चरखी चरखा बनत केना?

सुरेन्द्र प्रसादक मन फेर ठमैक गेलैन। थोड़ेकालक पछाइत फुरलैन- जखने काजमे तेजी आनब तखने ने काज मुहथैर लग पहुँचत। मास-दू-मास फोंक जाएत मुदा तेसर मास अबैत-अबैत तँ गर पकैड़िये लेत। जखने केसक बहस हएत आ फैसला करैक स्थितिमे औत, तखने ने ससारैक गर भेटत। तीन-तीन दिनपर तारीख देबै, अनेरे ने मासे दिनमे ठहिया कऽ लिखाइ-फीस जमा करत। चुनमुन बाबूक दस बर्ख नोकरी पूरि गेलैन। अनढड़न फुलवारीक फूल जकाँ चारू बेटी खिलए लगलैन। तैपर अनढड़न भगवान तीनटा बेटी आ दूटा बेटा आरो देलकैन। मुदा पति-पत्नीक बीच सिनेहमे कमीक पेंपी पोनगए लगलैन।

सुनयनाक मन कनैत रहैन जे भगवान तेते धिया-पुता दऽ देलैन जे के केतए वौआएत तेकर ठीक नहि। तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल जे निहत्था बाप-माए बेटीक पार-घाट केना लगौत। अपने कहियो एक पाइ अनुचित नै कमाइ छैथ, की समाज हमरा छोड़ि देत? बिनु दहेजक बिआह बेटी सबहक हएत? केतए-सँ औत? ओना पत्नीक मलिन चेहरा देखि चुनमुन बाबू परखैक परियास करै छला मुदा लाख समस्याक बीच सुनयना पति लग पत्नीए जकाँ रहै छेली।

काजक भार पतिपर छेलैन्हे। बेसी समैयो ने भेटै छेलैन जे बेसी बातो करितैथ।

दोसर साँझ, चाह नेने सुनयना पतिक हाथमे दैत आगूमे ठाढ़ भऽ गेली। जहिना देवालयमे भक्त किछु याचना करए ठाढ़ होइत तहिना। मुदा सुरेन्द्रक मनमे मिसियो भरि प्रतिकुलता नहि एलैन। एक घोंट चाह पीब सुरेन्द्र बजला- “मन मन्हुआएल देखै छी?”

ढलान पाबि जहिना पानि ढलैक जाइत तहिना ढलकैत सुनयना बजली- “एक तँ भगवान बेइमान भेला जे केकरो रोटियोपर ने नून आ केकरो बोरे-बोरे नून दऽ दइ छथिन। नअ-नअ टा बाल-बच्चाक परिमार्जन करब नान्हिटा खेल छी।”

सुनयनाक विचार मुहसँ निकलबो नै कएल छेलैन तइ बिच्चेमे सुरेन्द्र बजला- “खेल-खेल खेलौं।”

‘खेल-खेल खेलौं।’ कहि सुरेन्द्र प्रसाद चुप भऽ अपन आँखि पत्नीक आँखिपर अँटकबए चाहै छला मुदा रोगाएल-सोगाएल-पीड़ाएल सुनयनाक आँखिमे सुखाइत जिनगीक बालुक टीला छोड़ि किछु नहि देखि पड़लैन।

❑ उलबा चाउर, प्रकाशन वर्ष: 2013

अकाल

☰

किरिण फुटिते सुगापटीवालीक माथपर दस-बारहटा छिट्टा-पथिया गेँटल देखि बौकी दीदी पुछलखिन- “आइ भोरे-भोर केम्हर दिन उगल हइ सुगापटीवाली?”

बौकी दीदीक बोल जेना सुगापटीवालीक मनकेँ हौंड़ देलक। ओना, घन्टा-घन्टा भरि बौकी दीदी लग बैस सुगापटीवाली अपनो आ अपन परिवारोक संग-संग देशो-दुनियाँक गपो-सप्प करैत आ बाइस तेबाइस खेबो करैत। खास कऽ पाबैनक ठकुआ आ भोज-काजक लड्डू तँ अरबैध कऽ बौकी दीदी पुतोहु सभसँ चोरा कऽ सुगापटीवाली लेल रखबे करैत। दसो-बारहोटा छिट्टा-पथियाक गेँट माथपरसँ उतारि सुगापटीवाली अँगनाक मुहथैरपर रखलक।

भतझँक्का छिट्टासँ लऽ कऽ घस-छिल्ला, छौर-फेक्काक संग सगतोड़ा, सगधुआ पथिया धरिक गेँट।

करीब महिना दिनक पछाइत बौकी दीदीकेँ सुगापटीवालीसँ भेँट भेल छेलैन, तँए मास दिनक गपो-सप्प बाँकीए रहैन, जे बात सुगोपटीवाली बुझैत आ दीदियो।

माथक छिट्टा उतैरते दीदीक नजैर सुगापटीवालीक मुँहपर पड़लैन। मन्हुआएल मन मौलाएल फूल जकाँ बुझि पड़लैन। मुदा बजली किछु ने। नै बजैक कारण भेलैन जे अपने मन कहलकैन जे जरूर कोनो वेर-विपैतमे वेचारी पड़ल अछि। आन दिन केहेन लहटगइर मुँह देखै छेलिऐ आ आइ किए धुमनाइन मौलाएल बुझि पड़ैए। केना वेचारीकेँ बेथाक बात पुछि आरो लटका दिऐ। तइसँ नीक किए ने दोसरे-तेसरे बात पुछि विचारक धारमे भँसिया दिऐ। अनेरे तँ अपने सभटा गप गुड़ घाउ जकाँ मुइलहा खून-पीजक संग खील निकैल जेतइ। तहूमे एक मासक कथा-पुराण

पछुआएले अछि। जखने पैछला अन्तिम भेँटक गपक नाँगैर पकड़ा देबै आकि अनेरे ने बड़बड़ए लगत। तइमे जे अपना बुझैक अछि से परेख लेब।

सएह सोचि दीदी बजली- "कनियाँ, केतए हराएल छेलह जे एते दिनक पछाइत नजैर पड़लह?"

बौकी दीदीक प्रश्नक उत्तर नै देब सुगापटीवाली उचित नै बुझलक। उचित ऐ दुआरे नै बुझलक जे प्रश्नक उत्तर बिनु पौने प्रश्नकर्तोक मनमे उठि जाएत जे भरिसक कोनो बातक कचोट हमरेसँ ने तँ भेल छै, जे तामसे नै बजैए। मलिन मनक बात रखैत सुगापटीवाली बाजल- "दीदी, हिनकासँ लाथ कोन? लोककेँ बेटा सोग सहल जाइ छै मुदा धनक सोग नै सहल जाइ छइ। ऐबेर भगवान हमरा सभकेँ जचनामे दऽ देलैन!"

कहि सुगापटीवाली गाल दिस टघरल अबैत नोरकेँ आँचरसँ पोछए लागलि। मुँहपर आँचर पड़िते आगूक बोल झँपा गेलैन। मुदा बौकी दीदीक मन ओतै लटकल जे बेथाक कथा कखन औत। मुदा से काते-कात वेदीक लाबा जकाँ छिड़िया गेल।

शिकार फँसैत नै देखि बौकी दीदी दोसर वाण छोड़लैन- "कनियाँ, आब तँ अदहा अखारो बीत गेल, आब किए भतझँक्का छिट्टा आ सगतोड़ा पथिया बीनै छह?"

भरि मुँह बौकी दीदी ऐ दुआरे ने बजैत जे जखन हमरा बुते केकरो नीक नै कएल होइए तखन अनेरे किए केकरो जिनगीक सोग-पीड़ा जगा पीड़ित करबै। मुदा बौकी दीदीक वाणि सुवाणि भेलैन। जहिना बीमारीमे पड़ल कियो कष्टसँ भीतरे-भीतर कुहरैत अपन बेथा अपने मनमे दाबि सहैत रहैए, मुदा रोगक निदानक- डॉक्टर-कैं देखिते मन भुभुआ उठै छै तहिना सुगापटीवालीक मुँह भुभुआएल- "दीदी, हिनका तँ अपन पेटक बात सभ दिन कहै छिऐन, तँए नै कहिऐन सेहो नीक हएत? बड़का अकालमे पड़ि गेने बुधिये वौआ गेल अछि!"

सुगापटीवालीक बात सुनि बौकी दीदी सहमली, मुदा जे मनमे छैन से अखनो नै बुझि पड़ैन। बजली- "अकालोक कि जड़ि-पालो अछि!"

बौकी दीदीक बात सुनियोँ कऽ सुगापटीवाली अनठौलक। ओना, जानि कऽ नै अनठौलक, भेल ई रहै जे जखने पथियाक चर्च दीदी केने

रहथिन तखनेसँ सुगापटीवालीक मन अपन बेथामे तेना बंशी लगल माछ जकाँ नथा गेल रहै जइसँ सुधिये-बुधि घुसैक गेल छेलइ। मुदा दोसर प्रश्नक पछाइत वएह अपन हिस्सेदारी मंगैत आगू आबि बाजल-

"दीदी, महिना दिन पहिने, ई सभटा छिट्टा-पथिया बनेने छेलौं, किए तँ महिना दिनक रोजगार अमबेच्चा टोकरी बनबैमे लगै छल, नफगर काज रहए। चारिटा पेटी आ चारिटा कारामे टोकरी बनि जाइए। दिन-राति खटि कऽ पाँच-दस हजार हाथो-मुट्ठीमे बँचा लइ छेलौं। मुदा तइमे ऐबेर अकाल पड़ि गेल!"

सुगापटीवालीक बात बौकी दीदीक मनमे धँसलैन। मनमे धँसिते जेना फुन-फुनी धेलकैन। फुन-फुनी ई धेलकैन जे अपनो रौदियाह समयमे केते दिन आ केते राति अन्न बिनु कटल छेलैन। दिन तँ कटि गेल छेलैन मुदा ओकर तरियाएल जे सोग-पीड़ा अछि, से तँ कटबे ने केलैन। पाबैन-तिहारकेँ के कहए जे अनदिनो वेचारीकेँ एक मुट्ठी खाइले दैते छिऐ, पाबैनमे पबनौट दैते छिऐ।

जँ कहीं रातिमे भानस नै भेल होइ तँ केना आध मन-एक मन भारी पथियाक जाँक लऽ कऽ बेचए जाएत। तहूमे भतझँक्काबला बड़का छिट्टा आब के लेत। लगनो तँ ओराइए गेल। भदबरिया श्राद्धक भोजो तँ लोक उठाइए कऽ रखि लइए। मासे-मास सुइद दैत सालक अन्त होइत-होइत भोज निबटा लइए। तेहने सग-धुआ पथिया सेहो अछि। एक तँ फड़ाएल साग दोसर कफ-ठेँरक घर सेहो बनियेँ जाइए। बौकी दीदी बजली- "कनियाँ, गप-सड़क्का पाछुओ हेतै, पहिने ई कहऽ जे रौतुका खेलहा छह आकि भूखल?"

बौकी दीदीक बात सुगापटीवालीकेँ अनसोहाँत जकाँ बुझि पड़ल। अनसोहाँत ई जे अखन भोरे अछि, रौतुका भूखल छी आकि भरि पेट खेलहा! आब ने लोक मुहोँ-हाथ धुअत आ भानसक ओरियानो करत। अखन जे बाजिये देब जे भूखल छी, तँ दीदियो यएह ने कहती जे कनी बिलैम जाह, रोटी कि भुज्जा भुजबै छी, खा कऽ जइहऽ। मुदा लगले मन उनैट गेलै जे तीन-तीन, चारि-चारि दिनक पाबैनक ठकुआ आ भोज-काजक लड्डू तँ सेहो दीदी रखबे करै छैथ। सामंजस्य करैत सुगापटीवाली

बाजल- "हिनका ऐठाम खाइ-पीबैमे कोनो कि लाज-धाक होइए। जखन मन हएत मांगियोँ कऽ खा लेब।"

सुगापटीवालीक बात सुनि बौकी दीदीक मन थम्हलैन। मन थम्हिते आगूक बेथा-कथा सुनैक इच्छा भेलैन। मुदा वाह रे मिथिलांगना! कठिन-सँ-कठिन दुख-पीड़ाक बोझ माथमे समेट रखने रहै छैथ मुदा पति वा परिवारक बीच नहियेँ राखब नीक बुझै छैथ। ओना, नीको तँ अछिए। पुरुख हुअए आकि नारी, जँ अपन दुख-पीड़ाक निराकरणक ओरियान अपने करए तँ ओ घीओसँ चिक्कन बाट चलब भेल। मुदा जँ ने अपने करी आ ने परिवारक बीच राखी तँ ओ दुखद जरूर भेल। बौकी दीदी बजली- "कनियाँ, कीदैन कहलहक जे बड़का अकाल?"

'बड़का अकाल' सुनि सुगापटीवाली चौंक गेल। चौंक ई गेल जे हवा-विहाड़िकेँ लोक अबितो देखैए आ जाइतो देखैए। मुदा भेल केतौ आ बजैर गेल अपना ऊपर। हजारो-लाखो बीघाक गाछी-कलम नै फड़ल, किसानक साल भरिक उपज मारल गेल। अपन तँ किछु ने नोकसान भेल मुदा तँए कि जिनगी नै मारल गेल? अपने नै परिवारो समाजोक जिनगी तँ मारले गेल अछि। भोरे-भोरे सकाल-अकालक चर्च लाधब नीक नहि। ई तँ दुकाल-तिकालक विषय छी।

मुदा बौकियो दीदी रगड़ाह तँ छैथे। रगैड़ कऽ सुनबे करती। विचित्र स्थिति देखि सुगापटीवाली बाजल- "दीदी, दुख-बेथा कि केतौ पड़ाएल जाइए, अभावी लोकक तँ भावीए छिऐ किने। अखन भिनसुरका समय छी, जँ पथिया बिका जाएत तँ बालो-बच्चा आ अपनो सबहक मुँहमे जाबी नै लगत। बेचि कऽ घुमैबेर खेबो करबैन आ अकालोक किरदानी सुना देबैन।"

सुगापटीवालीक विचार बौकी दीदीकेँ जँचलैन। मुदा तैयो मनमे तेहेन बिसबिसी धेने रहैन जे पनचैती तँ मानै छी मुदा खुट्टा गाड़ब अहीठाम। फेर दोहरबैत बौकी दीदी पुछलखिन- "कनियाँ, छाहोँ-छूँह जे कहि देने रहबऽ किने तँ अपनो विचारब आ तोरोसँ सविस्तर पछाइत सुनि लेब।"

बौकी दीदीक रगड़ देखि सुगापटीवाली बाजल- "दीदी, ऐबेर आम

नै फड़ने, महिना दिनक आमो खेनाइपर आफत भऽ गेल आ रोजगारो चैल गेल। चारिटा पेटी, चारिटा कारा आ चारिटा कैमचीसँ एकटा टोकरी बनि जाइए। भरि दिनमे चालिस-पचासटा बना लइ छेलौं। दिन-राति काज पसरल रहै छल। रातिके डिबिया नेसि कऽ खाइबेर तक काज चलै छल। टोकरी दामक संग-संग किसानो आ वेपारियो तेते पाकल आम दइ छला जे सबतूर खेबो करै छेलौं। से ऐबेर नै भेल।”

बौकी दीदीकेँ सेहो तीन बीघा गाछी-कलम। ओना, परिवारक हिसाबसँ बौकी दीदीकेँ बेसी गाछी-कलम छैन मुदा किसानी जिनगीमे सभ रंगक खेतीक अपन महत छइ। करताइत दुआरे बौकी दीदीकेँ बेसी-गाछी कलम छैन। सुगापटीवालीक सूर-मे-सूर मिलबैत बौकी दीदी बजली-

“कनियाँ, बिनु रहनौं जेहने तोहर भाग तेहने अपनो भाग ने भऽ गेल। तहिना रहने अपनो भाग आ तोरो एक रंग भेल किने। हमहींटा किए, जखन हजारो-लाखो किसान छातीमे मुक्का मारि जीविते छैथ तखन तौँ की मरि जेबह? समय केतौ दूर चलि गेल, फेर आम फड़त आ तोहर टोकरीक धन्धा चलबे करतह। भेल तँ बीचमे किछु दिन, तइले अनेरे सोग-पीड़ा मनमे किए रखने छह। बिसैर जाह।”

बौकी दीदीक बात सुनि सुगापटीवालीक करिछौंह मुँह ललिया गेल। पथिया माथपर उठा गाम दिस डेग बढ़ौलक।

❑ लजबिजी- 2014

पसेनाक धरम

☰

जहिना अंग्रेजक जून मास काल्हि समाप्त भेल तहिना अपन जेठ मास सेहो ओरानीपर आबि गेल। पैछला साल जे दुर्गापूजामे हथिया नक्षत्रक बर्खा भेल, तहियासँ एको बून पानि मेघसँ नै खसल। ओना, मघाइर बर्खा भेने जाड़ो किछु बेसियाइए जाइए, मुदा सेहो नहियेँ बेसियाएल। तइसँ जाड़क दुख तँ कनी कमबे कएल मुदा रब्बी-राइकेँ लाही चाटि गेल!

हथियाक पछाइत आठ माससँ अकास धरतीकेँ सरकारी राशन जकाँ पानि बन्न कऽ देलक। जइसँ रंग-रंगक विचार धरतीपर उठऽ लगल। कियो बजैत जे रौदी हएत, तँ कियो कहैत आगूसँ रौदी भेने थोड़े रौदी हएत आ जँ पाछूसँ मेघ फाटि बर्खो हुअए आ बाढ़ियो आबए तखन रौदी कहबै आकि दाही? तहिना कियो ईहो कहैत जे कालियो दास अखाढ़सँ बर्खा-मेघक आगमन मानै छैथ तखन रौदी केना भेल?

मुदा तेतबे थोड़े अछि, केम्हरो कमला पूजा तँ केम्हरो पानिक यज्ञ तँ केम्हरो रौदी भगबैले रामधुन-अष्टयाम-नवाह तँ केम्हरो मनुखदेवा गहवरमे पूजो अनधुन हुअ लगल।

जे भेल कि नइ भेल मुदा एते तँ भेबे कएल जे हथियाक बरिसल, माघक गुजरल फागुनक मोजर रौद आ पछिया हवामे तेना झड़कल जे आमे अलोपित भऽ गेल।

चारि बजे भोरेसँ शिवपूजन काका काजमे लगता तँए साढ़े तीनियेँ बजे नीन तोड़ि उठि, प्रभात कर्मसँ निवृत होइत चाह बना पीब घड़ीपर नजैर देलैन तँ चारि बजैत देखलैन। पत्नीकेँ सोर ऐ दुआरे पाड़लैन जे ओ जगि कऽ तैयार भेल छैथ कि नइ, मुदा सुगियो काकी पतिक कोठरीक खट-खुटक आवाज सुनि तैयार भऽ गेल छेली। तैयारो केना ने होइतैथ, काल्हि साँझूए पहर तीनू गोरे एकठाम बैस विचारि नेने छला जे पराते बीघो भरि खेतक चास लगाएब।

गोरहा खेत छी ओतबो जँ सम्हैर कऽ उपैज जाइए तँ बुतातक साल-

माल लगिए जाइए। तहूमे कि आब लोक पहिलुका जकाँ दुनू साँझ भात खाइए, एकसंझू भेने अदहे साल ने भेल। जेठ अखाढ़क सीमा परहक समय छी, माघ मास थोड़े छी जे लोक आठ बजेक पछाइत काज दिस ताकत। अखैन तँ चारि बजे भोरेमे फरीच हुअ लगै छइ। काजक अनुकूल समय तँ बनियेँ जाइ छइ। तहूमे काजो नमहर अछिए। बीघा भरिक चास। एक दिस पहिने खेत पटत, तखन कदबा हएत तहिना दोसर दिस बीआ उखाड़ल जाएत, तखन ने कदबाक पछाइत रोपल जाएत। जेरगर जनकेँ जोड़ियबैयोमे समय लगिते अछि। तेतबे किए! दमकलसँ पटौल जाएत, ट्रेक्टरसँ जोतल जाएत, दुनू लोहे-लक्कठ भेल, जँ कोनो पाट-पुर्जा गड़बड़ेतै तँ काजे रूकि जाएत।

ओना, सुगिया काकीकेँ बुझल रहैन जे अँगनाक काज पुतोहुक हाथे अपने सम्हारऽ पड़त। तेतबे नइ जँ कहीं पुरुख-पातर खेतेक काजमे ओझरा जेता तँ पानि-जलखै सेहो खेत पहुँचबऽ पड़त। तँए भोरेसँ जलखै-खेनाइक ओरियानक पाछू जारैन-काठीक व्योँत-बाँत मने-मन सुगिया काकी करिते रहैथ तखने शिवपूजन काका पुछलखिन- “बौआ उठल? चारि बजि गेल। घटही गाड़ी जकाँ जँ शुरूएमे लेट भेल तँ टीशने-टीशन लेट होइते जाएत।”

भिनसुरका समय तँए सुगिया काकीकेँ पतिक बोल नीक लगलैन। नीको केना ने लगितैन, कौआ जकाँ थोड़े पति बाजल रहैन, काग जकाँ कुचड़ल रहैन किने। मुदा काजक मोड़पर तेना सुगिया काकी पड़ि गेली जे किछु करैत किछु ने बनै छेलैन। मोड़ ई जे सोनेलाल खा-पी कऽ नबे बजे रातिमे पितासँ छिप कऽ ऑरकेस्ट्रा देखए चलि गेल छल जे पौने चारि बजे आपस आबि ओछाइनपर पड़ले छल कि उठबैक आदेश पतिक भेलैन। ओना, सुगिया काकीक अपनो मन घिरनी जकाँ नचैत जे चारि बजेमे दमकल चलत तखन ने कदबा बेरमे कदबा हएत आ रोपै बेरमे खेत रोपाएत। कहुना-कहुना तँ सात-आठ घन्टा खेत पटैमे लगत। एक तँ गोलगर खेत तैपर जेठुआ जरल सेहो अछि। तहूमे कि फूलक छीच्चा छी, आकि तीमन-तरकारीक जैड़पनियाँ छी, कदबाक पटौनी छी किने, जइमे कहुना तँ भरि घुट्ठी पानि लगौल जाएत। तँए ओहो समय खिंचबे करत।

पत्नीक उत्तर नहि पाबि शिवपूजन काका कनी कड़ैक कऽ दोहरबैत बजला- “की कहलौं, नइ सुनलिऐ?”

पतिक दहकैत आवाज सुनि सुगिया काकीक नजैर नचलैन। नचिते मनमे एलैन, एक दिस पति परिवारेक नीक-ले आफन तोड़ि रहला अछि, दोसर दिस ई छौड़बा किए भरि राति जागि कऽ गमा लेलक..! आब ओ सुतत आकि जगि कऽ काज सम्हारत। अखैन जे ओकरा उठबऽ जेबै तँ ढोँढ़ साँप जकाँ फुफकार छोड़त..! जँ नइ उठेबै तँ अपने आरो बेसी दहकता! ऐ परिस्थितिसँ निबटब केना..? परिस्थितिसँ वैचारिक दौड़मे निपटियो सकै छी मुदा काजक जे जाल पसैर गेल अछि, माने रोपनिहारकेँ कहि देने छिऐ, जे अपन समांगक गलतीसँ ओकर काज बाधित हेतै! कहुना छी तँ पेट-बोनियाँ छी, भरि दिन थाल-पानिमे लेटाएत तखन जा कऽ बाल-बच्चाक संग दुनू साँझ खाएत। अपनो परिवारमे जेते जोड़ि-बन्हन कऽ नेने छी, माने दमकल चलैक ओरियान, खेत जोतैक ओरियानक संग जलखै-चाहक ओरियान, ओहो तँ राइए-छीती भऽ जाएत..! मने-मन साहस बटोरि सुगिया काकी सोनेलालक कोठरीक मुँह लग जा ठाढ़ भेली। केबाड़ बन्न रहने बाहरेसँ बजली- “बौआ, बौआ सोनेलाल?”

कनी पहिने सुतल सोनेलालक मोनमे ओहिना ऑरकेस्ट्राक सीनो सभ आ गीतो-नाद नचिते रहै जइसँ नीन गहराएलो नहियेँ छेलइ। मुदा माइक बोलकेँ अनसुन करैत सोनेलाल हँ-हूँ किछु बजबे ने कएल। जइसँ सुगिया काकी केबाड़ लग ठाढ़ छेली। ने आगू ससैर पति लग जाइक साहस होइ छेलैन आ ने बेटाकेँ जोरसँ दबारि उठबैक साहस होइन। एक तँ ओहुना भोरुका समय छी, शीताएलमे केतौ अगियाएल दौड़ै..।

शिवपूजन काका पत्नीकेँ कहला पछाइत, पत्नीएपर नजैर रोपि लेलैन। रोपि ई लेलैन जे काजक दौड़मे जँ काजक सूत्र मनसँ ससैर जाएत तखन तँ काजो ओही लाथे ससरऽ लगत। जइसँ काज या तँ भरियाएत या ओझराएत। पत्नीक क्रिया-कलाप देखि शिवपूजन कक्काक मन ठमैक गेलैन। जैठाम ठमकलैन तहीठाम ठाढ़ सेहो भऽ गेलैन। तँए मिसियो भरि आगू-पाछू नइ डोललैन। असथिर भेल दरबज्जाक मुँह लग ठाढ़ भेल पत्नीपर आँखि गरौने रहलैथ। मुदा नजैर घूमि कऽ काजक बीच सीमानपर आबि अँटैक गेलैन। अँटैक गेलैन ई जे कियो पसेना चुबा श्रम करैए आ कियो श्रमसँ छिटैक श्रमचोर बनि जाइए जे मेहनतक पसेनाक धरम नै बुझि, श्रमहीन बनि जाइए। एना किए एक्के मनक दुनू क्रिया भऽ जाइए? क्रिया तँ कर्मक अनुकूल चलैत अछि, कर्म

चलैत अछि विचारानुकूल, आ विचार चलैत अछि धर्म-धारणक अनुकूल। माने जे जेहेन जिनगीकेँ धरम बुझि धारण करैए..।

..मुदा लगले मन नाचि गेलैन जे पसेनाक धरम की? जहिना एक-बट्टी, दू-बट्टी, तीन-बट्टी, चरि-बट्टी, पँच-बट्टी लग पहुँच अपन जीवन यात्राक पथ जखन कियो देखए लगैए तखने ने देखैए जे पसेना तँ ओ शीतल बून छी जे कुवृत्तिकेँ धोइ जेते बढ़ैत जाइए से तेते धोइत-धुआइत अपन धरम धारण करैए। से कहाँ सोनेलालमे देखि पाबि रहल छी? धिया-पुता जकाँ जेना कोनो धनियेँ-ढेकार ने छै, तहिना बुझि रहल अछि! जीबैले जीबैक उपाय सेहो तँ करए पड़ै छइ। से कहाँ देखैमे आबि रहल अछि..!

विचारैत-विचारैत शिवपूजन कक्काक मन अपन औझुका काजमे ओझरा गेलैन। ओझरा ई गेलैन जे जे गर्भे नाश भऽ जाएत ओकर जिनगीक आशा केते कएल जाए सकैए। फेर मन घुमलैन, जून मासक अन्त भऽ गेल, जइ बीआकेँ बीस-पचीस दिनक बीच रोपैक छल, ओ अदहा मइमे छीटने छेलौं, जेकरा आइ डेढ़ माससँ बेसी भऽ गेल, जे समय ओकर वृद्धिक छेलै, तइमे अदहा समय ओहिना चलि गेल। जाइक कारण भेल बर्खाक आशा-आशी देखब।

जहिना शिवपूजन काका दरबज्जाक मुँहपर ठाढ़ भेल घड़ी दिस देखि-देखि निराश भऽ रहल छला, तहिना सुगिया काकी सुतल बेटाकेँ देखि-देखि उतरीत भऽ रहल छेली। मुदा दुनूक मनक प्रश्न अन-उतरीत छेलैन। उतरीत तँ केलाक पछाइत भेलापर होइ छइ। निराशमे आस भरैत शिवपूजन काका सुगिया काकीकेँ कहलखिन-

“सोनेलाल सुतले अछि! चारि बजि गेल! अखैन जँ ओकरा चरिया कऽ नइ उठाएब तँ ओ सुतले रहि जाएत।”

अपन मनक बात खोलैत सुगिया काकी बजली-

“भरि राति अरकेस्ट्रा देखै छेलै, अखैन जँ उठेबो करबै तँ काजमे भकुआएले रहत।”

‘ऑरकेस्ट्रा’क नाओं सुनि शिवपूजन कक्काक मनमे उठलैन, अखन तँ खेती-बाड़ीक समय छी, कोनो उत्सवक समय तँ नहियेँ छी, अखुनका उत्सव तँ

सभसँ पैघ खेती-बाड़ीक भेल। तहूमे काल्हि साँझूए पहर काजक सभ व्योँत लगा नेने छेलौं, तखन किए एना केलक। बजला-

"जखन औ काजक सभ व्योँत बुझल छेलै, तखन किए देखऽ गेल। जँ गेबो कएल तँ घन्टा-दू-घन्टा देखैत आ आबि कऽ सुति रहैत, जइसँ काजमे बिथुत नइ होइतै।"

मुदा सुगिया काकी चुपचाप पतिक बोल बेटा निविते सुनि रहल छेली। कोनो उत्तर नै छेलैन। छेलैन सिरिफ एतबे जे आँखिक ज्योति झूकल छेलैन।

❑ पसेनाक धरम: 2015

लाही

☰

जागे भाय जगरनाथसँ एला। सामाजिक भैयारी अछि नइ कि दियाद छिया आकि जाति। मुदा घर सटले कनी हटल अछि। छी एके टोलमे मुदा बीचमे तीन-चारि गोरेक घर छइ।

एक पनरहियासँ जागे भाय बाहर छला तँए गामोक हाल-चाल कहब आ हुनकोसँ यात्राक हाल-चाल बुझि लेब। ओना अपनो बाड़ीक काजक हलतलबी रहए, मुदा किछु छी तैयो समाजेमे बास करै छी किने। जखने समाजक वासी अपनाकेँ बुझब तखने समाजक दायित्व तँ निमाहए पड़त। जखने समाजक दायित्वकेँ बुझब तखने बेकतीगत परिवारसँ ओकरा ऊपर देखए पड़त, जँ से नइ देखब तखन समाज केना बुझब आ समाज केना समाज बुझता। तँए अपन काजकेँ कनी ठेलियबैत माने एक नम्बरमे जागे भायसँ भेँट करब आ दू नम्बरमे अपन काजकेँ करब। मनो मानि गेल। ओना मनमे हुअए जे एक दिनक कोन बात, जे एक क्षणो-पलो हूसने लोक बहुत हूसि जाइए, मुदा ओ तँ जगह-जगहक बात भेल। ऐठाम से नइ अछि, बैशाखा सजमैन-लत्तीक करीब पच्चीसटा जड़ि थरियबैक अछि। चाह पीब जागे भाय ऐठाम विदा भेलौं। टोलेक बात, जहिना गंजी-लूँगी पहिरने रही, देहपर तौनी रहए, तहिना विदा भेलौं। किए पत्नीए-केँ आकि टोले-पड़ोसेक लोककेँ होइतैन- केतौ अनतए जाइ छी, जे टोको-टाक करितैथ।

करीब आठ बजे फागुन मासक भिनसुरका समय। जागे भाय, घरसँ हटल बीघा पाँचेपर दस धूर धनियाँ-खेती केने छैथ। ओना कनी पचता छैन्हे मुदा धनियाँक मास तँ छीहे। पचताक कारण भेल रहैन जे कैतकी कोबी काटि धनियाँक खेती केने छला। ओना अगता धनियाँ सभ रंगि रहल अछि, केतौ-केतौ कटियो रहल अछि। मुदा से नइ, जागे भाइक धनियाँ

अखन अन्तिम फूल पकड़ने छैन। हमरासँ पहिने जागे भाय धनियाँ-खेती देखि आएल छला। जेना मन टँगले रहल होइन, माने धनियाँ खेती देखैले, तहिना भोरे सुति उठि धनियेँ खेत देखैले चलि गेला।

अँगनाक मुँहथैरपर ठाढ़ भेल जागे भाय, पत्नीकेँ कहै छेलखिन-

“धनक छेजानैत भऽ गेल।”

ओना कहै छेलखिन पत्नीए-केँ मुदा फुटा-फुटा जे नइ बजै छला तइसँ पत्नी अवाक भेल आगूमे ठाढ़, मुदा हँ-हूँ किछु ने बजैत। बेर-बेर जागे भाय बजै छला आ पत्नी आँगनमे ठाढ़ बकर-बकर मुँह तकै छेलैन। हम पहुँचलौं मुदा जागे भाय नइ देखलैन। देखबो केना करितैथ। आँगन दिस मुँह घुमौने छला। दरबज्जा दिस मुँह घुमल रहितैन तखन ने जखने हमर नजैर हुनका पकड़लक तहिना हुनको नजैर हमरा पकड़ैत, से तँ भेल नहि। दरबज्जापर ठाढ़ रही मुदा पत्नीकेँ बेर-बेर कहथिन- “धनक छेजानैत भऽ गेल!”

बोलीक सुआदसँ बुझि पड़ल जे जागे भाइक मन कलहैन्त रहलैन अछि। मुदा फेर हुअए जे भरिसक जगरनाथ पुरीसँ एला अछि, गाड़ी-ताड़ीमे मोटरी ने कियो चोरा लेलकैन। जे बात पत्नीकेँ कहै छथिन। कहबो तँ उचिते ने हएत जे ओहुना समाजमे जगरनथिया परसाद बिलहता, तैसंग समुद्र सेहो देखने हेता, समुद्री सनेस- बड़का-छोटका शंख, माने आवाज करैबलासँ लऽ कऽ डोरामे गाँथल मलो नेने हेता, भरिसक सहए ने गाड़ीमे कियो चोरा लेलकैन। पाछूएसँ कहलयैन-

“भाय साहैब, जगरनाथ गेल छेलौं! समुद्रमे ढूसि लेलौं किने?”

अनचोकमे जहिना विद्यार्थीक इण्टरभ्यूमे पूछल प्रश्नक उत्तर रस्तेमे हेरा जाइ छै तहिना जगरनाथ भायकेँ भेलैन। अँगनाक सभ गप माने जे पत्नीकेँ कहै छेलखिन, हेरा गेलैन। मुदा जवाब देलैन-

“रघू, समुद्रमे ढूसि लेब असान अछि!”

पुछलयैन- “तखन जे जगरनथिया सभ बजै छैथ ओ झूठे बजै छैथ।”

जगरनाथ भाय बजला- “झूठ तँ नै बजै छैथ मुदा घुमा कऽ जरूर

बजै छैथ।”

अखन तक ई बात नइ बुझै छेलौं, जे झूठ-सत बात-विचारक बीच घुमौनो अछि तँए जिज्ञासा भेल। जिज्ञासा तँ भेल मुदा नवका जिज्ञासा भेने पहिने कुशल-छेमक चर्च करबे ने केलौं आ मुहसँ बजा गेल- “की घुमौन अछि, भाय?”

ओना कुशल-छेम जिनगीक ओ घड़ी छी जे भेला पछाइत, दू भेँटक बीचक जे खाधि अछि ओ पाटि दइए, मुदा मनमे ई रहबे करए जे जखन जानियेँ कऽ आएल छी कुशले-समाचार बुझह, तखन धड़फड़ीए कोन अछि। मुदा जँ कहीं बीचमे जिज्ञासेक प्रश्न मनसँ ससैर जाएत, तखन तँ टटका नोकसान हएत।

मुस्की दैत जगरनाथ भाय बजला- “समुद्री जुआरमे ढूसि लइए, ई बात सब सते बजै छैथ मुदा मुँह-गरे नहि पीठ-गरे। ओ ढूसि थोड़े भेल। हँ, एते तँ होइते अछि जुआरक पानि उठौने-उठौने थोड़े दूर धैरपर लऽ गेल आ अपने पाछू उनैट अहाँकेँ धैरपर बैसा पाछू ससैर गेल।”

पुछलयैन- “की कहलिऐ घुमौन?”

‘घुमौन’ सुनि जागे भाइक मुँहक हँसी फुटि कऽ निकैल गेलैन। हँसैत बजला- “घुमौन सब कथुमे अछि। काजोमे अछि, चालियोमे अछि आ बातो-विचारमे अछि।”

एक तँ ओहिना बातक घुमौन नइ बुझै छेलौं, तैपर तेते रास विषय जागे भाय रखि देलैन जे मने उग-डूम करए लगल। मुदा गपो करैक तँ क्रम होइए। जे क्रम जेना शुरूसँ सोझराएल रहत ओ क्रम ओते सुहरदे आगूक क्रमकेँ पकड़ैत रहत आ नहि जँ शुरूहेक गपमे कोनो गीरह-गाँठ पड़ि गेल तँ आगूक क्रमो ओहिना गिरहाइत-गँठियाइत चलैए। तँए सोचलौं जे पहिने पुछिऐन जे कखन गाम पएर देलैन? ओहो अखन टटके गाम आएल छैथ तँए कोनो आन काजक धड़फड़ियो नहियेँ हेतैन आ तहिना अपनो तँ जानियेँ कऽ आएले छी कुशले-छेम करए। पछाइत घुमौनक बात पुछबैन। पुछैयोक बुझैयोक तँ अधिकार अछिए। कहुना छैथ तँ पढ़लो-लिखल बेसी छैथ, उमेरो बेसी छैन आ हमरासँ बेसी नमहर परिवारोक गारजनी करिते

छैथ। पुछलयैन- “भाय, गाम कखन पहुँचलौं, जतरा नीक रहल किने?”

ओना मनमे ईहो होइत रहए जे पहिने टटके सुनलाहा गप पुछिऐन जे धनक की छिजानैत भऽ गेल। मुदा ओहो तहिया कऽ मनमे रखि लेलौं जे जँ समय बँचल रहत तँ पछाइत पुछि लेबैन। चाहे बिच्चेमे केम्हरोसँ केम्हरो पुछि लेबैन। मुदा सगुन जेना बनले रहए तहिना भौजी एकटा जगरनथिया बेंत, एकटा शंखक माला आ मकैया लडु नेने पहुँच हाथमे धड़ा देलैन।

एकटा मकैया लड़ू मुँहमे देलिऐ, भेटल परसाद जँ सभटा अपने खा लेब तखन परिवारमे बाल-बच्चार्कें की देब, यएह सोचि एकटा दाना खेलौं आ बाँकी गमछाक खूटमे बन्हए लगलौं कि मालापर नजैर गेल। नजैर जाइते मनमे उठल- ई तँ छी आवाजे करैबला शंखक बच्चा जे बच्चेमे मरि गेल, सएह माला छी! फेर भेल जे नइ ई बड़का बजैबला शंखक बच्चा नइ छी, भरिसक मले बनबैबला शंख छी। ..फेर भेल जे जखन दुनू दू काजक भेल तखन वंश केना एक हेतै आकि नाऊँए किए एक हेतइ। मुदा जागे भायसँ गप-सप्प करैक रहए तँए अपन मनक बातकेँ दबैत आगूमे ठाढ़ भेल बेंतपर धियान गेल। एकरा सिरा-आगू क चारमे खोंसि देब। बेर-बेगरतामे काज हएत।

जाबे तक अपन सनेस सेरियेलौं ताबे तक जागे भाय सेहो मुँह बन्न केने रहला, कि सोचि केने रहला से तँ ओ जानैथ मुदा अपना बुझि पड़ल जे परसाद सन वौसकेँ उपयोगमे केतौ धोपचटमे गड़बड़ ने भऽ जाइ, तँए। जागे भाय बजला- “ओना गाड़ी कनी लेट रहै तँए दू घण्टा लेटसँ गाम पहुँचलौं मुदा तैयो बारह बजे रातिसँ पहिनहि पहुँच गेल छेलौं। सकरीए-सँ पत्नीकेँ फोनसँ कहि देने छेलिऐन, ओहो धियो-पुतोकेँ जगौने रहली आ भानसो पछुआ कऽ केली, तँए टटके भोजनो केलौं।”

बारह बजेक करीब पहुँचबे केलाह। हाथ-पएर धोइमे सेहो समय लगले हेतैन। तहूमे पत्नी ओसारपर खाए देने हेतैन कि नहि। जगरनथिया यात्रीकेँ पूजा आ भोज केलाक पछाइत छूत छुटै छइ। जाबे तक भोज नइ केने रहल ताबे तक ओ अछूत समाजेमे नइ अपन परिवारोमे भेल रहैए। तहू बुझारतमे समय लगले हेतैन, कहुना-कहुना तँ रौतुका मसिम रहने

केतबो धड़फड़ाएल हेता तैयो डेढ़-दू घण्टा समय तइ सभमे लगिये गेल हेतैन। तहूमे गाड़ी-सवारीक जतरा, परो-पैखानामे बेसी समय लगले हेतैन। तखन केना टटके भोजन केलैन? दिन बदैल गेल, तारीख बदैल गेल मुदा भेटलैन टटके! बर-बेसी तँ गरमा-गरम भऽ सकैए।

फेर मनमे एकाएक भेल जे अनेरे झूठ-फूसक फेरमे समय नोकसान करै छी। तैबीच भौजी चाह नेने पहुँचली। पानिक खगता रहबे ने करए, किएक तँ ओहो देखि नेने छेली जे परसाद खेलौं नइ मोटरी बान्हि लेलौं। दुनू गोरे-माने हमरो ओ जागेओ भाइक हाथमे चाह पकड़ौलैन। एक चुस्की चाह लप-दे मारि नेने छेलौं मुदा जागे भाय पछुआएले छला। तैबीचमे जेना हुनकर मन पत्नीपर कड़ैक गेलैन। कड़ैक ई गेलैन जे बजै कालमे अपनाकेँ नीक किसानक सिखौल बेटी कहै छैथ मुदा...। नीक किसान ओ भेला जे खेतीमे अधिक-सँ-अधिक रंगक वौस उपजा अपन जिनगीक रंग पकड़ने रहै छैथ। मुदा धनक छिजानैत भऽ गेल आ बुझियो ने पेली..!

ओना जागे भाइक मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे पत्नीपर बेसी मन कड़ुआएल छैन। मुदा हमरा दुआरे बकार बन्न केने छैथ। बीचमे बैसल रही, दुनू बेकता-बेकतीक बीचक बात छी, किछु टोकबो नीक नहि। मुदा लगले मन गबाही देलक–बेकता-बेकतीक माने भेल परिवार। समाजक बीच परिवार अछि, मुदा परिवारोक अपन सीमा छै किने। जेकर अतिक्रमण नइ हेबा चाही। मुदा जहिना परिवारक घरक ओलतीक पानि धरियाइत गामक बहैत धारामे मीलि जाइए तहिना गाममे आएल बाढ़ि वा अधिक बर्खाक पानि सेहो ने उनैट-उनैट परिवारक ओलती लग पहुँच जाइए। मुदा से अछि सूत्रनुमा। माने ई जे समाजक बीच परिवार-परिवारमे जखन बेवहारिक जिनगी समेट चलैए तखन काजक संग-संग विचारो सटैत चलैए। जेतै एक-दोसर परिवारमे विचारक सटाव होइए तेतै एक परिवारक सम्बन्ध दोसरसँ सघन होइत जाइए। ऐ मानेमे जागे भायसँ सम्बन्ध अछिए...।

दोहरबैत पुछलयैन-

"भाय, जतरा केहेन रहल?"

जहिना पुछलयैन तहिना ओ तर-दे जवाब देलैन- "बाहरक जतरा तँ

नीके रहल मुदा घरेक जतरा भंगैठ गेल।"

जागे भाइक बात सुनि मन अग-दिगमे पड़ि गेल। अग-दिग ई जे पनरह दिनक जतरा नीक रहलैन आ बारह बजे रातिमे एबे केलाह अछि, एतबे कालमे की भंगैठ गेलैन? नइ रहल गेल, पुछलयैन- "राइतमे नीन ते कचोटे रहल हएत, भरिसक वएह मन भकुऔने अछि की?"

चेहरासँ बुझि पड़ल जे हमर बात जागे भायकेँ नीक नइ लगलैन। मुदा बजता किछु तखने ने बुझब। जेना मनक आगिक ताउ जागेओ भायकेँ निकलैले तनफन करैत रहैन जे निकैल नइ पाबि रहल छेलैन। ओना मनमे ईहो उठल हेतैन जे अनेरे केकरो लग कानियेँ कऽ की हएत, मुदा बिना कननौं तँ कियो नहियेँ बुझत जे मन पीड़ित किए अछि।

बजला- "रघू, लछमी-पात्र जहिना मनुक्ख होइए तहिना खेतो-पथार होइए। मालो-जाल तहिना होइए आ गाछो-बिरीछ तहिना। मुदा जँ ओकर पूजा नइ होइए, तँ सएह ने भेल ओकर कुभेला। पूजा भेल कोनो काजक वस्तुक उचित ढंगसँ उचित स्थानपर उपयोग, आ कुभेला भेल एकर विपरीत। जखने लछमी-पातक कुभेला हएत तखने लछमी रूसि रहती, बगैद जेती, घरसँ पड़ा जेती।"

बाजि जागे भाय जेना अपन विचारकेँ बिलमौलैन। जइसँ मुँह बन्न भेलैन। मुदा एके झोंकमे तेते बाजि गेल छला जे सुनबे-टा केलौं, बुझलौं नहि। माने ई जे कोनो बात कियो सुनबे-टा करैए आ कियो जिनगी बुझि जिनगीमे उतारितो अछि। मुदा से नइ, हम ऐ दुआरे सुनबे-टा केलौं जे जागे भाइक विचारक झोंकीसँ बुझि पड़ल जे टटके जगरनाथसँ एला अछि, भरिसक जगरनाथक पण्डा सबहक जे झोंक देखने हेथिन तही झोंकमे बजला अछि। ओना अनसुनियोँ कएल जा सकै छल मुदा छी तँ असगरे आगूमे बैसल। जँ कहीं गोटे-बेर बिच्चेमे पुछि दैथ जे की बुझलहक, तइले जँ सुनियोँ कऽ नइ राखब तखन मुह उठा जवाब की देबैन। तइले सुनब तँ ऐछे, तँए सुनैत रहलौं।

जागे भाइक जिज्ञासा जेना हमरापर पड़लैन, तहिना बुझि पड़ल। माने ई जे जखन धारमे पानि फुलाइ छै तखन खेतबला सभ अपन-अपन

खेत पटबैले नहर चीर-चीर लऽ जाइए तहिना भरिसक जागेओ भायकेँ भेलैन। मनमे भेल जे गपे-सप्प करए ने आएल छी, तहीमे कुशलो-छेम कऽ लेब, जतरोक वृतान्त सुनि लेब आ गाम-घरक कुशलो-छेम कऽ लेब। ई तँ नइ जे ब्रह्मस्थानक भागवत कथा जकाँ सोल्होअना सुनैयेटा-ले आएल छी। गप-सप्प तँ ओ प्रक्रिया छी जइमे कोनो गम्भीर रहस्य हौउ आकि गम्भीर क्रिया, ओकरा वैचारिक रूपमे जानब रहैए। मनमे भेल से नइ तँ पहिने यएह बुझि ली जे की घरक जतरा भङैठ गेलैन। पुछलयैन-

"घरक जतरा की भङैठ गेल?"

हमर बात सुनि जागे भाय मरमान्त भऽ गेला। मनमान्त ई जे जिनगीक एकटा अभावक पूर्ति साल भरिक लेल होइत ओ नष्ट भऽ गेल। बजला- "रघू, तोरा संगे सब गप परिवारसँ लऽ कऽ दुनियाँ-दारी धरिक होइए तँए बजैमे कोनो संकोच नहियेँ अछि।"

जहिना दुहैसँ पूर्ब गाए चुकैर-चुकैर दुहैले कहैए तहिना जगरनाथ भायकेँ मेघौन आँखिमे बुझि पड़ल। टोकारा भरैत बजलौं- "भाय साहैब, अपना सबहक परिवार कि कोनो आइये ऐ गाममे बसल अछि। इतिहास बजै आ नै बजै मुदा एकठाम पुस-पुसतानिसँ भाए-भैयारी बनि अबैत रहलौं अछि। सबहक जिनगीक सभ बात किए जे बापो-दादाक केलहा बात सब सबकेँ जनिते छी, तखन धखाइक कोन गप अछि।"

हमर बात जेना जागे भायकेँ पाछूसँ रेड़लकैन तहिना क्रनदन स्वरमे बजला- "रघू, जहिना हमर परिवार अछि तहिना तोरो परिवार छह। दैनंदिनक भोजनक जरूरी वौस धनियोँ छी। मसालाक रूपमे सभ जनै छइ, ओ अँचार, चटनी इत्यादि रूपमे भोज्य विन्यास सेहो छी।"

'अँचार-चटनी' सुनि मन चटपटाए लगल, जइसँ बिच्चेमे बजा गेल- "हँ, से ते छीहे। फड़-फूलक कोन बात जे डाँटो-पातक रस मनकेँ मोहि लइ छइ।"

ओना अपन मन चसगर भऽ गेल रहए मुदा जागे भाय गम्भीर भऽ गेला। गम्भीर होइत बजला- "रघू, साल भरिमे आठ किलो धनियाँक खगता परिवारमे रहैए। जे दस धूर खेतमे कऽ लइ छी, आठ किलो सबा

आठ किलो गोटे-बेर नबो किलो भऽ जाइए।"

बिच्चेमे बजा गेल- "एकरा के काटत। कोनो चोराएल गप अछि। मासे-मास अधा किलो कीनै छी तैयो मासक उनाड़ीमे दू-चारि दिन हताले रहैए।"

हमर बात जेना जागे भायकेँ नीक लगलैन। बजला- "रघू, आठ किलो धनियाँक दाम तँ चारिये साए रुपैआ भेल, मुदा से नइ किसानी जिनगीक चूक भेल किने जे लाही खा गेल आ अपने मुँह तकैत रहि गेलौं!"

जागे भाइक विचारसँ बुझि पड़ल जे अपन पनचैती अपने कऽ रहला अछि आ तामस पत्नीपर छैन। मुदा ओहो लगमे नहियेँ छैन तँए सूहकारी दैत कहलयैन- "जगरनाथ जाइसँ पहिने नीक जकाँ देखि नइ नेने छेलिऐ?"

अपसोच करैत जागे भाय बजला- "देखि नेने छेलिऐ, धनियाँक फूल कलियाएले छल, गोटे-गोटेक मुँह खुजल छेलइ, मुदा तहिया लाहीक केतौ दरस नहि छेलइ। एक पनरहिया बाहर रहलौं, तही बीच लाहीक प्रकोप भेल आ खेतक फूल चाटि लेलक!"

कहलयैन- "पहिने तँ उपाय कएल जा सकै छल?"

बजला- "हँ, कएल जा सकै छल, मुदा शुद्ध वस्तुकेँ जानि कऽ दूषित करब नीक नहि बुझि, नइ केलौं।"

ओना गप-सप्पक क्रममे बुझि पड़ए लगल जे पहिलुक जे धधड़ा मनमे छेलैन ओ छाउर जकाँ बनि रहल छैन, तँए किए ने दोसर दिस मन घुमा दिऐन जे जेहो छाउर मनमे छैन ओहो राख बनि उधिया जेतैन। पाशा बदलैत कहलयैन-

"भाय, एकटा बात नइ बुझि पेलौं जे लछमी-पात्र की कहलिऐ?"

मंच परक कलाकार जहिना एक पार्टसँ दोसर पार्ट खेलए लगैए तैबीच मेक-अपमे जेते समय लगै छै तहिना जागे भाय माइंड मेक-अप करैत बजला- "अखन फागुन मासक मध्य छी, बाधसँ रब्बी-राइ कटि कऽ घर चलि आएल, बाधमे मात्र खेत-टा रहि गेल अछि। तँए अखन ओ मात्र

खेत छी। मुदा जखन ओकर गर्भमे फसिलक अंकुरन होइए तहियासँ ओ गर्भ-पात्र बनैत धीरे-धीरे लछमी-पात्र बनि अन्न, फल, फूल, तीमन, तरकारीक बरसा करए लगैए। तहिना मनुक्खो अछि मालो-जाल अछि आ गाछो-बिरीछ।”

ओना सभ बात नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं, तहूमे किछु उदाहरणेटा देलैन, मुदा विचारमे तेना फँसि बोहिया गेलौं जे विचारधारेमे भँसिया गेलौं...।

कहलयैन- “हँ से ते ठीके।”

जागेओ भाय जेना पाशा बदललैन। तैबीच भौजी आबि बजली–

“जिनका सभ-ले परसाद अनने छी ओ टटके पहुँचा देबैन आकि बाइस-तेबाइस कऽ देबैन। जँ बैजनाथक पेड़ा रहैत तँ किछ दिन बसियो टटके रहैत।”

टोकारा दैत जागे भाय पत्नी दिस इशारा करैत बजला- “छैथ तँ आँखिमे रखैवाली मुदा रहैक लूरियो रहतैन तखन ने, सेहो पुरुखे देतैन।”

❑ शुभचिन्तक: 2016

पुरान साड़ी

☰

जेठ मासक अमरस्साक नीन तँए सुति कऽ उठैमे कनी देरी भइये गेल। ओना, नीन केतबो मोटाएल आकि भरियाएल किएक ने हुअए मुदा पत्नी उठा कऽ तोड़िये सकै छैथ। मुदा छैथ तँ सोलहन्नी पतिवरते, कखनौं सुखमे बाधा उपस्थित नहि करए चाहै छैथ। सुतबकेँ सुख बुझि अपने केतबो काल धरि सुतल रहब तैयो ओ उठेती नहि, जइसँ नीन सुरक्षित बँचल रहिये जाइए। तहिना खेबाकाल सेहो बिनु पुछनौं पत्नी बजलोरी थाड़ीमे तरूआ-तरकारी आ छलिगर दही आगूए-सँ फेकैत रहै छैथ, भलेँ मनमे एहनो आशा किए ने होनि जे थारीमे जँ बँचल रहत ओ अपने हिस्सा ने भेल जइसँ डेढ़िया-दोबर पबैक आशा पत्नीकेँ बनियेँ जाइ छैन। खाएर जे छैथ, मुदा जिनगी भरि संग तँ वएह रहती तँए दोसराक सिहन्तो केने कोनो लाभ नहियेँ अछि।

ओछाइनपर सँ उठि आँखि मीड़िते दलानसँ निच्चाँ भेलौं कि मिरचाइ-धनियाँ, हरदी-लसुन बेचैबला वेपारी–मखन–क आवाज कानमे आएल- “धनियाँ..., मिरचाइ..., हरदी..., लसुन... लइ जाएब यै...?”

आवाजेसँ बुझि गेलौं मखन छी। मनमे भेल चनौरागंजसँ, माने चारि किलोमीटरसँ वेपारी ऐठाम पहुँच गेल आ अपने ओछाइनपर सँ उठि दलानक निच्चाँ भेलौं! मन लजा गेल। जइसँ वेपारीपर नजैर नहि अँटका धरती दिस गाड़ि लेलौं। मुदा वेपारी जेतेक रेहल अछि तइसँ बेसी खेहल सेहो अछिए। केना ओ अपन शिकार छोड़त। नजैर पड़िते टोकलक- “भाय साहैब, एकटा समाचार भेटल किने?”

मखनक बात सुनि चौंकलौं। केहेन समाचार? गामक आकि अमेरिकाक? किएक तँ देखिते छी जे दरभंगा रेडियो स्टेशन जखन सुतले रहैए तइसँ पहिनहि आन-आन देशक अकासवाणी सभ जागि-जागि

अपन-अपन समाचारक हल्ला मचा दइए। फेर भेल जे जँ कहीं गाम-घरक समाचार हुअए तखन? मनमे अबिते दोहरौनी लाज जागि गेल। जागि ई गेल जे जँ गामेक समाचार हएत आकि टोले-पड़ोसक हएत तखन केना एहेन लोक लगमे मुँह उठाएब जे चारि किलोमीटरसँ आबि घर लग अपन कारोबार पसारने अछि आ अपने अखन ओछाइने छोड़लौं हेन! मुदा समाचारो तँ समाचार छी। जिनगियोक भऽ सकैए, जिनगी जीबैक लूरियोक भऽ सकैए। माने, जिनगी जीबैक कलो भेट सकैए आ जीवन-मृत्युक संघर्षोक दर्शन भऽ सकैए। तँए समाचारकेँ बुझब जरूरी अछिए। मुदा रच्छ रहल जे मखन बिनु पुछनहि अपने बजैत आगू बढ़ि गेल- "सुभद्र भाइक माए चारि बजे भोरमे मरि गेलखिन।"

मखनक सुनौल समाचारकेँ दू टुकड़ी कऽ देखिऐ तँ एक टुकड़ी तँ साफ देखाए जे सुभद्र भाइक माए–माने सुधनी–काकी मरि गेली। मुदा दोसर टुकड़ीपर नजैर पड़िते बुझि पड़ए जे अमरस्साक चारि बजे भोर तँ सभसँ सुखद समय होइए, तखन केना काकी मरली? माने ई जे बारहो मास आ चौबीसो घन्टाक दिन-रातिमे जेठ मासक भोर सभसँ सुखद होइए, तइमे केना यमदूत आएल जे काकीक प्राणे लऽ कऽ उड़ि गेलैन! मुदा लगले मनमे उठि गेल जे अखन चाह-पानक समय अछि, मुइल काकीक जिगेसा करए जँ अखने जाएब आ एहेन समयमे चाहो-पान सुभद्रे भायपर लादि दिऐन से उचित नहि। कोनो कि सुभद्र भाय टोलेक छैथ जे कन्नो-खिजी सुनि लगले विदा हएब। आन टोलमे घर छैन, समाचार सुनैत-सुनैत ने सुनब, तइमे किछु समय तँ लगबे करत। तहूमे गाम-गाममे तेहेन लॉडस्पीकर-बाजा सभ परमानेन्ट लटका देल गेल अछि जे मोबाइलोमे गप-सप्प करब कठिन भऽ गेल अछि। तखन एहेन-एहेन समाचार की प्रभावित नहि हएत? हेबे करत। जहिना प्रदुषणकेँ दूर करैले एक दिस नमहर-नमहर योजनामे खर्च भऽ रहल अछि तहिना प्रदूषणकेँ बढ़बैयो-ले नहि भऽ रहल अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तहूमे आन प्रदूषणसँ बड़ बेसी तँ देहमे हौहैठ-कलकैल हएत, देह चुलचुलाएत। मुदा ध्वनि प्रदूषण तँ लोकक मत्थे चाटि बताह बनाएत..! दरबज्जापर सँ चोटे आँगन जा पत्नीकेँ कहलयैन- "झब-दे चाह बनाउ। सुभद्र भाइक

ऐठाम जाएब जरूरी भऽ गेल।"

ओना पत्नीकेँ सुभद्र भाइक समाचार भेट गेल छेलैन तँए नाकर-नुकर नहि केलीह। जाबे मुँह-कान धोलौं ताबे पत्नियोँ चाह बना लेलैन। कलपर सँ आबि चाह पीलौं। चाह पीला पछाइत पानपर नजैर पहुँचल। मुदा नजैर अँटकल नहि, उड़ि कऽ आगू बढ़ि गेल। आगू ई बढ़ि गेल जे हरण-मरणमे पान नइ खेबा चाही। तहूमे सुभद्र भायसँ दियादीक सम्बन्ध सेहो अछि..!

पानक फसादमे मन तेना फँसि गेल जे सुभद्र भाइक ऐठाम जेबाक विचारे मनसँ उतैर गेल। मुदा चाह पीबैत-पीबैत किछुए काल बीतल कि सुधनी काकी आगूमे झमैक कऽ कुदि पड़ली। काकीक कुदब देखि मनमे उठल- नबे बर्खक जिनगीक टपानमे कहियो सुधनी काकी अपन नवपनक तियाग नहि केलैन! समाजो आ परिवारोक संग काकीक सम्बन्ध सभ दिन एकरंगोहे बनल रहलैन। ओना, कहियो काल सम्बन्धमे घटी-बढ़ी सेहो होइत रहलैन मुदा अपना मने काकी जेहने शुरूमे छेली तेहने काल्हियो धरि रहबे केलीह। तहूमे राति नअ बजे तक एकेठाम बैस काकी संगे घर-परिवारक गप-सप्प करबे केलौं अछि, सुभद्रो भाय छला..!

सुधनी काकीपर सँ मन सुभद्र भायपर पहुँच गेल। जखने सुभद्र भाय मोन पड़ला कि जिगेसा करब सेहो मोन पड़ल। चाह पीब नेने छेलौं मुदा पान पछुआएल छल। पानपर नजैर पड़िते मनमे मटाउ हुअ लगल जे पान खा कऽ जाइ आकि बिनु पान खेने? अगदिगमे पड़ि गेलौं। मनमे उठल- जखनसँ ककीक मृत्युक समाचार सुनलौं तखनसँ आँखियो कहाँ अपना मने नोर बहौलक आ मुहोँ कहाँ कानल? मुदा मनमे ईहो उठल-कानत किए? सुधनी काकी सन-सन धरमी जँ गाम पीछु पाँचो-सातटा रहत तँ ओ अपन विचार कर्मसँ बिचड़ैत कर्मकार जकाँ कर्मी-धर्मी धार बहैबते रहत। भलेँ इलाहाबादक त्रिवेणी घाटपर वृन्दावनसँ बहैत आएल यमुना धार किए ने पतराइत-पतराइत पतरखेप खेपैत हुअए, मुदा धारक धारा तँ मानल जेबे ने करत किने? ओना, देखनिहारो आ ओइमे डुबकी लगा नहेनिहारो मानए वा नहि मानए...।

मन आगू बढ़ल। आगू बढ़ैत मनमे फुड़फुड़ा कऽ एकटा विचार

खसल। विचार ई खसल जे एक तँ पान, तैपर ओकर पातकेँ अशुद्ध केना बुझल जाएत..?

'शुद्ध' 'अशुद्ध'क बीच मन घुरियाए लगल। फेर भेल जे भरिसक मरल लोकक ने तँ बरस-गाँठ मनबै दुआरे अशुद्ध भेल? मुदा अखन से तँ नहि, अखन तँ सुधनी काकीक जिगेसा करए जा रहल छी..! तैबीच काकी अपन डोरमे बान्हि विचार देली- 'बेटा, जखन तोरे सभले जिनगी गलेलौं तखन तोरा मुँह पान नहि! हँसैत खाइत खेलाइत आबह। आब कि हमरा कोनो अगुताइ अछि। जखन मन हुअ तखन जरबिहह आकि केतौ माइटिक तरमे गाड़ि दिहह।'

सुधनी काकीक विचार मनमे जगिते नजैर फुन-फुना उठल। फुनफुनाइत नजैर पानपर उतरल। अन्दाजए लगलौं जे जेतेक कालमे घुमि कऽ घरपर आएब तेतेक कालक हिसाब जोड़ि पान लऽ ली। पाँच खिल्ली पानक पात बिछेलौं। पान तँ बिछा देलिऐ मुदा चुनक कोही हाथमे लइते मन पनपनाए लगल। मुदा तैबीच सुधनी काकी फेर घुमि कऽ आबि कहली- "चुनक कोही-तोही फेकैक काज नइ छह! जाबे तोरा सबहक बीच छेलौं पान-तमाकुल खेलौं। ओ भोग-पारस आब हमर थोड़े रहल, तँए तूँ हमरा-ले कोही नइ फेकिहह। चुनक कोहिये फेक देबहक तखन आगू पान केना खेबह?"

सुधनी काकीक विचारमे तेना ने बिचड़ए लगलौं जे पाँचोटा बिछौल पातमे कोनमे चुन कम पड़ल आ कोनमे बेसी से ठेकाने ने रहल। तहिना खएरो बेरमे सएह भेल। मुदा जे भेल से भेल, कोनो कि संगीतक उत्सवमे जाएब अछि जे चुन मुँह काटत आकि जर्दा हुचकी उठौत तँ...। हाँइ-हाँइ कऽ एक खिल्ली पान खा बाँकी चारू खिल्लीकेँ समेट प्लाष्टिकमे लटपटा गमछाक खूटमे बान्हि विदा भेलौं। जेठ मास छीहे तँए गंजी-कुरताक जरूरते की। तहूमे ओहन लोकक कृत्यमे जा रहल छी जे हँसैत-हँसबैत चारि पीढ़ी धरि नब्बे बर्खक उम्र गुजारलैन..!

दरबज्जापर सँ हेट होइत गामक रस्तापर जखन पएर पड़ल कि अनायास पैरक गति तेज हुअ लगल, मुदा जहिना पैरक गति तेज भेल तहिना मन लजा उठल, लाज हुअ लगल। जइ सुभद्र भायसँ एतेक लगीची

सम्बन्ध अछि, तिनकर माए चारि बजे भोरेमे मुइली आ जिगेसा करए आठ बजे भिनसरमे जा रहल छी! सुभद्र भाइक नजरिक सोझ पड़ब तँ की कहता! मुहेँ बाजैथ वा नहि मुदा मने तँ जरूर मनमनेबे करता किने जे ‘वाह रे बेर परक खलीफा, बेरेपर दिशा-मैदान सभटा उतरए लगै छैन..!’

मुदा मन जागल, जगिते विचार देलक-

“जहिना स्कूल, कौलेज आकि कोनो कार्यालयमे कर्मचारी एगारह बजेसँ ड्यूटी करए जाइ छैथ, पारिवारिक लोक रहने जँ कोनो कारणे पाँच मिनट पहिने नहि पहुँच पेने अपन उपस्थिति ऑफिसमे नहि दर्ज कऽ सकला आ रस्ते-रस्ते आबि अपन काजमे जुटि गेला, पछाइत जँ ओ अपन उपस्थिति दर्ज करता, ओकरा की मानल जाए?”

विचार जगिते अपनो गर अँटल। गर ई अँटल जे चारि बजे भोरमे काकी मुइली, अखन आठ बजैए, आँगनसँ असमसान तक भरि दिनक काज भेल, तैठाम जँ नित्य-निवृत्तिमे कनी-मनी आगू-पाछू भेल तँ ओकरा काजेसँ ने पुरौल जाएत। सुभद्र भाय ओहेन लोक थोड़े छैथ जे काकी लग बैस सोझे कैनते हेता। हुनको नजैर कहिते हेतैन ने जे के केहेन लोक अछि। तँए अनेरे मनमे शंको करब नीक नहियेँ छी। फेर भेल जखन सुधनी काकीक अन्तिम विदाइ दइले जाइये रहलौं अछि आ जँ हमरो बहन्ने सुधनी काकी दू-चारि आँगनमे बैस किछुकाल गुजारि लेती, ईहो कम थोड़े भेल?

काजक लोक बनिते मनमे भेल जे एक मुट्ठी मूज किए ने कर्त्ताक डोराडोरि-ले नेने चली? सएह केलौं, भाय जेकर डोराडोरि जेतेक सक्कत रहत ओकरेमे ने ओतेक सक्कतपन रहत।

हाथमे मूज नेने जखन सुभद्र भाइक घरपर पहुँचलौं कि समाजक मजमा देखि अपने हेरा गेलौं। हेरा ई गेलौं जे असगरूआ सुभद्र भाय एतेक लोककेँ नौत-हकार केना दऽ एलखिन? छोट भाए जे छैन ओ तँ सुधनी काकीक कोड़ैला बेटा भेलखिन, वेचाराक छठिहारक छाती छुटि रहलै हेन, तँए ओकरा कानैसँ मनाहियो तँ सुभद्र भाय नहियेँ कऽ सकै छैथ। तहूमे जेठ रहू कि छोट, माए तँ दुनू भाँइक मुइली हेन, अपन-अपन हिस्सा तँ सभकेँ कानबो तँ हेबे करतैन। सुभद्र भाय अपनो तहूमे बरदाएल हेता। तैसंग माए माइये छथिन। अनका जकाँ सुभद्र भाय थोड़े छैथ जे आँखिक

सोझमे माइक शरीरकेँ आगिमे बिसरजन नहि करैथ। भाय! दुनियाँ बड़ीटा छै, अपन-अपन आँट-पेट देखि ने अपन आँट-पेट बनाएब? गामसँ अहाँ काज करए बाहर गेलौं। काज केलाक पछाइत जखन बैसारी भेल, बुढ़ भेलौं तखन बाप-पुरखा मोन पड़ला, गाम मोन पड़ल! खाली मरैले गाम आएब तँ जरौत के सेहो ने विचारि लिअ पड़त जे जँ हम केकरो माए-बापकेँ नहि जरौने छी तँ अपन माए-बापकेँ जरबए के औत? तँए मरैबेर जँ घीच्चम-तीड़ा लहासक हएत तइसँ नीक नहियेँ ने हएत!

माए मुइने असगरे सुभद्र भायपर बिपैतक बोझ खसिये पड़लैन। असगरे कनता कि बजारसँ कपड़ा आनए जेता आकि कान्हपर उठा माएकेँ असमसान लऽ जेथिन आकि अहरी-अछिया खुनता..?

मुदा, जेना गामक लोक ई बुझैत होथि तहिना एकाएकी सभ आबए लगला। मुदा बुझैक पाछू किछु कारणो तँ जरूर हेबे करत। ओना, समाजेक मनचोभिया नाचबला सभ सेहो अपन नाच दरबज्जापर ठाढ़ केने छल। रंग-रंगक नाच-गानसँ सुभद्र भाइक दरबज्जा गनगनाइत रहैन। मनमे भेल जे सुभद्र भाय तँ काकीकेँ ओगरने आँगनमे हेता तँए काजक पछातिये अपन उपस्थिति दर्ज कराएब। चोटगर नाच रहबे करै, बीचमे जा कऽ बैसलौं। चारूकातक लोक जे नचितो छला आ गबितो छला, ओ अपना मने खूब चोटियेबो केलैन आ चोटो खेलैन। तहिना जे गरियबै छला ओ गारियो तँ सुनिते रहैथ। सुधनी काकीक ने विदाइ समारोह छिऐन तँए समाजक लोक सभ अपन-अपन भागीदारी दर्ज तँ करबे करता किने...।

उठि कऽ कनियेँ आगू बढ़लौं कि दोसर ठाम निर्गुण सम्प्रदायक प्रवचन चलैत देखलौं। दूटा बबाजी अपनामे खट-समाद करैत रहैथ। एकक कहब रहैन-

"अपनामे लागि जाउ।"

आ दोसरक कहब रहैन- "राम धुइनमे लागि जाउ।"

दुनूक खट-समादसँ परहेज करैत कतवाहि देने निकैल थोड़ेक आगू बढ़लौं तँ ओतए देखलिऐ जे कियो बाँस अनलक, कियो बाँस फाड़ैए, कियो खड़ौआ जौड़ बाँटैए, कियो कुरहैर-टेंगारी लऽ लकड़ीक ओरियानमे

लागल अछि आ कियो बाँसक फट्ठाकेँ बिछा मचान बनबैक सुरसार कऽ रहल अछि जैपर सुधनी काकीकेँ सुता असमसान घाट पहुँचौल जाएत। जेना बिजली चालित कोनो मशीन गनगनाइत चलैत रहैए तहिना समाजक बीचक सौम्यपनसँ सुधनी काकीक मृत्युक पछातिक प्रक्रिया चलि रहल छल..!

सभ काजकेँ नीक जकाँ संचालित होइत देखि मनमे भेल जे सुभद्र भायकेँ अपन आँखिक देखल सभ बात सुनाइयो देबैन आ मुइल माए लग बैसल हुनका सन बेटाक रंगो-रूप देखि लेब। आँगन गेलौं। ओना, सुधनी काकीक मुँह माछी दुआरे झाँपल रहैन मुदा जिज्ञासुकेँ पहुँचते सुभद्र भाइक बहिन मुँह उघाइर कऽ दर्शन करा दैत आ पुन: ओहिना झाँपि दैन। काकीक दर्शन केलाक पछाइत जखन सुभद्र भायपर नजैर पहुँचल कि हुनका हँसैत देखलयैन। सुभद्र भायकेँ हँसैत देखि अकबका गेलौं। कहाँसँ सुभद्र भाय दुनू परानी एकठाम बैस हबो-ढकार भऽ कनितैथ, तँ देखै छिऐन मकैक लाबा जकाँ मुँहक दाँत देखा-देखा हँसि रहला अछि! फेर मनमे भेल जे जहिना राजाक मंत्री मुँह-मिलानी करैत मिलल मुहेँ वातावरणकेँ अनुकूल बनबैत तहिना सुभद्र भाय बना रहला अछि। हुनकर हँसीकेँ हँसोइथ-हँसोइथ अपनो मुँहमे लिअ लगलौं जे ओहने रूप अपनो बनि गेलापर अन्तिम संस्कारक विचार करब।

जहिना नाटकक मंचपर जाइसँ पहिने नटुआ अपन रूप-रंग बदैल लइए तहिना अपनो रंग-रूप बदलैत सुभद्र भाय लग पहुँच हुनका पजरा दबा कऽ बैसलौं। बैसला पछाइत मनमे उठल जे केतए-सँ गप उठाबी? सुभद्र भाय तँ हँसि रहला अछि, तँए अखन काजक गप उठाएब बुड़िबकी हएत। विपरीत परिस्थिति अछि, मृत माइक आगू बेटा हँसैत अछि..!

मने-मन लाख कछमछेलौं मुदा बजैक कोनो गर नइ लागल। थोड़ेकालक पछाइत एकटा गर लागल। गर ई लागल जे जहिना विद्वतजन दोसरक बात बेसी सुनै छैथ आ ओकरा अपन मनक मथानीमे मक्खन जकाँ मोहि घी बना उत्तर देबकेँ नीक बुझै छैथ, तहिना सोचलौं। तहूमे एकटा आरो गर सुतरल जे अखन काकीक जिज्ञासा ने कऽ रहल छिऐन, तँए थोड़ेकाल आँखि-मुँह बन्न कऽ सुमिरन नहि करबैन सेहो केहेन हएत।

तइ बिच्चेमे सुभद्र भाय बजला-

“गौरी, अपना आँखिये हम कहियो माएकेँ नइ देखलयैन जे नव साड़ीकेँ देहमे लगौने हेती। अभावमे नहि, बेटी-पुतोहुक विचारमे।”

सुभद्र भाइक बात सुनि अकबका गेलौं। किछु फुरबे ने कएल जे की बाजी? मुदा मन कहलक- बाजि नइ सकै छी, मुदा पुछि तँ सकिते छी। पुछलयैन-

“से की भाय साहैब?”

सुभद्र भाय बजला-

“दूटा पुतोहु छैन जे दुनू अखन मुहेँ लग बैसलो छैन्हे, जहिया कहियो माएकेँ नव साड़ी कोनो कुटुम-परिवार देने हेतैन वा अपनो बजारसँ कीनि आनि देने हेबैन, तँ ओ साड़ी माए ओतबे काल नवमे पहिरै छेली जेतेक काल आन गामसँ अपना गाम अबैमे लगैत रहैन। भलेँ पुतोहुक देहक साड़ी पनरहे दिनक किए ने पहिरल हुअए, मुदा तेकरासँ ओ बदैल अपन नव साड़ी पुतोहुकेँ दऽ दइ छेली।”

सुभद्र भाइक विचार पहिने तँ सहरगंजा जकाँ बुझि पड़ल मुदा पछाइत बुझलौं जे सचमुच सुधनी काकी तियागक प्रतिमूर्ति छेली। जे देहक वस्त्र फेक सकैए ओ पेटक अन्न नहि फेक सकैए! अपन मन भकरार भऽ कऽ फुला गेल। बजलौं-

“भाय साहैब! मासेक धक हएत, बाध दिससँ काकी अबैत रहैथ, रस्ता कातक लतामक गाछ लगसँ देखलयैन तँ बुझि पड़ल जे कोनो टोल दिससँ आबि रहली अछि। फरिक्केसँ काकीकेँ कहलयैन-

“काकी, गोड़ लगै छी!”

झटकल अबिते रहैथ, असीरवाद दैत-दैत ओहो लतामक गाछ लग पहुँच पुछलैन- “अखने सुति कऽ उठलह हेन?”

ओना, काकी असथिरसँ बजली मुदा बुझि पड़ल जे जँ कहीं अपना उकैतिये कहि दैथ जे ‘तोरे सन-सन जुआन-जहान हिमालय पहाड़पर चढ़त!’ मुदा से काकी किछु ने बजली। अपन जान बँचैत देखि हमहीं

पुछलयैन- “काकी, अनका पुतोहु जकाँ ने ते अहूँक पुतोहु सभ ताल-मात्रा देखबै छैथ?”

जेना सभ दिन बरी बनौनिहारि बरीवाहिनीकेँ ठोरेपर बरी पकैए तहिना काकी बजली- “पुतोहु जे ताल-मात्रा देखौती से कि कोनो हम बिनु परिछौने आँगन अनने छी।”

अदहा-छिदहा बात काकीक बुझबो केलौं आ अदहा-छिदहा नहियोँ बुझलौं। पुछलयैन- “से केना काकी?”

बच्चा जकाँ पढ़बैत काकी कहलैन-

“परिछन भेल, लूरिक नाप-जोख।”

काकीक बात फेर मनमे लटपटाएले रहल। अपन आँखि बिआह-दुरागमन होइकालक परिछन देखने छल। जइमे दसटा स्त्रीगणकेँ गीत गबैत, फोटो खिचबैत देखने छल, तँए परिछनकेँ ओतबे बुझैत रही। बजलौं- “से केना काकी?”

गम्भीर होइत कहलैन-

“जखने जेठकी कनियाँ डेढ़िया टपल कि आने स्त्रीगण जकाँ फुसफुसा कऽ पुछलिऐ- ‘कनियाँ, भत-उसना बनौल होइए? बिना किछु उत्तर देने पुतोहु चुपेचाप आँखि मिला नजैर निच्चाँ कऽ लेली। अपन परिवार तँ ओहन ऐछे जइमे समय-कुसमय भत-उसना होइते अछि। बुझि गेलौं। बड़ बेसी तँ एतबे ने कहि सकै छेलिऐन जे बकलेल माए-बाप बकलेले बना पठौलक। मुदा तइसँ की होएत।”

तैबीच जेठकी पुतोहु–माने सुभद्र भाइक पत्नी–कबुल करैत बजली-

“सोलहन्नी सत् कहने छेली!”

जेठकी पुतोहुकेँ कबुल करिते पुछलयैन- “आ छोटकी पुतोहुकेँ केना परिछन केलिऐन?”

मुस्की दैत बजली-

“डेढ़ियापर ढेर स्त्रीगण सभ कुटिचाल करैत रहए, तैबीचमे जा

असथिरसँ पुछलयैन- ‘कनियाँ, जइ घर एलौं हेन तइमे अल्लूक संग ओलोक तरकारी चलैए, से ओल उखाड़ल होइए किने?”

ओना बजली गीतक लयमे मुदा ओल उखाड़ब ओतेक असान तँ नहियेँ अछि। कारण, एक तँ माइटिक तरक तरकारी छी ओल, तैपर गाछसँ कन्द धरि कब-कबाह सेहो होइते अछि।

पुछलयैन-

“ओ की कहलैन?”

बजली-

“ओहो मुड़ी गाड़ि लेली..!”

अपना बेटीकेँ पालैक लूरि जइ माएकेँ रहत ओ आनोक बेटीकेँ तँ पालिये सकैए! तखन एते विषमता किए?”

तैबीच दरबज्जापर हल्ला भेल-

“आब ऐठाम देरी नहि करू, असमसानोक रस्ता नमहर अछि।”

❑ पैंतीस साल पछुआ गेलौं: 2017

संकट

चालिस बर्खक पछाइत राधाकान्तकेँ कृष्णकान्तसँ भेँट भेलैन। भेँटो ओहिना नइ भेलैन, कृष्णकान्तसँ राधाकान्त नियारि कऽ भेँट करए आएल छला। प्रणाम-पाती भेला पछाइत कृष्णकान्त पुछलखिन- "भाय, की हाल-चाल?"

'की हाल-चाल' कहि कृष्णकान्त अथिति संगीक स्वागत-बात करैमे लगि गेला। कुरसीपर बैइसैत राधाकान्त बजला- "भाय, की हाल-चाल रहत! संकटमे जिनगी पड़ि गेल अछि..!"

राधाकान्तक बात सुनि कृष्णकान्त अपन विचारकेँ रोकि आँगन जा पत्नीकेँ कहलैन- "पुरान मित्र एला अछि, तँए आदर-सत्कारमे कमी नइ होइन।"

दिनक एगारह बजेक समय, अगहन मास। ओना, गाम कि इलाकेमे जखन राधाकान्त प्रवेश केलाह आ खेती-पथारी, उपजावारीपर जे नजैर पड़लैन तखनेसँ मने-मन विचारए लगला जे अपन इलाका की छल आ अखन की बनि गेल अछि!

ओना एक परिवार रहितो, जँ परिवारमे अतिथि-अभ्यागत अबै छैथ तँ एकरंग आदर-सत्कार नहियेँ होइत अछि। तेकर कारण अछि जे अभ्यागतो-अभ्यागतमे अन्तर होइते अछि। आ ओ होइए मनुक्ख रूप देखि नहि, बनाबटी सम्बन्ध देखि। पाहुन एने जे स्वागत-बात परिवारमे होइए ओइसँ अलग सासुरक पाहुन एने होइए। तहूसँ अलग दोस-महीम आ हित-अपेक्षित एने सेहो होइते अछि। खाएर जे होइए, ओ तँ परिवार-परिवारक अपन-अपन बेवहारपर निर्भर अछि। ऐठाम कृष्णकान्त आ राधाकान्तक दोस्तीक सम्बन्ध अछि।

पतिक विचार सुनिते श्यामाक मनमे एलैन जे पुरानो मित्र तँ एक रंगक नहियेँ होइ छैथ। ओहूमे अन्तर अछिए। पहिल ओहन मित्र भेला जे बालपनसँ वृद्धपन धरि एक-रसमे निमाहैत आबि रहला अछि। माने ई जे जहियासँ मित्रता भेल तहियेसँ आबाजाही होइत रहने रंग-रंगक सम्बन्धमे बढ़ोत्तरी भेल रहैए आ दोसर भेल शुरूमे–माने जखन मित्रता भेल–तैबीच नीक जकाँ मित्रता चलल, मुदा आबाजाही कम रहने सम्बन्ध ओतबेपर अँटैक गेल। सएह राधाकान्त आ कृष्णकान्तक बीच भेलैन।

जहिया सी.एम. कौलेजमे पढ़ैले प्रवेश केलाह तहियेसँ राधाकान्त आ कृष्णकान्तक बीच मित्रता भेलैन। संजोग एहेन बनल जे कौलेजमे नाओं लिखबए जहिये राधाकान्त पहुँचला तहिये कृष्णकान्तो। दुनू गोरेक मैट्रिकक परीक्षाक रिजल्ट सेहो एके रंग छेलैन। सेकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केने रहैथ। ऑफिसमे जाधैर दुनूक एडमिशन भेल ताबे तक अपन-अपन काजमे लागल छला। नाम लिखौला पछाइत जखन दुनू गोरे ऑफिससँ निकलला तखन गप-सप्प भेलैन। ओना, गप-सप्पक दोसरो कारण भेल। दोसर कारण भेल दुनूकेँ डेरा लेब सेहो छेलैन।

कौलेजक गेट टपि दुनू चाहो पीबैले आ गपो-सप्प करैले दोकानपर पहुँचला। खाली टेबुल देखि दुनू गोरे एके टेबुलक कुरसीपर बैसला। राधाकान्त कृष्णकान्तकेँ पुछलैन-

“अहाँकेँ घर केतए छी?”

जिला-जबार पुछैक जरूरत दुनूमे सँ किनको किए रहतैन। आइ ने दरभंगा जिला बँटि कऽ तीन जिला बनि गेल अछि मुदा ओइ समयमे जिला तीन सब्डिवीजनमे बँटल छल- दरभंगा-मधुबनी आ समस्तीपुर। दरभंगा जिलो आ सब्डिवीजनो छल। तँए समस्तियोपुर आ मधुबनियोक बासी कनिष्ट छलाहे।

कृष्णकान्त बजला-

“हमर घर हरिपुर अछि आ अहाँक?”

राधाकान्त- “हमर सीतापुर।”

जखन सबहक बाबा एके छी माने जिला एक छी, तखन पित्ती आ

बड़-भाय–माने सब्डिवीजनक आ ब्लौक–क मोजरे केते, तँए दुनूक बीच कोनो मन-मनान्तर किए उठितैन। ओहुना विद्यालयमे गाम-समाजक हिसाबसँ जातीय बन्धन थोड़ेक ढील अछिए। माने ई जे कथा-कुटुमैतीमे जइ हिसाबे जातिक जड़ि खुनि-खुनि जीऔल जाइ छै, तैठाम तँ ओ जगजगार हेबे करत किने। से विद्यालय, महाविद्यालयमे नहि अछि। ओइ हिसाबे बुझू माटिक तरमे झँपाइते जा रहल अछि। ओना, दुनूक चेहरो-मुहरामे तरपट नहियेँ छेलैन। दुनूक सामंजसक बाधाक बीच केतौ बाट खाली नइ छल। संजोग भेल, चाहे दोकानदार अपन बीस बर्खक कमाइसँ निच्चाँ ईंटा जोड़ि ऊपर सीमटीक चदरासँ छाड़ि हालेमे एकटा घर बनौलक जइमे दूटा कोठरी छइ। एकटामे अपन परिवार छै आ दोसर भाड़ा लगौत।

राधाकान्तो आ कृष्णकान्तो दरभंगा शहरक लेल अनाड़ी छलाहे। चाह हाथमे पकड़ैत राधाकान्त दोकानदारकेँ पुछलैन-

“विद्यार्थीक रहैबला डेरा भाँजपर केतौ अछि? ओना, दुनू गोरेकेँ गामेसँ भाँज लगि चुकल छेलैन जे चौबे लॉज छै, जइमे दू-चारि कोठरी सदिकाल खालीए रहैए। चौबेजी अपनो भरि दिन एकटा चटसारपर बैस गाँजे पीबैत रहै छैथ तँए कोनो विद्यार्थीकेँ डेरा नइ भेटैक प्रश्न मनमे उठिते ने अछि।”

बगलक खाली कुरसीपर बैस दोकानदार अपन अन्तर-शक्ति जगबैत बाजल-

“दू गोरेक रहैबला एकटा कोठरी हमरो अछि।”

रहैक डेराक आशा सुनि दुनूक मन तिरपीत भेल। कृष्णकान्त दोकानदारकेँ पुछलैन-

“की भाड़ा लेबइ?”

एक तँ जेहने अनाड़ी दोकानदार तेहने अनाड़ी राधाकान्तो-कृष्णकान्त। ओना, जेहेन डेरा तेहेन भाड़ाक दर छेलैहे। मुदा कोनो नव, भाड़ा दइबला वा लइबलाक संग तँ विकल्प बनले अछि जे जइ तरहक घर अछि तइ तरहक भाड़ा भेल। जहिना चौबे लॉजक भाड़ा, दस रुपैआसँ बीस रुपैआक बीचक अछि, तेहने घर ने दोकानदारोक छैन। तैबीच

दोकानदारक मन नचैत विद्या-अध्ययन केनिहारक रूप लग पहुँच गेल। एक ब्रह्मचारीक रूप देखि दोकानदार ठाँहि-पठाँहि बाजल-

“बौआ, अहाँ सभ छोट भाइक रूपमे रहब, तैठाम हमर बाजब नीक हएत। अहाँ दुनू गोरे अपनामे विचारि लिअ, जे भाड़ा कहब, हम कोठरी दऽ देब।”

एक तँ दुनूक मनमे सी.एम.कौलेजमे प्रवेशक खुशी, तैपर चाहक खुशी सेहो छेलैन्हे। तँए माता-पिताक सोहे-बात मनमे किए रहितैन जे अपन ओकाइतिक हिसाबसँ काज करितैथ। ओना, दुनूक मनमे नव विचार सेहो अँकुरिये गेल छेलैन। ओ अँकुरल छेलैन दोकानदारक विचार देखि, जखन बेचारे अपने सभपर फेक देलैन तखन बजारक जे हिसाब अछि तइ हिसाबसँ ने बाजब।

पचीस रुपैआ भाड़ा तय-तसफिया करैत दोकानदार बाजल-

“कनिये दूरपर घर अछि, चलू चलि कऽ देखाइये देब आ तालाक कुञ्जी सेहो दऽ देब।”

सोना-चानी दोकान-ले भिनसुरका चारि पाँच बजेक समय जहिना कुसमय भेल तहिना चाहक दोकानले दुपहरक समय भऽ जाइते अछि। माने स्पष्ट अछिए। एकर विपरीत दिशा सेहो अछिए। चाहक दोकान-ले चारि-पाँच बजे भोरक समय शुभ भेल आ सोना-चानीक दोकान-ले अशुभ, तहिना सोना-चानीक दोकान-ले दुपहरक समय शुभ भेल मुदा चाहक दोकानदार-ले अशुभ भेबे कएल। खाएर जे होइए हुअ दियौ अपना ताले दुनू बेताल अछि। समय शुभ-अशुभ होइते ने अछि, काज आ स्थान ओकरा शुभ-अशुभ बनबैत अछि।

कौलेजमे अखन पढ़ाइ शुरू होइमे आठ दिन बाँकी छल। तँए आठम दिनक दिन ठेक राधाकन्तो आ कृष्णकान्तो आ दोकानदार सेहो अपन-अपन काज दिस बढ़ला। संग हटला पछाइत जहिना एक दिस दोकानदारक मन अपन एक जिनगी चढ़ैत देखलक। माने ई जे दरभंगा सन बजारमे अपन दस धुर घराड़ी बनौलक तेकर खुशी, तैपर दोकानक आमदनीक संग घरक भाड़ा सेहो देखलक। मने मन दोकानदार अपन

प्रज्वलित होइत भविस देखए लगल तहिना दोसर दिस राधाकान्तो आ कृष्णकान्तो अपना बले अपन काज सम्हारि कऽ ने घरमुहाँ भेला, तँए मनमे मस्ती उठब सोभाविके अछि। दुनू मस्तीसँ आगू बढ़ैत ओइ मोड़पर आबि अँटैक कऽ ठाढ़ भेला जैठामसँ दुनू बेकतीक अपन-अपन गाम दिसक रस्ता फुटैत अछि। मात्र दू घन्टाक बीचक दुनू सम्बन्ध जेना बहैत जिनगीक धारकेँ एकठाम जोड़ि देलक। एक धारमे जुटला पछाइत धारसँ पुन: अलग दोसर धार बनाएब जहिना असान अछि तहिना भारियो तँ अछिए। ओना, होइत दुनू अछि। एक पुरुष आ एक नारीक बीच सम्बन्ध भेने सृष्टिक शक्ति जखन आबि जाइए तखन जँ दू पुरुखक बीच सम्बन्ध बनत तँ ओ भलेँ सृष्टिकर्ता नहि बनए मुदा सिरजन कर्ता नइ बनि सकैए सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैत अछि। ओना, तैबीच दुनूक अपन-अपन परिवारो आ विद्यालयक विद्याध्ययनक विचार सेहो भइये गेल छेलैन जइसँ आमक कलमक गाछ जकाँ नमगर-चौड़गर देह-दैहिक मिलान सेहो भइये गेल छेलैन। एक तँ पैछला कथाक सम्बन्ध, तैपर दू घन्टाक टटका सम्बन्ध सेहो तहदर-तड़गर बनियेँ रहल छेलैन।

अन्तिम विदाइकेँ नव आवरण दैत कृष्णकान्त बजला- “भाय, अखन तक हेराएल भैयारी छेलौं, मुदा आब तँ भेटल संगी भेलौं, संग मिलि चलबो अछि आ चलैत रहबो अछिए। तँए एकटा निसचित समय बना लिअ जे केते बजे दरभंगा पहुँच जाएब।”

राधाकान्त बजला- “भाय, अहाँ इलाकामे जे होइत हुअए मुदा हमरा इलाकामे बेटा होइ कि बेटी, माता-पिता घरसँ बिनु खेने नइ निकलए दइ छैथ, तहूमे बुझिते छिऐ जे विदाइयक भोजन केहेन होइ छइ। तँए बारह बजेक बादे घरसँ निकैल हएत, तइ हिसाबे पहुँचब।”

राधाकान्तक बात जेना कृष्णकान्तकेँ छुबि देने होनि तहिना मन छुबाइन भऽ गेलैन। अपन इलाकाक ऊपर लागल कलंककेँ साफ करैत कृष्णकान्त बजला- “भाय, एना जे हमरा इलाका आ अपना इलाकाक बेवहारक बात केलौं से की हमर घर मिथिलासँ बाहर अछि?”

सामंजस करैत राधाकान्त बजला- “भाय, हमर-अहाँक एक बेवहार-विचार रहितो प्रकृति अवघात करिते अछि। की अपने ऐठाम एहनो

इलाका नइ अछि जे धार-धुरमे कटि-छँटि कऽ तेना नष्ट भऽ गेल जैठाम बेटा-बेटीकेँ माता-पिता भूखले घरसँ विदा नइ करै छैथ। की एकरा नकारल जा सकैए?”

राधाकान्तक बातपर कृष्णकान्त अपन मुड़ी डोलबैत चुप्पे रहला। एक-दोसरक नजैर-मे-नजैर मिलबैत दुनू गोरे अपन-अपन गामक रस्ता पकैड़ विदा भेला।

एक डेरा आ एक कौलेजमे तीन साल समय बीतल। दुनू गोरे, राधाकान्तो आ कृष्णकान्तो एक संग एक घरमे चौबीसो घन्टाक किरिया-कर्म करैत बी.ए. ऑनर्सक किलासमे पहुँच चुकल छला। अर्थ शास्त्रक विद्यार्थी रहने दुनूकेँ अर्थ-चरित्रक आत्म-ज्ञान मनमे जागि ई स्पष्ट कऽ देने छेलैन जे अपन जे पैतृक सम्पैत अछि ओ जीवनक लेल परियाप्त अछि। तँए, नोकरीकेँ मनसँ हटा दुनू गोरे अध्ययन दिस अपनाकेँ लगौने रहला। दुनू गोरे अर्थशास्त्र-प्रतिष्ठाक डिग्री पाबि अपन पुस्तैनी किसानी जिनगी शुरू केलाह।

पतिक विचार–माने पुरान मित्र एला अछि–सुनि श्यामा अगदिगमे पड़ि गेली। अगदिग ई जे अभ्यागतक माने तँ दोस-महीमसँ लऽ कऽ सर-सम्बन्धी होइत अनठियोक संग अछिये, मुदा पहिने जे स्वागतक ढंग छल ओइमे थोड़ेक तोड़-जोड़ सेहो भेबे कएल अछि। पहिने एक लोटा जल अभ्यागतकेँ पएर धोइले देल जाइ छल मुदा आजुक परिवेशमे ओ गौण भऽ गेल। तेकर अनेको कारण अछि...। मुदा लगले श्यामा अपन पतिक नाड़ पकैड़ मित्रक नाड़ी पकैड़ लेली। लोटामे जल आ गिलास नेने श्यामा दरबज्जापर पहुँचली। ओना, श्यामा सहैम-सरमा कऽ एकाएक धकचुका गेली। धकचुकाइक कारण भेलैन जे झुर्ड़ीक आगमन भेने राधाकान्तक चेहरा झुड़िया गेल छेलैन जइसँ वयसगर रंग-रूप पकैड़ नेने छेलैन। मुदा अपन घर अपन होइए किने। जेकर मान-सम्मानक भार घरवारीक ऊपरमे अछिए। पत्नीक धकचुकीकेँ मठियबैत कृष्णकान्त बजला- “एना धक-चुकाइ किए छी। मित्रतामे छोट-पैघ नइ होइ छइ। सबहक सम्बन्ध मित्रवत होइ छै, माने बराबरीक सम्बन्ध। जहिना अहाँ मित्रणी-मैत्रेयी भेलिऐन तहिना ओहो ने मित्रणा भेला।”

ओना, किसान परिवारसँ जुड़ल श्यामा, मुदा अपनाकेँ पतिक आगूमे पतिक पूरक रूपमे बुझै छेली, तँए मुँह दाबि बाजब सोभाविके छल। लोटाक जल आ गिलास रखि श्यामा चाह आनए आँगन गेली। पुतोहु चाह बना नेने छेलैन। पियासक तृष्णा सेहो कनी-मनी राधाकन्तकेँ जगिये चुकल छेलैन। पानि पीबिते रहैथ कि श्यामा चाह नेने पहुँच गेली। यएह ने भेल अतिथि-सत्कार जे खान-पानक संग गप-सप्पमे मन बहलबैत बहेलिया बनल रही।

टेबुलपर चाहक कप रखि श्यामा आँगन दिस विदा हुअ लगली। मुदा कृष्णकान्त रोकैत बजला-

“मित्र की कोनो हमरेटा छिआ जे अहाँ छोड़ि कऽ आँगन जाइ छी। जहिना ओ अहाँक मित्रणा छैथ तहिना अहूँ ने मित्रणी छिऐन!”

खग जानए खगक बोल, पतिक विचार सुनि मुस्कुराइत श्यामा आगूमे बैसली। टेबुलक एक भागमे राधाकान्त दोसर भाग कृष्णकान्त आ तेसर भाग श्यामा छेली। जहिना दू पुरुखक बीच एक नारीकेँ रहने पुरुष परीक्षा होइए, माने जहिना दुनू भाँइक बीच सीताकेँ रहने रामक परीक्षा भेलैन तहिना ने लक्ष्मणोक भेबे केलैन। से खाली पुरुषेक परीक्षाटा होइए एहेन बात नहि अछि, नारियोक संग अछिए। ओ अछि दू नारीक बीच एकटा पुरुखक हएब। हँ! एकरा अहाँ सौतीनक डाह नइ बुझब।

जेना थाकल-ठेहियाएल राधाकान्त पानि पीलैन तेना चाह कण्ठसँ निच्चाँ नइ ससैर रहल छेलैन। जइसँ रूकि-रूकि चाह पीबै छला। श्यामा बीचमे ओहिना सकदम छेली जेना कियो ओहन स्थानपर पहुँचला पछाइत सभ किछु हेराएल-हेराएल देखि सकदम भेल रहैए। श्यामाक मनमे उठैत रहैन जे पतिक संग मित्रक केहेन बेवहार रहल छैन। बिनु ओइ बेवहारकेँ बुझने-जनने कोनो एहेन बेवहार ने भऽ जाए जे ओइसँ विपरीत होइ वा हटल-हटल होइ। ओना, एहनो तँ मानले जाइए जे मूर्खक उच्चकोटिक ज्ञानपन वएह भेल जे चुपचाप सुनि-सुनि मनमे घोड़ैत रहल। श्यामा तँए चुप, मुदा राधाकान्तकेँ सेहो चुपचाप सकदम देखि कृष्णकान्त बजला-

“मित्र, चाहमे किछु कमी अछि जे पीबैमे बाधा उपस्थिति होइए।”

बच्चासँ सीखल-जाँचल राधाकान्त छलाहे, मित्रक नस-नस ओहिना जनिते छला जहिना नर्कक मंत्र घाट होइत अछि। बजला- “मित्र! मित्रणीक चाह पवित्र छैन मुदा अपने चाह अपवित्र भऽ गेल अछि।”

राधाकान्तक बात सुनि श्यामाक मन सेहो बजैले लुसफुसेलैन। लुसफुसाइक कारण भेलैन जे राधाकान्त मित्रणीक चर्च कऽ देने छेलखिन। ओना, श्यामाक मनमे गाड़ी रोकैक ब्रेक जकाँ आगू-पाछू सेहो दुनू ब्रेक लागले छेलैन। मुदा ओ तँ सलाइ रिंच जकाँ बहुरूपिया अछि, जइसँ ई निर्धारित करब थोड़ेक कठिनाह तँ अछिए जे कोन नट केतेपर रिंचसँ कसाएत। श्यामाक मनमे ब्रेक ई लगलैन जे परिवारक मालिक तँ पुरुख भेला, घरक सभ छार-भार हुनका ऊपर भेलैन। हम तँ साधारण चाह अननिहारि छेलौं। पीनिहार सभ छी, बनौनिहार एक भेली माने पुतोहु बनौली, तैबीच मित्रक एहेन बोल किए भेलैन? एहनो तँ सम्भव अछिए जे जहिना दूधक फूलक जे सुगन्ध अछि ओ ओकरे (माने दूधेक) लोहियासँ सटल-जरल दूधक नहियेँ अछि। भले ओ दूधेक किए ने होइ। ओ तँ जरल डारहीक जराइन महक निकालबे करत। सएह तँ ने मित्रोकेँ भेल छैन।

काग-भुशुण्डी जकाँ रस्ता परहक बर्खाक पानिमे नहा पाँखि फड़फड़ा कऽ झाड़ि शान्त-चित्तसँ श्यामा अपन मुँह बन्न केने रहली।

एमहर मित्रक विचार सुनि कृष्णकान्त स्तब्ध भऽ गेल छला। जे एहेन विचार मित्रक मुहसँ किए निकलल। ओना, मनमे ब्रेक जकाँ ईहो लागि गेल रहैन जे मित्रक मन जरूर बेथासँ बेथित छैन। A Friend is a need friend in deed. केहेन बेथा? केना पुछबैन बेथाक बेहाल? मुदा बिनु बुझने कियो केकरो बेहालकेँ सुहालो तँ नहियेँ बना सकैए। सभ समस्याक अपन-अपन सीमो छै आ श्रेणियो छइहे। ओही सीमा-श्रेणीक बीच ने समाधानो अछि। ई तँ नहि ने, जेना कृष्ण-सुदामाक बीच भेलैन। दोस्तिनीक जे सिनेही सनेस कृष्ण हँसि-हँसि खाए चाहै छला से सुदामा अढ़ दाबि-दाबि नुकबए चाहैथ। भलेँ कृष्ण चित्तचोर छला से बुझि गेला, मुदा सुदामाकेँ अपन गरीबीक प्रति ग्लानि नइ होइत रहैन सेहो केना नहि कहल जाएत...।

कृष्णकान्तक मन भीतरे-भीतर तिरछियाइत ओतै पहुँच गेलैन

जेतए पियासलकेँ पानिक तृष्णा तेज रूपमे जगैए। ओना, जहिना पियासल गाए-मालक तीन रूप सामने अबैए। पहिल- जोर-जोरसँ डिरियाएब, दोसर- हूकरब आ तेसर- अपन पियासकेँ आँखिसँ निकालि मलकारक आँखि चढ़ि-चढ़ि करूण क्रन्दन करब। यएह स्थिति कृष्णकान्तक बनि गेलैन। जे राधाकान्त बुझि गेला। बुझि ई गेला जे एक तँ हम सभ उमेरगर भेलौं, अनेको रंगक दुख-दर्द सहल देह अछि, तैठाम अशुभ बात मुहसँ निकालैमे कृष्णकान्तकेँ असोकर्ज तँ भइये रहलैन अछि। दुखाएल मने मुस्कुराइत राधाकान्त बजला- "मित्र, अहाँक गाममे लक्ष्मी साक्षात् नाचि रहली अछि। मुदा हमर...।"

बीच रस्तामे राधाकान्तक विचारक गाड़ीकेँ रूकिते देखि पाछूसँ ठेलैत कृष्णकान्त बजला- "से की?"

राधाकान्त बजला- "कौलेज छोड़ला पछाइत अपन पैतृक सम्पैतिक काज- खेती-बारीमे तेना बोहिया गेलौं जे बीचक तीस साल केना बीत गेल से बुझबे ने केलौं। जहिना वेरागी सभ राम-रमैया, कृष्ण-कन्हैयाक सतसंगक पाछू बोहिया जाइ छैथ तहिना भेल। अहूँकेँ बिसैर गेलौं आ अहाँक संग मित्रणियोकेँ बिसैर गेलिऐन। मन अछि किने जे लोकनिया हमहीं गेल रही। ओही गामक लोक ने हमरा 'लोकना-लोकना' कहए लगल।"

राधाकान्तक विचार सुनि श्यामा अखियास करए लगली। हिनकर बचपनाक देह केहेन लालबुन्द छेलैन आ आइ झुर्ड़ी पड़ि रहल छैन! जरूर केतौ-ने-केतौ जिनगीमे खाँच-खरोच भेलैन अछि। नहि तँ एहनो होइ जे, जे आम सुभर निरोग छल ओ कोलिपदु भऽ जाएत! एकर माने ई नइ बुझबै जे जेतबो सत् बात छोट बेदरा बजै छल, तेतबो सत् बात आइ बाप-पित्तीक कोन बात जे बाबो नहि बाजि पबै छैथ। किए ने बाजि पबै छैथ से तँ अपनो मन कहिते हेतैन...।

बेर-बेर श्यामा आँखि उठा-उठा राधाकान्तक शरीरपर नचबए लगली। ओना, कृष्णकान्तक मनमे ईहो उठए लगलैन जे खेला-पीला पछाइत जिनगीक नीक-बेजा एक बात करब नीक हएत। मुदा लगले मन ईहो कहए लगलैन जे दुखक जड़ि जेते जल्दी मेट जाए ओते शुभ...।

कृष्णकान्त बजला- “मित्र, तीस साल पैछला जिनगी नीक रहल जे एक पीढ़ीक जीवन भेल, बढ़ियाँ बात। मुदा पछातिक दस बर्ख?”

हारल सिपाही जकाँ नहि, बाधासँ बाधित सिपाही जकाँ राधाकान्त बजला- “मित्र, दस बर्खसँ जंगली गाइयक (नील गाए) उपद्रव गाममे तेते बढ़ि गेल अछि जे बाड़ी तकमे तीमन-तरकारीक उपज नइ भऽ पबैए। जहिना हाथ रहैत निहत्था बनि गेल छी तहिना बुधि रहैत बुधिहीन सेहो बनि गेल छी। शुरूक तीन साल मनमे यएह होइत रहल जे जहिना बोन-झाड़ दिससँ नील गाए वौउरा कऽ गाम दिस आबि गेल अछि तहिना चलियो जाएत।”

कृष्णकान्त बजला- “तइमे की बाधा भेल?”

“की कहब! सबे नचाबे राम गोसाँइ। एक दिस जहिना गंगा प्रदूषित धार दुनियाँमे घोषित अछि, तहिना दोसर दिस वैतरणी पार करैवाली पवित्र धार कि नइ छैथ सेहो तँ वएह छैथ। जेते मनुक्खक लहास गंगा धारमे अर्पित-समर्पित होइए, तेते कोन धार पचा सकैए। गाइयक रूपमे जंगली जानवरक उपद्रव तेते बढि गेल जे जीब कठिन भऽ गेल अछि।”

कृष्णकान्त बजला- “पहिने नील गाएकेँ सील-मोहर करए पड़त जे एकरा केहेन पशु मानल जाए।”

अन्तिम खुशी जाहिर करैत राधाकान्त बजला- “मित्र, आब जिनगीए केतेक शेष अछि। एते दिन काजपर बैसल छेलौं, काजमे समय नचैत छल, मुदा आब ओ सभ सभटा चलि गेल तँए आब थोड़ेक फ्री सेहो भइये गेलौं, भेँट-घाँट होइत रहत।”

कृष्णकान्त- “मित्र, पाँच दिन रहू। अपन हाथक उपजौल एक-एक चीज-वौस खुआ देब। पाँच दिनक पछाइत जाएब।”

राधाकान्त बजला- “मित्र, अपन जिनगी ओहने बना नेने छी जेहेन समय-साल बनि गेल अछि। भने चालीस बर्खक बीचक भेँट-घाँट जे गैप छल ओ समतल बनि जाएत। आइ भरि छी, काल्हि भोरे चलि जाएब।

❑ देखल दिन: 2018

खिलतोड़ भूमि

☰

तिलासंक्रान्तिक भोर। भोर माने तीनबजिया भोर नहि बल्कि सूर्योदयपरक भोर। दरबज्जापर बैस मने-मन पाबैनक हिसाबक गर लगबैत रही। कहब जे जखन सभ किछु पाबैनक बुझले अछि तखन गर लगबैक की आतुर भऽ गेल?

आतुरक कारण भेल जे सालक जेतेक पाबैन अछि ओ एकरंगाह अछि, माने ई जे चाहे तँ सुर-सुर हएत, नहि तँ मुर-मुर हएत। मुदा तिलासकराँति तँ से नइ छी। ऐमे तँ दुनू हएत। सुर-सुरो हएत आ मुर-मुरो हएत। तहूमे खाली जँ खाइये-पीबैक रहैत तँ एकचकिया गाड़ी जकाँ असान रहैत मुदा से तिलासकराँति तँ छी नहि। तहूमे आन-आन पाबैनक महिना-तिथि निर्धारित अछि जे फल्लाँ तिथिमे फल्लाँ पाबैन हएत, से तँ तिलासकराँतिक रहल नहि। आन पाबैन जकाँ तीर्थक हेर-फेरसँ गोटे साल गोटे पाबैन आगुआ-पछुआ जाइए, मुदा फेर आगू चलि अपन धुरी पकैड़ लइए। से तँ तिलासकराँतिकेँ हएत नहि, चौदह जनवरीकेँ जे सभ साल पाबैन होइत आबि रहल छल ओ चौदहसँ आगू घुसैक पनरह जनवरी भऽ गेल जे आब कहियो ने चौदह जनवरी हएत..!

अही गुन-धुनमे विचार वौआइत रहने कोनो गरे ने बइसैत रहए। तैसंग घाट परहक लहकी बंशी जकाँ मनमे ईहो लहकए जे आजुक सूर्य मकर रेखा पेब अपने आइ दछिनायणसँ उत्तरायणिक दिशा घुमत, तहुमे बिनु झगड़ा-दन आ बिनु पनचैतीक। तँए जेना पाबैनक दिन खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ मौज-मस्तीक होइए से भइये ने पेब रहल छल। तही बीच फुकना आबि बाजल-

"काका, चारि बजेमे बुझारत छी, से कनी रहबै।"

बिना किछु पुछने-आछने फुकनाकेँ कहि देलिऐ- "ठीक छह,

रहबह।”

मनमे कोनो एहेन बाते आकि विचारे उठबे ने कएल जे झोंझियाएल बुझारतमे फँसि जाएब। उठबो केना करैत, अखन धरिक जे अनुभव छल, ओ यएह ने छल जे या तँ कोनो पारिवारिक विवादक बुझारतमे जाइत रहलौं वा कोनो आन परिवारक संग विवादक बुझारतमे जाइत रहलौं अछि। तँए, कोनो ओहन समस्ये किए मनमे अबैत जेकर निमरजना नइ कएल हएत। बुझले अछि जे कियो माइट वा पाथरक बनौल शिवलिंग दर्शन करैए आ कियो ‘शिव-शिव’ समाज वा देश-दुनियाँक करैए। करै तँ दुनू शिवे-शिव अछि। केकर बातकेँ के सेवक बनि बुझए चाहैए आकि मालिक जकाँ आदेश करैए। लोको तँ लोके छी, हजार-दू-हजार बर्ख पहिनौं–जखन अपनाकेँ, आजुक नजैरमे जंगली वा पछुआएल बुझि जाति-सम्प्रदायक लड़ाइ-झगड़ा करै छेलौं आ आइयो जखन अपनाकेँ अगुआएल बुझै छी, अखनो नइ करै छी सेहो तँ सबहक सोझहेमे अछि।

ओना, फुकनाक अदम्य बिसवास हमरा ऊपर छइहे, तँए पूर्ण तुष्टिसँ खुशी होइत विदा भेल। अदम्य बिसवास फुकनाक ऐ दुआरे हमरा ऊपर छै जे अपन विचारे बुझू जे दोसराक मदैत करब मनमे अछि आ फुकनाक मनमे ई छै जे जहिया-कहियो जे किछु मंगलक वा पुछलक से नीक मानि जरूर देलिऐ वा कहलिऐ। मुदा एक्के बिसवासक कारण दुनू गोरेक मनक अपन-अपन अछि। अपना जगहपर दुनू नीके अछि, तँए जँ विचार-भिन्नताक कारण अछियो तँ परिणाम एकरंगाहे अछि।

फुकना विदा भऽ केतौ ने गेल, सोझे अपना ऐठाम आबि पत्नीकेँ कहलक-

“आइ तिलासकराँइत पाबैन छी, सुर-सुर, मुर-मुर दुनू हएत। ओकाइत ओहन अछि नहि जे अनकर देखौंस करब। लाइ-मुरही धिया-पुताक पाबैन छी, अदहा खर्च दिनुका खेनाइमे लगा देबै आ अदहा खर्चकेँ संचित सम्पैतमे लगा देबै तखन ने आनो-आन बुधियारो कहत। आ अपनो आगूक ठेकनगर ठौरो भेटत।”

सुग्गा जकाँ मनभावनी (फुकनाक पत्नी) पतिक बात सुनि पाबैनक तिल-चाउर-गुड़ मने-मन खाए लगली। किए तँ पतिक मुहेँ ‘बुधियार’ जे

सुनि लेलैन..! भाय! अपना मने दुनियाँमे के बुड़िबक अछि, केकरा ने मन होइ छै जे हम अपन मनक बात अनका ऊपरमे नइ लादी। मुदा मनभावनीकेँ से नहि भेलैन, हुनकर अपन विचार छैन, जइ विचारानुकूल ओ बुझि रहल छेली जे अपन मनक मानि ताबे तक नइ हएत जाबे दोसर 'बुधियार' नहि बुझत। मुदा दोसर तँ तखने बुझत जखन अहाँक नीक बुधिसँ ओकरा नीक काजक फल भेटतै। खाएर जे से...। बिसवासनी पत्नी जकाँ–माने श्रद्धायुक्त पत्नी जकाँ–मनभावनी बजली-

"पाबैन रहौ कि नइ रहौ, अहाँक विचार हम कहिया नइ मानलौं जे अहाँ फरिछा कऽ बुझबै छी। पहिने अहाँकेँ खुआएब पछाइत ने अपने खाएब।"

जिनगीक बाटमे फुकना पत्नीकेँ मिसियो भरि अवरोधी अनका जकाँ नइ बुझलक...। बाजल-

"अहाँ दुपहरिया-खेनाइक ओरियानमे लगि जाउ, बीचमे हम बजारसँ एकटा कोदारि कीनने अबै छी। बेँटो सुखा कऽ रखनहि छी, कोदारि हाथक ओजार भेल, ओजारे बले ने हाथ चलत।"

कहि फुकना पत्नीकेँ पाबैनक घर-आँगन सुमझबैत कोदारि कीनए बजार विदा भेल। आँगनसँ निकैलते फुकनाक मनमे उठल, ठकहरबाक बजार बनि गेल अछि, बेसी पाइयो लऽ लेत आ चीजो दब देत। दुनू हाथे बेपारी सभ ठकहरबा रोटी बना-बना रोटिपकामे सिझा-सिझा नून-तेल-मिरचाइ मिला-मिला खाइए। से नइ तँ जीयालाल काका चीज-वौस कीनब बेसी बुझै छैथ, हुनकासँ पुछि लेब नीक हएत। माने ठकाएब नहि...।

रस्ते कातमे जियालाल कक्काक घर, रस्तेपरसँ फुकना जीयालाल काकाकेँ शोर पाड़ैत बाजल- "काका छी यौ, यौ कका..! डुमरी फूल जकाँ केतए हेराएल रहै छी जे...।"

एक तँ फूल फूले भेल, गुलाब कहने केहेन गुलबिया आँखि भेटैए से तँ बजनिहारे बुझत। मुदा तैठाम तँ 'डुमरी फूल' स्वर्गोमे नहि, ओ तँ अथाह समुद्रक समाजमे रहैए, सुनि जीयालाल काका मृदुहास हँस-हँसी हँसि आँगनसँ निकलैत बजला- "फुकन! आइ तँ पाबैन दिन छी, भरि दिन

लोक खेबो करत आ मलड़बो करत, तूँ सभ छोड़ि केतए विदा भेल छह?”

ओना, फुकनाक मनमे ई नइ उठल जे दुनियाँकेँ चिन्है-जानैक दू रस्ता अछि। एक अछि जेते दुनियाँक चीज वस्तुक रूप-गुणकेँ बुझब तेते भौतिक ज्ञानी हएब आ जेते ओकर रूप-गुणकेँ मने-मन अङेज, खगता-बिनु-खगताक नजैरिये जेते देखैत छोड़ैत-पकड़ैत चलब ओते आध्यात्मिक हएब। फुकना किए बुझैत जे दान सभसँ मूल्यवान छी, जे देलासँ मनकेँ तुष्टि भेटै छइ। बुझबो केना करैत? वेचाराक मन परिपक्व रहितै तखन ने, से तँ छेलै नहि। जँ से रहितै तखन ने बुझैत जे उच्च कोटिक दान भेल- ज्ञान दानक चरम कोटिक आध्यात्मिक दान आ निम्न कोटिक दान भेल शरीरक सेवासँ लऽ कऽ चीज-वस्तुक दान धरि। ओना, शरीर दानमे श्रमदानक संग-संग प्राणदान तक अछि, आ चीज-वस्तुक दान भेल साधारण चीजसँ लऽ कऽ राज-पाट धरि। खाएर जे से...।

जीयालाल कक्काक बात सुनि फुकना बाजल- “काका, अपने तँ कहियो कोदारि कीनलौं नहि जे ओकर तरी-घटी बुझब। अहाँकेँ सभ कथुक तरी-घटी बुझल-गमल अछि, तँए मन कहलक जे हुनकासँ बुझि कऽ कीनिहऽ।”

फुकनाक बात सुनि जीयालाल कक्काक हृदय धकधका गेलैन। धकधकेलैन ई जे यएह ओ जगह छी जैठाम लोक अपनाकेँ बिसवासपात्र सेहो बनबैए आ बिसवासघात सेहो बनैबते अछि। तँए एहेन गौ-कस्सी नइ करब जे फुकनाकेँ कोनो तरहक अवघात हेतइ। ओना, बजारक जे रूप-रंग बनि गेल अछि ओ बिसवासहीन बनि गेल अछि, मुदा अपनो जिनगीक तँ ठौर अछि। जेते बुझै छी तइमे मिसियो भरि छल-प्रपंच फुकनाक संग नइ करब। जइ बिसवासक संग फुकना पुछलक तही बिसवासक संग ओकरा बुझा देबइ।

जीयालाल काका बजला- “फुकन! ओना, बजारमे केतेको लोहा-लक्कड़क दोकान अछि मुदा हमरा नजैरमे शिवनाथेक दोकान एहेन अछि जे एक दामो रखने अछि आ वस्तुओ नीक रखैए। तँए शिवनाथक ऐठाम पहुँच कोदारि कीन लिहह।”

जीयालाल काकापर फुकनाक बिसवास जमले छल, चुपचाप सभ

बात सुनि बजार दिस विदा भेल।

एक तँ ओहुना काजक प्रति बिसवास जगने फुकनाक मन मस्त छल, तैपर जीयालाल कक्काक मुहेँ सुनि आरो मस्तसँ मस्ती चढ़ि गेलइ। बजारसँ चौरासी रुपैआमे छ नम्बर कोदारि टाटा कम्पनीक कीनि फुकना एगारह बजेमे घुमि कऽ घरपर आएल।

ओना, तिलासकराँतिक हो-हा सौंसे गाम होइते छल मुदा संयासी जकाँ फुकना दुनियाँमे रहितो दुनियाँसँ अपनाकेँ अलग करैत घरपर अबिते विचार केलक जे नहाएब-खाएब पछाइत, पहिने कोदारिमे बेँट लगा लइ छी जे एकटा काज अगुआ जाएत। सएह केलक।

समयसँ किछु पहिनहि, माने पौने चारिये बजे हमरा ऐठाम फुकना आबि बाजल- "काका, समय भऽ गेल। शिवसुन्दर काका घरेपर छैथ।"

फुकनक चाँकि देखि अपनो चौकन्ना रहबे करी। किए ने रहितौं, जखन फुकन मानि लेलक तखन जँ ओकर मान नहि रखिऐ, सेहो केहेन होएत। बजलौं- "आरो केतौ जेबह आकि अहीठामसँ चलबह?"

फुकन बाजल- "काका, जँ दुनियाँमे एकोटा समझदार आदमी इमानसँ अपन जिनगी निमाहैथ तँ देखा-देखी अनेको जिनगी सुधैर सकैए। अहाँ कियो आन छी जे दोसरो-तेसरोकेँ संग करब।"

फुकनाक अटुट बिसवास देखि विदा भेलौं। मुदा अखन तक बुझारतक विषय बुझले ने छल। शिवसुन्दर भाय घरेपर छला। ओना, शिवसुन्दर भाइक पैछला केतेको पुस्तसँ गाममे प्रतिष्ठित परिवारक निमरजना करैत आबि रहल छला, जे अखनो छैन्हे। दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैसल शिवसुन्दर भाय लग अपनो बैसलौं आ फुकनो बैसल। शिवसुन्दर भाय बजला- "फुकन, भने आइ पाबैनक दिन सेहो छीहे, जे कहबह जेना कहबह हमहूँ तैयार छिअहे। देखिते छहक जे अपनो नोकरिया भेलौं आ बेटो दुनू नोकरिये भऽ गेल। गाममे रहलेपर ने कियो किछु कए सकैए। से तँ रहै नइ छी।"

ओना, अखन तक बुझारतक बिन्दु की छल से बुझबे ने केने छेलौं, तँए मन वौआइ छल जे किछु बजैसँ पहिने ओकरा बुझब जरूरी अछि।

मनमे अनायास उठल जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ गेल..! जहिना साहित्य समाजक दर्पण रहितो समाजसँ गाइब रहैए तहिना भऽ गेल अछि। ओना, मनमे ईहो हुअए जे कोनो समाजकेँ बनला पछातिये ओकर साहित्य सृजित होइए। मुदा ईहो हुअए जे साहित्य तँ संसारमे पसरले अछि। नव-नव केतेको रंगक समाज दिन-दिन बनियोँ रहल अछि आ मेटाइयो रहले अछि। जहिना समाजक दशा अछि तहिना तँ साहित्योक अछिए। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहऽ। अखन जे आगूमे विषय आबि रहल अछि, पहिने ओ ने बुझब अछि, मुदा बजा कऽ तँ फुकना अनने अछि, जे वेचारा भोला-भला सोलहन्नी सुधंग अछि। शिवसुन्दर भायकेँ आगू भऽ केना किछु पुछिऐन। मन अग-दिगमे पड़ले छल, मुदा ईहो मनमे उठिये रहल छल जे काजक चर्च जखन उठत तखन विचार करैक बिन्दुपर किछु बाजब। तँए चुपे रही।

संजोग बनल, शिवसुन्दर भाय अपने मुँह खोलैत बजला- “गौरी, हम तँ परदेशी भेलौं। नोकरी करै छी गुजर करै छी मुदा तूँ ते से नहि छह।”

शिवसुन्दर भाइक विचार सुनि मनमे सह भेटल। बजलौं- “भाय, गाम तँ जत्ताक तरोटा जकाँ अखनो कीलमे ठोकले अछि, मुदा तेकरा तँ गामेक लोककेँ बुझौ पड़त आ ओकर निमरजनो करै पड़त।”

हमर विचार जेना शिवसुन्दर भायकेँ नीक लगलैन तहिना समगम होइत बजला-

“गौरी, भने तीनियेँ गोरे छी। तँए हमर की समस्या अछि आ फुकनाक की समस्या छै, ओकरा नीक जकाँ पकैड़ एक विचारमे अनलाक पछातिये ने कार्य रूप देल जा सकैए।”

बजलौं- “हँ, से तँ देले जेबा चाही।”

अपन परिवारक पैछला चर्च करैत शिवसुन्दर भाय बजला- “गौरी! बाबाक रोपल दू बीघाक गाछी-कलम छल, जे आब परती बनि पड़ल अछि। पुरान भेने गाछो-बिरीछ बिमरियाहो भेल आ सुखबो कएल। तैसंग अपनो गाछकेँ बेचबो केलौं। उपटैत-उपटैत सौंसे गाछी उपैट गेल। ओकरा चाहै छी तोड़ि कऽ उपजाउ खेत बनाबी।”

बजा गेल- “ई तँ नीक विचार अछि!”

शिवसुन्दर भाय, की बुझलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मनमे हरियरीक उदय जरूर भेलैन। बजला- “फुकनाकेँ कहलिऐ अपने सभ समांग बाहरे रहै छी, घरोमे तल्ले झुलैत रहैए, एते दिन दू मास गाममे रहै छेलौं। एक मास आमक समयमे आ एक मास अगहनी समटैमे। ओना, खेतो-पथार अपने नहियेँ करै छी, ओहो बँटाइये लगल अछि, मुदा तैयो अगहन बीतैत पूसमे सभ साल एक मास-ले अबिते छी। पाँचम दिन गामसँ चलि जाएब, तँए मनमे भेल गाछियोबला जमीनकेँ ठेकान लगा उपजाबी, सएह फुकनाकेँ कहलिऐ।”

नीक जकाँ तँ सभ बात नइ बुझलौं, मुदा अदहा-छिदहा तँ बुझबे केलौं। बजलौं- “फुकन, शिवसुन्दर भाय की बजला से बुझलहक?”

फुकन बाजल- “काका! बुझलौं कहाँ, खाली सुनलौं। तँए ने अहाँकेँ बीचमे आनि बीचमान बना बुझारत करए चाहै छी।”

फुकनाक विचारमे केतौ छल-प्रपंच नहि बुझि पड़ल। ओना, शिव सुन्दरो भाइक विचारमे सेहो केतौ पेंच-पाँच नहियेँ बुझि पड़ल छल। मुदा दुनूक बीच सामंजस (सामन जस) केना हएत से तँ अछिए। बजलौं-

“शिव भाय, अहाँ अपने समझदार छी तँए केना दुनू गोरेक बीच सामंजस (समाज जस) हएत से तँ अपने ने विचार करब। फुकना तँ सहजेँ आगू-पाछूक कोनो बात बुझि नइ पेब रहल अछि, तँए ओकरा मनमे बिसवास पैदा करबे ने दुनू गोरेक लेल मूल भेल।”

सहमत होइत शिवसुन्दर भाय बजला- “की फुकन, तोहर की विचार छह से तँ तोहीं ने बजबह।”

शिवसुन्दर भाइक विचार सुनि फुकना अग-दिगमे पड़ि गेल। एक तँ नव काजक सूत्रपात, दोसर बुधियोसँ फुकना पछुआएल अछिए। बाजल- “शिव काका, अहाँ जे कहब से मानि हमहूँ काजमे भीड़ जाएब।”

ने शिवसुन्दर भाय खोलि कऽ बाजि रहल छला आ ने फुकने बुझि रहल छल जे आगू की हएत जैपर नजैर दैत किछु बजबो करैत। अपना मनमे हुअए जे जखन फुकना बुझारत करैले बजा कऽ अनलक तखन जँ कोनो निर्णयपर नहि पहुँच बिच्चेमे छोड़ि दिऐ सेहो नीक नहियेँ हएत।

बजलौं- “शिवसुन्दर भाय, अहाँ-आगू हम बच्चे भेलौं किने, तँए जइसँ दुनू गोरेकेँ अधिक-सँ-अधिक नीक हुअए, हम तँ सएह ने चाहब।”

ओना, बजैक क्रममे बजा गेल। तैसंग अखन तक जे अनाड़ी जकाँ छेलौं–माने बिनु बुझल जकाँ–तहूमे कनी-कनी सुधार भेल। भलेँ सोल्होअना नइ बुझि पेलौं मुदा सोलहन्नी नहियेँ बुझि सकलौं सेहो बात नहियेँ रहल। मनमे ईहो शंका होइत रहए जे अखन धरिक एहनो तँ इतिहास अछिए जे गाम-गाममे एकाध गोरे एहेन होइत रहला अछि जे भगवानक भजन करैले ‘भजनियाँ मेड़’ सेहो बनौलैन, मनोरंजन लेल नाचो-गानक मेड़ आ साहित्य सर्जन लेल मेड़ सेहो बनौलैन मुदा सभ कारगरे भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। दुनू तरहक भेबे कएल। केतौ-केतौ भजनियोँ मेड़, नचनियोँ मेड़ आ साहित्य सरजकक मेड़ नीक जकाँ क्रियाशील सेहो भेले अछि आ केतौ-केतौ अपनामे झगड़ने टुटबो केबे कएल। तँए, एहेन परिस्थिति जइ समाजमे सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि तैठाम ओहन रस्ता पकैड़ चलब ने नीक हएत जइसँ सभ दिन आगू मुहेँ ससरैत नीक-सँ-नीक बनैत चलए। ओना, समाजक संग समैयोक प्रभाव पड़िते अछि तही बीचमे ने जीबोक अछि आ खुशी-खुशी आगूओ बढ़ैत चलैक अछि। अपन होशियारी देखबैत शिवसुन्दर भाय बजला-

“गौरी, अखुनका जे परिस्थिति अछि तइ अनुकूल अखन विचार करह। जेना-जेना समय अबैत जाएत तेना-तेना विचारो करैत चलब। अपना ऐठामक शास्त्रमे जे ‘स्मृति’ अछि ओहो सएह कहैए।”

शिवसुन्दर भाइक विचार नीक लगल। बजलौं- “भाय, जैठामसँ काज शुरू हएत तैठामसँ विचार करैत एक-एक पहलूकेँ समधानि कऽ समाधान करैत विचार करब बेसी नीक हएत।”

शिवसुन्दर भाय बजला- “बढ़ियाँ विचार छह!”

शिवसुन्दर भाइक सहमत देखि मने-मन विचार केलौं जे हम किछु छी तँ तेहाला छी, असल हानि-लाभ तँ शिवसुन्दरे भाय आ फुकनेकेँ हएत। तँए नीक हएत जे वएह दुनू गोरे किए ने अपन-अपन पक्ष रखि एकमत होइथ। बजलौं- “भाय! अपने तँ सभ किछु जनिते छी, तँए नीक हएत अपन विचार अहूँ रखू आ अपन विचार फुकनो राखह। तैबीच जँ कोनो

ओझरी लगत ते गवाह जकाँ–माने तेहाला जकाँ–ओइ ओझरीकेँ सोझरबैक परियास हमहूँ करब।”

अपन काज जँ अपना विचारे समुचित ढंगसँ करैक लूरि जँ भऽ जाए तँ ओ सभसँ सुन्नर भेल। जे बात शिवसुन्दरो भाय बुझलैन। बजला-

“गौरी, अपने तँ जिनगी भरि नोकरीसँ उपारजन करैत एलौं हेन, गामक खेत-पथार बपौती सम्पैतक रूपमे अछि, तँए चाहै छी जे ओहो सम्पैत मरणशील नहि जीवंतता धेने रहए।”

बजलौं- “केतेको बर्खसँ जोत-कोरक अभावमे जमीन परती बनि गेल अछि। ओना, परती जमीनकेँ हरोसँ आ कोदारियोसँ तामि-कोरि उपजौले जाइए मुदा से होइए सालक परतीक। ऐठाम तँ से नहि..!”

हमर बात जेना शिवसुन्दर भाय नीक जकाँ बुझि गेला तहिना बजला- “सैयो बर्ख ऊपरेसँ जमीन परता भइये गेल अछि। आइ-काल्हिक जुगमे ने कियो-कियो गृहस्त सालमे एकबेर गाछी-बिरछीकेँ कोदारिसँ तमेबो करै छैथ आ पटेबो करै छैथ, मुदा हम तँ अखनो धरि पुरने ढाठी धेने छी, तँए माटि पथरा गेबे कएल अछि, जेकरा खेत बनबैमे दोबरोसँ बेसी भीर पड़बे करत। फुकनाक गरीबी देखि मन पसिज गेल जे किए ने मदैत कएल जाए।”

बजलौं- “बुधियार लोकक जेहेन बुधिगर विचार होइए से तँ अपने बाजिये गेलौं। तँए किए ने ऐगलो विचार करैत अपनहि रस्ता निकालि ली।”

अपनाकेँ बीच सीमापर ठाढ़ होइत देखि शिवसुन्दर भाय बजला- “फुकन पेटबोनियाँ अछि, जखने बोनि छोड़ि अपन काजमे लागत तखने पेट चलब कठिन भऽ जेतइ, जइसँ ओ काज नहि कए सकतै।”

बिच्चेमे बजा गेल- “से तँ हेबे करत।”

हृदय खोलि शिवसुन्दर भाय बजला- “जाबे तक खेतसँ उपज नइ हुअ लगत ताबे तक खाइ-पीबैक जोगार हम ओहिना–माने पैंच-उधारसँ मुक्त–कए देबइ।”

बजलौं- “की फुकन, विचार नीक लगलह की नहि?”

ओना, फुकनक मन पेटबोनियासँ गिरहस्त बनैक गिरहस्तीपर नाचि रहल छेलइ। मुदा तैयो अपनाकेँ सम्हारैत बाजल- “काका! पंच परमेश्वर होइ छैथ, अहाँ दुनू गोरे कि हमर गरदैनकट्टी करब।”

अपन मनक बिसवास जगैत शिवसुन्दर भाय बजला- “फुकनकेँ खेत बनबै आ उपजा उपजबैमे जे खाद-बीआ आ पानिक जरूरत पड़तइ सेहो मदैत करि देबइ।”

हँसैत फुकना बाजल- “शिव काका, अहाँ तँ भगवानोसँ बेसी मदैत करैले तैयार छी..! हमरा तँ सोझे देहे-हाथटा ने अछि तइसँ जे सम्भव हएत तइमे फुकनाकेँ फुकना नइ बुझि मुकना बुझब। बेसी की कहब।”

शिवसुन्दर भाय बजला- “खिल तोड़ि जमीनकेँ उपजाउ बना उपजा लेब, तोरे सन-सन पुरुषार्थ जेकरामे हेतइ सएह कए सकैए।”

‘पुरुषार्थ’ सुनि फुकन बाजल- “काका, अपनेक दया-दृष्टि चाही।”

❑ खिलतोड़ भूमि: 2019

मुराम जगह

☰

आने गाम जकाँ कुमारघाट सेहो एकटा गाम अछि। गामक चौबगली गाम जहिना ऊँचगर अछि, जइसँ चासक संग बासो ऊँचगर रहने नीक सेहो अछिए। ओना, कुमारघाटमे अखन, वर्तमानमे कोनो धार-धुर नहि अछि, जे अछियो से गामसँ आठ-दस किलोमीटर हटले अछि, मुदा गामक किछु गहींर जमीन जे उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ अछि, ओकरा लोक अखनो नदीए कहैए। आन-आन खेतसँ माटियो भिन्न अछिए। माने ई जे गामक जेतेक जमीन अछि ओ अछि मटियार, खरिआइ, चिक्कैन इत्यादि माटिक, आ नदीक बगलक जे जमीन अछि ओकर माटि दोरस, दोमट अछि आ नदी पेटक जे माटि अछि ओ गोंगा बाउल आ दोखरा बालुक तँ नहि अछि मुदा मेहिकी कोसिपुरिया बाउल जरूर अछि। गहींरगर रहने आने गहींर खेत जकाँ फसल सेहो होइते अछि। लोकक अबाहि भेने गाम-समाजक जनसंख्या सेहो बढ़िते आबि रहल अछि। जखने जनसंख्याक बढ़ोत्तरी हएत तखने परिवार बढ़त आ परिवारमे भीन-भीनौज भेने घर-अँगना बढ़बे करत, जइसँ घराड़ीक खगता सेहो बढ़बे करैए। से कुमारघाटमे सेहो भेल जइसँ नदीकेँ, माने मुइलहा नदीकेँ भरि-भरि घर-अँगना सेहो करीब पचास गोरे बना नेने छैथ। गामक माटिये जकाँ गाममे अनेको जातिक बास सेहो अछिए। ऐठाम ई नहि कहए चाहै छी जे गाम भलेँ सभ जाइतिक किए ने हुअए मुदा कहबैए खास जातिक गाम, कारण जे होइ, बस एतबे कहए चाहै छी जे जहिना सभ गाममे खूबलाल, बिपैतलाल आ कारीलाल छैथ तहिना कुमारघाटमे सेहो खूबलालो, बिपैतलालो आ कारियोलाल छथिए। नाम भलेँ एहने आन गाममे नहि हुअए, मुदा लोक तँ ओहन छेबे करैथ जेकर किरिया-करम आ चालि-ढालिमे एकरंगाहे जकाँ अछि।

परोपट्टामे पान-सातटा सभसँ ऊँचगर गाम अछि, ऊँचगर गामक माने ऐठाम भौगोलिक अछि। भौगोलिक ई अछि जे एकोठामक दू गाम एहेन अछि जे एकटा गाम खूब ऊँचगर अछि आ दोसर गाम नीचरस। जइसँ विपरीत परिस्थिति एकठाम दूटा गामकेँ रहितो भइये जाइ छै। जँ बरखा-बाढ़िक प्रभाव बेसी पड़ल तँ ऊँचगर गामक मुँह-कान लाल भऽ जाइ छै आ नीचरस गामक मुँह मलिन भऽ कारी भऽ जाइ छै। मुदा लगले विपरीत परिस्थिति सेहो बनिते अछि। ओ बनैए जे जँ बरखा कम भेल जइसँ बाढ़ियो ने आएल आ रौदी भऽ गेल, तखन नीचरस गामक, उपजा-बाड़ी भेने, मुँह-कान लाल भऽ जाइए आ ऊँचगर गामक मुँह मलिन भऽ करिया सेहो जाइते अछि।

परोपट्टाक पाँचो-सातो गामक एहेन सौभाग्य बनियेँ गेल अछि जे उपजाक दृष्टिसँ परोपट्टामे खुशहाल गाम मानले जाइए। मानलो केना ने जाएत? मानि लिअ अहाँ आमक बजार जाइ छी, जाइते अपन मिथिलाक आम मोन पड़बे करैत हएत। जखने मोन पड़त तखने करपुरियाक करपुरक सुगन्ध आ बेलबाक बेलक सुगन्ध मनमे लगबे करत। जखने से भेल, माने आमक प्रति आकर्षण बढ़ल तखने ने विचारए पड़त जे गाम अछि कोसी-कमलाक सासुर बनल आ अपने मन दौड़बै छी फल-फुलवनपर.! ऐठाम एकटा विचारणीय प्रश्न अछि, ओ अछि जे की ओहन गाम जे गामक बीच गाम अछि, माने कोसी-कमलाक झमारसँ बाहरक गाम अछि, तेही गामटामे करपुरियाक आ बेलबाक सुगन्ध लगि सकैए आ बाँकी गाममे नहि लागि सकैए, सेहो बात नहियेँ अछि। जँ नीचरस गाम अछि तँ ओइमे किछुकेँ विशेष गहींर बना माछ, मखान, सिंगहार, बड़ी इत्यादि उपजौल जा सकैए आ भरोठापर फल-फुलवन सेहो लगौले जा सकैए।

आने-आन गाम जकाँ कुमारघाटक लोक सेहो एहने छैथ जे पढ़ैक माने नोकरीए बुझै छैथ। गुलटेन आ तेतर सेहो कँवरिया जकाँ, गाम लग माने पैरक नापसँ दू कोसपर कौलेज खुजने, बी.ए. तक पहुँच गेल। पाछुआएल लोक जँ सिहन्ते करत तँ ओते ओजार-पाती जुटा केना पाबि सकैए। तखन तँ भेल जे साँपो मरि जाए आ लाठियो ने टुटए। स्नातक

सेहो भऽ जाएब आ बेसी ओजार-पातीक ओरियानसँ सेहो बँचि जाएब। तँए जहिना तेतर दर्शनशास्त्र, मैथिली विषय रखि स्नातक बनए जा रहल अछि तहिना गुलटेन सेहो बनए जा रहल अछि। गामक स्कूलसँ कौलेज धरि दुनूक एके रंग जिनगी रहल तँए परिस्थिति दोस्तीक लग आनियेे देने छेलइ। दुनूक बीच दोस्ती भइये गेल। ओना, दुनू दू जाइतिक छी मुदा परिवारक अर्थेपार्जनक साधन एकरंग रहने जिनगीक आचार-विचार-बेवहारमे एकरूपता आबिये गेल अछि।

संजोग बनल, बी.ए.मे जखन दुनू गोरे माने तेतरो आ गुलटेनो पढ़ै छल, दर्शनशास्त्रक शिक्षक ट्यूटोरियल क्लासमे पहुँचला, तखन मात्र दूइयेटा विद्यार्थी, तेतर आ गुलटेनकेँ दीनानाथ बाबू देखलैन। देखिते दीनानाथ बाबूक मन मुसैक गेलैन। मुसकैक कारण भेलैन जे संजोग नीक अछि। आइये किए ने दुनूकेँ जिनगीक मुराम जगह देखा दिऐ।

सामान्य क्लासमे शिक्षक पढ़बै छैथ, मुदा ट्यूटोरियल क्लास तँ से नहि छी, शिक्षके विद्यार्थीकेँ पुछै छैथ। भेल तँ जइ मुहेँक प्रश्न उठल, उत्तर देनिहार तइ मुहेँ विदा हएत। सएह भेल। शिक्षक प्रश्न रखलैन-

"अध्यात्म दर्शन की छी?"

अध्यात्मक नाओं जहिना तेतर सुनने तहिना गुलटेन सेहो सुननहि रहए मुदा दार्शनिक शिक्षक लग जवाब देब असान नहियेँ छी, मुदा तैयो जहिना तेतर जाइतिक आधारपर अध्यात्मक उत्तर देलकैन तहिना गुलटेन सेहो सम्प्रदायिक आधारपर उत्तर देलकैन।

दुनूक उत्तर सुनि शिक्षक बिगड़ला नहि, ओना दर्शनशास्त्रक शिक्षककेँ क्रोध लगले उठि जाइ छैन से गुण दीनानाथ बाबूमे नहि छैन। धिया-पुताक गलती देखि जहिना माता-पिता हँसि कऽ कहै छैथ- 'धुर बकलेल', तहिना दीनानाथ बाबू बजला-

"धुर बकलेल, अध्यात्म दर्शन जीवनक ओ दिशा देखबैए जे जीबैक कलामे सभसँ असान अछि।"

दीनानाथ बाबूक विचार सुनि जहिना तेतरकेँ उत्कण्ठा जगल तहिना गुलटेनकेँ सेहो जगल। उत्कण्ठा जगिते जेना गुलटेनो मनमे आ तेतरोक

मनमे अनेको जिज्ञासा जगि गेल, जे प्रश्न बनि मुहसँ निकलए चाहि रहल छेलै, तँए दुनू अपन-अपन प्रश्न उठबैले ब्रेंचपर सँ निच्चाँमे दुनू गोरे ठाढ़ भेल। दुनूक जिज्ञासा देख, दीनानाथ बाबू दुनूकेँ कहलैन-

"अपन-अपन प्रश्न कागजपर लिखू।"

टटका प्रवाह तँए लिखबो लेल अनुकूले भेल, दुनू गोरे अपन-अपन प्रश्न अपन-अपन कागजपर लिखि दीनानाथ बाबूक हाथमे दऽ देलकैन।

दुनूक प्रश्न देखि दीनानाथ बाबू मने-मन विहियबैत विचारलैन जे किए ने आमक आँठीए लग पहुँच, धरतीसँ अकास धरिक वृतान्त बुझा दिऐ। दीनानाथ बाबू बजला-

"बौआ, एकरा नीक जकाँ बुझि लेब जे मनुक्ख अपने काज केने सुखो पबैए आ दुखो पबैए, यएह जवाब भेल अध्यात्म ज्ञान आ मानव भेल दर्शन।"

दीनानाथ बाबूक परिभाषाक शब्द एतेक असान छेलैन जे शब्दक ओझरौठक विचार दुनूमे सँ केकरो ने उठल। तँए कि परिभाषाक बीज परेख सकल, सेहो नहियेँ भेल। मुदा दुनूक मन जेना मस्त होइत आगू मुहेँ बढ़ए लगल तहिना दुनूकेँ भइये रहल छल। ओना, दीनानाथ बाबूक मनमे सेहो एकटा भ्रम पैदा लऽ लेलकैन। भ्रम ई जे अपने मने ने बुझलैन जे जहिना अपने अध्यात्म दर्शनक बाहरी रूप बुझि रहल छी तहिना गुलटेनो आ तेतरो बुझने हएत। मुदा से तँ भेल नहि, परिभाषा तँ जीवन-धारा नहि छी, जीवन-सूत्र छी, जैपर दीनानाथ बाबूक नजैर नहि गेलैन। नजैरियो केना जइतैन? अपन जानब, मानब आ करब माने अपन बुधि, विचार आ बेवहार एक बनि चलै छैन तँए नजैरसँ फड़ैक गेल छेलैन।

अध्यात्म दर्शनक परिभाषा सुनि जहिना गुलटेनकेँ भेल जे जीवनक रत्न भेट गेल तहिना तेतरोकेँ भेल। मुदा ई बुझबे ने केलक जे जखन देव-दानव समुद्र मथन केलैन तखन नूनगरहा पानिकेँ मथैत-मथैत जखन समुद्रक पेनी देखलैन माने समुद्रक थाह पौलैन तखन ने रत्न सभक खान भेटलैन। खाएर जे बुझलैन, मुदा एते आशा तँ मनमे आबिये गेलैन जे अध्यात्म दर्शन जीवनक पूर्ण सूत्र छी तँए जँ ऐ सूत्रकेँ पकैड़ जीवनक घाट

पार करए चाहब तँ पार भइये सकै छी। गुलटेन बाजल-

"श्रीमान्, सूत्रक धागाक धारण केतएसँ शुरू होइए?"

गुलटेनक प्रश्न सुनि दीनानाथ बाबूक मनमे दोहरी विचार जगि गेलैन, पहिल आत्मात्मिक जिनगीक शुरूआत आ दोसर जगलैन रंगमंचपर जहिना सूत्रधार नाटकक रहस्यकेँ कवित्व स्वरमे सुना दइ छैथ तहिना सुना देब।

..दुनूक बीच माने दुनू विचारक बीच, दीनानाथ बाबूक मनमे द्वन्द्व उठिये गेल छेलैन। मुदा तेकरा ओ दर्शनक दृष्टिसँ मनेमे समाधान केलैन। समाधान केलैन जे अन्हार-इजोतक बीच द्वन्द्व रहैए, मुदा जहिना अन्हारकेँ मेटाइते द्वन्द्व समाप्त भऽ जाइए तहिना सभ किछुमे अछि। अपनाकेँ निरविचार दार्शनिकक रूपमे स्थापित करैत दीनानाथ बाबू बजला-

"बौआ सभ सुनह। दुनियाँकेँ देखैसँ पहिने अपनाकेँ देखि लएह। जखन अपन रूपक थाह पेब जेबह तखन दुनियोँक, ऐठाम दुनियाँक माने अपन जीवनक दुनियाँसँ अछि, थाह पेब सकबह।"

जहिना तेतर अधा-छिधा विचार दीनानाथ बाबूक बुझलक तहिना गुलटेनो बुझलक। जखने अधा-छिधा विचार बुझलक तखने दुनूक मनमे उठल- जे नइ बुझलौं से दोहरा कऽ किए ने बुझि ली। तँए दुनू अपन-अपन प्रश्न लऽ लऽ उठि कऽ ठाढ़ भेल।

दुनूकेँ उठि कऽ ठाढ़ होइत देखि दीनानाथ बाबूक मन हलैस कऽ कलैस गेलैन। कलैसते विचार जगलैन जे किए ने पहिने अपन जिनगीकेँ अपना हाथमे रखि चलैक विचार बुझा दिऐ। जखन लोककेँ जीबैक लूरि हएत तखने ने ओ आगू ताकत जे परिवार की छी, समाज की छी, कला की छी आ संस्कृति की छी...। दीनानाथ बाबू बजला- "बौआ सभ, अखन तोरा दुनू गोरेकेँ माता-पिता कोन तरहक जीवन बनेने छथुन?"

जीवनक आँकक ठेकान ने तेतरेकेँ छल आ ने गुलटेनेकेँ छल। नइ रहैक कारणो स्पष्ट अछिए। जन्मसँ लऽ कऽ अखन तक माता-पिताक आश्रयमे रहल अछि। सभ माता-पिता अपन बाल-बच्चाकेँ छातीमे सटा ऊपरसँ ऊपर पहुँचैक कामना ता-जिनगी करिते छैथ जा-जिनगी बाल-

बच्चाकेँ बाल-बोध बुझै छैथ। ऐठाम बाल-बोधक माने अछि एकबट्टू दिशाक। मुदा जखन बाल-बच्चामे अगर-मगर पनपए लगै तखने ओइमे मोड़ दैत सोझ करैत चली। जेकर अभाव मातो-पितामे भइये जाइ छैन। जइले कोनो साकार-स्वरूपक उदाहरण जरूरी भइये जाइए। ओना, उदाहरण आदि मानवसँ आजुक मानव धरिक वृतान्तसँ शास्त्र-पुराण भरले अछि, अपन जीवनक करीबक घटना तँ दोसरठाम भेट सकैए मुदा स्वयं घटित घटना तँ अपन-अपन होइते अछि..। विचारक गहराइमे दीनानाथ बाबूक मन जेना-जेना तरियाइत गेलैन तेना-तेना नव-नव प्रश्नो सभ सोझमे अबैत गेलैन। विचारसँ विचार जहिना जन्म लइए तहिना दोसरो विचार बनैए आ दोसरक सहायक सेहो बनिते अछि, तँए कहब जे विचारकेँ विचार उला-पका नहि खाइए, सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। ..द्वन्द्वमे पड़ल दीनानाथ बाबूक मन लगले सफेदसँ लाल हुअ लगैन आ लगले लालसँ करियाइयो लगलैन। बेसी रंग पड़ने एना होइतो अछिए।

द्वन्द्वसँ विचार निर्द्वन्द्व होइते दीनानाथ बाबूक मन गवाही देलकैन जे अपनो तँ दोसरेक अनुकरणसँ अनुक्रमित भेलौं, तहिना गुलटेनो आ तेतरो किए ने भऽ सकैए। तैसंग मन ईहो कहलकैन जे राम-रावणक थाह अथाह अछि, ने अयोध्याक ठेकान अछि आ ने लंकाक। जखन धरतियेक ठेकान नहि अछि तखन धरती-धारकक ठेकान की रहत। मुदा अपनो मिथिला जीवनदायिनी जानकीक जन्मभूमि नहि छी सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। जानकीक जीवन दर्शन पेबिते दीनानाथ बाबूक मन तड़तड़ा कऽ फड़फड़ा उठलैन। फड़फड़ाइते बजला- "बौआ, लक्ष्मीनाथ गोसाईंक नाम सुनने छुहुन?"

दुनू गोरे अपना-अपना मने लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ ताकए बुधिक वनमे बिचड़ए लगल। लकड़ी खोजनिहारकेँ वनमे लकड़ी नइ भेटै छै आ घर दिस जखन विदा होइए तखन जहिना आशा टुटि गेल रहै छै तहिना गुलटेनोकेँ भेल। ओना, तेतरक मनक चुहचुही थोड़-थाड़ जरूर चुहचुहा गेल छेलइ। चुहचुहाइक कारण भेलै जे जखन अपना गामसँ मात्रिक जाइए तखन लखनौरमे लक्ष्मीनाथ गोसाईंक स्थानक दर्शन होइ छै, जेकरा आगुए देने रस्ता अछि। स्थान बुझि जेबोकाल माने मात्रिक जेबाकाल आ एबोकाल

लक्ष्मीनाथ गोसाईंक स्थानकेँ गोड़ लगिते अछि, तँए नाम मोन छेलै, जइसँ मनक चुहचुही चुहचुहा गेलइ...। तेतरक हरियर मन देखि दीनानाथ बाबू बुझि गेला जे जरूर किछु देखल वा सुनल बात तेतरकेँ अछि। दुखीकेँ दुख बेसाहब नीक नहि तँए जेत्तै दुख गुलटेनक मनमे छै ओकरा ओतै रोकि, ओइसँ काते-कात दोसर दिशामे मोड़ि किए ने जीवनक प्रवाहकेँ प्रवाहित कऽ दिऐ...।

तेतरकेँ दीनानाथ बाबू पुछलैन- "बौआ, तोरा लक्ष्मीनाथ गोसाईंक विषयमे की सभ बुझल छह?"

ओना, दुनू गोरे माने तेतरो आ गुलटेनो अखन बी.ए.क ट्यूटोरियल क्लासमे दीनानाथ बाबूक संग गप-सप्प कऽ रहल अछि, मुदा जीवनो तँ जीवन छीहे।

तेतर बाजल- "श्रीमान्, स्थानक घर तँ खढ़े-पातक छैन मुदा कुट्टीक बीचमे एक जोड़ खराम सेहो छैन।"

ओना, दीनानाथ बाबू लक्ष्मीनाथ गोसाईंक अनेको कुट्टी (स्थान) देखनहि छैथ, तँए किए मनमे उठितैन जे वन गमनक बीच जहिना रामक खराम अयोध्याक राजधानीकेँ सुशोभित केने रहल तहिना लक्ष्मीनाथ गोसाईंक खराम सेहो मिथिलाक धरतीकेँ सुशोभित केनहि अछि। दीनानाथ बाबू बजला- "आरो किछु?"

तेतर- "नहि।"

जहिना कोनो किसानकेँ आँखिक देखल कोनो फसलक खेती रहल से अनुभव आ सोझे कानसँ सुनल रहल तइ विचारमे अन्तर आबिये जाइए। एक भेल अनुभवयुक्त विचार, दोसर भेल अनुभवहीन विचार। दीनानाथ बाबू बजला-

"बौआ, एक्के घन्टाक घण्टीमे केते कहि सकबह आकि तोहीं केते सुनि सकबह। तँए लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जे मुराम चारि जगह छैन, तेते तँ कहि देब आवश्यके नहि अनिवार्य सेहो अछि।"

दीनानाथ बाबूक विचार सुनि गुलटेनक मनमे उठल जे जँ श्रीमान् एकलखाइते जँ चारू बात संगे बजता तखन अपनेसँ अड़ियाएब कने भारी

भऽ जाएत। भारीए टा नहि भऽ सकैए, एक-दोसरमे ओझरा सेहो सकैए, तँए नीक हएत जे किए ने श्रीमानेसँ चारू बातकेँ फुटा-फुटा कहैले पहिनहि कहि दिऐन। गुलटेन बाजल-

"श्रीमान्, चारू बातकेँ अड़िया-अड़िया कऽ कहबै तँ अपना बुझैमे बेसी नीक हएत।"

ओना, गुलटेनक विचारपर दीनानाथ बाबू ओते धियान नहि देलैन, जइ धियानसँ गुलटेन प्रश्न रखने छला। तेकर कारण दीनानाथ बाबूक मनमे ई एलैन जे एक-दू-तीन-चारि विषयमे प्रवेश करैसँ पहिने अंकसँ खतिया देब। एतबो जँ नहि बुझि सकत तँ लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जीवन-दर्शन बुझि सकत। दीनानाथ बाबू बजला-

"पहिल अंक, लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जन्म सत्तरह साए तिरानबे (1793) इस्वीमे भेलैन। ओना, किछु गोरे 1788 इस्वी सेहो मानै छैन। परसरमा वासी श्री बच्चा झाक ओ कनिष्ठ पुत्र छला। हिनकर बच्चाक नाओं 'लच्छन' छल। जिनकर जेठ भाए रघुनाथ झा छला। दरभंगा जिलान्तर्गत सोखदत ठाकुरक कन्याक संग विवाह भेलैन। हिनक मृत्यु अगहनक पंचमी, 5 दिसम्बर 1872 इस्वीमे भेलैन। 1811 इस्वीसँ रचना करए लगला।"

अपना जनैत गुलटेनो आ तेतरो अपन बुझबकेँ अँकलक। जइ हिसाबसँ दीनानाथ बाबू बजला ओइ हिसाबमे दुनूकेँ केतौ चमत्कार वा आश्चर्यचकित करैबला बात नजैरमे नहि आएल। एक अंक समाप्त करैत दीनानाथ बाबू श्रोताक प्रतिक्रियाक प्रतीक्षा करिते रहैथ कि तेतर बाजल-

"श्रीमान्, लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जीवन तँ एक साधारणे मनुक्ख जकाँ छेलैन?"

तेतरक विचारकेँ समर्थन करैत गुलटेन बाजल-

"हमरो सएह बुझिमे आएल।"

तेतरो आ गुलटेनोक विचारमे जे एकरूपता छल ओकरा पकैड़ दीनानाथ बाबू बजला- "सोल्होअना सही बुझलह। एकटा साधारण परिवारमे लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जन्म भेल छेलैन। जहिना सबहक जन्म

परिवारमे होइए।”

ऐगला विचार दीनानाथ बाबू ऐ दुआरे नहि अनलैन जे भने खत्ती दैत चलब जइसँ जिनगी खँतिया जाएत। जखने जिनगी खतियाइ छै आकि अनेरे ने लोक बुझए लगैए जे भाय पढ़ैमे अनठेलिऐ तँए भुसकौल भेलौं आ काजमे अनठेलौं तँए काजक चोर भेलौं। आब अहाँ कहब जे सर्टिफाइड कॉपी देखाउ, से हम केतएसँ देखाएब, ओ तँ अपन जीवने ने दर्शन करौत।

तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास इत्यादिकेँ अपन मनक पीपासा जहिना जगि गेल रहैन तहिना लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ सेहो आध्यात्मिक चेतना तेना प्रवल रूपमे जगि गेलैन जे कवित्व शक्ति पैदा सेहो लऽ लेलकैन। अपनाकेँ ऊँच्चकोटिक आत्मिक जीवन धारण करैक पाछू लक्ष्मीनाथ गोसाईं संघर्षशील जीवनमे डेग बढ़ौलैन, जेकरा ता-जीवन, माने जीवनक अन्तिम समय तक, निर्वहन केलैन। सएह निरविचारी महात्मा लक्ष्मीनाथ गोसाईंजी छैथ।

तेतरो आ गुलटेनोकेँ दीनानाथ बाबू ई सोचि पुछए चाहलैन जे भोजैत केहनो अकवाली किए ने होथि मुदा भोजक भाग्य लिखता भोज खेनिहार। तँए एकबेर जस-अजसक विचार बुझि ली। दीनानाथ बाबू बजला- “लक्ष्मीनाथ गोसाईं सोल्होअना मनुक्ख छला, तइमे केतौ शंको छह?”

दुनू गोरे एकेस्वरमे बाजल- “नहि।”

दीनानाथ बाबू बजला- “पहिने हुनकर विचार बुझि लएह, पछाइत देवत्व शक्ति केना जगलैन आ अपना जीवनमे ओ की सभ केलैन से कहबह।”

ओना, दुनूक मन माने तेतरो आ गुलटेनोक मन क्रमसँ आगू बढ़ि ओइ सीढ़ीपर पहुँच गेल जेतए हुनका देवत्व शक्ति प्राप्त भेलैन। मुदा तेकरा नजरअन्दाज करैत दीनानाथ बाबू बजला-

“लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ समाजमे पसरल रूढ़िवादी विचारधारा, जेना पसरल अछि, तेना जँ ओकरा तोड़ल (हटौल) नहि जाएत तँ समाजक

प्रवाह अन्धकार दिस बढ़ि जाएत।"

दीनानाथ बाबूक विचार सुनि तेतरो आ गुलटेनो सकपका गेल। सकपकाइक कारण दुनूकेँ दुनू भेल। पहिल विषयक गम्भीरता आ दोसर शब्दक गम्भीरता नहि बुझि सकल। जे बात दीनानाथ बाबू सेहो मने-मन आँकि लेलैन, मुदा प्रश्नक बरखा दुनूक मनमे तेना झहरए लगल जेना बदरीहन मेघ अकासमे मड़ाइत रहैए। तँए प्रश्नक टोहकेँ टोहियबैक सीमापर दीनानाथ बाबू अपनाकेँ ठाढ़ केलैन।

विचारक गम्भीरताकेँ ने तेतरे सोझरा कऽ बुझि सकल आ ने गुलटेने बुझि सकल तँए अपन-अपन मनक आशा हारि दुनू संगे बाजल- "श्रीमान्, नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं तँए नीक जकाँ कनी..?"

दीनानाथ बाबू बजला- "गमैया भाषामे बुझा दइ छिअ। दूटा विचारक प्रश्न अछि, पहिल- लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ जाइतिक रूपमे जे जागरण छेलैन आ दोसर- सम्प्रदायकेँ सघन धार्मिक सीमाक रूपमे जे जागरण छेलैन।"

गुलटेन बाजल- "श्रीमान्, नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छी।"

गुलटेनक विचारकेँ दीनानाथ बाबू मने-मन आँकि लेलैन जे समाजक जे तलहत्थी छै तइमे आ वैचारिक जे धरातल समाजमे अछि तइमे अकास-पतालक अन्तर अछिए। तेकरा अकानैत दीनानाथ बाबू बजला- "दुनू गोरे नीक जकाँ सुनह। लक्ष्मीनाथ गोसाईंक जन्म जहिया भेलैन तहिया अंगरेजी शासन देशमे पसैर गेल छल। तैसंग राजा-रजबारक राजशाही शासन सेहो पहिनहिसँ आबि रहल छल। पैछला जे इतिहास रहल सेहो राजे-रजबारासँ होइत आबि रहल छल।"

इतिहासक नव बात सुनने, नव बातक माने भेल विद्यार्थी तेतर आ गुलटेनक रूपमे जहिना तेतरक जिज्ञासा जगल तहिना गुलटेनक सेहो जगल। गुलटेन बाजल- "कनी आरो फरिछा कऽ कहियौ।"

विचारकेँ विराम दैत दीनानाथ बाबू बजला- "जेतबे समय घन्टीक शेष बँचल अछि तेतबे ने अखन कहि सकबह, तँए आन दिन नीक जकाँ कहबह। अखन एतबे बुझह जे समाजमे पसरल जे जाति-सम्प्रदाय अछि

तइसँ बहुत ऊपर उठल विचार लक्ष्मीनाथ गोसाईंक छेलैन। ओ जहिना देशक प्रमुख देवस्थानक भ्रमण केलैन तहिना मिथिला-भ्रमण सेहो केलैन। अखन से सभ नहि। लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ जहिना क्रिश्चन धर्मबला शिष्य जौन-वरिआही कोठीक छेलैन तहिना मुसलमानी सम्प्रदायक मुंगेरक मुहम्मद गौस सेहो छेलैन, तहिना प्रयागक राजाराम शास्त्री सेहो छेलैन। अखन एतबे। किए तँ जन-जनमे बास करैबला लक्ष्मीनाथ गोसाईं जन-जागरण केना केलैन, मुख्य विषय से अछि।”

ओना, जन-जागरण शब्द दुनू गोरे सुनने अछि मुदा ओकर बेवहारिक पक्ष की अछि तइसँ ने तेतरेकेँ आ ने गुलटेनेकेँ भेँट भेल छल। एक तँ नव शब्द, दोसर ओइ शब्दक माने जन-जागरण शब्दक बेवहारिक रूप सुनि दुनूक मनमे एकटा आरो नव चेतनाक जन्म भेल। ओ भेल ई जे जेते शब्द अछि की ओकर बेवहारिक पक्ष माने क्रियागत पक्ष सेहो अछि? मुदा बाजल दुनूमे सँ कियो ने किछु। तेकर कारण भेल जे दीनानाथ बाबूक मुहेँ सुनि चुकल छल जे जेतबे समय घन्टीक (ट्यूटोरियल क्लासक) शेष बँचल अछि तेतबे ने कहि सकबह। दुनूक मनमे छेलैहे जे पहिनहिसँ जे कहैत आबि रहला अछि पहिने ओ सुनब प्रमुख भेल। गुलटेन बाजल-“तीनटा बात तँ मोटा-मोटी आबिये गेल, शेष चारिम बाँकी अछि। तेकर उत्तर बुझला पछाइत जँ समय बँचत तँ रस्तो-रस्तो ऐ पश्नकेँ बुझि लेब।”

गुलटेनक बात सुनि दीनानाथ बाबूक मनमे उठलैन जे जखन मनक पिपासा एते उग्र भऽ जगि गेल छै तखन अपनो किए ने स्वाति नक्षत्रक बून जकाँ बरैसिये जाइ। मुदा लगले मन बिचड़ैत विचार देलकैन जे कोनो रोगक दबाइ खोराके-खोराक देब अधिक हितकर होइए, तहूमे जे सामाजिक रोग गाम-समाजक बीच पसरल अछि तेकरा जँ रानी सरंगाक खिस्सा जकाँ भरि राति सुनाइये देब तइसँ जे लाभक इच्छासँ सुनबए चाहि रहल छी से थोड़े हएत। ओ तखने हएत जखन एक-एक डेगकेँ हाथसँ नापि, हाथकेँ बीतसँ नापि आ बीतकेँ आँगुरसँ नापि ओकर रूप प्रकट करब। से तँ तखने सम्भव अछि जखन ओकर वैचारिक पक्षक संग बेवहारिक पक्ष सेहो राखल जाए। दीनानाथ बाबू बजला-

“पहिल आ दोसर-तेसर विचार बुझैमे केतौ कोनो बाधो बुझि पड़ि

रहल छह?”

गुलटेन बाजल-

“नहि।”

तेतरकेँ सकपकाइत देखि दीनानाथ बाबू बजला-

“तेतर तोरा?”

तेतर बाजल-

“हँ। दोसर आ तेसर माने जाति आ सम्प्रदायक बीच स्पष्ट अन्तर नहि बुझिमे आएल।”

समयकेँ नजैरमे रखैत दीनानाथ बाबू बजला-

“दुनूक बीच अन्तर की अछि से नहि बुझि पेलह। मुदा दुनू की छी, केहेन अछि से तँ बुझबे केलह?”

तेतर-

“हँ।”

दीनानाथ बाबू बजला- “चलह, आगू चारिम बातमे आबह। साधारण परिवारमे जन्म नेने लक्ष्मीनाथ गोसाईं बच्चेसँ गाइयक चरवाहि करै छला। बच्चेसँ हुनकामे ज्ञानक पिपासा जगि गेलैन। जगैक अनेक कारणमे एकटा कारण ईहो रहलैन जे, ओना जन्म अठारहम शताब्दीमे भेल छेलैन मुदा से भेल छेलैन शताब्दीक उत्तरार्द्धमे। मात्र साते-आठे बर्खक अवस्थामे अठारहम शताब्दी समाप्त भऽ गेल। मिथिलांचलमे उन्नैसमी शताब्दीमे पच्चीसटा रौदी भेल अछि।”

रौदी सुनि गुलटैन बिच्चेमे बाजल- “बहुत रौदी भेल.!”

विचारक प्रवाहमे तँ गुलटेन बाजि गेल मुदा रौदीक प्रभाव की होइए, से थोड़े बुझैत रहए। मुराम जगह देखि दीनानाथ बाबू बजला-

“पहिने एक सालक रौदीक फलाफल सुनि लएह। पछाइत दू-सलिया, तीन-सलिया, चरि-सलिया, पँच-सलिया इत्यादि केते कहबह, अपना ऐठाम माने मिथिलामे बारह बर्ख तकक रौदी भेल अछि। बुझले हेतह जे सीताक जन्म जखन भेलैन तखन मिथिला बारह बर्खक रौदीमे

चलि रहल छल।”

अखन तक जहिना गुलटेन तहिना तेतर, किताबमे तँ रौदी-दाही पढ़ने छल मुदा रौदी-दाहीक प्रभाव की होइ छै से थोड़े बुझै छल। दीनानाथ बाबूकेँ विषयमे आगू बढ़ैत देखि तेतर बाजल-

“श्रीमान्, पहिने एक-सलिया रौदीक प्रभाव कहियौ, पछाइत दू-सलिया-तीन-सलियाक विषयमे कहबै।”

तेतरक खँतियाएल विचार सुनि दीनानाथ बाबू बजला-

“बेस मोन पाड़ि देलह। एक-सलिया रौदीक भरपाइ करैमे परिवारकेँ पाँच साल लगैए। ओना, समय कम अछि, मोटा-मोटी ई बुझह जे आजुक जे परिवेश अछि माने आर्थिक रूपेँ, ओ बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईंजीक समयमे नहि छल। मुदा मनुक्खक की मूल समस्या अछि से नहि बुझै छला, सेहो बात नहियेँ अछि। जन-जनकेँ चिन्हैक चेतना लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ छेलैन। एक तँ ओहुना दस-एगारह बर्खक पछाइत लक्ष्मीनाथ गोसाईं घरसँ निकैल विद्वत समाजक बीच अपन मनक जिज्ञासाकेँ पूर्ति करै छला, तैसंग अपन चिन्तन-मननकेँ सेहो प्रवाह-पूर्ण बनबैत आगू बढ़ैत रहला। नेपालक यात्राक बीच नाथ सम्प्रदायबला सभसँ सेहो भेँट भेलैन जइसँ विचारमे आरो परिपक्वता एलैन।”

ओना, लक्ष्मीनाथ गोसाईं देशक प्रमुख धार्मिक तीर्थ-स्थानक भ्रमण सेहो केलैन, मुदा से दोसर-तेसर भ्रमणकर्तासँ भिन्न विचारक रूपमे केलैन। ओ भिन्न-रूप छेलैन देश-कोससँ लऽ कऽ ओइठामक जीवन-दर्शनकेँ परिखब। तैबीच कवित्व शक्ति प्राप्त भेने अपन जीवन-दर्शनक हिसाबसँ गीत-भजन सेहो रचना करै छला। अपन जीवन-दर्शनक माने भेल उच्चकोटिक आध्यात्मिक दृष्टिकोण। एक राम वा कृष्ण वा कोनो आने ईश्वर किए ने होथि मुदा बेवहारिक रूपमे जे चलैन समाजक बीच माने मनुक्खक बीच भावात्मक रूपमे चलि रहल अछि तइसँ गम्भीर दृष्टिये लक्ष्मीनाथ गोसाईं अपन रचना केने छैथ।

उन्नैसमी शताब्दीमे पच्चीसटा रौदी एक-सलियासँ चरि-सलिया-पन-सलिया धरिक भेल छल, तइ शताब्दीक तीन-चौथाइ समय लक्ष्मीनाथ

गोसाईं अपना आँखियो आ नजैरियोसँ देखि कऽ नीक जकाँ परेख चुकल छला जे जीव-जन्तु ले पानिक की महत्व अछि आ ओकरा प्राप्त करैक उपाय की अछि। जन-जनमे जागरण अनैले लक्ष्मीनाथ गोसाईंजी जान अरोपि लागि गेला। लोककेँ जीबैक उपायक जड़ि-मूलकेँ पकैड़ लोकक बीच अपनाकेँ रखि टोली बनबए लगला। जेकर उपयोग दू दृष्टिये करैथ। पहिल, वैचारिक रूपमे आ दोसर बेवहारिक रूपमे। जखने लोक बेवहारिक जीवनकेँ पकैड़ चलए लगैए तखने जीवनक जे बाधा-रूकाबट अछि ओ हल हुअ लगैए। से साधारण जन-गणक बीच भेल। जइसँ गाम-गाममे लक्ष्मीनाथ गोसाईंक स्थानक (रहैक स्थान) निर्माण भेल। स्थानक निर्माणक संग-संग पाइनिक उपाय सेहो कएल गेल। जन-सहयोगसँ पोखरिक निर्माण सेहो भेल। अखन तक बत्तीस स्थानक चर्च अछि। घुमन्तु सोभावक रहबे करैथ। घुमन्तु सोभाव लक्ष्मीनाथ गोसाईंक ऐ दुआरे बनि गेल छेलैन जे मन तेते ललैक गेलैन जे होनि एक्के दिनमे मनुक्खक सभ दुख हेरि ली। मुदा जुग-जुगसँ अबैत जन-समाजक पराधीन जीवन रहल, जइसँ जहिना विचारक रूपमे तहिना बेवहारमे, जीवन टुटि कऽ एते निच्चाँ गिर पड़ल जे चिन्ह-पहचिन्ह लोकक मेटा गेल।”

दीनानाथ बाबूक मुँह बन्न होइते गुलटेन बाजल- “एते पैघ महात्म्य लक्ष्मीनाथ गोसाईंमे छेलैन?”

हँसैत दीनानाथ बाबू बजला- “जेते बुझै छहुन बौआ, तहूसँ बेसी छेला, मुदा समाजो-सत्ता आ शासनो-सत्ता तेना ग्रसित करैत रहलैन जे जेते मनमे छेलैन तेते तँ नहि मुदा एते जरूर केलैन जेते एक साधारण मनुक्खक लेल असाध्य अछि। समैयो भऽ गेल, ऐगला विचार दोसर दिन करब।”

❑ कर्ताक रंग कर्मक संग: 2020

सागवानक बागवानी

☰

मिथिलाक गाम अखनो गाम छीहे, भलैँ जइ रूपमे गामकेँ बुझै छी तइसँ किछु बदलल रूपमे किए ने भऽ गेल हुअए।

साँझू पहर-के हमरासभक बैसार भविसलाल काका ऐठाम सभ दिन होइए। भविसलाल काका कर्मनिष्ठ लोक तँ छथिए जे उदार सेहो छैथ। जहिना भविसक आशामे कर्मनिष्ठ लोक उदार बनि कोनो उद्यमकेँ अपनबै छैथ तहिना भविसकाल काका सेहो अपनौने छैथ। ई अपन एकदिना जिनगी बना जीबै छैथ जइसँ आमद-खर्चक हिसाब लिखैले बही-खाता वा डायरीक जरूरत नै पड़ै छैन। कक्काक बान्हल जीवन रहने शरीरोमे एहेन गुण आबिये गेल छैन जे चाह पीबैबेर चाहक तृष्णा, खाइबेरमे खेबाक तृष्णा आ सुतैबेर सुतैक तृष्णा जहिना अपने जागि जाइ छैन तहिना गप-सप्पक बेर गप-सप्पक तृष्णा सेहो जगिते छैन। बान्हल जीवन, तँए बान्हल आमदनी रहने भविसलाल काका खेबा-पीबाक पूर्ण आजादी रखने छैथ। जइसँ ने कहियो मुँहदुस्सी रोग पकड़लकैन जे फलतुआ सभ चाह-पान खाइ दुआरे दरबज्जापर अबैए आ ने चाह-पानक कोनो हिसाब बे-हिसाब भेल छैन। तहूमे समयक संग तेना बहि गेल छैथ जे चाह बनैक इंजन तक लगेमे रखने रहै छैथ। तैसंग रोटी बनबैबला आ तरकारी-दालिबला सेहो छैन्हे मुदा तेकरा सभकेँ कातमे रखने छैथ, निर्धारित समयपर ओहो मशीन सबहक उपयोग करै छैथ।

संयोग एहेन भेल जे हम पहिने पहुँचलौं आ बसन्तलाल भाय कनी पाछू-के पहुँचला। पहुँचते बसन्तलाल भाय बजला-

“काका, अपनेक विचार बीस सालक पछाइत आब बुझिमे आएल। जँ ओइ दिन बुझने रहितौं, माने बीस बर्ख पूर्व, तँ औझुका पछताबा नइ होइत।”

बसन्तलाल भाइक बात हमहूँ सुनलौं आ पाँच-छह गोरे आरो जे बैसल रहैथ सेहो सभ सुनलैन आ भविसलाल काका तँ सुनबे केलाह। ओना, भविसलाल काकासँ सम्बन्धित विचार छल तँए अपन मन मनाही केलक जे बीचमे किछु बाजब उचित नहि। मुदा कोनो धारक पानि जहिना असथिर गतिये चलैए आ कोनो तेजो गतिये सेहो चलिते अछि जइमे पैसला पछाइत जहिना अपन सुधि-बुधि बदैल जाइए तहिना अपनो सुधि-बुधि बदैल गेने बजा गेल- “बसन्त भाय, अहाँ तँ पचीस साल पुरान स्नातक छिऐ, माने बी.ए. पास, तखन जे बीस साल पहिलुका केलहाक पछताबा आइ किए भऽ रहल अछि?”

ओना, भविसलाल काका सेहो आँखि उठा देखलैन। जइसँ जहिना ओ नजैर देलैन तहिना अपनो नजैर हुनकर नजैरकेँ देखि लेलक। जइसँ बुझि पड़ल जे भविसलाल काका किछु मोन पाड़ि रहला अछि। किए तँ बीस साल पहिलुका गप छी। तैबीच कोसी-कमला धारक केते पानि बहिकऽ समुद्रमे चलि गेल। अपनो जीवनमे हजारो-लाखो विचार उठले हएत, जइमे किछु क्रियोगत भेल हएत आ किछु ओहुना निवंशो मरले हएत।

बसन्तलाल भाय पचीस बर्ख पहिने बी.ए.पास केने छला। सात भाए-बहिनक बीच बसन्तलाल भाय असगरे भाँइमे। नीक विद्यार्थी, नीक सोभाव सभ दिन रहलैन, जइसँ अपन छबो छोट बहिनकेँ बेवहारिक जीवन जीबैक लूरि नीक जकाँ सिखा देलखिन। परिवार कोनो हुअए मुदा समाजक जे रूप महिलाक लेल बनि गेल अछि ओ कुदरूप भइये गेल अछि। ओइ कुदरूपताकेँ वएह महिला धोइ सकै छैथ, जिनका अपन जीवन आ जीवनक प्रति अटूट बिसवास बनि गेल होनि। जे अपन जीवनकेँ अपना हाथ-मुट्ठीमे राखि आगूक समयक संग चलैक लूरि सीखि नेने होइथ..। यएह सोच बसन्तलाल भायकेँ अपन बहिन सबहक प्रति रहलैन तँए बहिनो सभ एक-सँ-एक अपन परिवारकेँ सम्हारि चलिते छैन। जइसँ सभ बहिनक अपन-अपन ओहन पारिवारिक जीवन बनि गेल छैन जइमे एक्के चुल्हि-चौकापर बैस सभकियो खेबो-पीबो करैए आ अपन-अपन काजक दौड़ पकैड़ सेहो चलिये रहल अछि।

आजुक समाजमे जे महामारी रोग मनुक्खमे पकैड़ रहल अछि ओ श्रमहीनक दिशामे ढरकब छी। जइसँ मनुक्खक बीच हजारो रोगक जन्म हेबे करत। जखने से भेल तखने आधा-आधी मनुक्खक मृत्यु महामारीसँ हेबे करत। तइले ते लोक अपने ने चेतत। कियो जँ चेतौनी देबे करतैन लेकिन करत तँ लोक अपने मने।

बसन्तलाल भाय भविसलाल काका दिससँ मुँह घुमा हमरा दिस करैत बजला-

"हौ बतहू! भविसलाल काकाकेँ सभटा बुझल छैन, तहूमे तेहेन मोन रखैक यादास्त शक्ति छैन जे हम सभ कोनो बात बिसैर जाइ छी आ हिनका मोने रहै छैन। मुदा अखन मोन पड़ि गेल हेतैन जे जहिना तीस साल पूर्वक मन आबि कहए लगै छैन जे फल्लाँ इस्वीमे हाइ स्कूलमे रही आ लोकक बाड़ी-झाड़ीक आम-लताम तोड़ि-तोड़ि खाइत रही।"

ओना, भविसलाल कक्काक मन बीस साल पहिलुका विचारमे जरूर घुमए लगलैन मुदा अथाह जंगल-झाड़ रहने सुनल गप्प भाँजेपर ने चढ़लैन। भाँजोपर केना चढ़ितैन? जैठाम माने जइ समाजमे दू दिशाक दूटा पैघ कारखाना बैसल रहत आ तेकरा इर्द-गिर्द सइयो रंगक निरमात्री मशीन सेहो बैसल रहत, तैठाम कोनो चीजकेँ भँजिया कऽ पकड़ब बाल-बोधक खेलौना नइ ने छी.! ..अपन वौआइत मनकेँ रोकि भविसलाल काका बजला-

"बसन्त, नीक जकाँ मोन नइ पड़ि रहल अछि, तँए कनी सेरियाकऽ कहह?"

बसन्तलाल भाय बजला-

"वएह सागवानबला.!"

अपना जनैत बसन्तलाल भाय भविसलाल काकाकेँ मोन पाड़ि देलखिन मुदा हुनका मोन पड़ि गेलैन नेपालक सागवानक बोन। माने, पचास बर्ख पूर्व जे भविसलाल काका बराहक्षेत्र गेल छला आ तहिया जे सागवानक बोन देखने रहैथ से मनमे नाचि उठलैन। भविसलाल काका बजला- "माटिक गुण-शक्तिक कारणेँ नेपालक जंगली-इलाकामे कोनो

फल वा लकड़ी जे पहाड़ी-पथरीली भूमिपर होइए तइ अनुपातमे तराइ-इलाकामे भिन्न होइते अछि। तैठाम जँ पाइयक आँकमे एक्केरंग हिसाब लगाएब तखन ओ हिसाब गड़बड़ भइये जाएत किने।”

भविसलाल कक्काक विचार आ बसन्तलाल भाइक विचारमे तरपट देखि अपने वौआइत रही। शुरूमे जे मनमे भेल छल जे बसन्त भायकेँ अपन विचार देबैन, से उकड़ूमे पड़ि गेने मनेमे रहि गेल। मुदा तैयो अपन मनक जिज्ञासा उठिते रहल। बजलौं-

“बसन्तलाल भाय, अहाँ दुनू गोरेक विचारक बीच हम तेहाला भेलौं, तेहालाक माने भेल निरगुण। तँए पहिने दुनू गोरे एक विचारमे आउ। पछाइत ने देखल जाएत जे की दुरगुण आ की सुरगुण।”

जहिना अपने बजलौं तहिना भविसलाल काका सेहो बजला-

“बसन्त, कनी फरिछाकऽ तोहीं बाजह।”

अधलो काज केलापर जँ समाजक बीच बजैक समय भेटैत रहए तइसँ प्राश्चित कटिते अछि। जइसँ ओ अधला काज तर पड़ि जाइते अछि। मुदा तइसँ चीत-पट, माने हारि-जीतक बीच तरपटो तँ होइते अछि जइसँ कहियो फरिछौठ थोड़े हएत? जखने फरिछौठ नहि भेल तखने औन्हा समय बनत। जे अधलाहकेँ फड़ै-फुलाइले बेसी अनुकूल भऽ जाइए। एकटा भारगाड़ी तरमे पड़ि जाइए आ दोसर माल-गाड़ी पकैड़ छुड़छुड़ी जकाँ छुड़-छुड़ाकऽ आगू बढ़िये जाइए। ओइ बढ़ैक पाछू लोक नहि मलकत तँ केतए मलकत..!

बसन्तलाल भाय बजला-

“बतहू, भविसलाल काकाकेँ तँ सभटा बात बुझले छैन, भऽ सकैए अखन मनसँ उतैर गेल होनि, मुदा जखने चर्चा शुरू हएत कि भगजोगनी जकाँ अपने मनमे भुकभुक जागए लगतैन, मुदा तोहूँ कनी कान ठाढ़ कऽ कए सुनह।”

ओना, सुनैक अपन मन बनले छल मुदा बसन्तलाल भाइक अँड़पेनसँ आरो जिज्ञास बढ़ि गेल जे भरिसक बसन्तलाल भाय नमहर चोट खेने छैथ तँए नीक जकाँ सुनबए चाहि रहला अछि। बजलौं- “बसन्तलाल

भाय, खढ़िया जकाँ सदिकाल लोक कान ठाढ़ नहि राखत तँ मारि खेबे करत किने।”

अपना जनैत बसन्तलाल भायकेँ प्रोत्साहन देलिऐन, भलेँ बसन्तलाल भाय जे बुझने होथि, से तँ ओ जानता। मुदा मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे बसन्तलाल भायकेँ किछु चोट जरूर लगलैन। ओना, अपनो जे बाजल रही से अनठेकानिये बाजल रही, किए तँ बात कोनो बुझल रहबे ने करए। तैबीच भविसलाल काका बजला-

“बतहू, पहिने बसन्तकेँ चाह पीयाबह। किए तँ सवाल नमहर जकाँ बुझि पड़ैए। एते तँ बुझए पड़तह ने जे जेते समयक प्रश्नक उत्तर हएत तेते समय एकरसता बनल रहक चाही, नहि तँ सूखल भूखक आ भुखक सुखलमे जे अन्तर होइए ओ तँ अन्तर रहबे करत। जहिना एकटामे पेट काहि कटैए तहिना दोसरमे मन–हृदय–सेहो काहि कटिते अछि।”

ओना, भविसलाल कक्काक विचार सुनि अपनो मन गाड़ी-पहियाक भाल्टू जकाँ ऊपरमुहेँ घुमि गेल। माने जेना गाड़ी-पहियाक भाल्टू जे निच्चाँ-मुहेँ रहैए ओ ऊपर चढ़ि उनटा जे घुमि जाइए तहिना भेल। ऊपर-मुहेँ घुमैक कारण भेल जे भविसलाल कक्काक मीठगर विचार मनकेँ तेना मीठबए लगल जे अपन मनक बात (विचार) तर पड़ि गेल आ भविसलाल कक्काक विचार ऊपरे-ऊपर, अमरलत्ती जकाँ, मनक गाछपर पसैर गेल। तैबीच चाह बनब पछुआइत देखि भविसलाल काका बजला-

“बतहू, सभ दिनक तूँ बतहूए रहि जेबह.!”

भविसलाल कक्काक विचार नीक जकाँ तँ नहि बुझलौं मुदा ‘बतहू’मे जे ‘बतहू’ जोड़ि देलैन, से सुनि मन कनी तमतमाएल जरूर मुदा अपने मने जखन अख्यियास केलौं तखन बुझि पड़ल जे भरिसक काका चाह बनबैले कहि रहला अछि।

असल विचार तँ आइ बसन्ते भाइक हेबाक छैन। तखन बीचमे अपने अनेरे ने बहिरोंपन कऽ रहल छी। भविसलाल कक्काक सभ विचार परबा-चिड़ै जकाँ घोंटि लेलौं। बिजली चालित चाह बनबैबला मशीन छैन्हे, तहूमे हाले-सालमे चाह बनौनाइ सिखबे केलौं हेन, तँए अपनो मन ओम्हरे

दौड़ौलक। चाह बना जखन गिलासमे ढारए लगलौं तखन मनमे भेल जे बसन्तलाल भाइक गिलासमे कनी बेसी चाह ढारब नीक हएत। किए तँ अपने सभ तँ चाह पीनहि छेलौं। सएह केलौं। ओना, भविसलाल काका तरे आँखिये बसन्तलाल भायकेँ देखिये रहल छला। जखन आठ-दस घोंट चाह बसन्तलाल भाय पीब लेलैन तखन हमरा दिस ताकैत बजला-

"बतहू, लोक बताह किए होइए?"

भविसलाल कक्काक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। भाँजोपर केना चढ़ैत? ने अपने कोनो गहबरक भगता छी आ ने सरकारी अस्पतालक डॉक्टर, तखन किए एहेन बात भविसलाल काका बजला अछि। मनमे भेल जे किछु कहिऐन मुदा अपने मन मनाही केलक जे एना जँ कहा-कही करए लगब तखन जइ काजे बसन्तलाल भाय आएल छैथ, से पछुआ जेतैन। अपने कि समाजक आन जकाँ छी जे अनकर पेट काटि अपन पेट भरब। तँए चुपे रहलौं।

भविसलाल काका बजला-

"बसन्त, देखिते छह जे अस्सी-पचासी बर्खक भऽ गेलौं, जहिना देहक सब अंग रसे-रसे झड़ि रहल अछि तहिना ने मनो आ मनक विचारो झड़ि रहल अछि। तँए कनी फरिछा कऽ बाजह।"

भविसलाल कक्काक विचार अपनो नीक लागल। तँए हुनका समर्थनमे बसन्तलाल भायकेँ कहलयैन-

"बसन्त भाय, अनेरे ने गों-गों करै छी। ऐ रमरटियासँ नीक खढ़कटिये। खोलि कऽ तेना बाजू जे जेसभ ऐठाम बैसल छैथ, सभकियो सुनबो करैथ आ बुझि कऽ विचारो दैथ।"

ओना, बजैले बसन्त भायकेँ ठेललयैन मुदा ठेला गेला भविसलाले काका। ठेलाइते काका बजला- "बसन्त, तोरा बजैसँ पहिने हमहीं बाजै छिअ।"

मने-मन विचारए लगलौं तँ बुझि पड़ल जे बसन्तलाल भाय जे बीस सालक बात बाजल छला तहूसँ पहिलुका विचार भविसलाल काकाकेँ मोन पड़ि गेलैन अछि।

ओना, बजैक क्रममे बसन्तलाल भाय बजैक उपक्रम कइये रहल छला कि बिच्चेमे भविसलाल काका बजला-

“बतहू, पचास बर्ख पूर्व अपने बराक्षेत्र गेल रही। इटहरीक पछाइत चतरागद्दी तक बोने-बोन आ तइसँ आगू पहाड़े-पहाड़ अछि। ओना नेपालक पहाड़ी इलाकामे बेसी बोने अछि, मुदा जे देखलौं से कहै छिअ।

चतरागद्दी तक ओहन बोन अछि जइमे सखुआ, सागवान इत्यादि केतेको रंगक गाछ सभ देखबहक। पचास-पचास हाथ, साए-साए हाथक तकक गाछ सभमे एकोटा डारि-पात नहि अछि, एकदम सुरुंगवा गाछ सभ देखबहक। तइमे सागवानो सभ अछि। फल-फलहरीक गाछ नहि अछि। जखन डारिये-पात नहि रहत तखन बीचमे फल-फलहरी जँ फड़बो करत तँ केतए पड़त। तँए फल-फलहरीक गाछ नहियेँ अछि सेहो बात नहियेँ कहल जाएत।”

फल-फलहरीमे नेबोक नाओं मोन पड़िते जहिना जीहसँ अपने पानि चुबए लगैए तहिना भविसलाल कक्काक बात सुनि अपनो सनतोला मोन पड़ि गेल आ जीहसँ पानि टपकए लगल। बजलौं-

“काका, ओमहुरका सनतोला बड़ मीठ होइए।”

अपना मने ई सोचि बाजल छेलौं जे सौख-साख माने सखुआ-सागवानक चर्चा छोड़ि काका फल-फलहरी दिस झुकि गपकेँ आगू बढ़ेता। मुदा से भेल नहि, भेल ई जे मुड़कट्टी जवाब दैत बजला- “गाछक टटका टुटल सनतोलाकेँ जँ माटिक गरे पनरह दिन घरमे सुखा ली तँ आरो बेसी मीठ भऽ जाइए।”

लगले फेर बजला- “अनभुआर तँ ताबे तक अनभुआर रहैए जाबे तक बुझल नहि रहै छै। मुदा बुझला पछाइत तँ लोक भुआर भइये जाइए, तँए एकटा चाहक दोकानपर बैसलौं आ जंगलक चर्च उठा देलिऐ।”

भविसलाल कक्काक विचार सुनि अपन मन चपचपा गेल। चपचपाइक कारण भेल जे अपनो बुझल अछिए जे चाहक दोकानपर देशक वक्ता आ ताड़ीक दोकानपर देशक विधाताक बैसार होइते अछि। कहब जे ताड़ी दोकानपर विधाताक बैसार केना अछि? जैठाम दिनमे

होली आ रातिमे दिवाली नित्य सजल रहैए तैठाम रंकक निर्माण की राजासँ कम सुख-भोगमे अछि। जँ सोझा-सोझी राजो पड़ि जेता तँ सइयो रंक खरीदवाल ताड़ी दोकानपर रहिते अछि। बजलौं-

"तखन तँ विचारक लहरि उठि गेल हएत? किए तँ जहिना एक दिस सरर-चानन चोरक जमाव चाहक दोकानपर होइए तहिना सुखाएल जारन काटि दोकानमे बेचि जीबैबला नहि रहैए सेहो बात नहियेँ अछि।"

अपन विचारकेँ एकाग्र करै दुआरे आकि छिड़ियाएल विचारकेँ समटै दुआरे भविसलाल काका बजला-

"चाहक दोकानपर एकगोरे बजला जे मगही भाषा क्षेत्रक लोक सिनुरकेँ भलेँ खानक वस्तु बुझैथ मुदा मिथिलांचलक लोक सिनुरक गाछक फल सिनुरकेँ बुझिते छैथ।"

ओना, अपन मन कनी झुनझुनाएल जे लगले-सूरे भविसलाल काकाकेँ पुछि दिऐन जे एक्केरंगक सिनुर लोक सभ दिन करै छैथ आकि समय देखि करै छैथ? किए तँ बुझले अछि जे आयुर्वेदक दवाइक खोराक मौसमक अनुकूल होइए। एक्के रोगमे जहिना जाड़मे खोराक बढ़ि वा घटि जाइए तहिना किछु एहनो तँ अछिए जे कोनो रोगक खोराक गरमीमे बढ़बो-घटबो करिते अछि। मनमे भेल जे जहिना हमरा भविसलाल काका 'बतहू' कहिते छैथ तहिना किए ने अपन बतहपना देखा दिऐन। बजलौं-

"काका, बसन्त भायकेँ वलिक छागर जकाँ चाह पीया जअ-तिल उसरैग देलिऐन तखन अपने बराक्षेत्रक बोनमे किए घुमबै छी?"

हमर बात सुनि भविलाल कक्काक देह सिहरलैन, बजला-

"बसन्त, आब तोरे नम्बर एलह।"

तैबीच बसन्तलाल भाय बजला- "काका, नाक छुबि कनी मन पाड़ियौ जे बीस-पचीस बर्ख पूर्वक बात छी, जइ समय सरकारियो संस्था सभ आ आनो-आन प्राइवेट संस्था–एन.जी.ओ.–सभ सागवान रोपैले अभियान चलौलक। अपनो सभ दिन यएह इच्छा रहैए जे किछु नव करबो करी आ किछु नव सीखबो करी।"

अखन तक भविसलाल काकाकेँ नीक जकाँ अपन विचार मोन नहि

पड़ल छेलैन तँए लगले-सूरे बसन्त भाइक गपक जवाबमे बाजि गेला-

“हँ, से तँ चलले छल।”

भविसलाल काकाकेँ एकमुँहरी होइत देखि अपने बजलौं- “काका, ओहन अभियान चलल आ अहाँ समयकेँ छोड़ि पछुआ केना गेलौं?”

जहिना कोनो घटित घटनाक जगह लग गेलापर घटना मोन पड़ि जाइए तहिना भविसलाल काकाकेँ धक-दे मोन पड़लैन। बजला-

“कोनो अभियानकेँ चलैसँ पहिने अख्यिाइस ली जे एकर भविस की कहै छै। एकटा बात बजैमे छुटि गेल से पहिने कहि दइ छिअ।”

भविसलाल काकाकेँ अपन बात एकटा मोन पड़िते देखि अपन मन तरैस गेल जे फेर बटुआ महक विचार निकलत। झटकारि कऽ बजलौं-

“काका, अहूँ बसन्त भाय जकाँ सुरे-ताल मिलबए लगलौं आकि झट-दे बाजब।”

भविसलाल काका बजला-

“चाहक दोकानपर एक गोरे बजला, हजार-हजार बर्ख आ पँच-पँच हजार बर्खक गाछ सभ जंगलमे अछि। एमहर पहाड़ी माटि अछि, माने पथरीली, तँए गाछक सिरक सम्बन्ध सकताएल माटिसँ रहने तँ झाँट-पानिसँ लड़ैक शक्ति बेसी रहै छै। तैसंग सघन हवा-बिहाड़िक सामना बेसी जंगलकेँ करए पड़ै छै गाछकेँ नहि।”

बसन्त भाय बजला-

“सागवानक बागवानी तँ नहि मुदा एक बीघा खेतमे हमहूँ खेती केलौं। बीस सालक पछाइत हिसाब बुझि मन एते चपचपा गेल जे अनेरे लोक नोकरी किए करैए। बैसले-बैसल करोड़क आमद.!”

बसन्त भाइक मुँहक बात छीनैत भविसलाल काका बजला-

“अपना सभसँ ओ ने बुधियार छला जे जी.टी. रोडक दुनू कात आमक गाछ रोपलैन। दिल्लीसँ कलकत्ता तक जोड़ि लहक जे केते फलदार गाछ रोपलैन।”

भविसलाल कक्काक विचार सुनि अपनो मनक घन्टी जेना बाजल।

ठीके खानखाना रहीम कहने छैथ, रोपब गाछ बगुरक तँ आम केना खाएब।

बिच्चेमे रीतलाल भाय जे शुरूहेसँ बैसल छला, बजला-

“भविसलाल काका, जे समय चलि गेल तैपर जअ-तिल फेकि सुआछन दऽ दियौ। कहलो गेल अछि जे बितलाहाकेँ पराछीत करबे नीक। तहूमे बसन्त भाय कि किनको ठकलैन आकि अपने ठकेला।”

भविसलाल काका बजला- “ओही बोनक रोपाइ-समयमे एक्के कट्ठामे आठटा अम्रपाली आमक गाछ रोपि देलिऐ जे साले भरिक पछातिसँ फड़ब शुरू केलक। अखनो पाँच-साए-हजार आम प्रति गाछ फड़ैए।”

❑ जीवनक कर्म जीवनक मर्म: 2021

थाहल संगी

☰

सुजीत काका विचारक ओइ दुनियाँक पहुँचल लोक, जैठाम पहुँचला पछाइत नइ बुझि पड़ैत जे ओ दोस्त-दुश्मनक बीच छैथ कि दुश्मनेक बीच छैथ आकि दोस्तेक बीच छैथ। आनकेँ बुझैमे जे होनि मुदा सुजीत काकाकेँ अपनो तँ बुधि-विवेक छैन्हे। अपने बुधि-विवेक ने अपन दोस्तो छी आ दुश्मनो छीहे। नीकक बाट पकैड़ दोस्त बनैए आ अधला बाट पकैड़ चलने दुश्मन बनैए। ओना, सुजीत कक्काक अपन जीवनो छैन आ जहानो छैन्हे। जीवनो तँ जीवन छीहे, असगरोक होइए आ समूहोक होइए। भलेँ दुनू रंगक किए ने हुअए मुदा दुनूक बीच अपन-अपन सीमा सेहो अछिए।

आने दिन जकाँ सुजीत कक्काक दरबज्जा लोकसँ भरल रहैन। अपने पहुँच देखलौं तँ बुझि पड़ल जे आधासँ बेसी लोक ओहन छैथ जे भरि दिन, परोछमे अदखोइ-बदखोइ सुजीत कक्काक बजै छैथ आ ऐठाम ठहाका मारि हँसबो करै छैथ आ भरि मुँह गप्पो-सप्प करिते छैथ। मने-मन सुजीत काकापर तामसो उठि रहल छल जे जहिना कोनो बाल-बोधकेँ चेष्टगर सियान झूठ-फूस बाजि पोल्हेबो करै छैथ आ प्रबोधवो तँ करिते छैथ, सएह स्थिति छैन। मुदा बजलौं किछु ने। महादेव जकाँ मने-मन अपन बीख पीब लेलौं।

अखन तक ठाढ़े-ठाढ़ सभ तमासा देखि रहल छेलौं। बजैत-बजैत सुजीत काका मुड़ी उठा तकलैन तँ सोझामे ठाढ़ देखलैन। अप्पन विचारक कड़ीकेँ मुँहक शब्दसँ जोड़नहि रहला मुदा हाथक इशारासँ लगमे आबि बैसैले कहलैन। आगू बढ़ि सुजीत कक्काक लगमे जा कऽ बैसलौं। मुदा मन चकोना होइते रहए। नजैरकेँ दौड़ा-दौड़ा सभपर दी, माने जेते गोरे सुजीत कक्काक दरबज्जापर बैसल रहैथ, रंग-बिरंगक चेहरा बुझि पड़ए।

कियो घनिष्ठ संगी सुजीत कक्काक बुझि पड़ैत तँ कियो घोर-विरोधी। देखि-देखि मन कछमछाइते छल जे एहनाठाम किछु बाजब केना? देखिते छी जे गाममे नीको काज होइए आ अधलो काज होइए। नीकक फल नीक होइए आ अधलाक फल अधला होइए। कहलो गेल अछि जे रोपे गुण फल होइत अछि। ऐठाम तँ नीको केनिहार छैथ आ अधलो केनिहार छथिए। नीक केनिहारकैँ नीक कहबेक अछि मुदा 'अधला केनिहारकैँ की कहब? जँ 'अधला' कहबै तँ अनेरे रक्का-टोकी हएत। रक्का-टोकीक की आड़ि-मेड़ अछि जे केते हएत। संयोग भेल, तैबीच सुजीत काका कबीर दासक विचारमे पहुँच बजला- "कबीर बाबा कहने छैथ, बिना साबुनक धुआइयेसँ, लगमे विरोधीकैँ रहने मनक धुआइ होइए।"

ओना, सभ दिन सुजीत काका लग डेढ़-दू घन्टा बैस, अपनो जे नइ बुझै छी से पुछि लइ छिऐन आ आन-आनक संग सुजीत कक्काक विचार सेहो सुनै छी। .. सुजीत कक्काक विचार सुनि मनमे भेल जे पुछिऐन, मनक धुआइ भेने क्रिया-कलापक सेहो धुआइ भऽ सकैए। जँ मन साफे अछि मुदा क्रिया-कलाप गड़बड़, तखन एक-दोसराक सम्बन्ध-सूत्र केहेन बनत? आ जँ सम्बन्धे-सूत्र ढील-ढीलाह बनत तखन मजगूत जीवन केना बनि सकैए? मुदा लगले फेर अपने मनमे भेल जे अपने तँ पाछूकऽ एलौं हेन, जँ कहीं ऐगला एनिहारक विचारक क्रममे सुजीत काका होथि, तैबीच जँ अपने डीलरक दोकान जकाँ पैछला एनिहार पहिने लिअ चाहत तँ झंझट हेबे करत किने। ओह! जानिकऽ दोखी बनब नीक नहि। चुपे रहलौं। ओना, जानि-अनजानि लोक अपनो दोखी बनैक अधिकारी अछिए मुदा दोखी बनैसँ पहिनौं बहुत प्रक्रिया अछि। तहूमे प्राकृतिक प्रकोप तँ आरो बेसी अछि। देखिते छी जे यएह दुनियाँ छी जखन लोक पत्थरकैँ पत्थरपर घँसि-घँसि हथियार बना शिकार करै छल, पछाइत लाखो बर्खक बीच की सभ भेल आ अखन देखिते छी जे लाठी-फराठी कमि गेल अछि आ बम-बारूद बेसी भऽ गेल अछि। तहूमे ओहन-ओहन जइसँ गौंआँ-घरुआ आ अड़ोसी-पड़ोसीक कोन बात जे हजारो कोस हटल देश दोसर देशकैँ घरैया शिकार जकाँ शिकार करिते अछि।

अपने बीतल एकटा बात, माने अपने जे गाममे भेल, मोन पड़ि

गेल। भेल ई छल जे एकगोरेकेँ, दोसराक संग गलती करैत देखि मुहेँपर कहि देने रहिऐ जे एहेन छुछुड़पना काज किए करै छह। अखन तक अपने बुझबे ने करै छेलौं जे शब्दक मिलानी मात्रसँ समाजो आ सत्तो चलैए। प्रीतमलाल माने जेकरा कहने रहिऐ, गामक छअचक्री लोक, कृष्ण जकाँ सुदर्शन चक्र नहि, मात्र ओइमे छबेटा डाँरि खिंचल छै, से भेल छहचक्री। तरे-तर कि केना भेल, से जखन तीन मासक जहल कटलौं तखन बुझलौं। अपनेटा बात नइ कहै छी, अपना सन-सन केतेको गोरे केतेको गाममे एहेन जहल कटने छैथ।

आजुक परिवेश ओइ मोड़पर आबि ठाढ़ भऽ गेल अछि, जैठाम विनास-विकास दुनू अछि। मन तेना अपने घुरिया-मुड़िया गेल जे रसे-रसे दृढ़ भऽ गेल जे अबेर-सबेरक विचार केने बिना सुजीत काका ऐठामसँ नहि जाएब। पाछू-के एलौं, तँए हमर मनक प्रश्न पछुआ गेल, मुदा आवश्यक तेते अछि जे बिनु बुझने अन्न-तीमनक सुआद थोड़े बुझब, सोझे गीर लेब हएत। ओना, मन ईहो कहैत रहए जे अखन उचक्का सभ लगमे अछि, जँ सोझामे बाजी आ फेर जहल कटबैक ओरियान कऽ देत, तइसँ नीक जे अपन विचार पाछू काल-के राखब। जखने विचार पछुआएत तखने कच्छड़-मच्छड़ कटैबला सभ पड़ाएत। अपन विचारक प्रश्न छी अपने मुहसँ काकाकेँ पुछबैन, अपने कानसँ हुनक विचारो सुनब, पछाइत समयानुकूल डेग उठाएब।

साँझक आठ बजि गेल। सौंझुका पूजाक घड़ीघन्ट केतेको देवस्थानमे बजि गेल। बेरुका मदभक्षी सभक मदक खुमार सेहो कमि गेलैन। जइसँ भोजन केला-पछातिक आराम करैक विचार मनमे उठि गेलैन। गामक बैसार कि कोट-कचहरीक बैसार छी जे निसचित समयपर चलत, ओ तँ गमैया धार जकाँ अछि जे छअ मास सुखल रहत आ छअ मास बहैत चलत। दुइये गोरे रहलौं, माने अपने आ सुजीत काका रहला। मनमे भेल जे अपने तँ जवान छी, तँए देहो ओते शक्ति पैदा करिते अछि, जइसँ एकाध घन्टा विलैमियोँ सकै छी, तहूमे मनक जिज्ञासा प्रबल रहबे करए। मुदा सुजीत काका तँ से नहि छैथ। श्रेष्ठ छैथ, उमरदार छैथ, जइसँ शिष्टपनसँ मानिते छिऐन, मुदा एते तँ पुछले जा सकैए जे 'काका,

बड़ीकालसँ बैसल छी, पियास लगि गेल हएत।' मुदा सुजीत काका तँ अपने शिकारी छैथ, ओ मने-मन बुझि गेला जे किछु एहेन विचार मनोहरक मनमे उठि गेल अछि जेकर जवाब सुनैले मन कच्छड़ काटि रहल छइ। अपनो मन मानियेँ रहल छेलैन जे जखन जिनगीक कोनो ठेकाने ने अछि तखन तँ जे कऽ लेब तेतेकक हकदार तँ हेबे करब। सभ जनिते छी जे कियो करे आप ले माए ले ने बाप ले। संयोग नीक बनल, बुधियारि काकीकेँ जेना बुझले रहैन आकि की, दू-दूटा बिस्कुट दूटा प्लेटमे आँगनसँ दरबज्जापर पानिक संग पहुँचा गेली। जाबे दुनू बापूत बिस्कुट खा पानि पीलौं, ताबत दू कप चाहो बुधियारि काकी पहुँचा गेली। ..अपना बुझि पड़ल जे चाह-बिस्कुट खेला पछाइत दुनू गोरेक मन, माने अपनो आ सुजीतो कक्काक, एक्केरंग भऽ गेल। एकरंग होइते बजलौं- "काका, हमरे भ्रम भऽ रहल अछि आकि अहीं भरमा गेल छी, से बुझिये ने पेब रहल छी।"

ओना, सुजीत काका बुझि गेला मुदा बुझल बातकेँ मनेमे दाबि बजला- "से की मनोहर?"

बजलौं- "काका, अहाँ भलेँ बिसैर गेल होइ, मुदा अपने तँ भुक्तभोगी छी तँए जीवनमे केना बिसरब।"

सह दैत सुजीत काका बजला- "हँ, से बिसरबोक नइ चाही।"

सुजीत कक्काक विचार सुनि मन आरो दनदना गेल। दनदनाइत बजलौं- "काका, कनिये पहिने, जेते गोरेकेँ दरबज्जापर बैसल देखलौं, तइमे आधासँ बेसी ओहन लोक छल जे धोखाबाज अछि। एहेन लोक कखन संग रहत आ कखन वौआकऽ धोखा दऽ पड़ा जाएत, तेकर ठेकान नहि।"

ओना, अपन विचारकेँ सुजीत काका कद्र केलैन मुदा अप्पन जीवन आ विचार तेतेक ऊपर उठि गेल छैन जैठाम एहेन-एहेन विचारो आ काजोकेँ तुच्छ मानल जाइए। तुच्छ मानब सोभाविको अछिए। कियो एकदिना जहल जाइए आ कियो नेलशन मंडेला जकाँ तीस बरख जहल काटैए, तैठाम दुनू गोरेक जहल काटब थोड़े एकरंग हएत। ..मुस्की मारि सुजीत काका बजला- "मनोहर, कियो चोर अछि कि डकैत अछि कि

झुठे-फूस बजनिहार लबड़ा-लुच्चा अछि आकि छल-प्रपंची धोखेबाजे किए ने अछि, तेकर दुख-सुख अपने भोगत कि आन, हमर की लेत।”

ओना, शब्दक शैलीमे सुजीत कक्काक विचार नीक लागल मुदा अप्पन तीन मासक जहल मनमे मनाही करिते रहल जे ऐठाम सुजीत काका विचारकेँ झाँपिकऽ बजला अछि। बीतल दिनक प्रमाण सभकेँ मने-मन एकत्रित करैत बजलौं- “काका, अपनो मानै छी जे पूर्वज सभ कण्ठ फारि-फारि कहने छैथ जे जे जेहेन करत से तेहेन पौत। रोपे गुण फल होइते अछि। मुदा...।”

अपन सभ विचारकेँ हौंरि-हाँरि सुजीत काका बजला- “मनोहर, भने अखन दुइये बापूत छी, तँए जीवनक मूल मर्मकेँ कहि दइ छिअ।”

सुजीत कक्काक विचार सुनि मनक जिज्ञासा तेते फुनफुनाकऽ जगि गेल जे हुअए कखन सुजीत कक्काक मुँहक बात सुनी। बजलौं- “की मर्म कहलिऐ काका?”

सुजीत काका बजला-

“मनोहर, अपन जीवनधार ओहन बना प्रवाहित करी जे स्वयं निर्मित हुअए। जखने अपन प्रवाह अपना अनुकूल चलत तखने दुनियाँक आन-बीरानक भेद मेटा जाएत। रहत मात्र अपन कर्म (काज)। से तँ अपन-अपन विभाजित रहबे करत। एक्केटा नमहर काज माने एकसँ अधिक गोटेक बीचक, रहैए जे नीको होइए आ अधलो होइए मुदा केनिहारक सिरे किछु ने कहल जाइए, सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो कहल जाइते अछि।”

❑ अप्पन साती: 2022

एकलव्यपन

☰

कनी देरीसँ नीन टुटने कनी अबेर-के उठलौं। अखन तकक अपन उठब यएह रहल अछि जे सुर्ज उगैसँ घन्टाभरि पहिने उठलौं आ माल-जालकेँ घरसँ बहार करैत, दुआर-दरबज्जा बहारि लेला पछाइत अपना ऐठामसँ निकललौं। गाम-समाजमे किछुओ परिवार तँ एहेन भइये गेल अछि जे अप्पन पानिक संग अप्पन परो-पैखानाक बेवस्था कइये लेलैन अछि, तहीमे अपनो छी। पाँच साल पूर्व तक सुति-उठि माल-जालकेँ घरसँ बहार कए आगूमे खाइले दऽ दइ छेलिऐ आ अपने दिशा-मैदान दुआरे मन्ना चौर दिस, माने चौरी दिस, गहींरका खेतक इलाका दिस, विदा होइ छेलौं। मन्ना चौर अप्पन गामक पूबरिया चौर छी, जेकरा बीचमे अनेको कोचाढ़ि सेहो खुनल अछि, जइमे बरसातक तँ कोनो बाते नहि जे जेठो-अखाढ़ तक पानि भरले रहैत अछि। ओम्हरे जाइ छेलौं, दिशा-मैदानक पछाइत झौआक दतमैन तोड़ि दतमैन करै छेलौं आ तखन घरपर आबि दुआर-दरबज्जाक बाहरन-सोहरन करैत रही, मुदा एमहर पाँच बर्खसँ रूटिंग बदैल गेल अछि।

अबेर-के सुतने उठैमे अबेर भइये गेल छल। कहब जे अहाँ तँ समयकेँ पकैड़कऽ चलैबला छी, तखन सुतै-उठैमे एना अबेर किए भेल? अबेर होइक कारण भेल जे जहिना घटही गाड़ी, घटही गाड़ीक माने ई बुझू जे घटही गाड़ी घटल देशक गाड़ी छी जे जहिना खुजैकाल एक-दू मिनट देरी करैए तहिना स्टेशने-स्टेशन दू-चारि मिनट देरी करैत गेल आ अपना घाटपर पहुँचैमे घटिया गेल, अपनो तहिना भेल। अप्पन सुतै-उठैमे अबेरक कारण ई भेल जे काल्हि साँझमे ममियौत भाय आबि गेला। एक तँ जेठ छैथ, दोसर एतेक कलाकारी ओ अपनामे रखने छैथ जे केहनो बज्जर नीने सुतनिहारक नीन हरण कइये सकै छैथ। ऐठाम अहाँ महाभारतक द्रोपदीक

चीरहरण नइ बुझब आ ने पत्नीकेँ जुआक पाशापर हारल बुझब, आ ने ओहन पत्नी बुझब जे विचारक क्षेत्रमे तँ अर्द्धांगिनी छैथ मुदा कर्मक क्षेत्रमे दुनू परानीक बीच एते दूरी बनि रहल अछि जे अर्जुन जकाँ जुओक पाशापर हारैले तैयार भऽ गेल छैथ। स्वतंत्र विचारक रक्षा हर मनुक्खकेँ हेबेक चाही मुदा एहेन नइ ने जे जहिना बानर-भालूक सेना नेने राम समुद्रक कात पहुँच पुल बनबैक विचार केलैन आ नल-नीलकेँ ठीका देलखिन। नल-नील अप्पन कलापर मुग्ध छेलाहे जे नीक ठीकेदारी भेटल। मुदा जखन दुनू बेकती, माने नल-नील, पुल बनबैले पहाड़सँ पाथरक टुकड़ा आनि-आनि समुद्रमे फेंकए लगला तखन सभ टुकड़ा असगरे-असगर, माने अपने-अपने, समुद्रमे अलैग-अलैग हेलए लगल, जइसँ पुल बनब असम्भव भऽ गेल, तहिना परिवारक बीच परिवारजनक आ गाम-समाजमे समाजजनक सहमत आवश्यक अछिए। नइ तँ परिवार होउ कि समाज, ओइमे समयानुकूल गतिशीलता केना औत?

आन-आन देश जकाँ अपनो देशमे अछिए जे पतिसँ भिन्न पत्नीक राजनीतिक दलो छैन आ विचारो तँ छैन्हे। एक-दोसराक बीच सार्वजनिक रूपमे सेहो आ बेकतीगत रूपमे सेहो, दुनू दुनूक विरोध करिते छैथ, यएह छी व्यक्तिगत स्वतंत्रताक उछरीमताक जड़ि। खाएर जे अछि से अछि, अपना ओइसँ कोन मतलब अछि।

साँझू पहर जखन सुशील भाय पहुँचला तँ हुनका देखिते मन सन्न भऽ गेल। सन्न होइक कारण भेल जे पचासी बरख टपला पछातियो सुशील भायकेँ ने एकोटा दाँत टुटलैन अछि आ ने चौंथाइसँ बेसी केश पकलैन अछि। जहिना जुआनीमे चौपहल चेहरा छेलैन तहिना अखनो एक साए पाँच किलोमीटर सुलतानगंज-सँ-वैद्यनाथधाम साले-साले जाइ छैथ।

सुशील भायपर नजैर पड़िते भीतरसँ मन फुला गेल जे जँ अपनौं हिनकर अनुकरण करैत चलितौं तँ अहिना पचासी तँ निसचिते जे साइयो-बर्खक जिनगी हँसैत-खेलैत बितैबतौं।

सुशील भाय शुरूहे सँ गीत कलाक प्रेमी रहला। ओना, कम कि बेसी सभ कलाकार छीहे। जीवनक परिमार्जनमे किछु-ने-किछु कलाकारी सभकियो करिते छी। सुशील भाइक माता-पिताक, माने अप्पन मामा-

मामी'क अमलदारी तक बेरियाही गामक दशा नीक छल। माने पूबमे कोसी आ पच्छिममे कमला धारक दूरी गामसँ बेसी रहने बेरियाहीमे बाढ़िक उपद्रव नइ होइ छेलइ। बाढ़िक उपद्रवक माने भेल गाममे बालू भरब, मोइन फोरब, नासी बना नव धारक सृजन करब आदि-आदि। से उपद्रव बेरियाही गाममे नहि छल। सुशील भायकेँ पिताक अमलदारीमे बारह बीघा जमीन छेलैन जेकरा उपजसँ परिवार मध्यम वर्गक किसानक जीवन धारण केने रहलैन। तीन भाइक भैयारीमे सुशील भाय सभसँ छोट छैथ। गाम-गाममे, कीर्तन मण्डली, नाच पार्टी इत्यादि-इत्यादि छेलैहे। अखनो अछि। रंग भलेँ जे पकड़ने हुअए मुदा सार्वजनिक रूपमे एक-दोसराक बीच सम्बध छेलैहे।

बच्चाक जीवन सुशील भाइक नीक रहलैन। ओइ समयक नीक—अखुनका नहि, अखुनका जकाँ परिवारमे ने मोबाइल छेलैन आ ने चरिचकिया गाड़ी—माने भेल दुनू साँझ भरि पेट भोजन, जाड़-बरसात-रौदसँ बँचैले घर आ समयानुसार, जाड़-गरमीक संग इज्जत बँचेबाक लेल, वस्त्र। तीनू सुविधा सुशील भायकेँ भेटलैन।

जहिना गाम-गाममे कीर्तन मण्डली, नाच मण्डली छल तहिना गाम-गाममे कुश्ती लड़ैक अखड़ाहा सेहो छल। अखड़ाहाक माने साम्प्रदायिक स्थान नहि बुझब। ओना, विचार करैक तँ छीहे। गाछी-बिरछी वा परती-परातकेँ नवतूरक बच्चा सभ कोदारिसँ तामिकऽ अखड़ाहा बनबै छला आ ओइपर भिनसरू पहरमे एक-दोसरसँ लड़ै जाइ छला। लड़ैक दुनू प्रक्रिया छल। अपनासँ बच्चा वा कमजोरसँ सेहो लड़ैत छल, जेकरा 'लपटाएब' कहल जाइ छेलै आ अपनासँ तगतगरसँ सेहो लड़ैत छल जेकरा 'जोड़ देबाक लपटब' कहल जाइ छल।

शुरूमे सुशील भाय सेहो संगी-तुरियाक संग अखड़ाहापर गेला, मुदा तइ बिच्चेमे शरीरक शक्तिसँ मनक शक्ति उपैज गेल छेलैन। तीन साल तक, माने जाड़क मासमे कातिक-सँ-फागुन धरि अखड़ाहा चलै छल, सुशील भाय अखड़ाहापर गेल छला, पछाइत कीर्तन मण्डलीक संग जुड़ि गेला। सभ दिन साँझू पहरमे हनुमानजी स्थानपर कीर्तन होइ छेलइ। तइमे सुशील भाय सेहो आएब-जाएब शुरू केलैन। ढोलकक आवाज सुनि

सुशील भाय सेहो पल्था मारि ठेहुनक जोड़पर दुनू हाथे एकताले ओहिना बजबै छला जहिना ढोलकिया ढोलक बजबैत रहैथ। काजक दौड़मे सभकेँ होइ छैन जे एक तरहक काज दोसर तरहक काजक साधको बनैए आ असाधको तँ बनिते अछि, तहिना छह मास ढोलकक ताल ठेहुनपर मिलेलाक पछाइत सुशील भाइक स्वरलहर जगिकऽ अपने रोकलकैन। माने ई जे साज बजौनिहारक मनकेँ जेना साज पकैड़ लइए तेना सुशील भायकेँ नहि पकड़लकैन। बुझि पड़लैन जे ऐसँ मनक साम्राज्यमे कमी अबैए।

तीन तरहक शक्ति—शारीरिक, मानसिक आ भाव भावित शक्ति—मे मनक शक्ति प्रबलो अछि आ पूज्य सेहो अछि। मने ने शरीरक निगरानी (देखभाल) सेहो करैए आ भावभूमिकेँ सेहो सिंचित करिते अछि। मुदा शारीरिक शक्तिक प्रबलता वा भावना-शक्तिक प्रबलता, मनक शक्तिक प्रबलतासँ कोनो-ने-कोनो रूपमे प्रभावित होइते अछि। खाएर जे होइए, तइसँ सुशील भायकेँ कोन मतलब छेलैन, मतलब एतबे छेलैन जे गबैया सभक संग अपनो गाबी। मुदा ठेहुनपर ढोलकक ताल मिलौने से नइ होइए।

छअ मासपर जहिना बच्चा (विद्यार्थी) सभकेँ छमाही परीक्षा होइ छैन, जइमे बच्चाक झुकाउक परीक्षण होइ छैन तहिना सुशील भायकेँ सेहो भेलैन। परीक्षा परिछन आ परिछव दुनू रंगक होइए। सुशील भायकेँ ढोलकक धुनि कमि गेलैन आ स्वरक धुन जगि गेलैन। बाल-बोध बच्चा गीत-भजनक सुर-तान तँ बुझैत नहि, तँए बेसूरे जोर-जोरसँ गाबए लगला। हरमुनिया बजौनिहारक स्वर टुटए लगलैन, मुदा स्वरक स्वर स्वरकेँ प्रभावित केलकैन। गौरीनाथकेँ—माने हरमुनिया बजौनिहार गायककेँ, जे आगू-आगू गबै छला आ पाछू उनैट-उनैट तकै छला जे सामाजिक स्वरमे एकलव्यपन अछि कि नहि, सामाजिक स्वरक माने भेल जे कीर्तन-भजनमे एक दल आगू-आगू आ दोसर दल पाछू-पाछू गबै छैथ—सुशील भाइक आवाज, माने जोरक स्वरक आवाज, जहिना धानक झड़ जकाँ बेदरंग बुझि पड़ैन, तहिना सुधरंग सेहो बुझि पड़लैन। सुधरंग शब्दक माने भेल सुधरैक रंग। गौरीनाथ सुशील भायकेँ पुछलैन- “बौआ, तोहर नाओं की

छिअह?”

ओना, चेहरासँ गौरीनाथ चिन्है छेलैन मुदा नाओंसँ वाकिफ नइ छला। नामक बाद कामो होइए आ कामक बाद नामो तँ होइते अछि। सुशील भाय बजला- “सुशील।”

बच्चामे सभ जहिना बजैए तहिना सुशीलो भाय बजला। सात बर्खक सुशील भाय ऐसँ बेसी बाजिये की सकितैथ। आजुक परिवेशमे ने किछु परिवारक बच्चा एतेक अगुआ गेल अछि जे सात बर्खक बच्चा अपन कलाक ढंगसँ अप्पन परिचय दइए। एक तँ सात दशक पैछला समाजक चर्च छी, दोसर आजुक परिवेशमे सेहो एहेन परिवार अछिए जेकर स्थिति पचास-साठि बरख पूर्वक जे अवस्था छल तहिना अछि।

अपना समाजक परिवेशमे तहू समयमे, माने सात दशक पूर्व, गामक हनुमानजी स्थानमे, सभक प्रवेश छल, छुआछुत नहि छल, आजुक तँ परिवेशे बदैल रहल अछि। जैठाम गाम-गामक कीर्तन मण्डली धर्मक रूपमे, माने सेवा भावसँ भजन-कीर्तन करै छला, तैठाम आजुक परिवेशमे ओहो बेपारक रूप पकैड़ लेलक अछि। ओना, गौरीनाथ सुशील भाइक परिवारकेँ सेहो चिन्हैत रहैथ तँए दोहरा-तेहराकऽ नहि पुछि कहलखिन-

“बौआ, काल्हि भोरमे तूँ हमरा ऐठाम आबह।”

जहिना बोनमे भगवान रामकेँ वौआएल-ढौआएल परिवारो आ परिवारजनो सभसँ भेँट भेल, पछाइत परिवारजनकेँ जहिना भेलैन तहिना सुशील भायकेँ सेहो भेलैन। आन दिनसँ पहिनहि आइ सुशील भाइक नीन भोरमे टुटलैन। टुटबो केना ने करितैन। मनक उत्साहक उमंग असगरोमे उमैकते अछि। से कोनो आइये उमकए लगल अछि से बात नहि, सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि।

जनिते छी जे अकबर जखन अपन दल-बलक संग शिकार करए वा सैर करए राजधानीसँ बाहर निकैल बोनाएल-पथराएल इलाकामे डेरा देलैन आ क्षेत्रक जाँच-पड़ताल जखन करए लगला तखन बीरबल नामक एकटा बच्चा ठहकलैन। मसोमात माइयक बेटा बीरबल, जे माइयक संग पहाड़पर सुखल जारन तोड़ि-तोड़ि बेचि-बेचि गुजर करै छल। बीरबलकेँ

भाँज लगा ओकर अबैक माने सामने आनैक विचार अकबरकेँ भेलैन। सिपाहीकेँ कहलखिन, ओकरेसँ समय पुछि लेब। सएह भेल। सिपाही अप्पन कैम्पमे अबैक सूचना दऽ देलकैन। अकबरक दरबार सुनि दस बर्खक बीरबल उत्साहित होइत उत्तेजित भऽ गेला तँए मनमे रोपि लेलैन जे अखने जा कऽ भेँट करबैन।

अकबर दरबारक कैम्प आ बीरबलक घरक बीच, पहाड़ी इलाका रहने, छोट-छीन नाशी, नाशी माने कम चौड़गर धार, बहैत रहइ। पानि तँ बहुत बेसी नहियेँ छल मुदा प्रवाह तँ रहबे करइ। घरसँ विदा भेलापर बीरबल धारकेँ कूदिकऽ ओहिना फानि गेल जहिना हनुमानजी सीताजीक नाओं सुनि समुद्रकेँ कूदिकऽ फानि लंका पहुँचला। बीरबलक करतूत अकबर अपना आँखिसँ देखि रहल छला। कैम्प लग माने अकबरक दरबारक कैम्प, जे सैर-शिकार करैले पहाड़ी इलाकामे लगौल छल तेतए, पहुँच बीरबल सोझे अकबरक आगूमे ठाढ़ भऽ बाजल- "हम बीरबल। कोन काजक निमिते बजौल गेलौं हेन?"

बीरबलक विचार सुनि अकबर बजला- "कोनो काजक निमिते नहि, ओहिना।"

बीरबल बजला- "तखन जाइ छी।"

अकबर बजला- "जाउ।"

दरबारसँ, माने कैम्पसँ विदा भेलाक पछाइत बीरबल ओइ नाशीमे उतैर धार पार करए लगला। बीरबलकेँ पार होइते अकबर पुन: सिपाहीकेँ पठा बीरबलकेँ बजौलैन। पएरे नाशी पार भेलहा बीरबल पुन: दरबारक (अकबरक) नाओं सुनि कूदिकऽ नाशी पार करैत दौड़ल आबि दरबारमे पुन: उपस्थित भेला। बीरबलकेँ सोझामे देखि अकबर पुछलखिन- "बीरबल, जइ धारकेँ अबैकाल अहाँ कूदिकऽ पार भेलौं, जेबाकाल किए धारमे उतैरकऽ डेगे-डेग पार भेलौं?"

निरभिक बच्चा बीरबल छेलाहे। बजला- "अपनेक जिज्ञासा सुनि मन एते उत्साहित भऽ गेल जे धारक सुधिये-बुधि हेरा गेल, निआस भेल जखन घुमलौं तखन मन एते टुटि गेल जे मनक उत्साहे मेटा गेल।"

बीरबलक प्रतिभा अकबर देखि लेलैन आ ओही दिन अपन मंत्री

बना लेलैन।

एहेन गुण बीरबलेमे छेलैन आ दोसरमे नहि अछि, सेहो बात तँ नहियेँ अछि। जहिना गौरीनाथ सुशील भायकेँ बजौने छला तहिना सुशील भाय अपना समयपर गौरीनाथक ऐठाम पहुँच गेला। पितातुल्य गुरु जकाँ गौरीनाथ सुशील भायकेँ कहलखिन- "बौआ, अखन तूँ कुम्हारक सानल माटि जकाँ छह, माने कोनो वस्तु बनबैसँ पहिने कुम्हार माटिकेँ बारीकीसँ सानैए, तहिना तूँ छह, तँए ढोलकक अनुकरण छोड़ि हरमुनियाक अनुकरण करह जइसँ स्वर-साधना सेहो हेतह।"

एक तँ अप्पन मनक उत्साह, दोसर, दोसराक प्रोत्साहन.! हँसी-खुशीसँ सुशील भाय स्वीकारि लेलैन।

सौंझुका समय रहने सुशील भायकेँ कहलयैन- "भाय, हाथ-पएर पछाइत धोब, पहिने चाह पीब कुशल-समाचार कऽ लिअ।"

जहिना कहलयैन तहिना सुशील भाय मानैत कहलैन- "बड़ बढ़ियाँ कहलह माधव। आब ओ जुग जमाना रहल जे हाथ-पएर धोला पछाइत लोक आसनपर बैसै छैथ। पहिने लोक एक तँ पएरे चलै छला, दोसर बिनु पनही-जुत्ताक चलै छला, जइसँ गरदा-माटिसँ पएर नहा जाइ छेलैन, तेकरा धोब जरूरी छल। मुदा आब तँ से अछि नहि।"

तैबीच चाह आबि गेल, दुनू भाँइ चाहो पीबए लगलौं आ गप्पो-सप्प करिते रहलौं। पुछलयैन- "भाय, परिवारक की हाल-चाल अछि?"

निधन्धी लोककेँ जहिना धनक कोनो धैन नइ रहैए तहिना सुशील भाय बजला- "बौआ, अपन जन्मकुण्डली तँ माए-बाबू नइ बनौलैन जे सही-सही कहबह, मुदा एते तँ अनुभवसँ जनिते छी जे पचासी बरख पार कऽ नेने छी।"

एक तँ चाह पीने अपनो मन हल्लुक भइये गेल छल, दोसर विचारोसँ प्रभावित भेलौं। अखन जे परिवेश बनि गेल अछि, जैठाम बुढ़सँ बेसी जवान लोक मरैए, तैठाम सुशील भाय पचासी बरख पार कऽ चुकल छैथ आ अखनो मरैक चर्च नहि करै छैथ, बजलौं- "भाय, एतेटा उमेरमे की सब केलौं आ की सब देखलौं-सुनलौं, से कनी कहियौ।"

हमर बात सुनि सुशील भाय ठमैक कऽ विचारए लगला। थोड़ेक कालक पछाइत बजला- “बौआ, जीवन तँ जीवन छी जे सुर्ज जकाँ सौंसे दुनियाँ देखैए, मुदा से नहि, अप्पन जीवनक दूटा काजक चर्च करबह।”

सुशील भाइक विचार सुनि मनमे भेल जे अनेरे नोनी-पटुआ सागक चर्च किए करब, अप्पन जे मनक उद्गार छैन, सएह ओ बाजथु। बजलौं-

“बड़बढ़ियाँ।”

सुशील भाय बजला- “पिताजीक अमलदारीमे गामसँ माने बेरियाही गामसँ तीन कोस हटल जहिना कोसी छल तहिना दू कोस हटल कमला छल, जइसँ ओइ समयक परिवारक स्थिति बहुत नीक छल जइमे अप्पन बालपन बीतल। गीत-संगीतसँ सिनेह भऽ गेल। पहिने संगी-साथीक संग अखड़ाहापर तीन साल गेलौं, पछाइत गामक कीर्तन मण्डलीसँ जुड़लौं। मन नइ लागल। ओना, ढोलक बजौनाइ, हरमुनिया बजौनाइ एकहाथ सीखिये नेने छी, पछाइत खजुरी लऽ कऽ असगरे घुमि-घुमि निरगुणो आ महराइयो समाजकेँ सुनबए लगलयैन। से अखनो सुनैबते छिऐन। तैसंग खिस्सा-पिहानी सेहो सुनबै छिऐन।”

बजलौं- “कमला-कोसी की कहलिऐ?”

नकछोहैन करैत सुशील भाय बजला- “गामसँ जे दुनू धार हटल छल ओ गाममे प्रवेश कऽ गेल। ओइ दुनूक, माने दुनू धारक, कोनो ठेकान अछि जे कखन धारा बदलत आ कखन घाट, गाम तहस-नहस भऽ गेल। अपने दसदुआरी भइये गेल छी, जाबे से नइ बनब ताबे अप्पन समाज जागत केना? जगे ने जागबो छी आ दुनियोँ तँ छीहे।”

बजलौं- “अप्पन जीवनसँ सन्तुष्ट छी?”

जेना भाव शक्ति मनक शक्तिकेँ जगा देलकैन तहिना सुशील भाय बजला- “बौआ, अप्पन एकोपाइ मूल्य नइ बुझै छी, तखनो जँ सन्तुष्ट नइ हएब तँ कहिया हएब।”

❑ एकलव्यपन: 2023

कनगुरिया ओंगरी

☰

अस्सी बर्खक ध्रुवलाल बाबाकेँ परिवारोक लोक, समाजोक लोक आ चौबगली गामक अड़ोसिया-पड़ोसिया सेहो, बहुरंगी लोक कहै छैन। कहबे टा करै छैन आकि मानबो करै छैन, से तँ वएह कहता मुदा ध्रुवलाल बाबाक अप्पन मन कहै छैन जे घाट परक छबड़ाक चाल देखि कियो पोखरिक अगम पाइनिक रोहु-भुन्नाक थाह थोड़े पाबि जाएत। जहिना परिवार-समाजक मन तहिना ध्रुवलाल बाबाक सेहो अप्पन मन छैन। भीतरे-भीतर देखि रहला अछि जे समाज तँ एकटा नियम छी जे अमूर्त अछि, मूर्त अछि समाजक लोक, तँए जहिना समाजक लोक तहिना परिवारक लोक। लोकेक मुँहमे ने जय-पराजय दुनू अछि। बुझले हएत जे गाममे एकगोरेक महींसकेँ बच्चा भेल, महींसबला कहैथ जे पाड़ी भेल अछि, वस्तुत: पाड़ी भेलो रहैन, मुदा गामक बीचक सभ बजैत जे पाड़ा भेलैन। जहिना बिआहक सभा-गाछीमे कुल-मूलक चर्चक बीच होइए.., तहिना। ओना, तहूले पजियारक निर्माण तँ करइ पड़त किने।

ध्रुवलाल बाबाकेँ किए लोक ‘बहुरंगी’ कहै छैन, से तँ लोकक अप्पन-अप्पन विचार छैन। मुदा, वास्तवमे ध्रुवलाल बाबाक अप्पन मन मानै छैन जे जखन मनुक्ख बनि धरतीपर जन्म लेलौं तखन धरतीपर जेतेक मनुक्ख छैथ ओ सभ मनुक्ख भेला। एकर माने ई नइ बुझब जे आरक्षणक विषयमे कहै छी, मात्र भावनाक सम्वेदनामे कहि रहल छी। जे कहलौं से ध्रुवलाल बाबाक अप्पन मनक विचार कहलौं, मुदा परिवारोक आ समाजोक लोकक बीच आड़ि-धुर तँ बनले अछि जे बिना बजनौं किछु गोरे आगू बढ़ि नहि बजै छैथ, तँ किछु गोरे एहेन नइ छैथ जे बुझै छैथ अप्पन ढौओ नइ आ आगूए-आगू भोज खेलहा लोक जकाँ पोखरिक किनछैरमे बोकैर-बोकैर भरै छैथ।

ध्रुवलाल बाबाकेँ बहुरंगी कहैक मूल कारण छैन जे जखन ओ अपना उमेरक—माने सत्तैर-अस्सी बर्खक—लोक-लग बैसै छैथ तखन बजै छैथ- “मीत! अच्छा ई कहू जे अहाँ अप्पन बापक घरमे बेसी नीक-निकुत खाइ छी आकि सासुरमे?”

भलेँ लोक हँसैत किए ने जवाब दैन जे अनेरे ने अहाँ जुआनी-बुढ़ाड़ीकेँ लड़बै छी। अपना नइ मोन अछि जे जवानीमे जे मान-दान सासुरमे भेल से आब ऐ बुढ़ाड़ीमे जँ हुअए तँ ओ पुरा सकब। अपना उमेरक लोकक बीच अहिना लोक बजैए, जँ से नइ बाजत तँ अतीतक एक कालखण्ड ने हेरा जाएत। जहिना अप्पन उमेरिया लग ध्रुवलाल बाबा अप्पन दिनक भोजन आ सासुरक खाइ-पीबैक गप-सप्प करै छैथ, तहिना अपनासँ हीन-उमेरिया लग एक प्रौढ़ बेकतीक रूपमे संचरित करैत अपनाकेँ ओइ सीमामे लऽ अनै छैथ जइ सीमामे परिवारक बोझ, माने परिवारक भार जवान-जुआनक माथपर सवार होइ छैन। विचारवान लोक अप्पन माता-पितासँ होइत अप्पन परिवारक गाड़ीकेँ आजुक दिन-रातिक सीमामे बन्हैत बाल-बच्चाक बीच भ्रमित करिते छैथ। तइ तरहक लोकक बीच कर्मठ लोकक परिचय ध्रुवलाल बाबा दइते छैथ। हिनका मनमे सदिखन यएह रहै छैन जे जखने कर्मठ बनैक बाट लोक पकैड़ लेत, तखने ओ कर्मशीलक जीवन धारण करबे करत। ऐठाम एकटा आरो विचार सोझरा लइ छी। सभ जनै छिऐ जे चौरासी लाख जीव-योनि अछि, मुदा तइमे जँ ई नइ बुझब जे सिर्फ मनुष्ये योनि एहेन अछि जे कर्म योनि भेल। बाँकी जेते भेल ओ भोग योनि भेल। ओही भोग योनिमे बाघो सिंह एहेन अछिए जे दिने-देखार लोककेँ चाभियो लइए आ पहाड़क शीलक शीलाजीतक परिचय सेहो करैबिते अछि। मनुक्ख छोड़ि जेतेक जीव अछि ओकरो उपयोग मनुक्खे ने करै छैथ।

जखन ध्रुवलाल बाबा तहूसँ निचला, माने जुआन-जहानसँ निच्चाँ किशोर-किशोरीक बीच रहै छैथ, तखन रामलीलाक रावण जकाँ वएह बेकती जे पहिने दशरथ आ पछाइत रावणक पार्ट अदा करए लगै छैथ। लोको तँ लोक छथिए, जे जेते षडयंत्री छैथ ओ ओते अपनाकेँ निष्पक्षक रूपमे अप्पन चेहरा देखैबिते छैथ। खाएर जे छैथ से छैथ, तइसँ ध्रुवलाल

बाबाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अप्पन दिन-दुनियासँ।

किशोर-किशोरीक बीच जखन ध्रुवलाल बाबा रहै छैथ तखन माता-पिता आ घर परिवारक संग अप्पन जीवनक चर्च सेहो करै छैथ जे 'बौआ, तूँ पढ़ै छह कि नइ?' तहिना किशोरो-किशोरीक प्रश्न आबिये जाइ छैन जे-'बाबा, जाबे अहाँ छी ताबे विक्रमादित्योक खिस्सा सुनै छी आ गोनूओ झाक, मुदा अहाँ मुइला पछाइत के सुनौता?'

एक तँ किशोर-किशोरीक मनक जिज्ञासा, दोसर सहमेलू लोक ध्रुवलाल बाबा छथिए, तँए ओ हँसैत कहबे करै छैथ- 'बौआ, एना वसिया भात खा कऽ जँ लगले बिसैर जेबह, तखन आगू केना घुसकबह। तँए, जे सुनै छह तेकरा जखन धियानसँ सुनि धियानमे रखि धियान करैत रहबह, तखन ने ओकरा करैक धियान औतह। जखन करैक धियान मनमे आबि जेतह आ हाथ-पएर उठए लगतह, तखन बुझबहक जे जीवनक बेरा पार लगबे करत'।

अखन तक मरदा-मरदीक विचार कहलौं, मुदा ध्रुवलाल बाबा तेतबे नहि छैथ, महिलाक संग सेहो ओहने बेवहार बनौने छैथ। बुढ़-पुरान महिलाक संग अप्पन जीवन आ अप्पन बीतल दिनक सुख-दुखक चर्च करै छैथ तँ समरथ-सँ-अधवयसूक संग अप्पन परिवार आ परिवारक बीच अप्पन जीवनक चर्च करै छैथ, तहिना किशोरी-ढेरबाक संग पढ़ै-लिखैसँ लऽ कऽ अप्पन माता-पिताक सेवा-टहलक चर्च करै छैथ आ तैसंग सेवाक फल-कु-फलक चर्च करैत अप्पन दायित्व-वोध सेहो करैबिते छथिन। जइसँ समाज हौ कि परिवार, सभ ध्रुवलाल बाबाकेँ अप्पन हितैषी बुझिते छैन। अप्पन परिवारक तीनू बच्चा आ समाजक (गामक) सातो बच्चाक बीच, माने पाँच बर्खसँ ऊपर आ बारह बर्खसँ निच्चाँक बच्चाक संग ध्रुवलाल बाबा सभ दिन बैसकऽ जीवनक चर्च सेहो करै छैथ आ भूत-प्रेतसँ लऽ कऽ देवी-देवताक खिस्सा सेहो सुनबै छैथ, जइसँ अप्पन परिवारक संग समाजोक बच्चाक संग एहेन सम्बन्ध बनियेँ गेल छैन जे सभकियो बाबो कहै छैन आ साँझू पहरमे एकठाम भऽ खिस्सो-पीहानी सुनैए। भेल तँ एतबे ने जे कोनो बाल-बोधक जीवन सुधारैले पहिने ओकरा मनमे घर करब अछि, माने सम्बन्ध स्थापित करब अछि। जखने बच्चाक

मनमे बैस जाएब, माने ओकर विश्वास पाइब लेब, तखने ओकर जीवनक गाड़ीकेँ आगू मुहेँ ससारब असान भइये जाइए। मनसँ तँ सभ चाहिते अछि जे नीक-सँ-नीक आ खुशहाल-सँ-खुशहाल बनी। ओना, जीवनक चक्र ओहन अछिए जे चाहलाक बादो नइ बनि पबैए। बुझले अछि जे महाभारतक लड़ाइ कौरव-पाण्डवक बीच भेल। दियादी झगड़ा, हक-हिस्साक प्रश्नपर केतेक भारी लड़ाइ भेल। हजारो लड़निहार मरल। मुदा सुदर्शन चक्र कृष्णक आँगुरमे रहैन। ओही चक्रक चलैत ने एते भारी लड़ाइ भेल। कृष्णक चक्रक चर्च केलौं हेन, एकरा समयक चक्र नइ बुझब, जे सभक संग होइए। ..सात बजे सौंझका समय। सूर्यास्त भऽ गेल छल जखन ध्रुवलाल बाबाक अपनो तीनू पोता-पोती आ गामक सेहो सातो धिया-पूता, सभकियो दरबज्जापर आबि जमा भेल। एक तँ ओहुना अधिक आयु भेने ध्रुवलाल बाबा शरीरक श्रम पहिने जकाँ आब नइ करै छैथ, मुदा ओते तँ जरूर करबे करै छैथ जइसँ शरीरो चलायमान रहै छैन आ ओते उपैतियो तँ भइये जाइ छैन जइसँ केकरो भार किए बनता।

ओना, परिवारक लोक होइन आकि समाजक लोक, एते तँ सभकियो स्वीकारिते छैन जे ध्रुवलाल बाबा तामसकेँ उठाकऽ पीब नेने छैथ। जइसँ केकरो संग जखन गप-सप्प होइ छैन तखन जँ अपना मुहसँ चौअनिया मुस्कीक संग विचार निकलै छैन तँ अट्ठनिया मुस्कीक संग जवाबो आ प्रश्नो दोसरसँ भेटिते छैन। ओना, ध्रुवलाल बाबा अट्ठनिया मुस्कीकेँ मुस्की नइ बुझि हँसी बुझै छैथ, मुदा दोसर—बजनिहारि वा सुननिहारि—तँ मुस्कीए बुझै छैथ।

दरबज्जापर ध्रुवलाल बाबाकेँ बैसिते एकटा सात बर्खक बच्चा पुछि देलकैन- “बाबा, चाह-ताह पीब नेने छी आकि आब पीबै?”

बच्चाक विचार सुनि ध्रुवलाल बाबाक मन तर-ऊपर हुअ लगलैन। जइसँ किछु जवाब देब कठिन भऽ गेलैन। माने ई जे बच्चा अप्पन चाहकेँ मिलाकऽ, माने घोरिकऽ बाजल अछि आकि अप्पन अभ्यासक अनुकूल बाजल हेन? असमंजसमे ध्रुवलाल बाबाक मन घुमिये रहल छेलैन कि तही बीच पत्नी, माने धरणी दादी, चाह नेने आबि आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन।

चाह देखिते ध्रुवलाल बाबाक चाह, माने अप्पन मनक चाह हेरा

गेलैन आ खाली भेल बर्तन जकाँ मन हल्लुक होइत फुहराम भऽ गेलैन। चाह पीबैसँ पहिने ओइ बच्चाकेँ, जे बच्चा पुछने छेलैन, कहलखिन-

“बौआ, पहिने आइ की सुनबह?”

संयोग कहियौ आकि समयक चक्र, पैछला दिन, माने काल्हिखिन, महावीरजी स्थानमे विषय कीर्तन भेल छेलै, जइमे चन्द्रहासक कथा किरतनियाँ सुनौने छेलखिन जे ओ बच्चा माने बेलबा सेहो सुनने छल से ओकरा मोने रहइ। बाजल- “बाबा, चन्द्रहासकेँ किए माए-बाप आड़ी लऽ कऽ काटिकऽ अधा-अधी बँटलैन?”

तइ बीच ध्रुवलाल बाबा आधासँ बेसी चाह पीब नेने छला, तँए मन सोल्होअना फुहराम तँ नइ भेल छेलैन मुदा आठअनासँ कनी ऊपरे तँ भइये गेल छेलैन। एकाएक रामायणिक कथा दिस मन बढ़ि गेलैन। भूत मेटा मनमे वर्तमान आबि गेलैन। बेलबाक प्रश्नक जवाब दैत ध्रुवलाल बाबा बजला-

“बौआ, सीताकेँ जखन अपहरण करि कऽ रावण लऽ गेलैन तखन राम अपहरणक केस किए ने केलैन। तेहेन कड़गर अखन शासन बनि गेल अछि जे रावणकेँ जहलसँ निकलब कठिन भऽ जाइत।”

बेलबाकेँ बुझल रहैत तखन ने किछु बजैत से तँ बुझल छेलै नहि, तँए चुप्पे रहल। तैबीच ध्रुवलाल बाबा चाह पीब सोल्होअना तनाउतार भऽ पान सेहो खा लेलैन। पानक पीत फेंकैत ध्रुवलाल बाबा बजला- “बौआ सभ, अनका दिस तकने काज नइ चलतौ, अपना दिस तकै जाइ जो।”

ध्रुवलाल बाबाक विचार सुनि दसो धिया-पुता अपना-अपना दिस ताकए लगल। एका-एकी जहिना ताकब शुरू केलक तहिना एका-एकी बन्न सेहो कऽ लेलक। बन्न होइत देखि, माने ताकब बन्न होइते ध्रुवलाल बाबा बजला- “बौआ सभ, देह बड़ीटा अछि तँए अखन ओकरा छोड़, पहिने एकटा हाथक पाँचो ओंगरीकेँ देख।”

ध्रुवलाल बाबा अपनो चारू दिस चकोना होइत देखए लगला जे के की कऽ रहल अछि। देखलैन जे सभ अप्पन देहक निङहारो-नुङहार कऽ रहल अछि आ हाथक ओंगरी सेहो देखि रहल अछि। मने-मन ध्रुवलाल

बाबा हरषिकऽ निर्णय लेलैन जे अखन एकरासभकेँ आँगुरक पोर-पोर बुझाएब उचित नइ हएत। उचित ओइ दिन हएत जइ दिन ओंगरीक बोध हेतै जे ओंगरियेक बलपर अस्त्रो बनैए आ शास्त्रो बनैए। ध्रुवलाल बाबा परोड़िया बच्चाकेँ पुछलखिन- “परोड़, ओंगरीमे की सभ देखलेँ?”

डलनाक परोड़ जकाँ परोड़िया अप्पन डम्हाएल-जुआएल बीआ देखबैत बाजल- “बाबा, पाँचटा ओंगरी हाथमे अछि।”

परोड़ियाक जवाब, पाल परक दगाएल कलकतिया-आमक सुआद जकाँ ध्रुवलाल बाबाकेँ लगलैन। बजला- “वाह! वाह बहादुर.!”

दोसरपर नजैर दैत बजला- “तेतर, तेतैरमे जहिना पाँचटा बीआ होइए तहिना तूँ अप्पन पाँचो ओंगरीक रंग-रूप कह?”

ओंगरीकेँ तेतरा गनि नेने छल, जे मनक ऊपरेमे रहइ, ओंगरीक रंग-रूप देखबैत तेतरा बाजल- “बाबा, पाँचो ओंगरी पाँच रंगक अछि। छोटका दुनू सेहो दू रंगक अछि। एकटा पातर अछि आ एकटा मोटगर अछि, बाँकी बीचला तीनूक बीचमे थोड़बे कऽ तरपट अछि।”

तेतराक जवाब सुनि ध्रुवलाल बाबा मने-मन विचारए लगला जे सभकेँ जँ बेरा-बेरी पुछए लगब तखन औझुका समय ओहिना चलि जाएत, जहिना लोक समयक कर्मकेँ गमबैए। से नहि तँ सभसँ पहिने पाँचो ओंगरीक नाम बुझा दिऐ। किएक तँ जखन लोकक जन्म होइए, माने बच्चाक रूपमे, तँ ओकर नामकरण सप्ताह लगैसँ पहिनहि भऽ जाइए आ तहियेसँ, माने छठियारे दिनसँ लोक ओकर नाम लऽ लऽ शोरो पाड़ैत अछि आ किछु कहबो तँ करिते अछि। ओना, ध्रुवलाल बाबाक मनमे ईहो उपकैत रहैन जे जिनगीक जखन कोनो ठेकान नइ अछि, जे कबीरो दास कहने छैथ, तखन किए ने रामायणिक हनुमान जकाँ, जे जेते डेग ओ उठबै छला, धरती तेते पताल दिस धँसल जाइ छल। मुदा अपने मन विवेक केलकैन जे जँ कहबेक अछि तँ पछाइत कहबै। पहिने पाँचो ओंगरीक चर्च करब मौसमानुकूल खेती जकाँ हएत। हाथ उठा, पाँचो ओंगरीकेँ पसाइर ध्रुवलाल बाबा बच्चा सभ दिस तकलैन तँ देखलैन जे सभ बच्चा अप्पन-अप्पन हाथ पसाइर ओंगरीकेँ हिया-हिया देखि रहल अछि। दसोमे जे सभसँ छोट, माने साढ़े चारिये बर्खक अछि, ओना ओहो अपना हाथसँ

साढ़े तीन हाथक भइये गेल अछि, तेकरा दिस तकैत ध्रुवलाल बाबा बजला- “ढुनढुन, की की मुनमुन?”

धरतीसँ उठल कोनो बीज जहिना अप्पन कलश तनने रहैए, तहिना ढुनढुन अप्पन हाथक औंठा आ कनगुरिया आँगुरकेँ देखबैत बाजल- “बाबा, मोटका झगड़ाउ अछि आ पतरका कानक प्रेमी छी।”

ओना, ढुनढुनक जवाबकेँ ध्रुवलाल बाबा गम्भीर रूपेँ नइ लेलैन, बुझलैन एतबे जे, जे पाँचे बर्खक केतेको महायोगी सभ भेला अछि। मुदा तइ दिससँ मन हटा ध्रुवलाल बाबा बजला- “बौआ सभ, पहिने पाँचो ओंगरीक नाम सुनि, मने-मन अप्पन-अप्पन मनमे राख, आब ऐसँ आगू दोसर दिन कहबौ।”

जिज्ञासा तँ जिज्ञासा छी, सभकेँ अप्पन-अप्पन होइए, तँए अद्वितीय सेहो कहले जा सकैए। कौआ टाँग (माने एकटा बच्चाक टाँग कनी बेसी नमहर रहै जइसँ ओ आन बच्चाक अपेक्षा पातर लगै, तँए ओकर नाम पड़ि गेल कौआ टाँग) बाजल- “बाबा, पाँचो ओंगरीक नाम कहियौ?”

कौआ टाँगक जिज्ञासा देखि-सुनि ध्रुवलाल बाबा बजला- “कतका भेल अंगुष्ठा माने औंठा, तेकर बगल भेल तर्जनी, तेकर बीच भेल मध्यमा, तब भेल अनामिका आ अन्तमे भेल कनिष्ठा माने कनगुरिया, जे कानसँ दोस्ती केने अछि। भानस भऽ गेल हेतौ, आब जाइ जो।”

❑ अठहत्तरिम स्वतंत्रता दिवस: 2024

केकरा-ले केलौं

☰

काल्हि साँझमे जखन टहलैले दच्छिन-मुहेँ रोडपर जाइत रही कि ओम्हरसँ, माने दच्छिनसँ, मकशूदन टहैल कऽ अबैत रहए। गामक सीमा कातमे भेँट भेल। माने अप्पन किसानपुर गामक दछिनवरिया सीमा आ मोतीपुर गामक उत्तरवरिया सीमापर भेँट भेल। भेँट होइते मकशूदन मुस्कुराइत बाजल- "लड्डूलाल भाय, गामक एकटा समाचार सुनलिऐ हेन अहाँ?"

मकशूदनक मुहसँ 'गामक एकटा समाचार सुनलिऐ हेन' सुनि मन थकमका गेल। थकमका ई गेल जे गामे छी साइयो रंगक नीक-बेजा घटना-दुर्घटना सभदिन होइते रहैए, जइमे एकटा समाचार की भेल? ओना, अपने आब गामसँ कम मतलब रखै छी, किएक तँ आइसँ बीस साल पूर्वक जे स्थिति गामक छल से आब नहि अछि। माने ई जे जातीय आ साम्प्रदायिक उन्माद गाममे ततेक बढ़ि गेल अछि जे केकरो-पर-केकरो विश्वास आब तेना नहियेँ रहल अछि जेना बीस साल पूर्व छल। यएह गाम छी जे जाइतिक कोन बात जे परजाइतोक बेटाक विवाहमे बरियातियो जाइ छेलौं, विवाहोक भोज आ श्राद्धक भोज सेहो खाइ छेलौं मुदा आब तेहेन उन्माद गाममे पसैर गेल अछि जे भोजक बात तँ दूर भेल जे केकरोसँ भरि मुँह गप्पो करैत शंका होइए। बजलौं- "कोन समाचार, मकशूदन?"

जहिना बाढ़ि एलापर पाइनिक बहाव जेम्हर-तेम्हर मुहेँ हुअ लगैए तहिना मकशूदनक मनमे भऽ रहल छल। बाजल-

"भाय, समाज अखनो वएह समाज अछि जे धर्मराज जकाँ नीक-बेजाएक कोनो काज वा घटनाक विचार करिते अछि।"

मकशूदनक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल जे की बाजि रहल अछि। जहिना डिस्ट्रिक कोर्टमे, जइमे जमानत भेटैए, जहिना एकटा

जमानत लड़का-लड़कीक प्रेम-प्रसंगक रहैत अछि आ दोसर हत्या काण्डक जमानतक, तहिना मकशूदनक मुहसँ सुनि रहल छेलौं। बजलौं-

“मकशूदन, कनी सेरियाकऽ बाजह। तोहर विचार नइ बुझि पेब रहल छी।”

ओना, अपना मनमे ईहो उठि रहल छल जे एतैसँ, माने जैठाम तक टहैल चुकल छेलौं, तही ठामसँ घुमि मकशूदनक संग गप-सप्प करैत घरपर जाइ। मुदा दुइये किलोमीटर ताबे टहलल छेलौं, जँ घुमि जाएब तँ जइती-ऐबती चारिये किलोमीटर पुरत। जखनकि सभ दिन तीन किलोमीटर जइती आ तीन किलोमीटर ऐबती मिला छअ किलोमीटर टहलै छी, तँए घुमबो उचित नहियेँ लगि रहल छल।

हमर विचार सुनि मकशूदन अप्पन मनक विचारकेँ सैंतैत, माने सेरियबैत, बाजल-

“शोभित भाइक आँखि खराव भऽ गेल छेलैन, लाख इलाज करौलैन मुदा नइ सम्हरलैन। ओ आन्हर भऽ गेला।”

‘शोभित भाय आन्हर भऽ गेला’ सुनि हृदयमे जोरसँ धक्का लागल। अनेक अंगक समूह शरीर छीहे। माने शरीरमे अनेक अंग होइते अछि। ज्ञानेन्द्रियसँ कर्मेन्द्रिय तक, तइमे आँखिक अप्पन महत्व अछिए। ओना, शरीरक सभ अंगक अप्पन-अप्पन महत्व अछि मुदा आँखिक महत्व सर्वोपरि अछि। जहिना ज्ञान विहीनक लेल दुनियाँ माटि-पानि-पाथरक बनल मात्र बुझि पड़ैत अछि तहिना नयन विहीन लोकक लेल दुनियोँ, समाजो आ परिवारो तहिना बुझि पड़ैए। तइ संग अप्पन जीवनो ओहने भऽ जाइए जे बिना दोसराक मदैतिये किछु ने कऽ सकै छी। जखने जीवन पराश्रित होइए तखने ओ जीवन ‘जीवन’ नहि रहि जाइए। विचारकेँ मजगूत करैक खियालसँ बजलौं-

“मकशूदन, अप्पन आँखिये देखल बजलह अछि आकि दोसराक मुहेँ, कानक सुनल बजलह अछि?”

मकशूदन बाजल- “पहिने तँ कानसँ सुनलौं, पछाइत अपने जा कऽ देखलौं तँ सत्ते बुझि पड़ल।”

बजलौं- “ई की बजलह जे धर्मराज जकाँ समाज अखनो नीक-बेजाएक विचार करिते अछि?”

हमर बात सुनि मकशूदन हँसैत बाजल-

“भाय, केकरो अप्पन केलहा फल भेटैए।”

ओना, अपनो मन मानिते अछि जे अपनो आ लोकोकेँ अपने केलहा फल भेटिते अछि। जे सोभाविको अछि। जे करब सएह फल ने भेटत। ओना, लोक अप्पन कर्तव्यकेँ गौण करैत सभकिछु, माने नीको आ बेजाइयोक दोख भगवानकेँ लगैबिते छैन, जखनकि भगवान केकरो नीक-बेजा नहियेँ करै छैथ। ओ तँ अमूर्त शक्ति छैथ। ने हुनका केकरोसँ मनुक्ख जकाँ दोस्ती छैन आ ने दुश्मनी छैन। लोक अप्पन दोख स्वीकार नहि करैत हुनका दोखी बना दइ छैन जे भगवान जे भाग्यमे लिखि देने छैथ सएह फल भेटि रहल अछि। बजलौं-

“मकशूदन, ई कि बजलह जे समाज धर्मराज जकाँ नीक-बेजाएक विचार करिते अछि?”

मकशूदन बाजल-

“भाय! आइये नहि, सभ दिनसँ एहेन होइते आबि रहल अछि जे समाजमे जे कियो किछु, माने नीक वा बेजाए, करै छैथ ओ चर्च समाजमे होइते अछि। नीक करब तँ लोक (समाज) नीक कहत आ अधला करब तँ लोक अधला कहत। तइमे एकटा बात जरूर अछि जे समाजो तँ समाजे छी। कहैले सौंसे गामक एक समाज छी मुदा समाजक बीच समाज सेहो बनल अछिए। तइमे अनेक रंगक समाज बनल अछि, मुदा सभक चर्च नइ करब। किएक तँ समाजमे किछु लोकक एहेन समाज अछि जे गाममे केतौ किछु हुअ, ओ मुँह दाबि किछु बजबे ने करत। किछु लोक ओहन छैथ जे गरीब-गुरबा वा मुँह-दुब्बर लोकसँ जँ कोनो अधला काज हएत तँ ओकरा तिलकेँ तार बना बजता आ मुँहगर लोक जँ ओहने काज करता तँ किछु बजबे ने करता। तइ संग ईहो अछि जे जँ मुँहगर लोकक अधला काजकेँ मुँहदुब्बर लोक, जँ किछु बाजत तँ ओकरा गारि-फज्झैतिक संग मारबो-पीटबो करिते छैथ।”

बिच्चेमे बजा गेल- “की मतलब, मकशूदन?”

मकशूदन बाजल- “भाय साहैब, सभ काल सभ बजै छैथ जे गाममे जेते लोक छी, सभकियो एक समाज छी, मुदा धनीक लोकक अलग समाज छैन, जे गरीब लोककेँ सदिकाल सतबैत रहै छैथ। मुदा गरीब लोक जँ धनिक लोकक विषयमे, किछु अधला वृत्ति देखि, अधला बात बाजत तँ ओकरा सभ तरहक यातना दइते छैथ।”

बजलौं- “मकशूदन, तूँ तँ अप्पन टहलैक कोटा पुरा लेलह, हमरा बाँकी अछि। अखन जाह।”

मकशूदन सेहो आगू बढ़ल आ अपने सेहो आगू बढ़लौं। आगू बढ़िते मनमे उठल जे मकशूदन मुँह दाबि लेलक तँए खोलिकऽ नहि बाजल मुदा अपने तँ आँखिसँ देखिते एलौं हेन जे शोभित धानो-चाउर आ रुपैयो-पैसाक महाजनीक कारोबार करिते छैथ। ओना, हुनकर पिता- मोतीलाल सेहो करै छला, हुनके बनौल सम्पैतियो छिऐन। केते लोकक, माने केतेको कर्जदारक खेत-पथार मोतियोलाल आ शोभितो बइमानी केनहि छैथ। भरिसक मकशूदनक पेटमे यएह विचार छल जेकरा ओ धर्मराज कहि बाजल छल। मकशूदनक विचारसँ मन हटि अप्पन विचारपर आबि गेल। अप्पन विचारपर मनकेँ अबिते विचार केलौं जे जखन शोभित भाय आन्हर भऽ गेला अछि तखन हुनकर जिगेसा करब जरूरी अछि।

बुलि-टहैल कऽ घरपर एलौं। मनमे विचित्र-विचित्र विचारसभ उठि रहल छल। सभ विचारकेँ मनेमे दाबि निर्णय केलौं जे दुनियाँमे कियो किछु करै छैथ ओ अपना ले करै छैथ। हमहूँ अपना ले करब। मन असथिर भऽ गेल। मनकेँ असथिर होइते विचार उठल जे शोभित भाय हाइस्कूलक संगी रहि चुकल छैथ। ओना, ओ अपनासँ दू क्लास सीनियर छला मुदा एक स्कूलमे पढ़ने, घरसँ जेबा काल कहियो गाममे भेँट भऽ जाइ छला जइसँ दुनू गोरे संगे-संग जाइ छलौं आ कहियो भेँट नहियोँ होइ छला जइसँ ओहो असगरे आ अपनो असगरे जाइ छलौं। मुदा ऐबतीमे, स्कूलमे एक बेर छुट्टी भेने, दुनू गोरे संगे-संग अबै छेलौं। पत्नीकेँ कहलयैन- “कने जलखै जल्दी करा दिअ। एक गोरेसँ भेँट करए जाएब।”

जहिना सबहक पत्नी पतिक संग वकील जकाँ चीफ-जिरह करए लगै छैथ तहिना अपनो कहलैन- “किनकासँ भेँट करए जाएब जे एते अगुताएल छी?”

पत्नीक विचार सुनि एक मन ईहो हुअए जे नहि कहबैन, मुदा दोसर मन ईहो भेल जे जखन कोनो गलत काज करए नहि जाएब तखन कहैमे लागल कि अछि। तहूमे पत्नी लग कोनो बात बाजब अधला थोड़े भेल। बजलौं-

“सुनबामे आएल अछि जे शोभित भाइक आँखि खराब भऽ गेलैन हेन, तँए हुनकर जिगेसा करब जरूरी अछि। बच्चेसँ दुनू गोरे संगी बनि संग-संग रहल छी।”

अपन पत्नियेँ टाक बात कि कहब जे समाजेक महिलाक बीच एहेन तार, माने संवाद-सूत्र, जुड़ले अछि जे पुरुख वर्ग कोनो घटना-विशेष सुनैथ-बुझैथ वा नहि सुनैत-बुझैथ मुदा महिला वर्ग पहिनहि बुझि जाइ छैथ। पत्नी बजली-

“शोभित भाय तँ सोल्हन्नी आन्हर भऽ गेला अछि।”

पत्नीक विचार सुनि मने-मन विचार केलौं जे अनेरे जँ पत्नीक संग गप-सप्प बढ़ाएब तइमे समयो बेसी दुइर हेबे करत, तइसँ नीक जे चुप्पे रहि जाइ। तइ बीच पत्नी जलखै आनि आगूमे रखि देली। चुपचाप जलखै केलौं।

जलखै केलाक बाद पत्नीकेँ कहलयैन- “शोभित भाइक जिज्ञासा करए जा रहल छी, तँए समय कनी बेसियो लगि सकैए। तैबीच दुआर-दरबज्जाकेँ देखैत आ माल-जालकेँ खाइ-पीबैले देबइ।”

जहिना पत्नीकेँ कहलयैन तहिना ओ चुपचाप सुनि लेली। बजली किछु नहि। अनका जकाँ सभ गप्पक टोन-टान नहि केली। पत्नीकेँ कहि अपने विदा भेलौं। शोभित भाइक घर पछबारि टोलमे छैन आ अप्पन घर पूवारि टोलमे अछि। गाम तँ एक्के छी मुदा ढेढ़ किलोमीटरक दूरी दुनू गोरेक घरक बीच अछि। अप्पन टोल, माने चालीस घरक जे अप्पन जाइतिक टोल अछि तइसँ कनियेँ आगू बढ़लौं कि रूपलाल भेँट भेल।

अधिक काल, माने बेसी काल रूपलाल अपना ऐठाम आबि खेती-पथारीसँ लऽ कऽ गाम-घरक गपो-सप्प करैए आ बेर-बेगरतामे अप्पन समांग जकाँ काजमे मदैत सेहो करिते अछि। आगूसँ रूपलाल टोकलक-

"लड़ूलाल भाय, केतए जा रहल छी?"

ओना, समाजमे बहुतो लोक एहेन छथिए जिनका जँ केतौ जेबा काल आगूसँ टोकि देबैन तँ ओ ओतइसँ घुमि जेता वा नहि घुमता तँ मने-मन चारिटा अवाच्य कथा बजबे करता। मुदा अपने से सभ मानिते ने छी। जहिना रूपलाल टोकलक तहिना अपने बजलौं-

"रूपलाल, सुनैमे आएल अछि जे शोभित भाइक आँखि खराब भऽ गेलैन हेन, सएह जिगेसा करए जा रहल छी। तोरो जँ छुट्टी हुअ तँ संगे-संग चलह।"

रूपलालक मनमे जेना विचारले छल तहिना बाजल- "लड़ूलाल भाय, शोभित भाय कि आइ आन्हर भेला अछि। ओ तँ कहिया ने आन्हर भऽ गेल छेला।"

रूपलालक विचार कोनो भाँजेपर नइ चढ़ल जे ओ एना किए बाजल। बजलौं- "से केना, रूपलाल?"

रूपलाल बाजल- "भाय साहैब, शोभित भायकेँ के कहैन जे हुनकर पितोजी आन्हरे छेला।"

रूपलालक विचार सुनि अप्पन मन तारतम्यमे पड़ि गेल जे ओ की बाजि रहल अछि। बजलौं- "तोहर विचार नीक जकाँ नइ बुझि पेब रहल छी, रूपलाल?"

दार्शनिक जकाँ रूपलाल बाजल- "भाय साहैब, जखने लोक मनुक्खक कर्तव्य छोड़ि धन जमा करैक पाछू लगि जाइए, तखने ओकरा विचारसँ उचित-अनुचित हटि जाइए। आ ओ मात्र धनक पाछू व्यस्त भऽ जाइए। शोभित भाइक पितोमे ई दुर्गुण छेलैन आ शोभित भायमे सेहो छैन्हे।"

रूपलालक विचार सुनि मनमे अनेक रंगक विचार उठए लगल। जखन शोभित भाइक महजनीपर नजैर दी आ बेइमानी-शैतानी देखी,

तखन रूपलालक विचार सोल्होअना सत्य बुझि पड़ए। मुदा जखन शोभित भाय सन महाजन, माने कारोबारीपर नजैर दी, तखन बुझि पड़ए जे एहेन शोभिते भाइक परिवार नइ अछि। सभ कारोबारीक अछि। जेकरा एकटा समाज मानले जा सकैए। एहेन समाज की आइये भेल अछि आकि सभ दिनसँ चलैत आबि रहल अछि। बजलौं- "रूपलाल, दुनियाँमे सभ कि एक्के रंग अछि। नीको अछि आ अधलो तँ अछिए। तइमे अप्पन जे कर्तव्य अछि मात्र तैपर नजैर राखि काज करैत चली।"

रूपलालो संग भऽ गेल। दुनू गोरे शोभित भाय ऐठाम पहुँचलौं। शोभित भाय असगरे चद्दैर ओढ़ि दरबज्जापर बैसल छला। मने-मन विचारलौं जे जँ फरिक्कासँ बाजब तखन ओ बोल अकाइन लेता, तइसँ नीक जे चुपचाप हुनका लग पहुँच जाइ। जँ ठीके आन्हर भऽ गेला तखन तँ किछु नहि बजता, बेसी-सँ-बेसी एतबे बजता जे अहाँ के छी। तइसँ हुनकर अन्हरपनक परिचय भइये जाएत। सएह केलौं। लगमे गेला पछाइत ओ चिन्हलैन नहि, मुदा आगमनक आहटकेँ अकाइन बजला- "अहाँ के छी।"

जखने शोभित भाय बजला जे 'अहाँ के छी' तखने अप्पन मन मानि गेल जे ठीके शोभित भाय आन्हर भऽ गेला अछि। बजलौं- "भाय, हम लड़ूलाल छी।"

नाम सुनिते शोभित भाय बोम फारि कानए लगला। हुनका कनैत देखि बजलौं-

"भाय, एना किए कनै छी। शरीर तँ व्याधिक घर छी। बिरले कियो एहेन होइ छैथ जिनका रोग-व्याधि ग्रसित नइ करै छैन। एहेन अहीं टाकेँ भेल से बात नइ ने अछि। सभकेँ होइ छइ।"

शोभित भाय बजला- "लड़ूलाल, जँ दुनू कान निपट भऽ जाएत तँ ओते दुख नहि होइत। मुदा आँखिक अन्हरपनसँ तँ दुनियेँ अन्हार भऽ गेल अछि।"

बजलौं- "जे हेबाक छल ओ भेल, अनेरे तइले कनै किए छी। दूटा बेटा, दूटा पुतोहु आ पोता-पोती सभ अछि, ओ सभ सेवा करत।"

शोभित भाय बजला- “कियो घुरिकऽ एकोबेर लगमे नइ अबैए। सेवाक बात तँ दूर रहह।”

समाजमे एहेन सामाजिकता तँ बनले अछि जे कियो अधला करह वा नीक, मुँहपर नीकक चर्च तँ करैए मुदा अधलाक चर्च लोक थोड़े करैए। तही खियालसँ बजलौं-

“भाय, अहाँकेँ कोनो चीजक कमी अछि जे दुख हएत। दुख तँ ओकरा होइ छै जेकरा किछु ने रहैए।”

शोभित भायकेँ आन्हर भेने जेना आत्मज्ञान खुजि गेल होनि तहिना बजला-

“लड़ूलाल, केतेको लोकक गरदैन काटि सम्पैत बनेलौं, मुदा आब बुझि पड़ैए जे केकरा ले एते केलौं.!”

बजलौं- “भाय, अखन जाइ छी। फेर आएब।”

❑ बदलैत जीवन: 2025

❑❑❑

❑❑

❑

Notes

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....